मार्च (प्रथम) 1993 रुपए 10.00

सरिता

सामाजिक संबंध विशेषांक

आपसी संबंधों को मधुर बनाने वाले 16 लेख



कैपिटेशन फीस
अस्पष्ट नीति

बोध गया आंदोलन
मठाधीशों का वि

होली के सुंदर
जरूरत है



Take the world in your stride
डाइनेस्टी • नूवो लुक • ट्रेंड सेटर • मैच मेकर सैटिन्स • हाय फैशन सूटिंग्स
dines
THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES, INTERNATIC
ITHORISED DEALERS : • JAIPUR • SHEELSON (EXCL. SHOW ROOM) • JAIPUR TEXTILE TRADERS • GOPIRAM DEVILAL • R
TH STORE • AJMER • VARDHMAN (EXCL. SHOW ROOM) • CHANDIRAM & SONS • JAI STORES • CHITTOR • SARASWATI VASTI
R • BHILWARA • GAUTAM & SONS • UDAIPUR • MOTICHAND NARAINDAS • CHHABRA SONS • BEAWAR • G. NAV
EXCL. SHOW ROOM) • SHEOGANJ • GANDHI KASTURCHAND LADURAM • ALWAR • FANCY CLOTH HOUSE
SARITA (H)/G-XII/MAR-1/


अब आ गया!
शुद्ध, सफ़ेद
नमक
मुफ़्त!
Pure Salt!
Captain Cook
हर पैक के साथ एक शानदार माचिस
जल्दी कीजिए! ये भेंट सिर्फ़ स्टॉक रहने तक ही उपलब्ध.
Pure Salt!
Captain Cook
FREE
अब आ गया कैप्टन कुक नमक. ये इतना शुद्ध, इतना सफ़ेद है कि आप यही सोचेंगे कि ऐसा नमक पहले क्यों नहीं आया? कैप्टन कुक नमक रिफ़ाइंड-आयोडाइज़्ड तो है ही, एक और ख़ास बात ये है कि इसे मशीन द्वारा पैक किया जाता है. इसलिए अशुद्धता का सवाल ही पैदा नहीं होता. खाना इतना लज़ीज़ बनता है कि आप कहेंगे, "देर से आए, दुरुस्त आए. शुक्रिया कैप्टन कुक."
कैप्टन कुक
रिफ़ाइंड आयोडाइज़्ड

सामाजिक संबंध विशेषांक

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ   अंक : 909   मार्च (प्रथम) 1993

लेख



उपन्यास

कविताएं

कथा साहित्य



स्तंभ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय

दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित

अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. **बंगलौर :** 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. **बंबई :** 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. **कलकत्ता :** तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. **मद्रास :** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. **सिकंदराबाद :** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003. **लखनऊ :** फ्लैट नं. बी-जी/3, 4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. **पटना :** दिल्ली प्रेस, 111, आशियाना टावर्स, एक्जीबिशन रोड, पटना-800001. **कोचीन :** दिल्ली प्रेस, जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोचीन-682031.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
विदेशों में मूल्य एक प्रति : $0.40 (डाक व्यय अतिरिक्त) एक वर्ष : $ 17.00 (समुद्री डाक व्यय सहित) एक वर्ष : $ 43.00 (हवाई डाक व्यय सहित)

मूल्य : एक प्रति 10.00 रुपए. वार्षिक 240 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिलचर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में



पेश है
DIVALI BRAND
PHOSPHATE FREE
TATACHEM
Shudh
DETERGENT
टाटाकैम शुद्ध
डिटर्जेंट
Uniform all-inclusive price throughout India
Manufactured by:
TATA CHEMICALS LIMITED
The Company that cares
Net Weight
when packed
1kg.
Max.
Retail Price
inclusive of all taxes
Rs. 30.00
Pkd.12/92

आप के पत्र



सरित प्रवाह/जनवरी/द्वितीय

भारत में टैंक बनाने की योजना के संबंध में आप के विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं. पिछले 30 वर्षों में भारत केवल एक ही टैंक बना पाया है और वह भी विदेशी कलपुरजों की मदद से. सैन्यशक्ति रखने वाले देश आज हम से बहुत आगे निकल चुके हैं. करोड़ों रुपए खर्च कर के तो कोई भी देश रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकता है. हमारे देश में किसी ने भी ईमानदारी से इस का प्रयास नहीं किया, सभी अपनी जेबें भरने में लगे रहे. अभी तक जितने भी प्रक्षेपास्त्र बनाए गए हैं वे अभी परीक्षण के दौर से ही गुजर रहे हैं.

—गिरीशकुमार भावसार

*

आयुध उद्योग में भारत के पिछड़ेपन पर आप की चिंता जायज लगी. परमाणु संयंत्रों के निर्माता और अंतरिक्ष में अपने बल पर उपग्रह भेजने को उद्यत देश के लिए हंगरी, स्वीडन और चेकोस्लोवाकिया (अब चेकों और स्लावों के दो अलग देशों में बंटा) से रिवाल्वर, राइफल और तोप जैसे हथियारों की खरीददारी निश्चय ही शर्मनाक है. यह कैसी विडंबना है कि 'अग्नि' जैसी मिसाइलों से लैस भारत अपने सुरक्षा बलों को आतंकवादियों से निबटने के लिए ए.के.-47 के मुकाबले की राइफल देने में भी असमर्थ है.

—नलिन मल्हीपुरी

*

बड़ेबड़े राजनीतिबाजों के बीच फंसा बोफोर्स मामला शायद ही सचाई का सामना कर पाए, क्योंकि सचाई सामने आते ही ये लोग जनता को मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे. इतनी बड़ी धोखाधड़ी करने के बाद भी पकड़े जाने पर त्यागपत्र दे कर बरी हो जाते हैं.

'संदेहों के घेरे में' लेख में आप ने अच्छी जानकारी दी है. ये सब तो वे घोटाले थे जो लोगों को पता चल गए. पता नहीं ऐसे कितने घोटाले और होंगे जिन का किसी को पता नहीं चल पाया. बैंक घोटाले का भी बोफोर्स जैसा हाल ही होगा, क्योंकि इस में भी कई 'बड़े लोगों' का हाथ नजर आ रहा है. —संजय पघंल 'स्नेही'

*

अकबर की 450वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह पर आप की प्रतिक्रिया का मैं पूर्णतः समर्थन करता हूं. वर्षगांठ मनाने से पहले भारत सरकार को सोचना चाहिए कि अकबर ने हमारे देश के लिए चाहे जो किया हो पर उस का शासनकाल हमारे लिए गुलामी का काल ही था. आज राणाप्रताप की चर्चा तक नहीं की जाती जिन्होंने दासता की बेड़ियां हटाने के लिए अनेक यातनाएं सहीं और भावी पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाया.

—जे.एल. पाल

*

आंतरिक गुटबाजी

लेख 'आंतरिक असंतोष और बिगड़ते हालात का क्या कांग्रेस मुकाबला कर पाएगी' (जनवरी/द्वितीय) पढ़ा. देश की सब से बड़ी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस इन दिनों मुसीबतों में फंसी है. एक ओर आंतरिक असंतोष और दूसरी तरफ रामजन्मभूमि बाबरी मसजिद जैसे विवाद का उचित हल न खोज पाने के कारण यह कमजोर हो गई है. यह आंतरिक गुटबाजी कांग्रेस के लिए कब्र साबित होगी. —हरिशंकर 'एन' उपाध्याय

*

कांग्रेस में असंतोष कभी नहीं होता बल्कि उन्हें यह आशा रहती है कि विपक्षियों के अविवेकपूर्ण कदम से सत्ता पर उन्हें ही काबिज होना है. यह असंतोष तो विपक्षी नेताओं को अधिक होता है जिन्हें अल्पकाल में ही कुरसी छिन जाने का भय रहता है. केंद्र की विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार बिना मंदिर मसजिद विवाद को छूए ही गिर गई और दूसरी तरफ कांग्रेस मसजिद गिरा कर मंदिर की नींव डलवा कर, मंडल मुद्दे को पचा कर भी सत्ता पर काबिज है.

—शैलेंद्र सिंह तरकर

*

भ्रष्टाचारी दल

लेख 'कृष्णमूर्ति के कारनामे : अरबों से खेलने वाले क्या कुछ सौ जेब में नहीं रखेंगे?' तथा 'संदेहों के घेरे में' (जनवरी/द्वितीय) पढ़ कर लगता है कि अब कांग्रेस का नाम भ्रष्टाचारी दल रख देना चाहिए. कितनी लज्जा की बात है कि राव सरकार अब भी अर्जुन सिंह जैसे भ्रष्ट मंत्रियों को पाले हुए है. इन के लिए तो यह सच ही है:

भ्रष्ट अड़ोसी भ्रष्ट पड़ोसी,
भ्रष्ट भ्रष्ट के भाई,
भ्रष्ट मंत्री घर ब्याह हुआ तो
भ्रष्ट ही पाए जमाई.

—अनुप जोशी

*

उपयोगी जानकारी

पिछले कई अंकों से 'नए शेयर' शीर्षक के अंतर्गत जो उपयोगी जानकारी पाठकों को दे रहे हैं वह प्रशंसनीय है. आज जिस प्रकार ये कंपनियां निवेशकों को लूटने में लगी हैं वह इस देश के भविष्य के लिए भी बहुत खतरनाक है. ये कंपनियां 6 माह की बजाय एक

साल बाद लाभांश देने में भी नहीं हिचकतीं. पिछली तारीख डाल कर 5-6 माह बाद चेक भेजने का क्रम अब सभी कंपनियां अपनाने लगी हैं. निवेशकों से पैसा निकालने के बाद एक या दो साल में जब ये कंपनियां 'बीमार' हो जाती हैं तो निवेशक ठगे से रह जाते हैं.

—विष्णुकुमार वार्ष्णेय

*

गलती

लेख 'क्रेडिट कार्ड का उपयोग' (जनवरी/द्वितीय) में 'बाबकार्ड' का सदस्यता शुल्क 50 रुपए प्रतिवर्ष बताया गया है जबकि वर्तमान में सदस्यता शुल्क 100 रुपए प्रतिवर्ष है. —प्रमोद शरन गुप्ता

*

रूढ़िवादी विचार

लेख 'आरतियां : आलोचनाओं और आपत्तियों के उत्तर' (जनवरी/द्वितीय) में व्यक्त पाठकों के विचारों से स्पष्ट हुआ कि हिंदू समाज का सभ्य कहा जाने वाला वर्ग धर्मरूपी सड़ेगले मुरदे को जबरदस्ती भारतीय समाज पर थोप कर आज भी लोगों को अकर्मण्य, अशिक्षित व रूढ़िवादी बनाए रखने के प्रयास में जुटा है. देश के अधिकतर भोलेभाले लोग यह नहीं जानते कि हिंदू धर्म की आधारशिला ही ऊंचनीच, विश्वासघात पर टिकी है, जिस का सीधा लाभ हिंदू धर्म के ठेकेदारों को ही मिलता रहा है.

—जगन्नाथ मौर्य

*

लेख पढ़ कर लगा कि हम कितने अंधविश्वासी हैं कि जिस लकीर पर हमारे पूर्वज आंख मूंद कर चलते रहे उसी पर हम चल रहे हैं. वास्तव में इस प्रकार की रूढ़ियों व अंधविश्वासों को हमें समाज से उखाड़ फेंकना ही होगा. तभी हम एक शिक्षित व सभ्य समाज की कल्पना कर सकते हैं. —ओमप्रकाश धनेलिया

*

लेख धर्मभीरुता पर करारी चोट है. वर्तमान समय में आरती में लोगों का विश्वास कम और लूट में ज्यादा है, जिस का जीताजागता उदाहरण हरिद्वार में हर की पौड़ी पर गंगा मैया की आरती के समय देखा जा सकता है. जहां सैकड़ों पंडेपुजारी गंगा की आरती के नाम पर जनता से जबरन पैसे वसूलते हैं.

—नरेश कोटवान

*

जनोपयोगी

'बंबई महानगर में' स्तंभ के अंतर्गत 'सांडे का तेल' शीर्षक से जो टिप्पणी छपी है वह सर्वथा जनोपयोगी है. मेरे कार्यालय के समक्ष भी ऐसे विशेषज्ञ का तांता लगा रहता है. घंटे डेढ़ घंटे की बकझक के बाद ये लोग दो ढाई सौ रुपए बटोर कर चंपत हो जाते हैं. खरीदने वालों में चपरासियों से ले कर बड़े बाबू तक होते हैं. जनजागरण के लिए इस प्रकार के लेख आगे भी देते रहें. —सुग्रीव रावत

*

धन का दुरुपयोग

जैन समुदाय ने एक ओर दानपुण्य के कामों में अपना विशिष्ट स्थान बना रखा है वहीं दानदहेज व रीतिरिवाजों के नाम पर तथा आर्थिक लेनदेन के मामले में भी यह समुदाय सब से आगे है. भव्य व आलीशान मंदिर बनवाना भी इस की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है. बंगलौर के पास निर्माणाधीन दो भव्य मंदिर इस के उदाहरण हैं. बंगलौर से 15 कि.मी. दूर यलहंका में बनने वाले जैन मंदिर में अब तक 65 लाख रुपए खर्च हो चुके हैं. देवन्नहल्ली में जिस मंदिर का निर्माण हो रहा है वह तो एक तीर्थधाम की शक्ल लेता जा रहा है. इस का बजट भी करोड़ों में होगा. सरकार को चाहिए कि इस प्रकार के फुजूलखर्चों पर रोक लगाए और इस धन का उपयोग शालाएं, कारखाने, अस्पताल, पुस्तकालय आदि बनवाने में करे. —नरेशकुमार जैन

*

पहले मैं सरिता को हिंदू विरोधी मानता था परंतु अब मेरा यह भ्रम टूट रहा है. यह पत्रिका तो हिंदू धर्म की कुरीतियों को दूर कर हिंदू समाज की सेवा कर रही है. हिंदुओं की हजारों साल की गुलामी का कारण उस के धर्म के ठेकेदार ही थे. उन्होंने कभी अपने गिरेबान में झांक कर नहीं देखा. यदि अब भी हम नहीं संभले तो भ्रष्टाचार, भाईभतीजावाद, आडंबर व झूठ पर खड़ा हिंदू समाज किस पतन के गड्ढे में गिरेगा यह समय ही बताएगा. -जितेंद्रकुमार

सरिता के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी फार्म 4, देखिए नियम 8

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि : पाक्षिक. 3, 4 व 5. मुद्रक, प्रकाशक व संपादक का नाम : विश्वनाथ. राष्ट्रीयता: भारतीय. पता: ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो इस समाचारपत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस की पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर होल्डर हैं : दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि., ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं.

(ह.) विश्वनाथ, प्रकाशक



सरित प्रवाह

पिछले वर्ष पंजाब में विधान सभा के चुनाव हुए जिन का विभिन्न अकाली दलों ने बायकाट किया था इस कारण से कि स्वतंत्र मतदान राज्य में संभव नहीं है, और वे भारत सरकार द्वारा कराए चुनावों में भाग ले ही नहीं सकते. अकालियों के बायकाट का नतीजा यह हुआ कि मतदान बहुत आंशिक था—कुल मतदाताओं में से केवल 10% ने अपने वोट डाले. बहुत से मतदाता तो आतंकवादियों की धमकी के कारण वोट डालने ही नहीं गए.

पर पंजाब सरकार के कड़े सुरक्षा प्रबंधों में मतदान हुआ. और नतीजा, अनुमान के अनुसार ही हुआ: कांग्रेस बहुमत से जीत गई.

जो भी हो, बेअंत सिंह के नेतृत्व में सरकार बन गई और चल निकली. बेअंत सिंह की सरकार राज्य के लोगों की सरकार थी, राज्यपाल और केंद्र की कम. और इस से वातावरण में कुछ ठंडक तो आई है.

इस के बाद कंवरपाल सिंह गिल को पुलिस का मुख्य निदेशक बनाया गया और उन की सूझबूझ और रणनीति ने वह काम किया जिस की सारे देश को पिछले 10 वर्षों से तलाश थी. एकएक कर के बंदूकधारियों के सरगने पकड़े या मारे जाने लगे. गिल के गुप्तचर आतंकवादियों के गुटों में प्रवेश कर गए और इन की गतिविधियों की जानकारी ने इन गिरफ्तारियों और सफाई को प्रोत्साहन दिया—आतंकवादियों ने घुटने तो नहीं टेके पर वे तितरबितर और हताश अवश्य हो गए हैं.

उधर जब जनसाधारण ने आतंकवादियों को घिसतेपिसते देखा तो वे भी मुखर हो गए. आतंकवादियों ने पिछ 10 वर्ष से जनता को भी पूरी तरह परेशा कर रखा था. ब्लैकमेल से धन ऐंठन निर्दोषों की हत्या, जिन के यहां पनाह ले उन की लड़कियों और बहुओं पर बलात्का उन के आम धंधे हो गए थे. जब तक पुलि और फौज निष्क्रिय थी, दुखी लो जबरदस्ती चुप थे. पर जब पुलिसफौज व सफलता प्राप्त करते देखा तो वे भी ख गए और आतंकवादियों को किसी भ प्रकार की सहायता मिलना बंद हो गया. इ प्रकार पंजाब में फिर पहले जैसी शांति पूरी नहीं तो आधीअधूरी ही सही, व्याप्त हो गई.

इस से प्रोत्साहित हो कर बेअंत सिं ने पंचायत के चुनावों का बीड़ा उठाया. य एक प्रकार से एक जुआ था और बेअंत सरकार की परीक्षा भी. और इस में वह ब अच्छे नंबरों से पास हो गई. मतदा लगभग 80% हुआ—जिस की किसी क उम्मीद नहीं थी. ये चुनाव राजनीतिक दलो के टिकटों और दलीय आधार पर नहीं हुए थे. इसलिए किसी राजनीतिक दल की हारजीत का प्रतीक नहीं माने जा सकते. पर जब सारे अकाली गुट यही कहें कि चुनावों में भरपूर धांधली हुई थी तो कहा जा सकता है कि कांग्रेस जीती है, क्योंकि चुनावों में धांधली के आरोप केवल हारने वाला लगाता है.

पंजाब में स्थिति के साधारणीकरण में ये चुनाव एक मील के पत्थर की तरह हैं. इन चुनावों से प्रोत्साहित हो कर बेअंत सिंह अब जिला परिषदों के चुनावों की तैयारी कर रहे हैं.

पंजाब की पंचायतों के चुनावों के नतीजों का असर अंतर्राष्ट्रीय सोचविचार पर भी पड़ा है. अमरीका और ब्रिटेन की सरकारों ने भी अपने यहां बसे सिख आतंकवादियों के समर्थक संस्थानों को नोटिस दे दिया कि अपनी दुकानें बंद करें. भारत के आतंकवादियों की सहायता के केंद्र ये देश अब नहीं रहेंगे. अब केवल पाकिस्तान ही इस सहायता का स्रोत रहेगा और यह देश भी बहुत लंबे अरसे तक भारत से अकेले नहीं जूझ सकता.

*

कुछ समाचारों में कहा गया है कि बाबरी मसजिद के ढहाए जाने के बाद जो धार्मिक दंगे हुए उन में मुसलमान अधिक संख्या में पुलिस की गोलियों से मारे गए.

इस पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ये मुसलमान सड़कों और गलियों में कर्फ्यू लगने के बाद भी क्या कर रहे थे? घरों से बाहर क्यों निकले थे जब किसी के भी घरों से निकलने पर पाबंदी थी?

दूसरा प्रश्न यह हो सकता है : क्या कारण है कि जहां जिस राज्य में भारतीय जनता पार्टी शासन कर रही थी वहां ये दंगे नहीं हुए, यदि हुए तो तब जब केंद्र में सत्तारूढ कांग्रेस ने इन राज्यों को केंद्रीय शासन में ले लिया? और कांग्रेस शासित राज्यों में क्यों हुए? विशेषतः दिल्ली और महाराष्ट्र में जो सब से अधिक सुव्यवस्थित, सुरक्षित माने जाते हैं.

*

सरकार वचनबद्ध है कि निजी नागरिक क्षेत्र में बैंक बनने, खुलने और चलने देगी. इस दिशा में रिजर्व बैंक ने इन नागरिक क्षेत्र के नए बैंकों के लिए जो शर्तें रखी हैं, वे ऐसी हैं कि उन्हें कोई मंजूर कर के नया बैंक स्थापित ही नहीं कर पाएगा. इस तरह सरकार का वादा केवल एक कागजी काररवाई रह जाता है.

पहली शर्त तो यह है कि इस की नकद पूंजी कम से कम 100 करोड़ होनी चाहिए, दूसरी यह कि किसी आयोजक की वोट शक्ति 1% से अधिक नहीं होगी, जबकि उन्हें कम से कम अपनी 25% पूंजी लगानी होगी. तीसरे, उसे सरकारी बैंकों की ऋण देने की प्रणाली ही अपनानी होगी जिस के अंतर्गत 50% से अधिक ऋण सरकार द्वारा निर्धारित समुदायों को कम ब्याज पर देना होगा. चौथे, बैंक का प्रधान कार्यालय उस शहर में नहीं होगा जहां किसी अन्य बैंक का प्रधान कार्यालय पहले ही से है.

यह इस तरह की बात है कि आप दौड़ प्रतियोगिता में नए प्रतियोगियों की एक टांग बांधने का प्रावधान कर दें और कहें, 'बेटे, अब आप दौड़ सकते हैं.'

ऐसी असंभव शर्तों पर कौन अपना धन बैंकों में लगाना चाहेगा? लगता है रिजर्व बैंक चाहता भी यही है ताकि सरकारी बैंकों को प्रतिस्पर्धा का सामना न करना पड़े और जनता सरकारी कर्मचारियों की उपेक्षा, बदनीयती व अकर्मण्यता का शिकार बनती रहे.

गत वर्ष के शेयर बाजार घोटाले में सरकारी बैंकों के जबरदस्त हाथ साबित होने से यह तो स्पष्ट हो ही गया कि बेईमानी, धोखाधड़ी और चोरी सरकारी संस्थानों के अफसरों और कर्मचारियों के लिए कोई अनदेखी चीज नहीं है.

*

दिल्ली राज्य मेडिकल कानफ्रेंस ने 3 वर्ष से 6 तक के बच्चों को स्कूलों में जबरदस्ती भेजने और पढ़ने पर मजबूर करने पर अपनी चिंता प्रकट की है. डाक्टरों का कहना है कि यह धारणा गलत है कि जल्दी स्कूली पढ़ाई शुरू करने से बच्चों के दिमाग की शक्ति बढ़ती है और उन्हें आगे के जीवन में कोई विशेष लाभ होता है.

एक बालचिकित्सा विशेषज्ञ का कहना है कि इस उम्र में बच्चों की मांसपेशियां विकसित होने की दशा में होती हैं, पर अभी वे पढ़ाई का बोझ और अनुशासन झेलने के लिए तैयार नहीं होतीं. हाथ और दिमाग का सामंजस्य कठिन होता

है. पेंसिलकलम पकड़ने में मुश्किल होती है. जोरजबरदस्ती करने का नतीजा होता है फेफड़ों और सांस की बीमारियां, बुखार, जोड़ों में दर्द, मानसिक तनाव आदि. 6 वर्ष से पहले बच्चों को स्कूल भेजने से उन के बचपन का सुनहरा काल पढ़ाई और अनुशासन के दबाव में मर जाता है और 8 या 9 बरस तक पहुंचने पर उसे पढ़ाई से घोर अरुचि हो जाती है.

इस के अतिरिक्त नई शिक्षा पद्धति में सरकार ने विषय इतने गूढ़ कर दिए हैं और इतनी पुस्तकें बच्चों पर लाद दी हैं कि उन से उठाए नहीं उठतीं.

पहले पाठशाला या पंडितजी, मास्टरजी की क्लासें घरों के पास ही महल्ले में होती थी जहां बच्चा खेलता अधिक था, पढ़ाई केवल अक्षर ज्ञान और गिनती तक सीमित थी. पर अब प्रतियोगिताओं का जमाना है. अच्छे स्कूलों में दाखिला भी बड़ों की प्रशासनिक सेवा में परीक्षा देने से कम कठिन नहीं होता और अगर किसी मनचाहे स्कूल में दाखिला नहीं मिलता तो बरसों तक बच्चे के मन पर गहरा धक्का रहता है.

अब शिक्षा क्योंकि सारी सरकारी है, इसलिए आवश्यक है कि सरकार के शिक्षा विभाग बच्चों पर इस नाजायज बोझ को कम करें.

*

बिहार की लालूप्रसाद यादव सरकार ने घोषणा की है कि राज्य की शिक्षण संस्थाओं में 'काम नहीं तो दाम नहीं' लागू किया जा रहा है. यदि शिक्षक व अमला हड़ताल करेगा तो उन्हें उस समय का वेतन नहीं मिलेगा. पर यह योजना केवल शिक्षण संस्थाओं ही में क्यों? क्यों नहीं सारे सरकारी अमले पर लागू की जाए?

हिमाचल प्रदेश की शांताकुमार की भाजपा सरकार ने इस मुद्दे पर कई महीने की घोर लड़ाई जीत कर एक मिसाल कायम कर दी है.

हमारे यहां, और अन्य सभी जनतांत्रि देशों में भी, कानून का आधार यह कि किसी व्यक्ति को तब तक कोई सज नहीं दी जा सकती जब तक कि यह साबि न हो जाए कि वह दोषी है. और दोषी भ तभी माना जाएगा जब आरोप लगा वाला खुले न्यायालय में जुर्म को साबित का दे, अभियुक्त को अपना बचाव करने क पूरा मौका दिए जाने के बाद.

इसी सिद्धांत के अनुसार पुलिस द्वार गिरफ्तार किए जाने के बाद उसे 24 घंटों मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने की व्यवस्थ है और जमानत पर छोड़े जाने की भी.

परंतु हमारे यहां पुलिस और सरका द्वारा जमानत पर छोड़े जाने का विरोध एक परिपाटी सी बन गई है. हर मुकदमे मे पुलिस कहती है कि मुलजिम जमानत पर छोड़ दिया गया तो वह गवाहों को बरगला देगा पर यह भी देखिए कि जो मनुष्य जेल के सींखचों के भीतर कैद है वह अपना सुबूत कैसे जुटाएगा, कैसे वकील करेगा, पैसे का इंतजाम करेगा, जिस के बिना वह अपना पक्ष समुचित रूप से न्यायाधीश के सामने पेश ही नहीं कर सकता.

जहां तक गवाहों के बरगलाए जाने का सवाल है, पुलिस भी गवाहों को बरगला सकती है. यह कहना कि इस मामले में पुलिस बिलकुल असहाय है, कुछ नहीं कर सकती जब तक अभियुक्त को जेल भेज कर लुंजपुंज, नाकारा न बना दिया जाए, पुलिस की अयोग्यता ही साबित करती है, विशेषतः जब पुलिस को गवाही पेश करने में पूरी छूट है और सरकार की सारी मशीनरी उस की पीठ पर है. ऐसी अवस्था में एक अकेले अभियुक्त को क्यों उस के नागरिक अधिकार से वंचित किया जाए.

आजकल यह होता है कि जज भी पुलिस से प्रभावित हो कर अभियुक्त को जेल भेज देते हैं और वह वहां पड़ा सड़ता रहा है, क्योंकि पेशियां कईकई महीनों बाद पड़ती हैं. और बिना जुर्म साबित हुए, बिना मुकदमे की कारखाई पूरी हुए अभियुक्त

उस जुर्म की पूरी सजा काट लेता है.

तथाकथित दहेज की मांग और बहुओं के जलने, आत्महत्या के मामलों में तो यह साधारण सी बात हो गई कि लड़कीवालों की किसी बात पर लड़केवालों से बिगड़ गई और उन दोनों के झगड़े में लड़की ने आत्महत्या कर ली, तो तत्काल लड़की के मातापिता पति, पति के मातापिता तीनों को जेल में बंद कराने के लिए पूरी कोशिश करते हैं, चाहे इन का कोई दोष न हो. यदि ये लोग जमानत पर छूटने की अर्जी लगाते हैं तो लड़की वाले भरसक कोशिश करते हैं कि अर्जी नामंजूर हो जाए और यदि कोई जज अभियुक्तों को जमानत पर छोड़ता है तो लड़कीवाले उच्च न्यायालय पहुंच जाते हैं कि पति, सासससुर को क्यों छोड़ा गया?

पुलिस द्वारा पकड़े जाने और मुकदमे के फैसले होने तक बिना कारण जेल में बंद होने से बचने के लिए भारतीय फौजदारी कानून की धारा 438 के अंतर्गत पूर्वाभासी (ऐंटिसिपेटरी) जमानत का प्रावधान है जिस में कोई व्यक्ति, जिसे पकड़े जाने की आशंका हो, सेशन जज के यहां अर्जी लगा कर जमानत पर छोड़े जाने का आदेश ले सकता है. और दिल्ली व आंध्र प्रदेश के उच्च न्यायालयों के फैसले के अनुसार यदि सेशन जज ऐसी पूर्वाभासी जमानत नामंजूर कर दे तो वह व्यक्ति उच्च न्यायालय में अपील कर सकता है. और पूर्वाभासी जमानत प्राप्त कर सकता है. यह एक बहुत प्रशंसनीय फैसला है, क्योंकि निचली अदालतें अकसर पुलिस के प्रभाव में ज्यादा रहती हैं.

*

अभी तक सरकारी कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड की जमीन से कोयला खोदने और बेचने की मोनोपोली, एकाधिकार था. कंपनी कोयला अपने नियमित दामों पर कोटे वालों को देती थी. पर कोटे वाले उस से भारी मुनाफा कमाते थे, जिस का काफी भाग कंपनी के अफसरों और स्टाफ को मिलता था. सरकारी अमले की इस चोरबाजारी को रोकने के लिए सरकार ने अब फैसला किया है कि कोयला बजाय कोटे वालों के थोक व्यापारियों को बेचा जाएगा जो कम से कम एक बार में 3,000 टन कोयला उठा सकें और मूल्य भी पहले से ज्यादा दे सकें.

अब तक होता यह था कि जितना कोयला खानों में से निकलता था उस का लदान नहीं हो पाता था और वह खानों के ऊपर पड़ा रहता था. इस भंडार में चोरी बहुत होती थी (जिस में अफसरों, नौकरों और स्थानीय पुलिस आदि की काफी पत्ती रहती थी).

सरकार द्वारा निर्धारित कीमतों और बाजारभाव में काफी अंतर था. जैसे साफ्ट कोक की सरकारी बिक्री कीमत 178 रुपए प्रतिटन थी जबकि बाजारभाव 1,400 रुपए था. जिन लोगों को कोटा मिलता था वे लंबा मुनाफा कमाते थे.

थोक व्यापारियों के बीच में आने से अब कंपनी कोयले को नीलाम कर सकती है. इस से सरकारी कंपनी को दाम अच्छे मिलेंगे, कोयला खदानों से जल्दी उठेगा, कोयले में जो पत्थर भर कर भेजा जाता था, वह बेईमानी कम होगी, और उपभोक्ता को समय पर बाजारभाव से मिलेगा.

हमारे यहां अभी भी बिजली का उत्पादन कोयले से होता है. अधिकांश उद्योग कोयले पर निर्भर रहते हैं. इस प्रकार कोयला लगभग हर सामान में काम आता है. इस का बाजारभाव उचित होने से सारी वस्तुओं की कीमतों पर असर पड़ सकता है.

कोयले का थोक व्यापार खोलने के साथसाथ सरकार को कोयला खदान का काम भी नागरिक क्षेत्र के लिए खोल देना चाहिए. अभी तक यह सरकारी मोनोपोली है. और इस प्रकार बड़ी धांधली का केंद्र है. कोयले के सरकारी एकाधिकार ने कोयला माफिया को जन्म दिया है जो बिहार जैसे राज्यों में बड़ी भारी अराजकता का स्रोत है●

कैपिटेशन फीस

निजी कालेजों पर अदाल



लेख • विनोद श्रीवास्त

'अंधगज न्याय' नामक एक पुरानी कहानी में कुछ ऐसे अंधों का जिक्र किया गया है, जिन्होंने एक बड़े हाथी को अपने-अपने हाथों से टटोल कर उस का स्वरूप जानने का प्रयास किया था. मजेदार बात यह थी कि जिस अंधे ने हाथी के जिस अंग को टटोला था, उस ने उसी अंग को संपूर्ण हाथी मान लिया था और उस ने उसी अंग के अनुरूप हाथी के स्वरूप की व्याख्या कर डाली थी.

कैपिटेशन फीस के मामले में 4 फरवरी को उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए ऐतिहासिक फैसले की तुलना 'अंध गज न्याय' के अंधों और हाथी से की जाए तो शायद कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी. कारण, किसी ने कैपिटेशन फीस के फैसले को निजी कालेजों के पक्ष में बताते हुए कहा कि इस फैसले ने उन के ज्यादा फीस वसू के मार्ग को प्रशस्त कर दिया है, जबकि ब की राय में फैसले का निहित अर्थ बिलकु विपरीत है. ऐसे लोगों का कहना है कि फैसले ने शिक्षा के नाम पर दुकानदा चलाने वालों के मंसूबों पर पानी फेर दि है. इस प्रकार इन दो अर्थों के बीच असलियत लुप्त हो गई और सर्वो न्यायालय के फैसले का वस्तुनिष्ठ भ सामने नहीं आ पाया.

वास्तव में यह फैसला जटिल है, किन्हीं कारणों से इसे जटिल रूप में पे

की टेढ़ी निगाह



केपिटेशन फीस पर अदालती फैसले से शैक्षिक जगत को लाभ कम नुकसान ज्यादा होगा.

करने की कोशिश की गई है—इस के बारे में तो दो राय हो सकती है, पर इस मामले में दो राय कतई नहीं हो सकती कि इस फैसले से शैक्षिक जगत को वांछित लाभ कम, नुकसान अधिक होगा. इतना ही नहीं, मेडिकल कालेज में पढ़ने वाले छात्रों को भी अब एक तरह से ऐसे कालेजों में पढ़ने का अधिभार देना होगा जो किसी भी रूप में उचित नहीं होगा. हो सकता है, उच्चतम न्यायालय के ताजा फैसले से मिले सदमे को छात्र समुदाय किसी तरह ओढ़ने में सफल हो जाए, पर इस से उबरने में वह किसी भी रूप में सफल नहीं हो पाएगा. इस फैसले से उस के समक्ष ऐसी विडंबनापूर्ण स्थिति क्यों पैदा हुई है, यह फैसले के निहित अर्थ को जान कर अंदाजा लगाया जा सकता है.

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने ताजे फैसले में संविधान के अनुच्छेद 21 का हवाला देते हुए कहा है कि इस के तहत नागरिकों को शिक्षा

कैपिटेशन फीस के मामले में हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने एक ऐसा फैसला दिया है जिसे कुछ लोग निजी मेडिकल कालेजों के पक्ष में और कुछ विपक्ष में मान रहे हैं. छात्रों से भी यह फैसला न निगलते बन रहा है न उगलते. क्या ऐसा निर्णय सचमुच समस्या का समाधान करने में सक्षम होगा?

प्राप्त करने का मौलिक अधिकार तो जरूर प्राप्त है, किंतु यह उन का संपूर्ण अधिकार नहीं है. इस अधिकार के तहत 14 वर्ष की उम्र तक के बच्चों को मुफ्त शिक्षा तो प्राप्त हो सकती है, पर इस के बाद भी उन्हें मुफ्त शिक्षा मिलती रहे, यह बहुतकुछ राज्य की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है.

इसी प्रकार न्यायालय ने अपने फैसले में यह भी कहा है कि देश के हर नागरिक को निजी शिक्षण संस्था स्थापित करने का मौलिक अधिकार तो है, पर उसे अपनी संस्था को मान्यता दिलाने का मौलिक अधिकार नहीं है. उसे अपनी संस्था को मान्यता दिलाने के लिए कुछ निश्चित शर्तों या दिशानिर्देशों को पूरा करना होगा. सर्वोच्च न्यायालय की ओर से तैयार दिशानिर्देशों (बाक्स देखिए) का फलन किए बगैर सरकार, विश्वविद्यालय अथवा कोई अन्य प्राधिकरण भी ऐसी किसी संस्था को मान्यता देने में सक्षम नहीं है.

इस ताजे फैसले से पूर्व पिछले वर्ष सर्वोच्च न्यायालय की दो सदस्यीय खंडपीठ की ओर से मोहिनी जैन के मामले में न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह ने फैसला सुनाया था कि जीवन और स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों में शिक्षा का अधिकार भी अंतर्निहित है. पर अदालत के उस फैसले से असहमति जताते हुए आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु के कई निजी मेडिकल कालेजों के प्रबंधकों ने उस के विरोध में याचिकाएं दाखिल कर दीं. यों इसी मुद्दे पर आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने भी पिछले वर्ष एक फैसला दिया था, जिस में निजी मेडिकल और इंजीनियरिंग कालेजों में 50 फीसदी स्थानों पर कैपिटेशन फीस ले कर दाखिला देने के प्रावधानों को रद्द कर दिया गया था, जबकि राज्य सरकार ने ऐसे कालेजों में प्रबंधक कोटे से 50 फीसदी छात्रों से कैपिटेशन फीस ले कर दाखिला देने की अनुमति दे रखी थी.

उन्हीं दायर याचिकाओं पर सर्वोच्च न्यायालय की 5 सदस्यों वाली संविधान पीठ ने जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार से संबंधित संविधान के अनुच्छेद 21 की व्याख्या की और 3:2 के बहुमत से अपना यह ताजा फैसला सुनाया. इस क्रम में उस ने शैक्षिक संस्थाओं के संबंध में आंध्र प्रदेश के विनिमयन कानून की धारा 3(1) को रद्द करने के उच्च न्यायालय के पूर्व फैसले को सही बताया और कहा कि इस से संविधान में प्रदत्त समानता के उपबंध का उल्लंघन होता है.

नए फैसले के निहित अर्थ के अनुसार, सर्वोच्च न्यायालय ने व्यावसायिक स्तर पर कालेज चलाने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने का निर्देश दिया है. इस प्रकार केवल धर्मार्थ उद्देश्यों से गठित संस्थाओं को ही ऐसे कालेज चलाने की सरकारी अनुमति मिल पाएगी. जहां तक कैपिटेशन फीस वसूलने का सवाल है, इस संबंध में सर्वोच्च न्यायालय ने निजी कालेजों के अधिकारों की पुष्टि कर दी है, पर कहा है कि वे अदालत के दिशानिर्देशों के मुताबिक ही फीस वसूल कर सकेंगे.

इस प्रकार इस फैसले का अर्थ कैपिटेशन फीस के समर्थन में भी समझा जा



आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री जनार्दन रेड्डी : निजी मेडिकल कालेज खोलने की अनुमति के कारण मुख्यमंत्री पद से भी हाथ धोना पड़ा.

सकता है. इस के तहत आधे छात्रों से सरकारी कालेजों के बराबर ही फीस ली जा सकेगी, जबकि आधे छात्रों को बढ़ी हुई दर पर फीस देनी पड़ेगी. प्रवेश भी योग्यता के आधार पर होगा. केवल ज्यादा या मनमाने आधार पर फीस अदा करने की शर्त पर प्रबंधक किसी छात्र विशेष को दाखिला नहीं दे सकेंगे.

कैपिटेशन फीस और निजी कालेजों से संबंधित विवाद का मुख्य मुद्दा क्या है और किस प्रकार इसे राजनीति के दांवपेच से जोड़ा गया, यह जानने के लिए पीछे की ओर लौटना पड़ेगा. असल में इस विवाद ने जोर उस समय से पकड़ा है, जब आंध्र प्रदेश में निजी मेडिकल और डेंटल कालेज खोलने की अनुमति राज्य सरकार ने दी. यह अनुमति प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री एन. जनार्दन रेड्डी ने 28 जुलाई 1992 को एक अधिसूचना जारी कर के दी थी.

अधिसूचना जारी होने के तत्काल बाद विरोधी दल तेलगूदेशम, असंतुष्ट कांग्रेसी और छात्र समुदायों ने जनार्दन रेड्डी के उस कदम का विरोध करना शुरू कर दिया था. उन के ऊपर यह आरोप भी लगा कि उन्होंने यह फैसला अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगियों को अंधेरे में रख कर किया. तेलगूदेशम ने तो यहां तक कह डाला कि यह भ्रष्टाचार की अति है क्योंकि उन्होंने ऐसे कालेजों के मालिकों से 50 करोड़ रुपए की रिश्वत ली है. इस मामले में जनार्दन रेड्डी को गलत ढंग से काम करने का दोषी बता कर अदालत से न्याय की गुहार भी की गई.पर सर्वोच्च न्यायालय ने कैपिटेशन फीस के मामले में सुनाए गए ताजे फैसले में स्पष्ट कर दिया है कि उस ने अभी जनार्दन रेड्डी के खिलाफ दायर याचिकाओं पर अपना फैसला नहीं सुनाया है.

दूसरी तरफ अपने ऊपर लगे भ्रष्टाचारों के आरोपों की काट करते हुए जनार्दन रेड्डी कहते हैं कि सरकार के पास ऐसे कालेज खोलने के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था नहीं है. इस हालत में राज्य के बहुतेरे छात्रों को मेडिकल शिक्षा पाने के लिए राज्य से बाहर जाना पड़ता है. हम ने जो फैसला लिया था, वह इन्हीं समस्याओं के समाधान के मद्देनजर था.

पर यदि जनार्दन रेड्डी के उस फैसले पर नजर डाली जाए तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि भले ही उन्होंने वह कदम जनकल्याण के मद्देनजर उठाया हो, लेकिन वह दूध के धुले नहीं कहे जा सकते. कारण, उन के द्वारा निजी कालेज खोलने की अनुमति पाने वालों की सूची में कई नाम ऐसे भी रहे, जिन की बदौलत जनार्दन रेड्डी की नीयत पर शक उठना लाजिमी हो गया.

उस सूची में उन के एक समर्थक कांग्रेसी सांसद सुब्बारामी का भी नाम दिखाई पड़ा, जो 'शराब सेठ' के नाम से मशहूर हैं. उन्हें उपकृत करने के लिए जनार्दन रेड्डी ने दो मेडिकल कालेज खोलने की अनुमति बतौर तोहफा पेश की थी, जबकि उन के पास इस प्रकार का न तो कोई पूर्व अनुभव था और न मेडिकल कालेज की कोई इमारत ही. कांग्रेस की केंद्रीय सत्ता में शीर्ष पद पर रहने वाले आंध्र प्रदेश के एक वरिष्ठ कांग्रेसी से संबंधित दो ट्रस्टों को भी

केवल मनमरजी की बात नहीं

कैपिटेशन फीस के मामले में अपना फैसला देने के साथसाथ सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च शिक्षा के निमित्त कुछ दिशानिर्देश भी दिए हैं, वे इस प्रकार हैं :

● किसी भी व्यक्ति, संस्था अथवा कंपनी को व्यक्तिगत रूप से व्यावसायिक मेडिकल, इंजीनियरिंग अथवा टेक्निकल कालेज खोलने की अनुमति नहीं मिल पाएगी.

● सिर्फ वही धर्मार्थ या समाजसेवी संस्थाएं ऐसे कालेज खोलने की अनुमति पा सकेंगी जिन का सोसाइटी पंजीकरण एक्ट 1860 के तहत पंजीयन हुआ होगा.

● सरकार द्वारा ऐसे कालेज खोलने की अनुमति पाई संस्थाएं भी यदि 4 फरवरी 1993 से 6 माह के बीच ऐसी शर्त नहीं पूरी कर पाती है तो उन्हें भी अपनी मान्यता से हाथ धोना पड़ेगा.

● इस प्रकार के निजी व्यावसायिक कालेजों में कुल कितनी सीटें होंगी, इस का निर्धारण उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा होगा. ये प्राधिकरण केंद्र सरकार, विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इंडियन मेडिकल कौंसिल, इंडियन कौंसिल आफ टेक्निकल एजुकेशन अथवा ऐसी अन्य संस्थाओं के होंगे. कालेजों में सीटों की बढ़ोतरी भी इन्हीं की अनुमति से होगी.

● 50 फीसदी सीटों पर वही शुल्क लिया जाएगा जितना इस प्रकार के सरकारी कालेजों में लिया जाता है. अन्य 50 फीसदी सीटें भुगतान सीटें होंगी, जिन के अंतर्गत दाखिला लेने अथवा पढ़ने वाले छात्रों को उसी संस्था में उसी शिक्षा हेतु ऊंची फीस देनी होगी.

● इन दोनों तरह की सीटों पर प्रवेश हेतु अर्हता और अन्य शर्तें समान होंगी. प्रबंधक अपनी मरजी से किसी परिवार, समुदाय या जाति के आधार पर कोई कोटा आरक्षित नहीं कर सकेंगे.

● प्रवेश के लिए दोनों प्रकार की सीटों हेतु सूचना सक्षम प्राधिकरण द्वारा ही दी जाएगी. प्राधिकरण एक बार इस आशय की सूचना प्रत्येक संबद्ध राज्य में जारी करेंगे. उसी प्राधिकरण द्वारा प्रवेश हेतु प्रार्थनापत्र भी जारी किए जाएंगे.

● संबद्ध अथवा नियत प्राधिकरण एक पुस्तिका भी जारी करेगा, जिस में पाठ्यक्रम, सीटों की संख्या, कालेजों की अवस्थिति तथा प्रत्येक कालेजों द्वारा ली जाने वाली फीसों का

उन्होंने इसी लिहाज से मेडिकल कालेज खोलने की अनुमति दी.

अपने ही फैसले की बहती गंगा में हाथ धोने के लाभ से खुद जनार्दन रेड्डी भी वंचित न रह पाए. उन्होंने 11 जुलाई 1992 को 'जनप्रिय' नामक एक नई घरेलू संस्था का गठन किया और अपने भाई पद्मनाभ रेड्डी को उस का सचिव तथा अपनी पत्नी राज्यलक्ष्मी को उस संस्था का कोषाध्यक्ष बना दिया. गौरतलब है कि अपनी इस संस्था को भी उन्होंने एक मेडिकल, एक डेंटल और एक फार्मेसी कालेज खोलने की अनुमति दी थी.

इसी संदर्भ में एक अन्य चर्चित नाम विजयकुमार राजू का भी है.

राजू तेलगूदेशम के सांसद हैं. पिछले वर्ष जब नंदमूरि तारक रामाराव का राज्य में प्रभाव क्षेत्र धूमिल करने और तेलगूदेशम को तोड़ने की गतिविधियां चल रही थीं, तब तेलगूदेशम संसदीय पार्टी के विभाजन में मुख्य भूमिका निभाने के एवज में इन्हीं का नाम सामने आया था. बताया जाता है कि उन्होंने यह सब कांग्रेस के इशारे पर किया था. जब जनार्दन रेड्डी ने निजी क्षेत्र में मेडिकल कालेज खुलवाने का फैसला किया, तब भी विजयकुमार राजू के एहसानों का स्मरण उन के मन में ताजा रहा. उन्होंने उन्हें भी एक मेडिकल कालेज खोलने की अनुमति दी.

सर्वोच्च न्यायालय के ताजे फैसले के तत्काल बाद जब इस प्रतिनिधि ने विजयकुमार राजू से मुलाकात की तो उन की प्रतिक्रिया थी, ''अदालत ने कहीं भी यह नहीं कहा है कि ऐसे कालेज बंद हों. फीस

विवरण होगा. इस में यह भी बताया जाएगा कि प्रवेश हेतु न्यूनतम अर्हता कितनी होनी चाहिए और प्रवेश का तरीका क्या है. वह अपने निर्देश अनुसार संपूर्ण प्रदेश में सामान्य प्रवेश परीक्षा भी आयोजित कर सकता है.

• प्रार्थनापत्र में अलग से एक नियत स्थान होगा, जिस में प्रवेशार्थी यह लिख सकेंगे कि वे किस कोटे में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं. प्रार्थी अपनी सुविधानुसार वरीयता क्रम में प्रवेश लेने के लिए तीन व्यावसायिक कालेजों का क्रम से नाम भी उसी अलग स्थान में लिख सकेंगे.

• सरकार अथवा विश्वविद्यालय मेरिट से संबद्ध 50 फीसदी सीटों हेतु सम्मिलित प्रवेश परीक्षा आयोजित करेंगे और परिणाम को दो अग्रणी समाचारपत्रों में प्रकाशित कराएंगे. ऐसा एक समाचारपत्र अंगरेजी का होगा और दूसरा अन्य संबद्ध भाषा का.

• मेरिट की 50 फीसदी सीटों पर दाखिले के बाद अन्य 50 फीसदी भुगतान सीटों पर प्रवेश हेतु 10 दिन का समय दिया जाएगा. इन भुगतान वाली 50 फीसदी सीटों पर भी दाखिला मेरिट के आधार पर ही होगा.

• भुगतान सीट के अंतर्गत प्रवेश पाए अभ्यर्थियों को राज्य सरकार द्वारा गठित समिति के निर्देश के अनुसार फीस देनी होगी. यह फीस उन्हें एकमुश्त या कई किस्तों में जमा करनी होगी. किस्तों में जमा करने की सूरत में बैंक गारंटी अथवा नकद जमानत देनी होगी. निजी व्यावसायिक कालेजों द्वारा भुगतान श्रेणी की सीटों हेतु कितना भुगतान लिया जाएगा, इस का निर्धारण उपकुलपति, शिक्षा सचिव या उस के द्वारा मनोनीत कोई अन्य अधिकारी और मेडिकल एवं तकनीकी शिक्षा के निदेशक से बनी समिति करेगी. यह समिति संबद्ध कालेजों से उन के विचारों, खर्चों आदि को ध्यान में रख कर अपना फैसला करेगी.

• ऐसा कोई भी निजी मेडिकल कालेज, जो सरकारी अस्पताल की सुविधा लेगा, वह सरकार द्वारा सहायता प्राप्त कालेज माना जाएगा.

• सभी निजी व्यावसायिक कालेज नियत प्राधिकरण द्वारा अलाट किए गए छात्रों को अपने यहां दाखिला देने के लिए बाध्य होंगे.

• नियत प्राधिकरण प्रवेश के बाद प्रतीक्षा सूची भी जारी करेगा, जिस में उस अंतिम प्रवेश पाए छात्र के प्राप्तांकों का जिक्र होगा. किसी आकस्मिक कारणों से रिक्त हुए स्थान पर उसी प्रतीक्षा सूची के अनुरूप दाखिला होगा. ऐसे दाखिलों की अंतिम तिथि क्या हो, इस का निर्धारण भी नियत प्राधिकरण ही करेगा. •

लेने के मामले में भी न्यायालय ने विपरीत फैसला नहीं दिया है."

बकौल राजू, "सरकार की अक्षमता का ही यह प्रमाण है कि सरकारी स्तर पर इस तरह के कालेजों की स्थापना नहीं हो पा रही. इस क्षेत्र में यदि निजी संस्थाओं को प्रवेश मिल रहा है तो इसे गलत नहीं माना जा सकता. निजी क्षेत्र भी इसे व्यापार नहीं, अपने दायित्व की पूर्ति का साधन मानते हैं. इसलिए इस मामले में उठाया गया वावैला सिर्फ राजनीतिप्रेरित ही कहा जा सकता है."

गौरतलब है कि आंध्र प्रदेश में जब तेलगूदेशम की सरकार बनी थी, तब उस ने कैपिटेशन फीस और उच्च शिक्षा के निजीकरण को व्यावसायिक मान कर इस प्रकार के समस्त मेडिकल कालेजों का अधिग्रहण कर लिया था और कैपिटेशन फीस समाप्त कर डाली थी. किंतु राज्य में कांग्रेस की सरकार बनते ही पुराने फैसले को फिर से बहाल कर डाला गया. सरकार के इस फैसले के बाद इस प्रकार के कालेज खोलने के इच्छुक 57 लोगों या संस्थाओं के आवेदन प्राप्त हुए जिन में से सिर्फ 12 कालेजों के लिए ही स्वीकृति मिली. जिन 12 कालेजों की खोलने की अनुमति मिली, उन में कुल मिला कर 1,200 सीटें थीं.

उन में 50 फीसदी यानी 600 सीटें प्रबंधक कोटे के तहत थीं. इन में दाखिला पाने के लिए 8 लाख रुपए प्रति सीट की दर से कैपिटेशन या डोनेशन फीस मुकर्रर की गई थी. यों इसी कैपिटेशन फीस के सिद्धांत के मुताबिक कर्नाटक में प्रति सीट 5 लाख रुपए लिए जाते हैं.



विजयकुमार राजू : अदालत ने कहीं भी यह नहीं कहा है कि ऐसे कालेज बंद हों.

उधर आंध्र प्रदेश में निजी कालेजों के खोलने संबंधी अधिसूचना जारी होने के महज दो दिनों के भीतर ही उच्चतम न्यायालय का एक ऐसा फैसला आ गया, जिस से इस अधिसूचना की चूलें हिलने लगीं. उच्चतम न्यायालय ने वह फैसला कर्नाटक के मेडिकल कालेजों में कैपिटेशन फीस के खिलाफ छात्रों द्वारा दायर याचिका पर दिया था. उस फैसले में भी अदालत ने कैपिटेशन फीस की वसूली को गैरकानूनी बताया था.

उस फैसले के बाद आंध्र प्रदेश के विवाद ने भी एक नया मोड़ ले लिया. विवाद के जोर पकड़ने और पूरे मुद्दे के विवादास्पद हो जाने के बाद राष्ट्रपति ने 26 अगस्त 1992 को एक अध्यादेश जारी कर दिया. उस अध्यादेश के मुताबिक मेडिकल और दंतचिकित्सा कालेजों की स्वीकृति का अधिकार राज्य के हाथ से निकल कर भारतीय चिकित्सा परिषद और भारतीय दंत चिकित्सा परिषद के हाथों में चला गया. अध्यादेश के अनुसार, ऐसे नए खुले कालेजों को भी परिषद से स्वीकृति लेना अनिवार्य हो गया. छात्रों ने उस अध्यादेश को अपनी दूसरी विजय माना था.

गौरतलब है कि छात्रों की याचिका पर ही आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय की पूर्णपीठ ने निजी मेडिकल कालेज खोलने संबंधी अधिसूचना को गैरकानूनी ठहराया था. बाद में इसी मुद्दे में लिपटे भ्रष्टाचार के आरोपों की वजह से एन. जनार्दन रेड्डी को आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री की गद्दी छोड़नी पड़ी थी.

अब इस नए फैसले के बाद कैपिटेशन फीस और निजी कालेजों के संदर्भ में लड़ी जाने वाली लड़ाई पर पूर्णविराम तो जरूर लग गया है, पर कुछ ऐसी आशंकाएं भी पैदा हो गई हैं, जिन का शमन होना निहायत जरूरी है. इस संदर्भ में यह सवाल उठना भी स्वाभाविक है कि नागरिकों के शिक्षा के मूल अधिकार के प्रति सरकार का क्या दायित्व है और वह इसे पूरा करने में किस हद तक सक्षम है.

जहां तक तथ्य का सवाल है, यह एक जानी हुई सी बात है कि सरकार शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने में नाकामयाब साबित हुई है. बढ़ती आबादी के अनुपात में न तो वह शैक्षिक संसाधनों का विकास कर पा रही है और न उच्च शिक्षा संस्थान ही खोल पा रही है. अब यदि इस दायित्व को पूरा करने के लिए निजी क्षेत्र आगे आ रहे हैं तो उन के कदमों में बेड़ियां डालने की बजाय प्रोत्साहन देने की बात कही जा सकती है.

उच्चतम न्यायालय का फैसला जहां एक ओर प्रोत्साहन देने की बात कर रहा है, वहीं उस में सैकड़ों अड़ंगे लगाने के निर्देश भी भरे हुए हैं. जहां तक मुफ्त शिक्षा की बात है तो प्राथमिक स्तर की मुफ्त शिक्षा के कुपरिणाम सामने आने लगे हैं, जबकि उसी स्तर पर पैसे दे कर शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या के साथसाथ उपयोगिता भी बढ़ती जा रही है. मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में भी ऐसे ही परिणामों की प्रतीक्षा की जा सकती है.

इसी प्रकार न्यायालय के ताजे फैसले से निजी कालेजों में मनमाने आधार पर फीस वसूलने की मुहिम पर रोक तो जरूर

लगी है, पर इस आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इस फैसले से ऐसे कालेजों में प्रवेश के समय चोरबाजारी की प्रवृत्ति भी बढ़ सकती है. एक ही कालेज में दो भिन्न शैलियों के प्रवेश की व्यवस्था से शिक्षार्थियों के दो वर्ग बन जाएंगे जिन के अपनेअपने पूर्वाग्रह होंगे. जाहिर है, इस के चलते उन का उन संस्थाओं में प्रवेश का उद्देश्य ही अधूरा नहीं रहेगा, वरन उन के भविष्य का नक्शा भी दो भिन्न प्रकार के रंगों से भरा होगा, जो समाज को अपनेअपने तरीके से प्रभावित करेगा. फिर इस की कीमत भी समाज को ही चुकानी होगी.

उदाहरण के लिए यदि ऐसे किसी कालेज में प्रवेश हेतु 100 स्थान होंगे तो उन में 50 स्थान उन छात्रों से भरे जाएंगे जो योग्यताक्रम में ऊपर होंगे और जो सरकारी कालेजों के बराबर फीस देंगे. इन छात्रों में गरीब और अमीर दोनों होंगे. जाहिर है, इन छात्रों को पढ़ाने में काम आने वाले समस्त साधनों और शिक्षकों के खर्चों की पूर्ति में निजी कालेज सरकारी कालेजों के बराबर शुल्क ले कर इन्हीं छात्रों से पूरा नहीं कर पाएंगे.

एक तरह से यह उन के लिए सरासर घाटे का सौदा रहेगा. पर इसी घाटे को पूरा करने के लिए उन के पास 50 और स्थान हैं जिन में प्रवेश लेने के इच्छुक छात्रों से इतनी फीस ले लेंगे जिन से उन का घाटा तो पूरा हो ही, वे लाभ की श्रेणी में भी आ सकें. यह बात दूसरी है कि वे अदालत के दिशानिर्देशों के मुताबिक ही फीस लेंगे. पर वह फीस भी पहली श्रेणी से ज्यादा ही होगी.

इतने पर भी यदि उन का घाटा पूरा नहीं होता है तो निश्चित रूप से अघोषित ही सही, वे ज्यादा फीस वसूलेंगे, जिसे अदा करना छात्रों और अभिभावकों की विवशता होगी.

इस श्रेणी में भी गरीबअमीर सभी छात्र होंगे और उन्हें इस श्रेणी में पढ़ने के कारण कालेज के घाटे को पूरा करने के लिए अलग से शुल्क देना पड़ेगा. दूसरे शब्दों में यह उन पर अधिभार ही होगा.

हो सकता है, यह सब काम अदालत के फैसले के नाम पर हो, पर यह सरासर अन्याय की ही श्रेणी में होगा. अगर अदालत द्वारा दिए गए किसी फैसले से अन्याय की आशंका पैदा होती हो तो सवाल बहुत विकट हो जाता है. अदालत के नए फैसले की विकटता भी शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक वातावरण में धुंध ही बिखेर सकती है. ●



"धर्म के नाम पर राजनीति... छिः छिः! कितनी गिरी हुई बात है. अरे राजनीति ही करनी है तो जातपांत, अगड़ेपिछड़े, अमीरगरीब, बहुसंख्यकअल्पसंख्यक और कमजोर वर्गों के नाम पर कर लो."

बोधगया आंदोलन

बुद्ध अवतार व बुद्ध वचनों के संदर्भ

लेख • कंवल भारती

बोधगया आंदोलन के नेताओं ने विश्व हिंदू परिषद के इस तर्क का खंडन किया है कि 'बुद्ध' हिंदू देवता विष्णु के अवतार थे इसलिए महाबोधि मंदिर पर हिंदुओं का अधिकार है.' इस तर्क की पृष्ठभूमि में दो प्रश्न उत्पन्न होते हैं. पहला यह कि क्या वास्तव में बुद्ध विष्णु के अवतार थे? और दूसरा यह कि क्या बोधगया संघर्ष बुद्ध के धर्म के अनुरूप है? हम इन प्रश्नों पर दो अलगअलग दृष्टियों से विचार करेंगे. पहली दृष्टि बुद्धावतार की है और दूसरी बुद्ध के धर्म की. आइए, पहले प्रश्न पर विचार करें.

बुद्धावतार एक पौराणिक मिथक है. पुराणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अवतार लेने का कार्य हिंदू देवताओं में विष्णु के अधीन है. विष्णु ने संपूर्ण मनुष्यता के कल्याण के लिए अवतार ग्रहण नहीं किया, बल्कि उन के अवतार लेने का उद्देश्य

गौओं और ब्राह्मणों आदि की रक्षा क
था. उदाहरण के लिए विष्णु ने वै
संस्कृति के विरोधी हिरण्यकशिपु
मारने के लिए नरसिंह का अवतार ग्र
किया, असुर राजा बलि का साम्रा
ब्राह्मणों को दिलाने के उद्देश्य से वामन
धारण किया, ब्राह्मणविरोधी क्षत्रियों
पृथ्वी को खाली कराने
लिए परशुराम का अवत
लिया एवं हिंसक यज्ञों
विध्वंसक रावण का ना
करने के मकसद से राम
रूप में अवतार लिया.

ब्राह्मण तथा पुरा
ग्रंथों के अ
गाहन से
भी ज्ञात हो
है कि अवत
लेने के प्र
पर ब्रह्मा औ
विष्णु के बी
घोर प्रतिद्वंद्वि
थी. अवत
की कथा ब्रह्





बोधगया का महाबोधि मंदिर : इस के स्वामित्व का आकर्षण ही विवाद का कारण बना हुआ है.

से आरंभ होती है जिस ने, कहा जाता है कि, पहले दो अवतार लिए 1. वराह और 2. मत्स्य. किंतु विष्णु के अनुयायियों ने इसे मानने से इनकार कर दिया. उन्होंने न केवल ब्रह्मा के इन अवतारों के लिए भी विष्णु को प्रमुख पात्र माना, बल्कि विष्णु के बहुत से अन्य अवतार भी पैदा कर दिए.

विष्णु के अवतारों की सही संख्या के विषय में मतभेद है. अलगअलग पुराणों में अवतारों की सूची भी अलगअलग है. कुछ पुराणों की सूचियां इस प्रकार हैं :

हरिवंश पुराण : 1. वराह, 2. नरसिंह, 3. वामन, 4. परशुराम, 5. राम, 6. कृष्ण.

वराह पुराण : 1. कूर्म, 2. मत्स्य, 3. वराह, 4. नरसिंह, 5. वामन, 6. परशुराम, 7. राम, 8. कृष्ण, 9. बुद्ध, 10. कल्कि.

वायु पुराण : 1. नरसिंह, 2. वामन, 3. वराह, 4. कूर्म, 5. संग्राम, 6. आदिवक, 7. त्रिपुरारी, 8. अंधकार, 9. ध्वज, 10. वर्त, 11. हलाहल, 12. कोलाहल.

भागवत पुराण : 1. कौमार सर्ग (सनक, सनंदन, सनातन, सनतकुमार), 2. वराह, 3. नारद, 4. नरनारायण, 5. कपिल, 6. दत्तात्रेय, 7. यज्ञ, 8. ऋषभदेव, 9. पृथु, 10. मत्स्य, 11. कूर्म, 12. धनवंतरि, 13. मोहिनी, 14. नृसिंह, 15. वामन, 16. परशुराम, 17. वेदव्यास, 18. रास, 19. बलराम, 20. कृष्ण, 21. बुद्ध और 22. कल्कि.

इन सूचियों से पता चलता है कि बुद्धावतार का नाम केवल वराह तथा भागवत पुराण में आया है. वराह पुराण के अनुसार बुद्ध विष्णु के 9वें अवतार हैं, जबकि भागवत पुराण उन्हें 20वां अवतार मानता है. अग्नि पुराण में भी 'महामोह' के रूप में बुद्धावतार का उल्लेख मिलता है. अतः इन भिन्न पौराणिक मतों के आधार पर यह मान्यता भी स्वतः निरर्थक हो जाती है कि बुद्धावतार 10वां और अंतिम था.

बुद्धावतार की कथा के संबंध में पुराणों के कथनों में कोई मतभेद नहीं है. उन के अनुसार, बुद्ध कलियुग के आरंभिक काल के अवतार हैं, जो यज्ञ के अनधिकारियों को यज्ञ करते देख कर उन्हें

गया के महाबोधि मंदिर के स्वामित्व का प्रश्न हिंदुओं और बौद्धों के बीच टकराव का बाईस बन गया है. परंतु सोचनीय बात यह है कि क्या बुद्ध विष्णु के अवतार थे? और क्या बौद्धों का यह आंदोलन बुद्ध की शिक्षाओं के अनुरूप है? या यह समस्या धर्म के नाम पर निहित स्वार्थ की ही है?

अनेक प्रकार के तर्कों से मोहित करने के लिए प्रकट हुए.

यह कथा विस्तार से गीता प्रेस, गोरखपुर के प्रकाशन 'कल्याण' के 'विष्णु अंक' में पृष्ठ 363 में इस प्रकार दी गई है :

''पुराण वर्णित भगवान बुद्धदेव का प्राकट्य गया के समीप कीकट देश में हुआ था. उन के पिता का नाम अंजन था. जब दैत्यों ने देवताओं को भगा कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया तो बाद में उन्हें यह चिंता सताने लगी कि कहीं देवतागण समर्थ हो कर स्वर्ग को पुनः न हथिया लें.

''अतः दैत्यों ने इंद्र का पता लगाया और उन से अपने साम्राज्य की स्थिरता का उपाय पूछा. इंद्र ने उन्हें यज्ञ और वेदविहित आचरण करने की सलाह दी. दैत्यों ने वैसा ही किया.

''इसे सहन न कर देवतागण विष्णु के पास गए और उन से देवताओं की उन्नति की प्रार्थना की. विष्णु ने उन की प्रार्थना को स्वीकार कर बुद्ध का रूप धारण किया. उन की वेशभूषा अत्यंत मलिन थी. वह स्नान नहीं करते थे. दांत तक साफ नहीं करते थे. उन के हाथ में मार्जनी थी और वह मार्ग को बुहारते हुए उस पर चरण रखते थे. इस प्रकार अत्यंत अपवित्र वेष में भगवान बुद्ध दैत्यों के समीप पहुंचे और उन्होंने उन्हें उपदेश दिया, 'यज्ञ करना पाप है, यज्ञ से हिंसा होती है.'

''बुद्ध के उपदेश से दैत्यगण प्रभावित हुए और वे यज्ञ छोड़ अहिंसक हो गए. फलतः देवताओं ने उन दुर्बल एवं प्रतिरोधहीन दैत्यों पर आक्रमण कर दिया, जिस से दैत्य पराजित हुए और स्वर्ग पर

पौराणिक बुद्ध	ऐतिहासिक बुद्ध
(1) कीकट देश में पैदा हुए थे.	(1) कपिलवस्तु में लुंबनी वन में जन्मे थे.
(2) पिता का नाम अंजन था.	(2) पिता का नाम शुद्धोधन था.
(3) वेशभूषा मलिन थी.	(3) साफ चीवर धारण करते थे.
(4) स्नान नहीं करते थे.	(4) नित्य स्नान करते थे.
(5) दांत साफ नहीं करते थे.	(5) नित्य दातून करते थे.
(6) हाथ में मार्जनी रखते थे.	(6) हाथ में मार्जनी नहीं बल्कि भिक्षा पात्र रखते थे.
(7) सड़क बुहार कर चलते थे.	(7) सड़क बुहार कर नहीं चलते थे.
(8) उन का ध्येय दैत्यों को कमजोर करना था	(8) उन का ध्येय किसी वर्ग को कमजोर करना नहीं था.
(9) वह देवताओं के हितार्थ उत्पन्न हुए थे.	(9) वह बहुजनों के हित, सुख और कल्याण के लिए बुद्ध हुए थे.
(10) उन के अनुयायी पराजित हुए.	(10) उन के अनुयायी भिक्षुओं ने निर्वाण लाभ कर अर्हत पद पाया.



देवताओं का पुनः अधिकार हो गया."

बुद्धावतार की यह कथा पूरे विश्व की चिंतनधारा को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक बुद्ध की कथा से पूरी तरह भिन्न है. यह भिन्नता किन बिंदुओं पर दृष्टिगत होती है, बाक्स देखिए.

इस विवेचन के अनुसार यही प्रतीत होता है कि बुद्ध की लोकप्रियता को देख कर बुद्ध को अवतार घोषित कर दिया गया पर उस की छवि बहुत खराब रखी गई. पौराणिक बुद्ध और ऐतिहासिक बुद्ध की कई बातें मिलती हैं पर अन्य पौराणिक अवतारों से मेल नहीं खातीं. बुद्ध के पौराणिक अवतार घोषित करने का अभिप्राय यह था कि बुद्ध समर्थकों के मंदिरों, मठों पर पंडों का दखल हो जाए और गया के महाबोधि मंदिर के विवाद में यही भावना थी.

यहां महाबोधि मंदिर के विवाद के बारे में दूसरा प्रश्न उठाया जा सकता है कि बुद्ध ने जिस धर्म का प्रवर्तन किया था, उस में मूर्तिपूजा करने की अनुमति नहीं दी गई है. उन्होंने किसी भी अमानवीय, दैवी या अलौकिक सत्ता में विश्वास करने का निषेध किया था. उन का उपदेश था :

अत्ता हि अत्तानो नाथो
को हि नाथो परो सिया। (धम्मपद, अत्तवग्ग-4)

महाबोधि मंदिर के प्रांगण में स्थित एक मंदिर में स्थापित शिवलिंग ही विवाद का आधार है.

अर्थात 'मनुष्य अपना स्वामी खुद है. भला दूसरा कोई उस का स्वामी कैसे हो जाएगा?'

इस दृष्टि से जरूरत तो इस बात की है कि बौद्ध समुदाय उन तमाम मंदिरों तथा विहारों के खिलाफ आंदोलन चलाए, जिन में बुद्ध की पूजाअर्चना की जा रही है और वे सारे कर्मकांड किए जा रहे हैं, जिन्हें बुद्ध ने अधर्म कहा था. किंतु इस के विपरीत यदि वे महाबोधि मंदिर का स्वामित्व पाने के लिए आंदोलनरत हैं, तो इस का स्पष्ट अर्थ यह है कि बुद्ध की शिक्षाओं से उन का कोई संबंध नहीं है और वे पूरी तरह बुद्ध को भी हिंदू देवताओं की तरह मंदिर की परिधि में ही सीमित रखना चाहते हैं. यदि यही उन का ध्येय है तो बुद्ध विष्णु के अवतार न होते हुए भी हिंदू देवता से भिन्न कैसे माने जा सकते हैं? महाबोधि मंदिर के वर्तमान प्रबंध में हिंदू महंतों के साथसाथ बौद्ध भदंतों की भी बराबर की भागीदारी है. और सच यह है कि वहां हिंदू महंतों की तरह बौद्ध भदंत भी संपन्नता और विलासिता का जीवन जीते हैं.

इसी आधार पर यह कहना गलत नहीं होगा कि उन्होंने बुद्ध के इस मूल



बुद्ध ने जिन विचारों क वर्जित माना था, बौ धर्मावलंबी आज उन्हीं क अनुसरण कर रहे हैं.

उपदेश को भी भुला दिया है कि 'चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय .'

अर्थात 'भिक्षुओ, बहुजनों के हित और सुख के लिए विचरण करो.' वह बुद्ध के इस आदेश की भी उपेक्षा करते हैं, जिस में भिक्षुओं को वर्षा काल को छोड़ कर एक स्थान पर पंद्रह दिन से अधिक रहने का निषेध किया गया है. किंतु हकीकत यह है कि आज बौद्धभिक्षु मठाधीश बन कर रह रहे हैं, धर्म का व्यापार कर रहे हैं और बहुजनों का शोषण कर रहे हैं. यह बुद्ध वचनों के विपरीत है. बुद्ध ने ऐसे भिक्षुओं को मूढ़ कहा है. उन का वचन है :

असत भावनमिच्छेय्य पुरेक्खारञ्च भिक्खुसु
आवासेसु च इस्सरियं पूजा पर कुलेसु च
ममेव कतमञ्ञन्तु गिहीपब्बजिता उभो
ममेवातिवसा अस्सु किच्चाकिच्चेसु किस्मिचि
इति बालस्स संकप्पो इच्
मानो च वड्ढति।

(धम्मपद बाल वग
14-1

अर्थात भिक्षुओं बीच बड़ा बनने, मठों क अधिपति बनने तथ गृहस्थ परिवारों में पूजि होने की लालसा एवं य सोचना कि गृहस्थ औ संन्यासी सब मेरा ही अनुसरण करें और ह कार्य में मेरे अधीन रहें—ऐसा मूढ़ का संकल्प होता है, जो उस में तृष्णा व अभिमान को बढ़ाता है

इसी तरह एक अन्य बुद्धवचन है, "भिक्षुओ जैसे कोई बेड़ा बना कर नदी पार करे और उस बेड़े को कंधे पर रख कर फिरे कि यह बड़ा उपयोगी है, तो वह पुरुष कर्तव्यअकर्तव्य नहीं जानता है. ऐसे ही भिक्षुओ, मैं तुम्हें धर्म का उपदेश बेड़े की भांति पार जाने के लिए करता हूं, उसे पकड़ कर रखने के लिए नहीं. धर्म को बेड़े के समान उपदिष्ट जान कर तुम धर्म को भी छोड़ दो, अधर्म की तो बात ही क्या?" (सुत्तपिटक-मज्झिम निकाय-अलगद्दूपम सुत्त)

किंतु, हम देखते हैं कि भिक्षुओं ने बुद्ध के धर्म को तो छोड़ ही दिया है, मूर्तिपूजा व कर्मकांड जैसे अधर्मों को भी कस कर पकड़ लिया है. ऐसी स्थिति में महाबोधि मंदिर आंदोलन से जुड़े बौद्ध नेता और भिक्षु उस पुरुष के समान हैं, जो कर्तव्यअकर्तव्य के ज्ञान से रहित हो बेड़े को कंधे पर रखे हुए हैं. उसे उतार फेंकने की क्षमता ही उन्हें बुद्ध का सच्चा अनुयायी बनाएगी. ●

नए शेयर

निवेशकों को राहत

लेख • कपिल अग्रवाल

इस बार नए निर्गमों में खास बात यह है कि प्रवर्तक या तो जनता के साथ बराबर की हिस्सेदारी कर रहे हैं या उस से अधिक. हालांकि कंपनियों ने थोड़ाबहुत प्रीमियम ले कर शेयर बाजार का संभावित नफा निवेशक से पहले ही ले लिया है पर फिर भी इस तरह की कंपनियां कालांतर में लाभ ही देती हैं.

शारदा पेपर्स लि., भोपाल शुगर इंड. जैसी कंपनियों के निर्गम जहां स्वागत योग्य हैं वहीं क्रिस्टल आडियो लि. का निर्गम जनता को लूटने के उद्देश्य से बाजार में आया. दूसरी ओर इनफोसिस टेक्नोलाजीज लि. ने 85 रुपए का प्रीमियम ले कर जनता के साथ नाइंसाफी की है. क्रिस्टल ने तो अपने प्रवर्तक का बायोडाटा भी भ्रामक दिया है.

दरअसल, सेबी की मुक्त मूल्य पद्धति का जिस तरह से जम कर फायदा उठाया जा रहा है उस में बिना बात ही कई अच्छी कंपनियां भी फेल हो जाती हैं और कई बार तो इश्यू तक का खर्चा भी कंपनी को खुद ही

APPLICATION FORM FOR EQUITY SHARES BY INDIA
(PLEASE READ CAREFULLY THE INSTRUCTION

SARDA PAPERS LIMITED

ISSUE OPENS ON	: MONDAY, 22ND FEBRUA
CLOSING NOT LATER THAN	: THURSDAY, 4TH MARCH,
EARLIEST CLOSING	: THURSDAY, 25TH FEBRUA

(Incorporated as a Public Limited company on 11th April, 1991 under The Companies Act 1956)

SERIAL NO. 5501

Registered Office : A-70, MIDC Malegaon, Taluka Sinnar, Dist. Nasik, Maharashtra.

UNDERWRITER'S STAMP & CODE	BROKER'S STAMP & CODE	SUB-BROKER'S CODE	BANK'S STAMP	BANK'S SERIAL NUMBER	REGISTR SERIAL
BHARAT BHUSHAN & CO. 05/0010 - 1		9575			

Public Issue of 18,80,000 Equity Shares of Rs.10/- each for cash at par aggregating to Rs.188 lacs out of which 2,000 Equity Shares reserved for preferential allotment to the Employees & Workers (including Indian Working Directors of the Company. The unsubscribsed portion, if any, out of the above reservation shall added to the public offer in terms of the prospectus.

APPLICATION MUST BE MAD MINIMUM OF 100 EQUITY SHAF MULTIPLES THEREOF

AMOUNT PAYABLE ON APP @ RS. 10/- PER EQUITY

Please write the Application No. at the back of Cheque / Draft / Stockinvest

Cheque / Draft / Stockinvest must be marked "Name of the Bank A/c. SPL - EQUITY ISSUE"

COMPUTATION TABLE FOI AMOUNT PAYABLE ON APPL

Equity Shares	Ru
100	1,
200	2,
500	5
1000	10

To
SARDA PAPERS LIMITED
A-70, MIDC Malegaon, Taluka Sinnar,
Dist. Nasik, Maharashtra.

Dear Sirs,

On the basis of the Company's Prospectus, I/We hereby apply to you for allotment to me/us of the Equity Shares stated below out of the above issue. The amount payable on application is remitted herewith. I/We hereby agree to accept the Equity Shares applied for or such smaller number as may be allotted to me/us, subject to the terms of this Memorandum cum Application Form, the Company's Prospectus and the Memorandum and Articles of Association of the Company. I/We agree that I/we will sign all su documents and do all such other acts, if any, necessary on my/our part to enable me/us to be registered as the of the Equity Shares which may be allotted to me/us. I/We authorise you to place my/our name(s) on the Register of of the Company as the holder(of the Ec

झेलना पड़ जाता है. टाटा, मोदी, रिलायंस आदि बड़ेबड़े औद्योगिक समूहों की बात छोड़ दें तो भी अब वे जमाने लद गए जब लगभग हर नया इश्यू जरूरत से कई गुना ज्यादा रकम बटोर लेता था.

शारदा पेपर्स लि. : 10-10 रुपए वाले 18 लाख 80 हजार शेयरों के साथ यह कंपनी गत 22 फरवरी को पूंजी बाजार में आई. देश में कागज की मांग पूर्ति के मुकाबले बहुत ज्यादा है. ऐसे में यदि यह कंपनी बढ़िया माल बाजार में पेश करती है तो निश्चित ही उसे सफलता मिलेगी.

इस नई कंपनी का प्रवर्तक महाराष्ट्र का प्रसिद्ध शारदा परिवार है जिसे इस क्षेत्र का पर्याप्त अनुभव है. कंपनी नासिक के पास मालेगांव में अपना कारखाना लगा रही है. प्रोजेक्ट की कुल लागत सभी प्रकार के खर्च समेत 4 करोड़ 92 लाख रुपए है, जिस में प्रवर्तक 1 करोड़ 24 लाख स्वयं लगा रहे हैं जबकि 1 करोड़ 50 लाख का कर्जा राज्य औद्योगिक वित्त निगम से लिया गया है. जनता से केवल 1 करोड़ 88 लाख रुपए ही मांगे गए हैं.

बकौल सेबी यह एक आदर्श स्थिति है. इस में जनता का धन डूबने का खतरा तो कतई नहीं रहता. इस तरह की कंपनी प्रति शेयर 25-30 रुपए का लाभ तो दे ही देती हैं.

कंपनी ने इस प्रोजेक्ट में आयातित मशीनें लगाई हैं जिन का उत्पाद थोड़ा महंगा बैठेगा. हालांकि क्वालिटी बढ़िया ही होगी. कंपनी ने स्पेन से पुरानी सुपर कलैंडर मशीन खरीदी है.

हालांकि कंपनी नई है और प्रवर्तकों ने 1995 में 12 फीसदी लाभांश देने की संभावना व्यक्त की है. पर 5 साल से पहले कंपनी लाभांश दे पाएगी इस में संदेह है.

क्रिस्टल आडियो लि. : सन 1984 में प्राइवेट लि. कंपनी के रूप में स्थापित यह कंपनी 10-10 रुपए वाले 30 लाख शेयरों के साथ गत 22 फरवरी को पूंजी बाजार में आई. कंपनी मई 1992 में पब्लिक लि. बनी.

कंपनियां जनता से किस तरह पैसा उगाहती हैं उस का एक नमूना है यह कंपनी. कंपनी बंबई के पास श्वेतश्याम टेलीविजन व कैसेट रिकार्डर आदि अन्य इलेक्ट्रोनिक उपकरण बनाने का एक कारखाना लगा रही है. कंपनी की इस परियोजना की कुल लागत 4 करोड़ 75 लाख रुपए है, जिस में एअरकंडीशनर, फैक्स, टेलीफोन, वाहन आदि की लागत भी शामिल है. इस में से प्रवर्तक केवल 1 करोड़ 75 लाख ही लगा रहे हैं जबकि जनता से 3 करोड़ रुपया मांगा जा रहा है.

अब जरा निवेशक गौर फरमाएं प्रोजेक्ट की लागत पर :



भूमि 50 लाख, भवन आदि 150 लाख. यानी यदि प्रोजेक्ट डूब गया तो भी प्रवर्तक भूमि, भवन आदि बेच कर अपने 1 करोड़ 75 लाख तो (बल्कि दोगुनेतिगने) वसूल कर ही लेगा, मारा जाएगा तो निवेशक का पैसा.

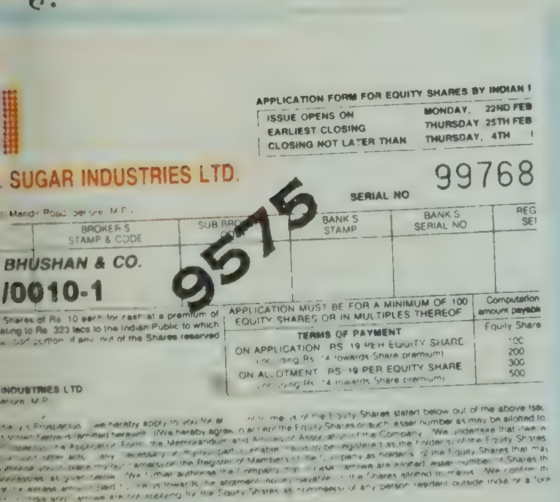
वर्ष 1985-86 में इसी प्रकार एक कंपनी श्याम इलेक्ट्रिकल्स लि. ने जापान की एक कंपनी से सहभागिता का दावा करते हुए जनता से लाखों रुपए बटोरे थे. आज तक इस कंपनी का पता नहीं.

इन सब के अलावा कंपनी ने एक नए पैसे का भी कर्जा किसी भी कानूनी वित्तीय संस्था से नहीं लिया है. यानी 4 करोड़ 75 लाख का सारा प्रोजेक्ट केवल जनता के धन

से ही लगा रहे हैं. कंपनी ने 6 लाख रुपए 'वाहन' मद में मांगे हैं. 8 साल पुरानी कंपनी अपने 270 कर्मचारियों को क्या बगैर जनता के पैसे के एक हजार रुपल्ली की साइकिल भी मुहैया नहीं करा सकती? या मारुतियां खरीद कर यारदोस्त, बच्चे, नातेरिश्तेदार मौज मारेंगे?

इन बातों को छोड़ दें तो भी कंपनी के 1985 से 1989 तक के कारोबारी विवरण भी उपलब्ध नहीं हैं. मेमोरेंडम में दिखाया गया विवरण भी बड़ा अजीब है. कंपनी के पास 1 पैसे का रिजर्व नहीं है. सन 1990 में कंपनी को 3 लाख 79 हजार का घाटा हुआ था, जबकि 1991 में मामूली सा (96 हजार रुपए) का नफा दिखाने के बाद कंपनी ने 1992 में एकदम 6 लाख 51 हजार का चमत्कारिक नफा दिखाया है. इसी प्रकार, कंपनी की बिक्री व अन्य आय 1990 में 77 लाख, 1991 में 62 लाख 97 हजार तथा सन 1992 में 89 लाख 32 हजार रुपए थी जो कि 1993 में 22 करोड़ 41 लाख रुपए, 1994 में 51 करोड़ 70 लाख रुपए व 1995 में 58 करोड़ 15 लाख रुपए हो जाने का अनुमान है. इसी प्रकार, सकल लाभ भी क्रमशः 87 लाख 78 हजार रुपए, 4 करोड़ 1 लाख 62 हजार रुपए व 4 करोड़ 81 लाख रुपए हो जाएगा.

मजे की बात यह है कि कंपनी ने लाभांश के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है.


APPLICATION FORM FOR EQUITY SHARES BY INDIAN
ISSUE OPENS ON MONDAY, 22ND FEB
EARLIEST CLOSING THURSDAY 25TH FEB
CLOSING NOT LATER THAN THURSDAY, 4TH
SUGAR INDUSTRIES LTD.
SERIAL NO 99768
9575
BROKER'S STAMP & CODE
BANK'S STAMP
BANK'S SERIAL NO
BHUSHAN & CO.
/0010-1
APPLICATION MUST BE FOR A MINIMUM OF 100 EQUITY SHARES OR IN MULTIPLES THEREOF
TERMS OF PAYMENT
ON APPLICATION RS. 19 PER EQUITY SHARE
ON ALLOTMENT RS. 19 PER EQUITY SHARE

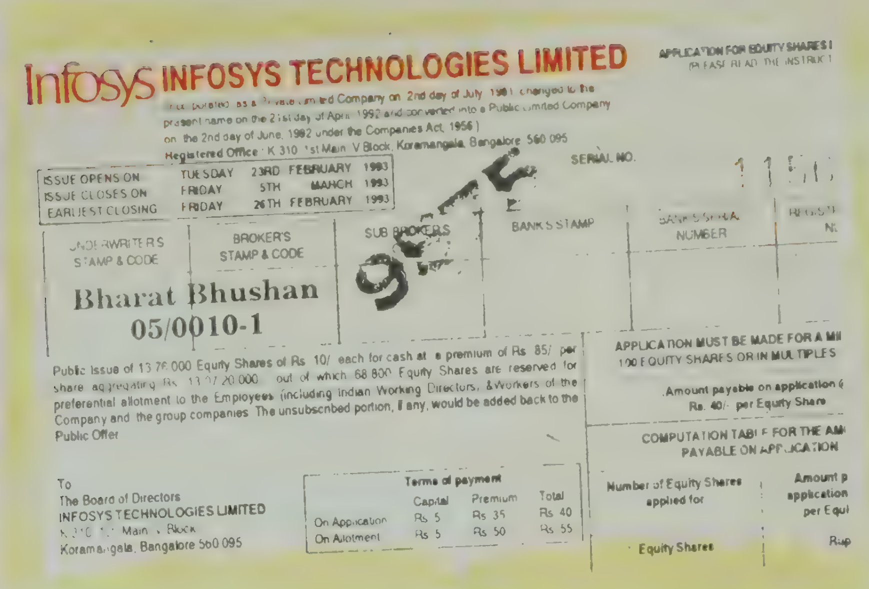
अब आइए एक और बड़े गोलमाल पर जो कि कंपनी ने अपने मेमोरेंडम में दिखाया है. कंपनी ने अपने प्रवर्तक निरंजन बी. शाह की योग्यताओं के बारे में कहा कि उन्हें इलेक्ट्रोनिक क्षेत्र में 25 साल का अनुभव है. जरा गौर फरमाइए, वह 20 साल तक मैसर्स एशियन इलेक्ट्रिकल्स से संबद्ध रहे. किस रूप में यह वही जानें. इस के अलावा वह 2 साल तक मैसर्स बजाज इलेक्ट्रिकल्स लि. में सेल्स एक्जीक्यूटिव रहे. यानी कुल अनुभव हुआ 22 साल. आगे बढ़िए. उन्होंने एक गैर प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कालिज वी.जे.टी.आई. बंबई से इलेक्ट्रिकल्स में बी.ई. किया. अब उन का अनुभव 28 साल का हो गया.

वैसे भी कंपनी जिस क्षेत्र में (श्वेत-श्याम टीवी) आई है, उस में छोटीबड़ी करीब 200 कंपनियां पहले से ही मौजूद हैं और सभी में गलाकाट स्पर्धा है. कुछ की हालत बहुत पतली है और कुछ बस मृतप्राय ही हैं.

भोपाल शुगर इंड. लि. : करीब 50 साल पुरानी इस कंपनी का गत 5 वर्षों का कारोबारी रिकार्ड बड़ा शानदार है. कंपनी ने अपने शेयरधारकों को कम ही सही पर लगातार लाभांश दिया है.

कंपनी ने 10-10 रुपए वाले 8 लाख 50 हजार शेयरों के साथ गत 22 फरवरी को पूंजी बाजार में प्रवेश किया था. कंपनी ने प्रति शेयर 28 रुपए का प्रीमियम लिया. शेयर बाजार में कंपनी के शेयर का औसत मूल्य 40-50 रुपए के बीच है. इस हिसाब से 38 रुपए में इस शेयर को कंपनी से खरीदना बहुत ज्यादा फायदेमंद तो नहीं है पर कंपनी शीघ्र ही बोनस शेयर जारी कर सकती है इसलिए इस के निवेशक घाटे में नहीं रहेंगे.

संभवतः इसी को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने बोनस इश्यू का सारा नफा पहले ही निवेशकों से भर लिया है. कंपनी को अपनी विभिन्न जरूरतों के लिए 775 लाख 26 हजार रुपए चाहिए. इस में से प्रवर्तक केवल 123 लाख रुपए लगा रहे हैं. इन सब


Infosys INFOSYS TECHNOLOGIES LIMITED

APPLICATION FOR EQUITY SHARES I
(PLEASE READ THE INSTRUCT

(Incorporated as a Private Limited Company on 2nd day of July 1981 changed to the present name on the 21st day of April 1992 and converted into a Public Limited Company on the 2nd day of June, 1992 under the Companies Act, 1956.)
Registered Office : K 310 1st Main V Block, Koramangala, Bangalore 560 095

SERIAL NO.

ISSUE OPENS ON	TUESDAY	23RD	FEBRUARY	1993
ISSUE CLOSES ON	FRIDAY	5TH	MARCH	1993
EARLIEST CLOSING	FRIDAY	26TH	FEBRUARY	1993

UNDERWRITERS STAMP & CODE | BROKER'S STAMP & CODE | SUB BROKERS | BANKS STAMP | BANKS SERIAL NUMBER | REGIST... N...

Bharat Bhushan
05/0010-1

Public Issue of 13 76 000 Equity Shares of Rs 10/ each for cash at a premium of Rs 85/ per share aggregating Rs 13 07 20 000 out of which 68 800 Equity Shares are reserved for preferential allotment to the Employees (including Indian Working Directors, & Workers of the Company and the group companies. The unsubscribed portion, if any, would be added back to the Public Offer

APPLICATION MUST BE MADE FOR A MI...
100 EQUITY SHARES OR IN MULTIPLES

Amount payable on application ...
Rs. 40/- per Equity Share

COMPUTATION TABLE FOR THE AM...
PAYABLE ON APPLICATION

To
The Board of Directors
INFOSYS TECHNOLOGIES LIMITED
K 310 1st Main V Block
Koramangala, Bangalore 560 095

Terms of payment

	Capital	Premium	Total
On Application	Rs 5	Rs 35	Rs 40
On Allotment	Rs 5	Rs 50	Rs 55

Number of Equity Shares applied for	Amount p... application per Equi...
Equity Shares	Rup...

के बावजूद कंपनी के पूर्व रिकार्ड को देखते हुए यह कोई चिंताजनक स्थिति नहीं है.

दरअसल, इस तरह के निर्गम अल्पकालीन निवेश के लिए सर्वोत्तम होते हैं. 1-2 साल रखे, मौका देखा बेच दिए. बढ़िया कामकाज के बावजूद इस कंपनी ने बहुत कम लाभांश (10%, 15% व 20%) दिया है और आगे के बढ़िया कामकाज के बावजूद केवल (5 वर्षों में) 20% लाभांश ही प्रस्तावित किया है. यह कंपनी चाहती तो अब तक 30% लाभांश दे सकती थी.

इनफोसिस टेक्नोलाजीज लि. : करीब 11 साल पुरानी इस कंपनी ने 10-10 रुपए वाले 13 लाख 76 हजार शेयरों के साथ गत 23 फरवरी को पूंजी बाजार में प्रवेश किया था. कंपनी ने प्रति शेयर 85 रुपए प्रीमियम की मांग की थी.

इस तरह की कंपनियों से जनता को सावधान रहना चाहिए. जैसा कि कंपनी ने स्वयं स्वीकारा है, देश में इस लाइन के प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी है और कंपनी का कंप्यूटर सिस्टम आयात पर निर्भर है.

कंपनी 1981 में किसी और नाम से प्राइवेट लि. कंपनी के रूप में स्थापित हुई थी और वर्तमान नाम से गत वर्ष अस्तित्व में आई. कंपनी साफ्टवेयर टेक्नोलाजी यूनिट स्थापित कर रही है, जिस के लिए अन्य जरूरतों सहित करोड़ 58 लाख रुप चाहिए. इन जरूर में कर्मचारियों लिए मकान व विदेश में दफ्तर खोलने व खर्च भी शामिल है

इन 16 करो 58 लाख रुपए में प्रवर्तक केवल 9 लाख रुपए ही अप पल्ले से लगाएंगे जब कि जनता को 1 करोड़ रुपए देने होंगे पहली बार जनता के पास आई इस कंपनी ने 85 रुपए प्रति शेयर प्रीमियम की बाबत जो तर्क दिए हैं वे फुजूल व बेकार के हैं.

'कंपनी साफ्टवेयर का कारोबार करती है. विश्व के साफ्टवेयर निर्यातकों में भारत एक प्रमुख देश है... कंपनी के पास कुशल कारीगर हैं...'

कंपनी का कामकाज भी बड़े रहस्यमय तरीके से गत 2 सालों में बढ़ा है. 1988 से 1992 तक के 5 वर्षों में कंपनी की आय क्रमशः 275 लाख 44 हजार, 254 लाख 15 हजार, 4 करोड़ 14 लाख 74 हजार, 5 करोड़ 50 लाख 51 हजार व 9 करोड़ 46 लाख 40 हजार रुपए थी व कुल लाभ क्रमशः 49 लाख 10 हजार, 45 लाख 50 हजार, 45 लाख 77 हजार, 75 लाख 44 हजार, 2 करोड़ 24 लाख 81 हजार रुपए था.

ऐसे चमत्कारिक परिणाम कैसे आए इस का कोई विवरण कंपनी ने नहीं बताया.

एक बात और, कंपनी गत वर्ष ही पब्लिक लि. कंपनी बनी. इस से पूर्व यह प्राइवेट कंपनी थी. सो, प्रवर्तकों ने खुद के लिए 30% लाभांश घोषित किया. अब जबकि कंपनी पब्लिक लि. हो गई है, भविष्य के आकलन में लाभांश का जिक्र ही नहीं है. स्पष्ट है कि प्रवर्तकों की नीयत संदेह से परे नहीं है. ●





9 महीने पहले 'सोयूज राकेट कैप्सूल' में स्पेस स्टेशन 'मिर' के लिए प्रस्थान करने वाले 33 वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियर

आखिरी सोवियत कास्मोनाट

सर्जी क्रिकालेव, जो सेंट पीटर्सबर्ग के निवासी हैं, 282 दिनों के बाद 25 मार्च को जब वापस धरती पर आएंगे तो वह आखिरी सोवियत कास्मोनाट होगा.

अपने देश के ऊपर 280 मील की ऊंचाई पर इस नौ महीने की अवधि में जिस तीव्रता से वह धरती की 4,200 से भी ज्यादा बार परिक्रमा कर चुके हैं, उसी आश्चर्यजनक तीव्रता से उन का पुराना देश भी परिवर्तित हुआ है.

25 मार्च को जब वह वाइकनूर स्पेस सेंटर के पास, जो कजाकिस्तान के सेंट्रल एशियन रिपब्लिक में है, लैंड करेंगे तो वह अपने देश की धरती नहीं वरन विदेश की धरती पर उतरेंगे, क्योंकि अगस्त के कूप के बाद कजाकिस्तान ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया था.

18 मई 1991 को जब वह इस मिशन के लिए गए थे, उस के बाद से देश के राष्ट्रपति मिखाइल गोरबाचौफ ही नहीं, देश का इतिहास ही बदल गया और उन की वर्दी पर लिखी 'सी.सी.सी.पी.' (यू.एस.-एस.आर.) की इनसिगनिया एक रैलिक बन गई.

10 महीने के इस अंतराल में जिस तरह अंतरिक्ष उन के लिए एक चुनौती के रूप में था, आकाश में विचरने वाले विमान से उतरने पर धरती भी उन्हें कम चुनौती नहीं दे रही है. – स्नेह ठाकुर (कनाडा से)●





नेहदीप

कहानी • छाया श्रीवास्तव

पूर्व कथा

विभा के मांबाप की मृत्यु के बाद उस के मामा उसे अपने घर ले आए थे, जहां उस से हाडतोड़ काम लिया जाता था और पिटाई भी होती थी. इसी क्रम में छोटी भाभी ने एक दिन गरम प्रेस उस की बाजू पर लगा दी थी. अब इसी दुखियारी विभा की सगाई एक बूढ़े व्यक्ति से कर दी गई. इस बात ने पड़ोसी विनय को झकझोर कर रख दिया था. अब आगे पढ़ें.

गतांक से आगे

एक माह बाद एक दिन दफ्तर से लौटने पर अम्मां ने उसे बताया कि आज विभा की सगाई हो गई. सुन कर वह चौंक पड़ा.

"किस से अम्मां?"

"अरे, कुएं में धकेल रहे हैं उस बेचारी को. 40 बरस का खूसट सा आदमी अपने दो बच्चों सहित आया था. वही गोद डाल गया. नाटा सा मोटामोटा, पूरा घर ऐसा प्रसन्न था जैसे सर्वांग सुंदर वर मिला हो. हाय, उस के मांबाप जिंदा होते तो क्या यों जानबूझ कर कुएं में ढकेल देते अपनी लड़की को? कहां सोनचिरिया सी सुंदर, बी.ए. में पढ़ रही विभा और कहां गांव का गंवार, अल्प शिक्षित वर."

"क्या विभा खुश है मां?" वह व्यग्र हो उठा.

"अरे, खाक खुश थी. चौधारे आंसू

बहा रही थी. मामी और भाभियों के डांटनेडपटने पर भी रोती ही रही. मुझे ऐसा लग रहा था कि उसे चौक पर से उठा ले आऊं."

"यह ठीक नहीं हुआ मां. बेचारी विभा, एक वर्ष और ठहर जाती तो बी.ए. पास कर कहीं नौकरी करने लगती. फिर मनचाहा वर ढूंढ़ लेती."

"दिनरात की कलह से तंग आ गए हैं उस के मामा. त्राण दिलवा रहे हैं उसे इस घर से किसी प्रकार."

उस रात विनय सो नहीं सका. कई दिन के बाद विभा उस दिन घर आई थी, कोर्स की किताब उठाने. अम्मांबाबूजी कहीं गए थे. विजय भी गया हुआ था.

"विनय दा, अंदर आ जाऊं?"

"क्यों क्या अब रोक लग गई?"

"किताब लेनी है," वह नजरें चुरा कर बोली.

"क्या करोगी पढ़ कर? डिगरी क्या वहां चूल्हे में झोंकने के लिए ले रही हो? बंद करो पढ़ाईलिखाई. मां बन कर जा रही हो. वहां चूल्हाचक्की करोगी, कंडे थापोगी या डिगरी ले कर चाटोगी?"

बहुत रोकने पर भी विभा के आंसू बह निकले. वह जाने को मुड़ी तो वह अवरुद्ध कंठ से बोला, "बैठोगी नहीं?"

"चाचाचाचीजी नहीं हैं न?"

"तो क्या मैं तुम्हें खा जाऊंगा? अच्छा, कल मुझे कहीं मिल सकती हो? पार्क में या कहीं भी?"

"क्यों? मैं समझी नहीं."

"मैं तुम से कुछ बात करना चाहता हूं."

"यह कैसे संभव है? कोई देख ले तो?"

"सब्जी लेने तो जाती हो. डाक्टर के यहां दवा लेने जाती हो. बस, वहीं मैं मिलूंगा कहीं. देखो न मत करना."

"खाने से निबट कर आ पाऊंगी. परंतु बात क्या है?"

"वह मैं तुम्हें मिलने पर बताऊंगा."

फिर वह चली गई. रातभर करवटें बदलती बीती. मरहमपट्टी कराने वह फिर

"नहीं, नहीं... एक क्षण भी नहीं, रात तो दूर की बात है. ऐसी ही होती तो तेरे घरवाले क्यों निकालते सांझ को घर से? चल, निकल जल्दी." चाची ने विभा को दुत्कारते हुए कहा.



रूप व गुण की धनी विभा की एक बूढ़े से सगाई की बात ने विनय को मथ कर रख दिया. आखिर उस ने विभा के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया तो जीवन के अंधियारों में खोई विभा की खुशियों का ठिकाना न रहा. उसे लगा कि उसे नेहदीप मिल गया. लेकिन शायद जीवन के इस महासंग्राम में उस की अभी और परीक्षाएं बाकी थीं.

जाने लगी थी. घाव हरा हो गया था. इस से बताने पर किसी ने कुछ नहीं कहा. डाक्टर के यहां ही विनय मिल गया. फिर दोनों वहां से पार्क की ओर निकल आए. पेड़ों की झुरमुट में दोनों पास ही बैठ गए. विभा ने संकोच से सिर झुका लिया.

"तुम इस विवाह से खुश हो, विभा? क्या यह तुम्हारी मरजी से हो रहा है?"

"मेरे जीवन में खुशियों के फूल कब खिले विनय दा? बस किसी तरह इस नरक से निकल जाऊं, यही चाहती हूं."

"इस नरक से निकल कर दूसरे नरक में जाना चाहती हो?"

"और कोई चारा भी तो नहीं है. मामा अस्वस्थ रहने लगे हैं. धनदौलत लगाने को छदाम नहीं है. बिना पंख के भी कोई उड़ सकता है? नरक की रचना तो हुई ही मेरे जैसों के लिए है."

"अगले वर्ष तक तुम बी.ए. कर लोगी. तब क्या अपने पैरों पर नहीं खड़ी हो सकती? तब तक यह विवाह टाल दो, विभा. जहां जीवन के 19 वर्ष गुजारे वहां एकदो वर्ष नहीं रुक सकती? क्यों जीवन में अमावस की अंधेरी रात ला रही हो? अपने चारों ओर देखो, तुम्हारे चारों ओर उजियाला भी तो है. अमावस्या की घोर अंधेरी रात को लोग दीप जला कर ज्योतिर्मय कर देते हैं. क्या तुम को बेधते प्रकाश के रम्य घेरे नहीं दिखते?"

"दिखते हैं विनय दा, बहुत दूर दिखते हैं. जहां पलपल जीना दूभर हो, जहां इनसान सुख की एक सांस भी न ले सके उस घेरे से तो निकलना ही है, भले ही आगे का पथ अंधकारमय ही क्यों न हो?"

"तुम अपनी गरिमा, अपनी शक्ति भूल गई हो विभा. तुम यह भी भूल गई हो कि तुम्हारा भी अपना अस्तित्व है, व्यक्तित्व है. तुम ने अपने स्वाभिमान की हत्या कर दी है. तुम परिस्थितियों की दास हो गई हो. तुम्हारा हौसला मर चुका है. कहां है वह जीवंत विभा? मेरे सामने तो यह उस की जीवित लाश है. यह जीवन अनमोल है, शून्य नहीं है कि तुम पानी की बूंद सी विलय हो जाओ. सही ढंग से जीने की इच्छाशक्ति जागृत करो विभा, बेमौत मत मरो."

"ओह, विनय दा, उपदेश तो सब दे सकते हैं परंतु मार्ग तो कोई नहीं दिखाता. यदि मैं उत्पीड़न सह कर इस शादी से इनकार कर दूं तो आगे क्या समस्याएं समाप्त हो जाएंगी? फिर वही दहेज की मांग मुंह बाए खड़ी होगी. फिर अब उस नरक का उत्पीड़न भी तो सहा नहीं जाता. सहनशक्ति का घड़ा भर चुका है."

"मार्ग भी बताया जा सकता है. मैं कोरा उपदेश देना पसंद नहीं करता. तब तक कोई मार्ग भी निकल आएगा."

"बताओ कैसा मार्ग बताते हो?"

"तुम ने कभी अपनी छवि दर्पण में देखी है?"

"वह तो रोज देखती हूं," वह बोली.

"तो भी तुम्हें अपने पर रहम नहीं आता? कहां पद्मिनी सी सुंदर तुम और कहां वह अनगढ़ा सा वर?"

विभा का मुख अरुणाभ हो उठा. आज प्रथम बार किसी ने उस के रूप को सराहा था.


YOUNG HO
YA OLD
SAB KI PASAND
MERRIGOLD.
Some like it hot.
Some like it cold.
Some like it on parantha.
Some on toast.
MERRIGOLD
TABLE MARGARINE
CHOLESTEROL FREE AND PUFA RICH
CHOLESTEROL FREE
MERRILICIOUS TABLE MARGARINE
AMRIT BANASPATI CO. LTD.



"पगली, वह तो तुझ से शादी की बात कर रहा है और तू विनय दा विनय दा कर रही है. अब मैं तेरी एक न सुनूंगा." विभा के मामा बोले.

"मार्ग मैं स्वयं हूं विभा."

"आप?"

"हां विभा."

"मैं समझी नहीं विनय दा." वह अचरज से नेत्र पसार कर बोली.

एकाएक विनय ने उस के अधरों पर अपनी उंगलियां रख दीं. फिर बोला, "ये तो बचपन से ले कर अब तक की बात थी क्योंकि एक कुंआरे लड़के लड़की में, जो बचपन के साथी हों, भाईबहन का पवित्र रिश्ता रहता है. तुम अब तक मुझे विनय दा कहती रही परंतु अब आज इसी क्षण से नहीं. मेरे अंतर में सदा से एक आकांक्षा रही है कि मैं शादी करूंगा तो बिना दहेज के, वह भी अपनी पसंद की. अब वह दिन आ गया है. यदि तुम मुझे पसंद करती हो तो मैं तुम्हें अपनाने को तैयार हूं."

सहसा एक अजीब तरंग विभा के तनमन को आंदोलित करता चला गया. स्वेदकणों से उस का समस्त मुखमंडल भीग उठा. कपोलों से ले कर कर्ण लोल तक सिंदूरी हो उठे, जैसे किसी ने मुट्ठीभर गुलाल मुख पर मल दिया हो. नेत्र लज्जानत हो गए. विभा का ऐसा अप्रतिम रूप इतने निकट से विनय ने प्रथम बार देखा, वह स्वयं लाज से गड़ सा गया. माथे पर उस के भी पसीना चुहचुहा आया. क्षणभर अधरों से बोल नहीं फूटा. लाज की हरी दूर्वा उखाड़उखाड़ कर फेंकता रहा.

फिर इस संकट की कोमल घड़ी से उबरने को वह उस का पसीजा हाथ मुट्ठी में दबा कर बोला, "विभा, यदि आज उत्तर न दे पाओ तो कलपरसों जब चाहे दे सकती हो. रही सगाई की बात, वह तुम मुझ पर छोड़ दो. तुम्हारी सहमति पर सब ठीक हो जाएगा. अब तुम जा सकती हो. तीन दिन बाद तुम मुझे यहीं उत्तर दोगी. मैं उस घड़ी की प्रतीक्षा करूंगा."

वह उठ कर चल दिया तो किसी प्रकार अपने को संजोती वह भी उठ आई.

तीन दिन तक वह लगातार सोचती रही. उस के मरू से हृदयस्थल में पता नहीं प्रथम बार कहां से वह शीतल स्रोत फूट उठा. उस के मन की अंधी वादियों में स्नेह के दीपक जल उठे. उस ने तो अपनी बंधीबंधाई

आकांक्षाओं के घेरे से बाहर कभी झांक कर भी नहीं देखा था, न निरखा, न सोचा इन दोनों युवा पुरुषों की ओर, जो बचपन से उस के सुखदुख के साथी थे. जिस मां समान चाची की गोद में मुंह छुपा कर वह एक नहीं सैकड़ों बार अपने आंसुओं के सिंधु बहा आई है, उन्हीं लोगों के प्रति वह आंख मूंदे रही. परंतु अब इस रूप में वह कैसे सामना करेगी विनय का? लाज से तो बोल नहीं फूटेंगे.

जब वह पार्क में पहुंची विनय उसी की राह देख रहा था. उसे देखते ही उस के मुंह पर मुसकान दौड़ गई.

"आओ विभा, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था," उस ने उस के दोनों हाथ पकड़ कर सामने बैठा लिया.

"बोलो, क्या निर्णय लिया तुम ने?"

कुछ क्षण वह मौन रही. फिर बोली, "चाचाचाचीजी क्या मुझे स्वीकार करेंगे?"

"अरे, वह तो तुम्हें शुरू से प्यार करते हैं."

"उस प्यार और इस प्यार में अंतर है विनय दा."

'दा' कहते ही उस ने अपने होंठ दबा लिए. विनय हंस पड़ा, "शादी के बाद भी क्या 'विनय दा' कहोगी?"

उस का मुख पुनः लाज से अरुणाभ हो उठा. उस ने आंचल में मुंह छिपा लिया. थोड़ी देर को पुनः मौन पसर गया.

"आप ब्राह्मण हैं और मैं कायस्थ की गरीब अनाथ बेटी, जहां दानदहेज भी नहीं मिलेगा. मेरी समझ में ये सपनेसपने ही रहेंगे. कितना बवाल मचेगा? लोग क्याक्या नहीं कहेंगे? मैं तो सोचसोच कर घबरा जाती हूं."

"तुम हीनभावना से दब गई हो विभा. जन्म से दब्बू रह कर सहती रही हो न, इस से शक्ति नहीं संजो पा रही हो. तुम्हारे साथ मैं तो हूं. कोई तुम्हें स्वीकार करे या न करे, मैं तो तुम्हें स्वीकार करता हूं. बाद में सारा तूफान अपनेआप खत्म हो जाता है. जो होगा उसे झेलेंगे. बस, तुम मेरा साथ न छोड़ना. न डर से, न भय से, न दबाव से. संघर्ष ही जीवन है. हम दोनों दृढ़ रहेंगे तो विजय हमारी होगी. विचलित मत होना."

विभा चुपचाप उस की बातें सुनती रही.

"चुप क्यों हो विभा? बोलो, मेरा साथ दोगी न?" वह उस की उंगली सहला कर बोला.

"दूंगी," वह नेत्र झुकाए बोली.

"मैं कुछ दिन बाद तुम्हारे मामाजी से बात करूंगा."

"परंतु वह सगाई?"

"वह टूट जाएगी, अब उठो. उस काले सपने को भूल कर नए सुहाने सपनों के हिंडोलों पर झूलो," कहते हुए उस ने उस के दोनों हाथ पकड़ कर उन पर अपने तप्त अधर रख दिए और लंबेलंबे डग भरता पार्क से बाहर हो गया. विभा खोई, सहमी, लज्जा में डूबी देर तक स्तब्ध सी खड़ी रही. रोमांचित तन ने जैसे उसे जड़ और अवश सा कर दिया था.

एक हफ्ते बाद जब वह दफ्तर से लौटा, मां ने गहरे अचरज में भर कर बताया, "तू ने सुना विनय, विभा की सगाई टूट गई है. आज उस के मंगेतर के भाई ने इन का मंगनी का सामान लौटा दिया और अपना ले गया."

"अरे, यह तो बहुत बुरा हुआ. क्या बात हुई मां? बेचारी विभा."

"अरे, बुरा क्यों, अच्छा हुआ. छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल डलतेडलते रह गया. जान बची और लाखों पाए. खाई में गिरने से बच गई विभा. सगाई क्यों टूटी यह तो नहीं बताया विभा की मामी ने. आज खुद आ कर सुना गई है और बारबार कोसती रही विभा को."

"बेचारी विभा तो बेहोश हो गई होगी सुन कर."

"अरे न रे, मैं ने तो उसे अपने कमरे में गुनगुनाते सुना है."

(शेष पृष्ठ 191 पर)


लॅक्मे

लेख ● डा. युद्धवीर वर्मा

जिरेनियम

...व बसंत ऋतु में रंगों की विविधता



वैसे तो सर्दियों व बसंत ऋतु में खिलने वाले फूलों की संख्या बहुत है. उन में से कई तो अपने फूलों के आकार के कारण तो कुछ फूलों के रंगों की वजह से लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं और लोग इन्हें अपनी गृहवाटिका में लगाते हैं. लेकिन अभी तक जिरेनियम को वह लोकप्रियता प्राप्त नहीं हुई है जो इसे मिलनी चाहिए. अभी तक जिरेनियम उन्हीं लोगों के घरों या फार्मों पर ही मिलता है जो विदेशों से इस के बीज ले आते हैं. किंतु इंद्रप्रस्थ बागवानी केंद्र कापसहेड़ा, नई दिल्ली ने इस पौधे को आसानी से उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया है.

उपोष्ण व शीतोष्ण क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाला जीरेनीएसी परिवार का यह सदस्य एक वर्षीय और बहुवर्षीय पौधे के रूप में होता है. इस की कुछ एक किस्में छोटी झाड़ियां भी होती हैं. सभी के पत्ते गोलाकार व आकर्षक होते हैं. कुछ में हलका हरा रंग तो कइयों में गहरा रंग भरा होता है. कुछ एक किस्मों में गोलाकार पत्तों के बीच में हलके लाल रंग की गोल धारी भी मिलती है, जिस से पत्तों की सुंदरता और भी बढ़ जाती है.

सभी किस्मों में एक ही आकार के फूल गुच्छों में आते हैं जो एक के बाद एक खिलते चले जाते हैं और कुछ ही दिनों में

पूरा गुच्छा खिली अवस्था में होता है. तब जिरेनियम का आकर्षक रूप किसी भी शौकीन को अपनी तरफ खींच सकता है.

फूलों का गुच्छा अकसर पत्तों से लगभग 6" ऊपर आता है. इस गुच्छे में 20 से 35 तक फूल होते हैं. जिरेनियम के फूल कई रंगों के होते हैं. जैसे सफेद. गहरे लाल, केसरी, गुलाबी, जामुनी व दोरंगे भी.

यूरोपीय देशों की पौधशालाओं में जिरेनियम की अनेक लुभावनी छोटे कद की किस्में विकसित की गई हैं जो कि छोटे कद की होते हुए भी अधिक संख्या में फूल देती हैं. बंगलौर की इंडो अमरीकन हाइब्रिड सीड कंपनी अब इन किस्मों के बीज उपलब्ध कराती है. परंतु सारा बीज विदेशी मुद्रा के चक्कर में निर्यात हो जाता है और यहां के लोगों को बीज नहीं मिलता.

यदि कुछ शौकिया लोग चाहें तो इन के बीज इकट्ठे कर सकते हैं. ब्रश की सहायता से स्वयं गृहवाटिका में परागण क्रिया कर सकते हैं और नए रंग भी इजाद कर सकते हैं.

हिमालय की भृंखलाओं में (सोलन, शिमला, नेपाल, नैनीताल, कश्मीर आदि) जिरेनियम की अनेक किस्में जंगलों में पाई जाती हैं, जिन को अक्तूबर से मार्च अंत तक उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है. शीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्र का पौधा होने के कारण यह मैदानी क्षेत्रों में गरमियों की चिलचलाती धूप व वर्षाकाल में अधिक गरमी व नमी को सहन नहीं कर सकता. परंतु यदि 'ग्रीन हाउस' की सुविधा हो तो कुछ सावधानियां बरतते हुए इन पौधों को उपर्युक्त समस्याओं से मुक्त रखा जा सकता है.

हिमालय की भृंखलाओं में समुद्रतल से 2 हजार से 5 हजार मीटर की ऊंचाई तक जो अनेक किस्में पाई जाती हैं वे हैं: जिरेनियम नाकाओनम, डोनीयनम, वालचीयानम, पोलीएंथस, प्रोकरनस, ट्यूबरेरीया, लैंबीरीटी, प्रैटेंस, हिमालयलैंसी, रिफ्रैक्टम आदि. इन में से कुछ किस्में सोन[illegible] के उद्यानपुष्प विज्ञान केंद्र में एकत्र की ग[illegible] ताकि इन का प्रसारण कर के भारत [illegible] चीज भारतीयों को दी जाए.

मैदानी क्षेत्रों में जिरेनियम

यदि उत्तरभारत के मैदानी क्षेत्रों [illegible] इन पौधों को बीज से लगाना चाहते हैं [illegible] वर्षाकाल की समाप्ति पर सितंबर [illegible] महीना इस के लिए उपयुक्त समय है. बीज [illegible] को बोने से पहले 4-5 घंटे पानी में भिगो क[illegible] सोइलराइट में या बैवीस्टीन से सींची ग[illegible] पत्ती की खाद में उचित गहराई पर लगाए[illegible] जब पौधे 3 सप्ताह के बाद 4 पत्तों क[illegible] अवस्था में हों तो उन्हें 8 इंची गमलों [illegible] लगाएं. एक भाग पत्ती की खाद, एक भा[illegible] जमना रेत, एक भाग मिट्टी व एक भा[illegible] गोबर की खाद का मिश्रण इन पौधों [illegible] लिए उचित है. सिचाई कम ही करें.

पहाड़ी क्षेत्रों में तैयार इस की ज[illegible] वाली कटिंग भी अक्तूबर में लगाई ज[illegible] सकती है. यदि पिछले साल के कुछ पौध[illegible] गरमी के प्रकोप से बच गए हों तो इन की कटिंग बदरपुर में अक्तूबर में लगाएं औ[illegible] जब उन में जड़ें बन जाएं तो 8 इंची गमलों में लगाएं. जहां ये पौधे जनवरी में फूल देने लगेंगे.

मार्च के बाद जब तापमान बढ़ने लगे तो गमलों में लगे इन पौधों को छाया वाले स्थान पर रखें. सिंचाई की मात्रा घटा दें. यदि टहनी गलने लगे तो काट कर कटिंग लगाएं ताकि अगले सीजन के लिए पौधा तैयार हो जाए. फूल आने के बाद पौधों के बीज संभाल कर रखें या फिर इन पौधों को पहाड़ी क्षेत्रों में पहुंचा दें ताकि वहां के ठंडे वातावरण में ये ठीकठाक चलते रहें.

जिरेनियम की अनेक किस्मों में एक विशेष किस्म है जिसे 'सेंटिड' जिरेनियम कहते हैं. इस की दूसरी विशेषता यह है कि इस के पत्तों में बहुत खुशबू होती है और इस से निकलता है 'जिरेनियम तेल' जो इत्र में काम आता है. ●

आज क्या है होली की बोली

लेख ● विभा प्रकाश श्रीवास्तव



होली है, बुरा न मानो होली है, ऐसी आवाजें होली का दिन निकलते ही ुनाई पड़नी शुरू हो जाती हैं. स्त्रीपुरुष, ुवकयुवतियां, बच्चेबूढ़े टोलियां बना कर पचकारियों से रंग बरसाते हुए और गुलाल वा में बिखेरते हुए दिखाई दे जाते हैं.

होली का यह इंद्रधनुषी त्योहार च्चेबूढ़ों, स्त्रीपुरुषों सभी को प्रिय है और सभी इसे उत्साह से खेलते हैं. बच्चे तो होली आने से कुछ दिन पहले ही गुब्बारों में पानी भर कर राहगीरों को अपना लक्ष्य बनाने लगते हैं.

होली की परंपरा उतनी ही प्राचीन है जितनी कि भारतीय सभ्यता. प्राचीन ग्रंथों में होली का विवरण मिलता है. पहले जिस रूप में होली मनाई जाती थी और आज जिस रूप में खेली जाती है दोनों में महान अंतर आ गया है. आज केसर के, टेसू के फूल आदि को कोई नहीं पूछता. आज जमाना आ गया है कीचड़ का, मिलावटी रंगों का. आज होली मिलन पर्व पुरानी दुश्मनी का गला घोंट कर नई दोस्ती की शुरुआत करने की इच्छा से



महल्ले में इकट्ठे हो
होली खेलिए, छेड़
विहीन होली खेलने
मजा दोगुना हो जाए

अब तो बड़े भी बच्चों
रास्ते पर चलने लगे है
पानी से भरे गुब्बारों
थैला हाथ में ले
निकल पड़ते हैं, और
का लक्ष्य भी के
युवतियां ही होती
युवतियों और महिला
को पानी भरे गुब्बारों
शिकार होली से लगभ
एक सप्ताह पहले से
बनना पड़ता है. यद्य
यह खेल मस्ती के आल
में खेला जाता है, लेकि
कभीकभी मस्ती का आल
दंगे में बदल जाता है.

होली का त्योह
आपसी दुश्मनी, ईर्ष्या
त्याग करने का संदेश
कर आता है लेकिन देख

नहीं खेली जाती, बल्कि होली की आड़ ले कर पुरानी दुश्मनी चुकाने की फिराक में रहने वाले इस मौके पर चूकते नहीं हैं.

आज होली खेली जाती है युवतियों को तंग करने के लिए. हुल्लड़बाजी करना ही होली खेलना हो गया है. शराब की बोतल हाथ में ले कर, भांग के नशे में झूमते हुए लोग दिखाई देते हैं, जिन के पास ऐसे पक्के रंग होते हैं जो होली के बाद कई दिनों तक नहीं उतरते. ऐसे मनचले होली की मस्ती में अपनी सुधबुध भूल कर झूमते, युवतियों की तलाश में रहते हैं और मौका मिलते ही उन्हें घेर कर ऐसे रंग में रंग देते हैं जो कई दिनों तक छूट नहीं पाता और महिलाओं की कोमल त्वचा को भी प्रभावित कर देता है.

गुब्बारों में पानी भर कर राहगीरों पर उछालना बच्चों का खेल माना जाता है. पर

यह गया है कि होली को मिलन पर्व न मा
कर हुल्लड़बाजी का पर्व माना जाने लगा
महिलाओं को पूरी तरह से भिगो देने
गरज से ही लोग उन के पास जाते हैं.

देवरभाभी अथवा जीजासाली उन्मुक
हो कर होली खेलते हैं. देवर की यह इच्छ
रहती है कि वह भाभी को खूब छकाए
और जीजा भी ऐसे रंगों की तलाश में रहत
है जो साली को उस की याद काफी दिनों त
दिलाते रहें. ऐसे रंगों को छुड़ाने के लि
त्वचा को बहुत रगड़ना पड़ता है, जिस
वजह से साली का खूबसूरत चेहरा काफ
दिनों तक बदसूरत रहता है.

जो महिलाएं अपने सौंदर्य के प्र
विशेषरूप से सजग रहती हैं उन्हें होली प
अपने ऊपर फेंके जाने वाले रंगों से सत
रहना चाहिए. गुलाल में मिलावट होती है

गिलेशिकवे, दुश्मनी मिटाने का इंद्रधनुषी त्योहार धीरेधीरे हुल्लड़ बाजी, छेड़छाड़ और पुरानी दुश्मनी निकालने का त्योहार बन कर रह गया है. होली की इस बदलती बोली के परिणामस्वरूप ही अधिकांश लोग होली खेलना पसंद नहीं करते. तो फिर क्यों न इस बार ऐसा प्रयास किया जाए कि होली एक यादगार बन जाए

पानी में घोलने वाले रंगों में ऐसेऐसे रसायन मिलाए जाते हैं जो विषैले होने के साथसाथ त्वचा की कोमलता को भी नष्ट कर देते हैं. जहां तक हो सके युवतियों को ऐसे रंगों से बचना चाहिए.

लेकिन बच पाना संभव कहां होता है. होली की मस्ती में चूर लोग रंग डालने से चूकते नहीं हैं. ऐसी स्थिति में गुलाल, रंग आदि को किसी कपड़े से पोंछ कर साफ कर लेना चाहिए. कुछ लोग पानी में घोलने वाले रंगों को अपने हाथ में लगा कर युवतियों के चेहरे पर रगड़ देते हैं. ऐसी स्थिति में इन रंगों को कभी सूखने न दें. सूखने से पहले ही रंगों को पोंछ दें अथवा धो डालें.

पहले होली के दिन दोपहर तक होली का रंग खेला जाता था और फिर सब लोग एकत्र हो कर गीतसंगीत का आनंद लेते थे. होना भी यह चाहिए कि होली के दिन दोपहर तक ही होली खेली जाए. लेकिन होली खेलने वालों पर तो दिन भर मस्ती छाई रहती है.

होली के दिन लोग घरघर जा कर गुलाल लगाते हैं, रंग भरी पिचकारियां छोड़ते हैं. उस दिन आलम यह होता है कि एक मित्र लगा कर जाता है तो दूसरा लगाने आ जाता है और फिर तीसरा... इस तरह होली के दिन आने वालों का तांता लगा रहता है.

होली खेलने आए लोग खेल कर चले जाते हैं और मुसीबत आ जाती है गृहिणी की. उसे दिन में अनेकबार गीला फर्श साफ करना पड़ता है. और इस आशंका में कि कब कोई नया मित्र अथवा सहेली रंग डालने आ धमके, वह स्नान नहीं कर पाती और न ही उस के पति.

ऐसे अवसर पर घर के बच्चे अपनी भूमिका खूब निभाते हैं. अ मातापिता पर रंग डालने आए लोगों भिगोने में कोई कसर नहीं छोड़ते. रंग पिचकारियां छोड़ कर वे आगंतुकों तथा की दीवारों को लालपीला कर देते हैं अ हुड़दंग मचाते हुए अपने रंगीन पानी उत्पन्न हुए कीचड़ पर फिसल चोट खा बैठते हैं.

कहींकहीं तो होली खेलने आने वा का तांता काफी रात गए तक लगा रह है. ऐसी स्थिति में बारबार गृहिणी सफाई करनी पड़ती है और कई जोड़े खर करने पड़ते हैं.

माना होली उल्लासउमंगों का त्योह है. खेला भी जाना चाहिए, लेकिन जि अंदाज से आज खेला जाता है यदि उस परिवर्तन कर लिया जाए तो होली आनंद कुछ और ही होगा.

होली के एकदो दिन पहले यदि महल के लोग एकजुट हो कर यह निर्णय कर लें होली घरघर न जा कर महल्ले के कि सार्वजनिक स्थान पर खेली जाए, व मिठाइयों का आदानप्रदान किया जाए, ग मिल कर पुरानी दुश्मनी को भुलाया जा और नई दोस्ती कायम की जाए तो होली आनंद बहुत बढ़ जाएगा. महल्ले वाले मि कर गीतसंगीत का भी आयोजन कर सक हैं.

ऐसी व्यवस्था निश्चित रूप साफसुथरी होगी जिस का खासतौर महिलाएं, जो आज महल्ले के युवकों गुब्बारों और बाहरी लोगों की छेड़खानि का शिकार बनती हैं, भरपूर आनंद सकेंगी.

होली के सुंदर भावों को पहचानिए

लेख • अनिता होलानी

होली? न बाबा न... बहुत जोश-खरोश भरी है यह होली, तौबातौबा, होली पर जिस तरह का हुड़दंग होता है, गुंडागर्दी होती है, उसे देख कर तो खेलने की हिम्मत ही नहीं होती. ये हैं प्रतिक्रियाएं आम महिलाओं की. महिलाएं खेलती भी हैं तो बस वही घर के कुछ लोगों के साथ. ऐसा इसलिए देखने में आ रहा है क्योंकि हर आने वाले साल होली की शक्ल बदशक्ल होती जा रही है.

कुछ लोगों के लिए तो होली का अर्थ हो गया है मदिरा पान कर गाली देना, फूहड़ मजाक करना, महल्ले की ब्याहताओं को भाभीभाभी कह कर और अनब्याहताओं को लल्लीमुन्नी टेर जबरदस्ती उन के गाल पर गुलाल रगड़ना, लड़कियों, महिलाओं को तंग करने वालों की इस दिन खूब

होली संस्कारहीनों, बदमाशों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह त्योहार है दुराचार पर सदाचार की विजय का, अन्याय व अत्याचार के दमन का, प्रेम और अनुराग का. तो फिर क्यों न सुंदर भावों से भरे इस त्योहार पर लगाएं प्रीत की गुलाल और छोड़ें स्नेह की फुहार न कि कीचड़, घृणा और दुश्मनी की बौछार.





बन आती है. होली के बहाने वे हर सीमा को लांघने के लिए आतुर रहते हैं. इसी लिए स्त्रियां अब कम ही निकलती हैं. न घरवालों को यह फूहड़ता और छेड़ाछाड़ी पसंद आती है, न खुद स्त्री को. कौन सरेआम अपनी बेइज्जती कराना पसंद करेगा. ठीक ही है छेड़ाछाड़ी और गुंडागर्दी उत्सव की उमंग को फीका ही करती हैं.

दिनबदिन लोग न खेलने के लिए बहाने ढूंढ़ते नजर आते हैं, और कुछ ऐसे हैं जो जबरदस्ती दूसरों को घर से निकलवाते हैं. जो जबरदस्ती घर में दुबके रहना चाहते हैं वे गुंडागर्दी के हादसे से या तो गुजर चुके होते हैं या उसे देख कर ही सहम जाते हैं. और कुछ जिन्हें आनंद ही छेड़ाछाड़ी और बदमाशी में आता है, दूसरों को खींच कर बाहर ले आते हैं. सच तो यह है कि किसी को जबरदस्ती होली खिलाने का कोई औचित्य नहीं. इस में न तो खेलने वाले को मजा आता है और न खिलाने वाले को.

होली में अब इस युग की विकृतियां भी अपना रंग दिखाने लगी हैं. कहां तो त्योहार एक मौका होता है वैरभाव मिटाने, खत्म करने का, लेकिन आजकल लोग इस बहाने दुश्मनी भी निकालते हैं. कहींकहीं

मदिरापान कर गाली देना या फूहड़ मजाक करना उचित नहीं, रंग की होली को खून की होली में बदलते देर नहीं लगेगी.

लाल मिर्च का पानी और तेजाब फेंकने जैसी घटनाएं भी सुनने में आई हैं. ऐसे ही मौके पर कुछ शरीफ लड़कों को गधे की सवारी करते, कीचड़कालिख और तारकोल उछालते देखा जा सकता है. पैसे के अभाव में बेमोल लीदगोबर, कालिखकीचड़ से ही हुड़दंग मचा लिया जाता है.

यह सब देख कर तो सचमुच ही होली खेलने का जी नहीं चाहता. पर क्या सचमुच होली का यही स्वरूप रहा है? नहीं. आज से तीनचार साल पहले तक मैं भी होली को संस्कारहीनों का त्योहार मानती थी. पर इधर होली को ले कर स्वस्थ चर्चा का मौका मिला और इसी संदर्भ में कुछ साहित्यकारों के विचार भी पढ़ने को मिले. तब मुझे एहसास हुआ कि दरअसल कितने सुंदर भावों को लिए है यह त्योहार.

भारतीय संस्कृति का सच्चा संदेश लिए आती है होली. होली साक्ष्य है हमारे भीतर की स्वस्थ ऊर्जा का, अन्याय, अत्याचार के दमन का. प्रहलाद की सत्य

परीक्षा या होलिका दहन असत्य पर सत्य की जीत और दुराचार पर सदाचार की विजय का ही तो संदेश है, और इस विजय का हर्षोल्लास रंगों के रूप में बिखेर कर हम होली का त्योहार मनाते हैं.

कभी ब्रज की कुंजगलियों में जन्मी होली आज आम आदमियों का त्योहार है. इस के रंग में रंग कर मिट्टी गुलाब बनती है और उस की सौंधी गंध केसर की खुशबू. ऐसे में लोकनृत्यों की गमक तो वह स्वर छेड़ती है कि जीवन थिरक उठता है.

गौर करने की मजेदार बात यह है कि त्योहार होली आता है फागुन में और फागुन है मास फूलों का. चंपा, चमेली, मोगरा, गुलाब और टेसू की कलिकाएं रूप लेने लगती हैं.

और भंवरे गुंजन करते हुए पुष्पों की कलियों से अठखेलियां करते रहते हैं, मानो प्रकृति सजीव हो उठती है, नाचती है, मुसकराती है, महकती है. इसी सुवासित महक में जीवन महकता है. जिस तरह मौसम सहज भाव से अपनेआप को दोहराता है, उसी तरह सालोसाल इस उल्लास को हम त्योहार के रूप में मनाते हैं.

होली के सौंदर्य को महसूस करने के लिए जरूरत है सुंदर भावना की. बंधे हुए मन को खोलने की भावना, पानी और रंगों से इसे इतना भिगो देने की, इतना रंगबिरंगा बना देने की भावना कि मन का सारा बासीपन और मैलापन धुल जाए और जीवन प्रेम के रंगों में रंग जाए.

जब बात होली की हो तो राधा और कृष्ण की होली की रंगीनी को भुलाया नहीं जा सकता. राधा और कृष्ण की होली ने ब्रज की करील कुंजों को पार कर संपूर्ण देश को अपने रंगों में रंगा है. रंगों की बौछार में राधा के मन का खो जाना, बेसुध हो जाना और कहना-

'एक संग धाये, नंदलाल ओ गुलाल दोऊ
द्रगन गए जू भरि आनंद मढ़ै नाही
धोयधोय हारी पद्माकर, तिहारी सौंह
अब तो उपाय कोई, चित्त में चढ़ै नाहि.'

उच्छृंखल कामभाव का नहीं, अपितु एक अतींद्रिय मनोह्लाद भोगभाव का द्योतक है. राधा और कृष्ण ने जी भर कर रंगों की मनभावन फुहार में होली खेली थी.

राधा और कृष्ण की होली ने जनमानस के साथ सभी के काव्यों को भी अपने ही रंग में रंग दिया है, साथ ही यह संदेश दिया है कि होली की आग में मन की दूषित वृत्तियां, घृणा, हिंसा सब जल जाएं, प्रेम के ऐसे बादल उठें कि दिशाएं रंगीन हो जाएं. होली जीवन को खुले रूप में कस कर जीने का त्योहार है. आओ लगाएं एकदूसरे के मस्तक पर प्रीत की गुलाल, छोड़ें एकदूसरे पर पिचकारियों से स्नेह की फुहार. आखिर होली प्यार और अनुराग का ही तो त्योहार है. ●

चिकित्सकों ने 'संसार का सब से लंबा व्यक्ति' होने का सपना तोड़ा

हैदराबाद के 18 वर्षीय गटैया का विश्व के सब से लंबे व्यक्ति का खिताब पाने तथा विश्व कीर्तिमानों की गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज कराने का सपना उस समय टूट गया जब बढ़ती लंबाई उस की जान की दुश्मन बन गई और डाक्टरों की सलाह पर उसे आपरेशन करवाना पड़ा.

7 फुट 4 इंच लंबा गटैया 3 वर्षों में आसानी से संसार के सब से लंबे व्यक्ति (लंबाई 8 फुट 3 इंच) ढाका के चांचा वर्मा से आगे जा सकता था. लेकिन डाक्टरों के अनुसार लंबाई और बढ़ने से उस की आंखों की रोशनी लुप्त हो सकती थी, यहां तक कि जान को भी खतरा हो सकता था. डाक्टरों ने 5 घंटे तक दो मेजों पर ..ए इस विशेष आपरेशन में गटैया की पीयूष ग्रंथि यानी गटैया की पिट्यूटरी ग्लांड के ट्यूमर को निकाला जो उस की असामान्य वृद्धि का कारण था.


पीड़ा
रमेश अपनी पत्नी से पीड़ित है.
राजपाल अपने बास से पीड़ित है और बास उस से.
ओह!
समाजसेवीजी कुर्सी पीड़ित हैं.
मोहन बेचारा अपनी सास से दुखी है.
हाय! कब मिलेगी ?
जाने कब जाएगी ?
ऊपर से बजट ने सब को बजट पीड़ित भी बना दिया है.
सच है!
आम बजट करोड़ के नए कर प्रस्ताव
तुम तो जानती हो, मुझ से किसी की पीड़ा देखी नहीं जाती. इसलिए मैं ने पीड़ा निवारण समिति का गठन किया है.
पीड़ा निवारण समिति संस्थापक: प्रकाश


वाह! यह तो आपने बहुत अच्छा करा.
आज हमारी समिति की बैठक है. मनोवैज्ञानिक, पत्रकार, वकील व डाक्टर को सदस्यों की पीड़ा निवारण के लिए बुलाया है.
क्या हुआ? जब से लौटे हैं दुखी और उदास लग रहे हैं. अब आप को किस बात की पीड़ा है?
क्या बताऊं, हमारी समिति भी गुटबाजी से पीड़ित हो गई है.
हाय!

होली के लजीज व्यंजन

नरगिसी मीठे पूड़े

सामग्री : कस्टर्ड के लिए : 1½ प्याला दूध, ½ बड़ा चम्मच कस्टर्ड पाउडर, ½ बड़ा चम्मच चीनी.

पूड़ों के लिए : 6 बड़े चम्मच चीनी, 4 बड़े चम्मच दूध, 2 बड़े चम्मच मैदा, 2 बड़े चम्मच क्रीम अथवा ताजी मलाई, ½ कटोरी कटे बादाम व चिरौंजी, तलने के लिए पर्याप्त तेल व थोड़ा रंगीन पेठा.

विधि : ½ प्याला दूध में कस्टर्ड पाउडर व चीनी घोलें. उसे शेष दूध में डाल कर आंच पर उबालें. उतार कर ठंडा करें. कस्टर्ड तैयार है. 2 बड़े चम्मच पानी के साथ चीनी उबाल कर चाशनी बनाएं.

क्रीम (मलाई), दूध व मैदे को डोंगे में डाल कर खूब फेंटें. तेल गरम करें व इस घोल का 1-1 बड़ा चम्मच उस में डाल कर दोनों तरफ से गुलाबी रंग वाले पूड़े तल लें. इन पूड़ों को चाशनी में डाल कर 1 मि... तक रखें. एक तश्तरी में चाशनी से बा... निकाल कर पूड़े लगाएं व उन पर 1-1 ... चम्मच कस्टर्ड डालें. रंगीन पेठा, बादा... चिरौंजी बुरक कर पेश करें. —सुधा म...

अंडे की चाट

सामग्री : 8 अंडे, 1 प्याला बेसन... प्याला कसा पनीर, ½ प्याला कटी ... मिर्च व हरी धनिया, ½ प्याला उबले ... आलू, ¼ प्याला इमली का पानी, 1 छ... चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच काली मि... ½ प्याला कसा चीज, तेल.

विधि : अंडों को उबालें व छील ... उन के अंडाकार पतले स्लाइस काट ... इमली के पानी में बेसन, नमक व काली ... तथा कसा पनीर डाल कर गाढ़ा घ... तैयार करें तथा अंडे के स्लाइस चीज...

नरगिसी मीठे पूड़े



अंडे की चाट





ब्रेड व सूजी सेव



चने की दाल की बरफी

टलपेट कर घोल में लपेटें व गरम घी में ल कर तश्तरी में निकाल लें. उबले कटे लू, हरी मिर्च व हरी धनिया डालें तथा ने से तुरंत पहले सौस व चटनी डाल कर लटपलटें और खाएं व खिलाएं.

—सुषमा कपूर

ब्रेड व सूजी सेव

सामग्री : 1 प्याला सूजी, 4 स्लाइस ड, ¾ छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा म्मच लाल मिर्च, तलने के लिए पर्याप्त त्रा में तेल अथवा घी, आवश्यकतानुसार नी.

विधि : सूजी साफ करें व उस में नमक या लाल मिर्च मिलाएं. ब्रेड स्लाइसों के नारे काट कर अलग कर दें व प्रत्येक लाइस को पानी में भिगोभिगो कर व हाथ दबा कर उस का पानी निकाल दें. इन लाइसों का गूदा जैसा बना कर सूजी में लें व अच्छी तरह से आपस में मिलाएं. 2 ड़े चम्मच पानी डालें व गूंध कर आटे जैसा बना लें. इस तैयार लौंदे को सेव बनाने वाले सांचे में डाल कर दबा कर देखें. यदि सेव बाहर आने लगे तो गरम तेल अथवा घी में सेव छांटते जाएं व गुलाबी रंग आने तक तल लें अन्यथा थोड़ा पानी और डाल कर आटे को नरम कर के सेव बनाएं. कुरकुरे सेव त्योहार से पहले बना कर हवाबंद डब्बों में भर कर रखे जा सकते हैं.

—सुधा माथुर

मूंगरे की कांजी

सामग्री : 200 ग्राम मूंगरे (हलवाई की दुकान पर उपलब्ध), 3 बड़े चम्मच राई, 1½ बड़ा चम्मच पिसी लाल मिर्च, 1 छोटा चम्मच हलदी, चुटकी भर भुनी पिसी हींग, नमक इच्छानुसार, 4 लिटर पानी.

विधि : किसी कांच के मरतबान में या मटके में मूंगरे, नमक, मिर्च, हलदी, हींग, राई और पानी डाल कर मिलाएं और ढक कर 3-4 दिन के लिए गरम स्थान पर रख दें. खट्टी होने पर पेश करें.



सूजी खोया गुझिया



रोटी खुरमा

इसी प्रकार आप बेसन की पकौड़ियां तल कर भी कांजी डाल सकती हैं.'

—मधु गुप्ता

चने की दाल की बरफी

सामग्री : 1 प्याला चने की दाल, 2 प्याले चीनी, 1 बड़ा चम्मच घी, 6 बादाम, 8 काजू, 2 इलायची का पाउडर, 6 पिस्ते, 4 बूंदें वेनिला एसेंस, थोड़ा सा केसर, ¾ प्याला पानी, ½ प्याला खोया.

विधि : चने की दाल को 3-4 घंटे भिगो कर पीस लें. कड़ाही में घी डाल कर चने की दाल की पिठी को भून लें. भूनने पर अलग प्लेट में निकाल लें. कड़ाही में ¾ प्याला पानी डाल कर उस में चीनी डाल दें. जब घुल जाए तब उस में भुनी हुई चने की दाल डाल दें. जब वह गाढ़ा होने लगे तब उस में खोया मिला दें. जमाव लेने लायक होने पर उस में इलायची पाउडर, केसर व वेनिला एसेंस डाल दें. घी लगा कर थाली में उस मिश्रण को फैला दें. उस के ऊपर कटे हुए बादाम, काजू व पिस्ते बुरक दें. होने पर मन चाहे आकार में काट लें.

—कमलेश

सूजी खोया गुझिया

सामग्री : 1 कटोरी सूजी, ½ प्य देसी घी, 8-10 काजू के टुकड़े, 1 प्य चीनी पिसी हुई, 1 प्याला कसा हुआ खो तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में घी, ग्राम मैदा, 1 बड़ा चम्मच घी मोयन लिए.

विधि : भरने की सामग्री तैयार क के लिए सूजी को अच्छी तरह देसी घी भून लें व उस में काजू, 1 प्याला पिसी च और 1 प्याला खोया डाल कर अच्छी त हाथ से मसल लें और ठंडा होने दें. मैदे मोयन मिला कर पानी के साथ कड़ा अ गूंध लें. छोटीछोटी लोइयां बना लें. पूरी आकार जैसी बेल लें और हर पूरी भरावन भर कर गुझिया के सांचे में रख गुझिया तैयार कर लें. फिर कड़ाही में

गरम कर के धीमी आंच कर लें और गुझिया तल लें. ठंडा होने पर गुझिया हवाबंद डब्बे में भर लें. यह होली का विशेष व्यंजन है. —अमिता दीक्षित

रोटी खुरमा

सामग्री : ½ प्याला मैदा, ½ प्याला आटा, 1½ प्याला चीनी, 10-12 लौंग, 2 बड़े चम्मच तेल, ½ प्याला दूध पाउडर, ½ प्याला कसा नारियल, 10-12 काजू, 2 बड़े चम्मच किशमिश, 5-6 छिले पिस्ते.

विधि : मैदे व आटे को मिला कर उस में ½ चम्मच तेल का मोयन डालें और रोटी की तरह का आटा गूंध लें. संपूर्ण आटे को 10 हिस्सों में बांट लें और पूरे आकार की चपातियां बना लें.

दूध पाउडर में 2 बड़े चम्मच चीनी, कसा नारियल, किशमिश व कटे काजू डाल कर अच्छी तरह मिला लें.

एक रोटी के बीच में 1 चम्मच मेवे का मिश्रण रखें और रोटी का पैकेट बना लें. उसे लौंग से बंद कर दें. नान स्टिक फ्राइंग पैन में तेल डाल कर इन्हें तल लें.

बाकी चीनी की 2 तार की चाशनी बना लें. रोटी खुरमा चाशनी में डुबा कर निकाल लें. पिस्ते की कतरन से सजा कर ठंडा करें. —विजय मेहरा

मीठा बड़ा

सामग्री : 1 चुटकी मीठा सोडा, 500 ग्राम आलू, ½ नारियल गोला कसा हुआ, 50 ग्राम चीनी, 50 ग्राम किशमिश, काजू, बादाम आदि, 10 ग्राम पिसी इलायची, 200 ग्राम घी.

विधि : आलू उबाल लें और छिलका उतार कर सोडा डालें तथा हाथ से मसल लें. इलायची व किशमिश आलुओं की पीठी में मिला लें. एक बरतन में थोड़ा पानी डाल कर उस में पीठी मिला कर आग पर रखें. बराबर हिलाते रहें ताकि जलने या लगने न पाए. आंच मंदी रखें. पीठी गाढ़ी होने पर उतार लें. इस में पिसी चीनी मिलाएं. ठंडी होने पर इस के छोटेछोटे गोले बना लें. इन गोलों के अंदर काजू, बादाम व नारियल का चूरा भरें और अच्छी तरह बंद कर के बड़े का आकार दे दें.

मीठा बड़ा



कांजी मूंग पकौड़ी वाली



कड़ाही में घी गरम कर के इन बड़ों को गुलाबी तल लें.

कांजी मूंग पकौड़ी वाली

सामग्री : पकौड़ी के लिए : ½ किलो मूंग की धुली दाल, ½ कटोरी कटा अदरक, हरी मिर्च व हरी धनिया, ¼ छोटा चम्मच हींग, 1 छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च, तलने के लिए तेल.

कांजी के लिए : ½ छोटा चम्मच हींग पड़ा 2 लिटर उबला कुनकुना पानी, नमक व लाल मिर्च स्वादानुसार, 1½-2 बड़े चम्मच राई.

विधि : दाल को साफ कर के रात को भिगो दें. सवेरे धो कर हींग, अदरक, हरी मिर्च, हरी धनिया, नमक व मिर्च डाल कर मिक्सी में पीस लें. तेल गरम करें तथा गोल अथवा चपटी पकौड़ियां तल लें.

किसी मरतबान अथवा मिट्टी की हांडी में उबला पानी, हींग, राई, नमक व मिर्च डालें और उस में पकौड़ी डाल कर ढक्कन बंद कर दें. बरतन को धूप में रखें तो कांजी जल्दी तैयार हो जाएगी. वैसे मौसम के अनुसार 3-4 से 6-7 दिन में पीने योग्य तैयार हो जाएगी. खट्टी, चटपटी कांजी होली के अवसर पर अवश्य बनाएं.

—अमिता दीक्षित

कुरमुरे हरियाले रोल

सामग्री : 12 ब्रेड स्लाइस, 1 छोटी गड्डी पालक, ½ छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच लाल मिर्च, 1 बड़ा चम्मच हरी मिर्च व हरी धनिया कटी हुई, ¼ छोटा चम्मच अमचूर, ¼ छोटा चम्मच भुना पिसा जीरा, ¼ छोटा चम्मच चना मसाला, ब्रेड को भिगोने के लिए थोड़ा सा दूध, रोल के ऊपर लगाने के लिए थोड़ी सी सूजी.

अंदर भरने के लिए : 100 ग्राम पनीर, 1 प्याला अंकुरित मूंग, ½ छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच गरममसाला, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च, तलने के लिए तेल.

विधि : ब्रेड स्लाइसों के किनारे काट कर अलग कर दें. स्लाइसों को दूध में भिगो कर निचोड़ लें. पालक की डंडियां काट कर पत्तों को बारीकबारीक कुतर कर ब्रेड

कुरमुरे हरियाले गेल



चिड़वा मूंगफली के साथ





काजू खजाना

स्लाइसों में मिला दें. सारे मसाले मिला कर ब्रेड का मिश्रण तैयार करें. पनीर को कद्दूकस कर के अंकुरित मूंग व मसाले मिलाएं. ब्रेड के मिश्रण के गोले बनाएं. उन के अंदर गड्ढा बना कर अंदर पनीर का मिश्रण भरें. फिर उन्हें गोल या बेलनाकार बना कर सूजी में लपेटें. सूजी अच्छी तरह चिपका कर खुले तेल में मध्यम आंच पर तलें. हरी चटनी, टमाटर सौस या इमली की चटनी के साथ गरमगरम खाने के लिए पेश करें. —कृष्णा वर्मा

चिड़वा मूंगफली के साथ

सामग्री : ½ किलो चिड़वा, ½ किलो मूंगफली दाना, 250 ग्राम तलने के लिए तेल, 1 छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच हलदी, 8-10 पत्ती कढ़ीपत्ता, 12-14 किशमिश, 8-10 दाने बादाम, 8-10 दाने काजू, 1 चम्मच चीनी.

विधि : तेल गरम करें. उस में मूंगफली तल कर एक थाली में निकाल लें. तेल गरम होना चाहिए. उस में चिड़वा डालें. वह फूल जाएगा. उसे बड़े कागज या अखबार पर डाल दें.

जब पूरा चिड़वा तल जाए तो थोड़ा सा तेल कड़ाही में रहने दें.उस में कढ़ी-पत्ता डाल दें. नमक, हलदी और काजू के टुकड़े भी डाल दें. जब पूरी तरह मिल जाएं तो उस में एक चम्मच चीनी भी डाल दें. और सारा चिड़वा तथा मूंगफली व शेष मेवा डाल कर मिला लें. ठंडा कर के चिड़वा हवाबंद डब्बे में रखें. —अमिता दीक्षित

काजू खजाना

सामग्री : 250 ग्राम आलू, 1 स्लाइस ब्रेड, 1 बड़ा चम्मच कार्नफ्लोर, ¼ छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच अदरक पिसा हुआ.

भरने के लिए : 100 ग्राम पनीर, 50 ग्राम काजू, 2 हरी मिर्च बारीक कटी हुई, 2 बड़े चम्मच हरी धनिया कटी हुई, 1 छोटा चम्मच अदरक पेस्ट, ½ छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच अमचूर, ¼ छोटा चम्मच गरममसाला, तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल.

विधि : आलुओं को उबालें. उन्हें छील कर अच्छी तरह मसल लें. ब्रेड के स्लाइस को पानी में भिगो कर निचोड़ लें व आलुओं में मिला दें. इस में 1 बड़ा चम्मच कार्नफ्लोर तथा अदरक मिला दें. ध्यान रहे कि आलू की अच्छी तरह लुगदी बन जाए.

भरने का मसाला तैयार करने के लिए घर बना पनीर कद्दूकस कर के उस में बारीक कटी हरी धनिया, हरी मिर्च, अमचूर, अदरक का पेस्ट, नमक व गरम-मसाला मिलाएं. अब नीबू के आकार जितना आलू का मिश्रण लें. उस में एक भुना हुआ काजू व पनीर का मिश्रण डाल कर ऊपर से आलू को मनचाहा आकार दे कर गरमागरम तेल में तलें. स्वादिष्ट 'काजू खजाना' तैयार है. धनिए की चटनी के साथ परोसें. —डा. नीलम मलिक ●

पाषाण पिघला

उपन्यास ● डा. राजलक्ष्मी शिवहरे

"यह लो, तुम्हारी सहेली सुन्नी का पत्र आया है."

यह सुनते ही हाथ की कलछी ही छूट गई. सुन्नी का नाम ही ऐसा है जो पलभर के लिए सब भुला देता है. उस के साथ बिताया गया समय याद आने लगता है. किसे अच्छा नहीं लगता अपने बीते दिनों को याद करना और वह भी उन दिनों को, जिन की याद अत्यंत मधुर हो.





पत्र देते समय इन्होंने मेरे चेहरे के भाव 'शायद पढ़ लिए थे, ''लो, अब तो तुम्हारा 'शेष समय सुन्नी के इस पत्र के साथ बड़े मजे से बीत जाएगा.''

मुझे खीज होने लगी. क्या मेरे पास मेरा अपना कुछ नहीं? सारा समय इन का, बच्चों का और घर का हो कर रह गया है.

''हां, जैसे मेरे पास करने को कुछ नहीं. रसोई में फैले बरतन अपनेआप ही तो सिमट जाएंगे. बच्चों ने और आप ने सुबह से जो घर फैलाया है, 'जादू' से ही तो व्यवस्थित हो जाएगा,'' झुंझला कर मैं ने पत्र ले लिया था.

''जिस के हाथों में जादू हो, वहां सब काम अपनेआप हो जाया करता है. यदि तुम्हारा जादू इन सुन्नीजी पर भी चल जाता तो किसी का जीवन संवर जाता.''

''सुन्नी की आप चिंता न करें, वह नहीं घरगृहस्थी के चक्कर में पड़ने वाली.''

''यह तो समय ही बताएगा, अब चलूं अन्यथा देर हो जाएगी,'' कह कर यह चले गए थे. बहुत देर तक चौखट पर खड़ी सोचती रही कि सुन्नी के पत्र को खोलूं या नहीं? यदि खोल लिया तो फिर बहुत से काम अधूरे रह जाएंगे. बच्चों की फैली कापीकिताबें समेटतेसमेटते भी दृष्टि मेज पर रखे पत्र पर ही थी.

काम समाप्त हुआ तो घड़ी 3 बजा रही थी. बच्चों के आने में केवल एक घंटा 'शेष था. कुछ देर के लिए बिस्तर पर आ कर लेट गई. सोचने लगी, रधिया को भी आज ही गांव जाना था. आ जाती तो कम से कम बरतन, चौका तो संभाल ही लेती. कमर सीधी करने लेटी तो भी पत्र पास में ही रखा था. 'क्या लिखा होगा सुन्नी ने? 'शायद यही कि सब ठीक है, पूर्ववत चल रहा है. 'शोधकार्य आगे बढ़ रहा है.

'वह कितने मजे में है. पढ़ती है और पढ़ाती है. घरगृहस्थी का कोई झंझट गले नहीं बांधा. भाईभतीजों को उपहार भेजती रहती है.' सोचतेसोचते जाने कब आंख लग गई.

दरवाजा जोर से पीटे जाने की आवाज सुन कर नींद टूटी. दरवाजा खोलते ही दोनों मुझ से लिपट गए.

"आप तो सुनती ही नहीं," राहुल ने कहा तो मैं मुसकरा पड़ी. कच्ची नींद से जागने का अवसाद जाता रहा.

"एक दिन नींद क्या लग गई, इतनी शिकायत?... मां को तो बस दरबान बनी दरवाजे पर ही मिलना चाहिए," रोहित के जूतेमोजे खोलते हुए मैं बोली.

"मां, आइसक्रीम जमाई है?" राहुल ने पूछा तो मैं हड़बड़ा गई, "नहीं बेटे, आज रधिया नहीं आई, अतः काम की वजह से सब भूल गई. शाम को पिताजी के साथ आइसक्रीम खाने चले जाना."

इन के आने का समय हो रहा था और नाश्ता, कुछ तैयार नहीं था. बच्चों को तो बहला दिया पर इन्हें क्या जवाब दूंगी. कटलेट बनाने के लिए बोल गए थे, लेकिन मैं आलू उबालना ही भूल गई थी. बच्चों को खाना खिलाते समय कुकर में आलू उबालने के लिए रख दिए. जब तक बच्चों को तैयार कर के भेजती, इन की आवाज आई. पानी डाल कर कुकर को ठंडा किया, फिर फ्रिज से डबलरोटी निकाली. माथे पर पसीना चुहचुहा आया. यदि इस समय कहीं सुन्नी देख लेती तो कहती कि इतना भय किस बात का? पति और बच्चे न हुए, जान की आफत हुए. अरे जरा देर रुक नहीं सकते?

'किंतु इस भय के पीछे छिपी प्रेम भावना का आभास सुन्नी क्यों नहीं कर पाती?' गरमगरम आलुओं को छीलते हुए सोचा. तभी तो इन्होंने उसे 'पाषाण प्रतिमा' की संज्ञा दी थी.

कितने कठोर थे इन के विचार सुन्नी के प्रति. उसे भी कितनी बार समझाया कि इन के सामने स्वाभाविक रहे, परंतु पुरुषों के प्रति उस की विरक्ति छिपी नहीं रह पाती थी. बातें करते हुए वह इतनी आवेश में आ जाती थी कि इन्हें ही उसे याद दिलाना पड़ता था कि वह पुरुष जाति के प्रतिनिधि नहीं हैं.

सुन कर सुनीता 'माफ कीजिएगा' कह कर मुक्त हो जाती लेकिन उस के बाद मुझे महीनों इन की बातें सुनने को मिलती. जब कभी वह छुट्टियों में मेरे पास आने की योजना बनाती तो मैं सोचती कि न ही आए तो अच्छा है. उसे लेने स्टेशन जाती तब भी यही लगता. किंतु जानती थी कि सुनीता का आना टल नहीं सकता. गाड़ी जब प्लेटफार्म पर आ कर लगती, तब होश ही कहां रहता. वही अटैची हाथ में लिए कंधे पकड़ कर मुझे झकझोरती, "उधर कहां देख रही है भारती, मैं तो तेरे पास खड़ी हूं."

"ओह, तू आ गई. अच्छा है, मैं तो तुझे ही खोज रही थी," माथे पर आए पसीने को पोंछती हुई मैं कहती.

आटो रुकने पर यह दरवाजे पर ही मिलते, "आइए सुनीताजी, कैसी हैं आप?" यह मेरे हाथ से अटैची ले लेते. मैं सोचती कि चलो, सामने तो इज्जत रखी.

"कुछ काम था इंदौर में. सोचा

सुनीता का अतीत उसे इस कदर कठोर बना गया था कि भावनात्मक संबंधों से उसे विरक्ति हो गई थी. यहां तक कि उस के आगमन से भारती के परिवार में घुला माधुर्य भी ठिठक जाता. परंतु इस बार उस का बदला व्यवहार सभी के लिए एक पहेली बन गया.



घंटी बजने पर भारती ने दरवाजा खोला तो सुनीता को अटैची लिए खड़ी देख वह हड़बड़ा कर बोली, "तू बिना कोई खबर दिए..."

भारती से मिलती चलूं." कह कर वह सीधे स्नानघर में घुस जाती.

यह उस के इस छोटे से उत्तर से क्षुब्ध हो जाते.

"कुछ लाना है?" यह स्कूटर की चाबी संभालते हुए पूछते.

"आप अभी से कहां जा रहे हैं, अभी तो दफ्तर के लिए बहुत समय है?"

"मेरे लिए खाना मत बनाना, होटल से मंगा लूंगा," कह कर यह चले जाते. तब मुझे लगता कि जैसे सब की गुनहगार मैं ही हूं.

"मां, मौसी आई हैं?" बच्चे भी सहमे से अपने कमरे से बाहर आ कर पूछते.

"हां बेटे, हल्ला नहीं करना," मैं जैसे उन्हें अंतिम बार याद दिलाती.

"ठीक है, मां, मौसी कब जाएंगी?"



इशारा

सिर्फ मुसकराहट ही तेरी
साहिल का इशारा करती है,
वरना आंसुओं के मझधार में
तो हर रोज डूबते हैं हम.
—विजय कृष्ण वर्मा

बच्चे अगला सवाल करते.

'ओह, यह कैसा घर है या यह कैसा उपेक्षित मेहमान है जिस की आवभगत के लिए न बच्चे तैयार थे न पति?'

सिर्फ मुझे ही लगता कि सुन्नी 2-3 दिन रुकती तो अच्छा रहता. परंतु पति और बच्चे तो जैसे राहत की सांस लेते. उस के जाने के बाद बच्चों को और इन्हें संभालना मुश्किल हो जाता. रोज खाने पर अलगअलग फरमाइश. लगता अपने ही घर में इन लोगों ने कब से जी भर कर खाया नहीं है. इसी लिए लगता था कि सुनीता न ही जाती तो अच्छा रहता.

वह जब नहा कर निकलती तो कहती, "अरे, तेरे रामचंद्र कहां गए?" वह इन्हें इसी तरह संबोधित करती थी.

"बाहर गए हैं, कुछ काम था."

"चलो, अच्छा हुआ," वह चैन की सांस लेती और मुझे लगता कि क्या कभी सुन्नी यह नहीं सोचना चाहेगी कि ऐसा कौन सा जरूरी काम था जो वह सुबहसुबह बाहर चले गए.

"ला, चाय पिला दे. नौकरानी तो कोई तू ने रखी नहीं होगी?"

मैं बिना कुछ कहे चाय बना लाती थी. उसे समझाती भी तो कैसे कि जितने पैसों में वह अकेली खुद का खर्च चलाती है, उतने में मैं अपने पूरे परिवार को संभालती हूं. बच्चों के साथ कब पैसों की जरूरत आ जाए, कहा भी तो नहीं जा सकता.

सहसा मेरा ध्यान भंग हुआ. यह कह रहे थे, "अरे, अभी कड़ाही रखी है?"

मैं मात्र कटलेट का मसाला तैयार कर पाई थी.

"मैं जानता था, आज तुम से कुछ होगा नहीं. मुझे नाश्ता बाहर ही कर आना था."

"पिताजी, हमें आइसक्रीम खिलाइए," राहुल ने कहा तो मुझे लगा कि अब फिर कुछ न कुछ सुनने को मिलेगा.

"लगता है तुम्हारी मां ने आइसक्रीम भी नहीं जमाई." इन्होंने चश्मे से मुझे घूरा.

"तुम्हारे पिताजी अभी दफ्तर से आए हैं और तुम लगे तंग करने. जाओ, बाहर खेलो," मैं ने इन्हें एक प्लेट में कटलेट देते हुए कहा.

राहुल बाहर चला गया तो इन्होंने कहा, "क्या लिखा है तुम्हारी सहेली ने?" कटलेट इन की उंगलियों के बीच गोलगोल घूम रहा था

"ओफ्फोह, पूरा मुंह कैसा हो गया है... कुछ होश भी रहता है तुम्हें? कितना नमक डाल दिया है?..." यह गुस्से से बोले.

"लगता है, मैं ने दो बार नमक डाल दिया," घबरा कर मसाला मुंह में रखा तो नमक बराबर लगा.

"खा गई गच्चा..., जब से आया हूं मैं ही बोले जा रहा हूं. ऐसा भी सुन्नी ने अपने पत्र में क्या लिखा है कि तुम्हारी बोलती ही बंद हो गई है?"

चाय छानतेछानते आंखों में आंसू भर आए.

"अरे, तुम तो रोने ही लगीं. इस में रोने की क्या बात है. क्या बात है, सुन्नी ठीक तो है?"

"सुन्नी...सुन्नी...सुन्नी, जैसे वही आप

के लिए सब कुछ है. केवल उसी के बारे में पूछे जा रहे हैं, मेरे बारे में कुछ भी नहीं."

"नारी को समझना कितना कठिन है. यदि मैं सुन्नी के बारे में कुछ नहीं पूछता तो तुम बोलती कि मैं ने पूछा नहीं. सहेली तुम्हारी है, मुझे उस से क्या लेनादेना. हां, एक भय यह भी था कि कहीं आ तो नहीं रही?"

"क्या वह 2-4 दिन मेरे पास आ कर नहीं रह सकती?"

"मैं ने कभी मना किया है आज तक? पहले भी तो वह आती ही रही है."

शाम होते ही बच्चों को इन के साथ आइसक्रीम खाने के लिए भेज दिया था और खुद चौके में आ कर खाना बनाने में व्यस्त हो गई थी. नारी का जीवन कितना संकीर्ण है. घर की चारदीवारी में अधिक समय उस का चौके में ही बीतता है. परंतु क्या सुन्नी नारी नहीं. उसे तो कपड़ों से आती गंध से भी उबकाई आती है.

"यार भारती, लहसुनअदरक की तरह गंधा रही हो. कम से कम सोने से पहले कपड़े तो बदल लो." जब तक मैं कपड़े नहीं बदलती, सुन्नी मुझ से बात भी नहीं कर पाती.

दूसरी ओर यह कहते, "मुझे क्यों नहीं तुम से मिर्चमसालों की गंध आती. मुझे तो तुम से केवल नारी गंध आती है."

"पुरुष तो सब भेड़िए होते हैं... जिस प्रकार सिंह को मानव गंध आती है, उसी तरह आप को..."

"हांहां, क्यों नहीं. बोले जाओ, बोले जाओ और मुझे नर-भक्षी घोषित कर दो."

इन के लहजे पर मुझे हंसी आ जाती, फिर कुछ भी होश न रहता. पुरुष के इस सान्निध्य के लिए क्या सुनीता का मन नहीं तरसता?

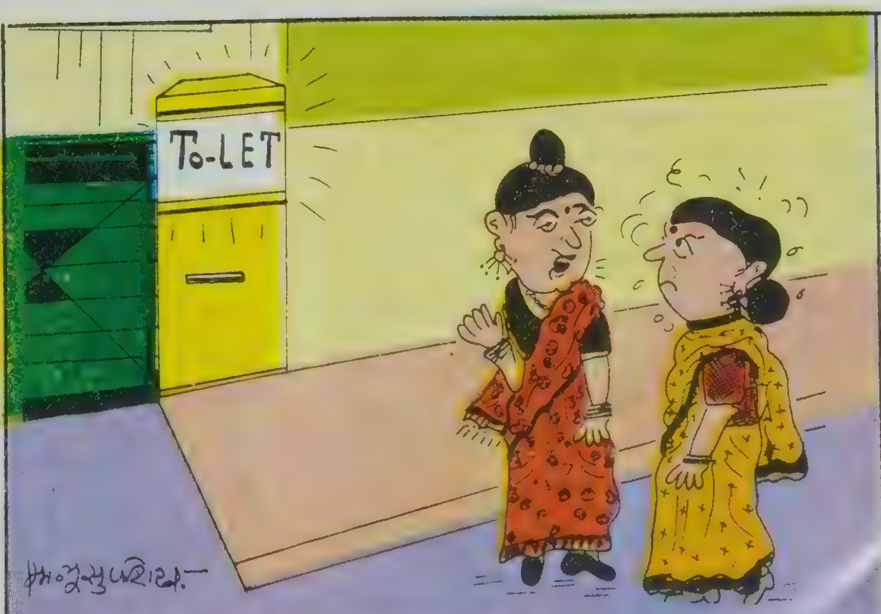
खाना बन कर तैयार हो गया था परंतु ये लोग अभी तक नहीं लौटे थे. अगले दिन बच्चों की जांच परीक्षा थी. उस की चिंता हो रही थी. शाम को कंघी करने का समय ही नहीं मिला था, इसलिए बालों को खोल लिया. उन पर धीरेधीरे हाथ फेरने से सुकून मिल रहा था. सुन्नी के बारे में पूछने पर मुझे रोना क्यों आया? उस में रोने जैसा तो कुछ नहीं था. कंघी करने के बाद बिंदी लगा ही रही थी कि स्कूटर की आवाज आई.

"मां, आप के लिए भी आइसक्रीम लाए हैं, पिताजी." नन्हा राहुल दौड़ा आया. रोहित के हाथ में दो पुलिंदे थे.

"इन्हें फ्रिज में रख दो, खाना खाने के बाद खाएंगे," मैं ने उस से कहा, "कल परीक्षा है, खाना खा कर पढ़ने बैठो."

भूख न होने के कारण बच्चे पढ़ने बैठ गए. राहुल कभी पिताजी से नहीं पढ़ता था, अतः उसे मुझे ही पढ़ाना पड़ता था. पढ़ने के बाद दोनों बच्चे सो गए.

खाना समाप्त होतेहोते काफी समय हो गया था. उस के बाद टीवी पर वयस्कों को



"अरे बहन, हम तो यहीं पर रहते हैं, दरअसल ये होली से बचने के लिए लगाते हैं."

दिखाई जाने वाली फिल्म आने लगी थी और उसे देखने में रात अधिक हो गई थी. पलंग पर पड़ते ही नींद आ गई.

राहुल ने ही सुबह उठाया. रोहित तो उठ कर हाथमुंह भी धो चुका था. राहुल का हाथमुंह धुलवा कर दोनों को दूध देने के बाद चूल्हे पर मैं ने एक ओर चाय चढ़ा दी और ब्रश करने लगी. तभी घंटी बज उठी. मैं ने जल्दी से दरवाजा खोला तो बाहर सुन्नी को अटैची लिए खड़ी देख मैं हड़बड़ा ही गई. "तू बिना कोई खबर दिए..."

"तुझे क्या मेरा पत्र नहीं मिला?"

"पत्र?" जैसे मैं सोते से जागी.

तभी यह नाइट गाऊन पहने ही आ गए थे.

"पत्र तो मिला था सुनीताजी पर मैं ही इन्हें देना भूल गया था," इन्होंने मेरी घबराहट को देखते हुए कहा.

सुनीता ने मेरी ओर शिकायतभरी दृष्टि डाली.

"अब इन्हें बैठाओगी भी या दरवाजे पर ही खड़ा रखोगी." इन्होंने कहा तो मैं ने उस के हाथ से अटैची ले ली.

"चूल्हे पर शायद चाय का पानी खौल रहा है," इन्होंने मुझे याद दिलाया.

"सुनीता, तू भी मुंहहाथ धो ले, तब तक मैं चाय बनाती हूं." उस की अटैची ले जा कर मैं ने कमरे में रख दी. जब तक सुनीता रहती, यह बच्चों के कमरे में ही सोते और यह हमारा मौन समझौता था.

'रातभर का अस्तव्यस्त पड़ा घर देख कर सुनीता ने क्या सोचा होगा,' मैं सोफे की गद्दियों को समेटते हुए सोच रही थी. रात कालीन पर लेट कर इन्होंने फिल्म देखी थी. बच्चों की किताबें मेज पर फैली पड़ी थीं. आइसक्रीम के दोनों प्याले लुढ़के पड़े थे.

यह चाय पीते हुए मुझे बच्चों की किताबें समेटते हुए देख रहे थे. घर का वातावरण जो बदलने लगा था.

"तुम सुनीता से इतना अधिक भयभीत क्यों रहती हो? उसे बताती क्यों नहीं कि तुम मात्र उस की सखी ही नहीं, किसी की पत्नी हो, बच्चों की मां हो."

मैं ने कुछ नहीं कहा, कहती भी क्या? सुन्नी बचपन से ऐसे परिवार में रही, जहां उस का अपना कहने को केवल उस के पिता थे. जो विमाता कहती वह उन के लिए पत्थर की लकीर हो जाती. सुन्नी की विमाता घर को घर कम और सजावट की वस्तु ज्यादा समझती. एक चीज को फैला देने पर घंटों सुनीता को कमरे में बंद रहना पड़ता था. गिलास फोड़ देने पर उस को एक समय का भोजन ही नहीं दिया जाता था.

लोगों के शुष्क व्यवहार ने सुनीता को यदि कठोर बना दिया तो इस में उसे दोषी क्यों समझा जाए. यदि उस का यह आक्रोश मुझ पर उतरता तो मुझे दुख नहीं होता, बल्कि मुझे लगता है कि अब भी यदि सुनीता को प्रेम मिले तो उसे बदला जा सकता है.

"चाय ठंडी हुई जा रही है और जाने तू क्या सोचे जा रही है," सुनीता मेरे सामने दो प्याले उठाए खड़ी थी. मैं रसोई में उन्हें रख आई थी.

मैं ने स्नेह से उस के बालों पर हाथ फेरा था, "सुनीता, इस समय तो कालेज में भी परीक्षाएं चल रही होंगी, फिर तू अचानक यहां...?"

उस ने सिर झुका लिया, "जाने क्यों इन दिनों तेरी इतनी अधिक याद आ रही थी? पर बिना पत्र लिखे आने पर तुझे असुविधा होगी, इसलिए पहले ही पत्र लिख दिया था."

"पत्र कल ही मिल गया था, पर कल इतना अधिक काम था," मैं चाय पीते हुए बोली, "इन्होंने मुझे दिया भी था, लेकिन कल इतनी अधिक व्यस्त थी कि पत्र पढ़ना भूल गई. सोचा था, रात में सोने से पूर्व पढ़ लूंगी. लेकिन फिल्म देखतेदेखते 1½ बज गया. फिल्म इतनी भावपूर्ण थी कि पत्र की याद ही नहीं रही."

"लेकिन निशिकांत तो कह रहे थे..." सुनीता कुछ सोचती हुई बोली.

"तुझे देख कर मैं घबरा गई थी. तुझे

बुरा न लगे, इसी लिए इन्होंने बात अपने ऊपर ले ली."

"भारती, जबतब आ कर तुझे परेशान कर देती हूं न," उस की बड़ीबड़ी आंखें चश्मे से मुझे घूर रही थीं.

"तू मुझे गलत समझ रही है, सुन्नी. तेरे आने पर मुझे लग रहा है कि मेरी छोटी बहन ही आ गई है. जानती हूं, तू भावना प्रधान संबंधों को नकारती है... सखी ही बनी रहना चाहती है तो बनी रह. पर तेरी दृष्टि में हमेशा मैं ने अपने लिए एक सम्मान की भावना पाई है." खाली बरतन ले जा कर मैं वाशबेसिन में धोने लगी थी.

"तू क्यों धो रही है, क्या अब महरी को भी छुड़ा दिया है?" सुनीता भी मेरे पीछेपीछे आ गई थी.

"नहीं, वह शादी में गई है. कल तक आ जाएगी. तू नहा ले, तब तक मैं बच्चों को थोड़ा पढ़ा दूं. आज उन की परीक्षा का अंतिम परचा है."

"मैं पढ़ा दूं? वह काम तुझ से अच्छा ही कर लूंगी."

"कर सकती, बशर्ते कभी बच्चों को अपने निकट आने दिया होता..."

सुनीता की दृष्टि झुक गई थी. उसे मैं ने जबरदस्ती आराम करने भेज दिया था. बच्चों को पढ़ाने के बाद उन्हें तैयार किया था. दोपहर का भोजन उन के डब्बों में रखा, तब तक बच्चों का रिकशा आ गया था.

यह बरामदे में दाढ़ी बना रहे थे. वहां मुझे देख आहिस्ता से बोले, "चाय नहीं पिलाओगी?"

"क्यों नहीं, अभी लाती हूं."

मैं ने चाय चढ़ाई ही थी कि यह रेजर साफ करते हुए रसोई में आ गए, "सुनीता ने बुरा तो नहीं माना?"

"नहीं, मैं ने उसे समझा दिया है कि मैं उस का पत्र पढ़ नहीं पाई, इसलिए उसे लेने स्टेशन नहीं जा पाई," मैं ने इन्हें प्याला पकड़ाते हुए कहा.

इन्होंने प्याला लिया और बरामदे में जा कर चाय पीने लगे. मैं ने सोचा, जब तक सुन्नी सो रही है, मैं नहा कर खाना बना लूं अन्यथा इन को दफ्तर जाने में देर हो जाएगी.

इन को खाना खिला कर दफ्तर भेजने के बाद कमरे में गई तो देखा, सुन्नी अभी भी सो रही है.

"सुन्नी, उठ, नहा ले. खाना ठंडा हुआ जा रहा है," उसे उठाते हुए मैं ने कहा.

"मैं अभी और सोना चाहती हूं. तू खाना खा ले, उठूंगी, तब खा लूंगी."

मैं सोचने लगी कि इसे क्या हो गया है. ऐसे बेसमय तो पहले कभी सोती नहीं थी. हर समय हमें ही उपदेश सुनना पड़ता था. शायद इसे रात को गाड़ी में नींद नहीं आई होगी, यही सोच कर मैं खाना खाने चली गई.

> **भूख**
>
> *जब मनुष्य भूखा हो या मर रहा हो, उस वक्त संस्कृति या भगवान के विषय में बात करना बेवकूफी है, और किसी चीज के बारे में बात करने से पहले, आदमी को उस की जिंदगी की आम जरूरत की चीजें मिलनी चाहिए.*
>
> *— जवाहरलाल नेहरू*

खाना खाने के बाद मैं भी सुन्नी के पास ही लेट गई. जाने कब आंख लग गई, पता ही नहीं चला. जब आंख खुली तो बच्चों का शोर सुनाई पड़ा. घड़ी पर दृष्टि गई तो पता चला कि 4 बज रहे हैं.

मैं उठी तो देखा कि कमरे में सुन्नी नहीं है. जाने कब उठ कर जा चुकी थी. चौके में गई तो आश्चर्यचकित रह गई, सुन्नी और बच्चे खाना खा रहे थे. बच्चे उस की किसी बात पर हंस रहे थे. उन्होंने मुझ पर एक दृष्टि डाली, पर कहा कुछ नहीं, जैसे उन्हें मुझ से कोई सरोकार ही न हो.

"फिर क्या हुआ मौसी?"

"फिर राक्षस ने बड़ीबड़ी आंखें निकाल कर राजा से कहा कि मैं तुझे खा जाऊंगा."

बच्चों के चेहरे भयभीत दिखाई देने लगे.

''राजा ने राक्षस से कहा कि तू मुझे खा लेना, पर मुझे एक महीने का समय दो, जिस से मैं खापी कर मोटाताजा हो जाऊं...''

''फिर राक्षस ने क्या किया मौसी?'' बच्चे एकसाथ बोले. उन की उत्सुकता और भी बढ़ती जा रही थी.

''राजा की बात राक्षस मान गया.''

''अच्छा मौसी, क्यों राक्षस मान गया?'' यह रोहित था.

''राक्षस ने सोचा कि यह तो और भी अच्छी बात है, इसलिए वह मान गया... अब रात को सुनाएंगे,'' सुनीता की दृष्टि मुझ पर पड़ गई थी.

''नहीं मौसी, अभी,'' राहुल जिद करते हुए बोला.

''पहले अपनी प्लेटें साफ करो, तब सुनाएंगे...''

दोनों जल्दीजल्दी खाने लगे थे.

''तुम सो रही थी, मैं ने सोचा मैं भी इन के साथ खा लूं.''

''बहुत अच्छा किया, मुझे उठा लेती तो मैं खाना गरम कर देती.''

''मां, खाना मौसी ने गरम कर दिया था और हमें कहानी भी सुनाई. वह तो आप बीच में आ गईं और हमारी कहानी अधूरी ही रह गई.'' उन्हें मेरे आने पर शिकायत थी.

''नहीं, ऐसी बात नहीं, अब कहानी रात में सुनेंगे.''

''मौसी, आप को पहले भी कहानियां आती थीं?'' राहुल ने पूछा.

''हां बेटे, आती थी, पर मैं उन्हें भूल गई थी.''

''अब कैसे याद आ गई मौसी?''

''याद आ गई बेटे,'' सुन्नी के नेत्र भर आए थे.

''मौसी, आप की आंखों में पानी आ गया. क्या मिर्च लग गई?'' रोहित ने पूछा.

''नहीं बेटे, बस यों ही...'' वह आंखें पोंछ रही थी.

मैं बरतन समेटते हुए सोचने लगी कि इस बार सुन्नी को हो क्या गया है? यह कैसा परिवर्तन उस में दिख रहा है? बच्चों को कहानी सुनाते हुए पहली बार देखा था.

दोनों बच्चों को ले कर सुनीता लान में बैठी हुई थी और मैं भीतर शाम के खाने की तैयारी कर रही थी. इन के स्कूटर की आवाज सुनाई पड़ी. मैं चाय का पानी चढ़ा ही रही थी कि रोहित अंदर आया, ''मां, पिताजी आ गए हैं. चाय के लिए कह रहे हैं,'' उस के हाथ में इन का थैला था.

मैं चाय ले कर पहुंची तो यह सुनीता की पास वाली कुरसी पर बैठे थे. राहुल इन से बता रहा था कि आज उन की मौसी ने कहानी सुनाई है.

''मौसी, क्या राजा को राक्षस खा जाएगा?'' वह राजा के लिए चिंतित था.

सुनीता की दृष्टि झुकी हुई थी. जैसे वह चोरी करती पकड़ी गई हो.

''अच्छा, तुम्हारी मौसी कहानी भी सुनाती हैं? मुझे तो लगता था कि तुम्हारी मौसी को तो बस बड़ेबड़े बच्चों को ही पढ़ाना आता है. भारती, तुम ने केवल मेरे लिए चाय बनाई है और...''

''ला रही हूं, मुझे लगा आप थक कर आए हैं, इसलिए पहले आप के लिए ला दी है.''

''तुम बैठो, मैं ले आती हूं,'' कह कर वह उठ गई थी.

''कितना परिवर्तन आ गया है सुन्नी में... तुम्हें नहीं लग रहा?'' इन्होंने पूछा था.

''लग तो रहा है. परिवर्तन सुखद है, अतः न टोकना ही अच्छा.''

''हां, जैसे मरुस्थल में कहीं मीठे पानी का सोता निकल जाए, वैसा ही.''

उस रात सुन्नी ने खाना बनाने में मेरी सहायता की. मैं ने उस से बहुत आग्रह किया कि वह बाहर जा कर बैठे, उसे गरमी लगेगी, पर वह मानी नहीं. बच्चे अपने पिता के साथ बाजार गए थे. जब वे लौटे तो उन लोगों के हाथ में बहुत सारी खानेपीने की चीजें थीं.

इन्होंने कहा, ''कल मेरी छुट्टी है.

बच्चों की परीक्षा भी समाप्त हो गई है और सुनीता भी हैं, कल कहीं बाहर चलेंगे."

सुनीता बच्चों के हाथ से सामान ले कर रखने लगी.

"आप क्यों तकलीफ करती हैं," यह सुनीता को देखते हुए बोले, "आप आज ही तो आई हैं, थकी होंगी."

सुनीता ने मेरी ओर देखा, जैसे कह रही हो कि उसे यह काम करना चाहिए अथवा नहीं.

"बेटे, तुम अपनी मौसी से कहानी सुनना चाहते थे न? जाओ, बाहर आराम से कहानी सुनना, तब तक मैं सामान भी संभाल दूंगी और खाना भी लगा दूंगी."

"इतना सब तुम अकेले करोगी?" सुनीता ने हैरानी से पूछा.

"मेरे लिए कुछ भी तो नया नहीं. तुम चिंता न करो, जब तक ये बच्चे कहानी नहीं सुन लेंगे, तुम्हें चैन नहीं लेने देंगे."

सुनीता की जैसे जान बची, वह देख रही थी कि काम करने के स्थान पर वह भारती का काम बढ़ा ही रही थी.

"मौसी, क्या राक्षस ने राजा को खा लिया?"

"नहीं, राजा बहुत चिंतित रहने लगा. न उसे भोजन में रुचि थी, न राजपाट के कार्य में मन लगता था. नींद भी कोसों दूर चली गई थी. एक दिन अपना मन बहलाने के लिए वह घोड़े पर बैठ कर अपने राज्य से बहुत दूर चला गया."

"बहुत दूर मौसी," राहुल सुनीता की गोद में बैठा हुआ था और उस की ठुड्डी अपनी ओर घुमा रहा था. मैं भी चौके का काम समाप्त कर के सुनीता के पास आ बैठी थी. यह हाथमुंह धोने चले गए थे.

मैं खामोश राहुल और रोहित की उत्सुकता को देख रही थी. पहले यही बच्चे सुनीता के नाम से भी हिचकते थे, वहीं आज उस के थोड़े से प्रेम ने उन्हें उस के कितने पास कर दिया है.

इन के आते ही सुनीता ने कहानी सुनानी बंद कर दी.

"पिताजी, आप जाओ न, मौसी हमें कहानी नहीं सुनाएंगी."

"क्यों नहीं सुनाएंगी? क्या हम आप की मौसी से कहानी नहीं सुन सकते?"

"नहीं, आप कोई बच्चे थोड़े ही हैं..." रोहित ने अपनी दलील दी.

"अभी तो मौसी यहीं रहेंगी, अब बाद में सुनना, चलो पहले खाना खा लो, नहीं तो नींद आ जाएगी."

खाना समाप्त होते ही बच्चे सुनीता को अपने कमरे में ले गए. उन की कहानी जो अधूरी थी. सुनीता के दाएंबाएं वे लेटे हुए थे.

"फिर क्या हुआ मौसी?" राहुल ने पूछा.

"फिर जंगल में राजा को एक झोंपड़ी दिखी. वह घोड़े से उतर कर झोंपड़ी में गया

प्रारंभिक सतर्कता द्वारा मधुमेह रोग से बचाव

मधुमेह एक ऐसा वंशानुगत रोग है जिस का अभी तक कोई शुरुआती इलाज नहीं है. किंतु ब्रिटेन के विशेषज्ञों ने मधुमेह बीमारी पर अनुसंधान कर के पता किया है कि अब पहले ही यह पता लगाया जा सकेगा कि बीमारी वंशानुगत है या नहीं. इस से वशांनुगत मधुमेह के रोगियों को पहले से ही सतर्क किया जा सकेगा.

आक्सफोर्ड टीम के डा. रबर्ट टंडन का कहना है कि इस रोग को वंशानुगत रोग के तौर पर कई वर्षों से जाना जा रहा है. मिसाल के तौर पर जुड़वां लोगों में यह बीमारी आश्चर्यजनक ढंग से पनपता हुए देखी गई है. यह बीमारी ज्यादा उम्र में होती है लेकिन गैरवंशानुगत मधुमेह युवावस्था में ही हो जाता है. यह रोग 5% लोगों में देखा जा सकता है.

तो वहां उसे साधू दिखा."

"वहां साधू क्या कर रहा था?"

"ध्यान कर रहा था."

"ध्यान क्या होता है?"

"जैसे कभी तुम्हारी मां मेरी याद करती होंगी."

"याद तो पिताजी भी करते हैं. वह मां से कहते हैं कि तुम्हारी सहेली तो पाषाणी है. पाषाणी क्या होता है मौसी?"

मैं ने रोहित को डांट कर चुप कराना चाहा, परंतु सुनीता ने कहा, "कहने भी दो भारती, इस में बच्चों का क्या दोष है? वह ठीक ही तो कहते हैं, आज तक मेरा व्यवहार इसी तरह का तो रहा है."

"सुनीता, बात क्या है, पहले तो तू ऐसी नहीं थी? तुझ में यह परिवर्तन कैसे, कब...?"

"अभी कुछ मत पूछो, सब बता दूंगी."

"ठीक है, पर..."

"मां, आप तो मौसी से बातें करने लगीं," रोहित बोला.

"बेटे, मौसी थकी हुई हैं. अब सो जाओ."

"नहीं, हम कहानी सुनेंगे." रोहित उठ कर बैठ गया.

"यदि अभी कहानी सुनोगे तो मैं तुम्हारी मौसी को मां के कमरे में भेज दूंगा और तुम लोगों को मेरे साथ सोना पड़ेगा," यह जाने कब आ गए थे. इन की आवाज सुनते ही सुनीता उठ कर बैठ गई.

"नहीं, आज तो हम मौसी के साथ सोएंगे," राहुल ने कहा, "पिताजी, आप अपने कमरे में सोओ."

"ठीक है, आज मैं बच्चों के साथ ही सोती हूं भारती, मुझे अच्छा लगेगा."

"सोच लीजिए अन्यथा आप कहेंगी कि आप की सहेली पर अधिकार जमा लिया है..." यह सुनीता को छेड़ने से बाज नहीं आए.

"अब जाओ भी, आज सभी क्यों इस के पीछे हाथ धो कर पड़े हैं."

"ठीक है," कह कर यह अपने कमरे मे चले गए.

"साधू ने फिर क्या कहा मौसी?" राहुल ने बिखरी कहानी का सूत्र जोड़ते हुए कहा.

"साधू ने राजा से पूछा कि वह इतना परेशान क्यों है?"

"तब राजा ने उस से सब बातें कही होंगी कि राक्षस उसे खाने वाला है, है न मौसी?" रोहित ने सोचते हुए कहा.

"तू चुप रह... कहानी मौसी सुना रही हैं," राहुल ने तुरंत उसे टोक दिया.

"हां बेटे... सब बातें सुन कर साधू ने कहा कि परेशान मत होओ, मैं एक उपाय बताता हूं."

"उपाय क्या होता है मौसी?" राहुल ने पूछा. उस की आंखें बंद हो रही थीं, पर वह कोशिश कर के अपने को सोने से बचा रहा था.

"उपाय यानी..." सुनीता सोचने लगी थी. बच्चे कितने विचित्र होते हैं.

"उपाय यानी तरीका...समझे," मैं ने राहुल को समझाया, "अब सो भी जाओ."

"मौसी रोहित भैया को कहानी सुना देंगी..."

"नहीं बेटे, नहीं सुनाएंगी."

दोनों बच्चे आंखें बंद करते ही सो गए.

सुनीता ने चश्मा उतार कर मेज पर रख दिया और कहा, "जा भारती, तू भी सो जा."

"लेकिन तू बताएगी भी कि इन दिनों परेशान क्यों है?"

"जरूर बताऊंगी, इसी लिए तो तेरे पास आई हूं. अब इस समय नहीं... वैसे ही रात अधिक बीत गई है. निशिकांतजी तेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे."

सुनीता की इस बात ने मुझे विस्मय में डाल दिया. आज से पहले कभी उस ने इन के बारे में इस प्रकार की बात नहीं की थी. कभी इन के पास अधिक देर लग जाती तो कहती, 'क्या भारतीय नारी की तरह पैर दबाने तो

नहीं बैठ गई थी?'

सुन कर मन दुखी हो जाता था, पर सुनीता से कुछ कह नहीं पाती थी. किंतु कभीकभार इन के कानों में भी उस के ये शब्द पड़ जाया करते थे. तब उस के जाने के बाद महीनों इन के उलाहने सुनने पड़ते थे.

"तुझे अकेलापन तो नहीं लगेगा. कहो तो मैं भी यहीं सो जाऊं?"

"नहीं, इस से पहले क्या तुझे कम तंग किया है, अब तुम जाओ भी."

उस के मना करने पर मैं ने बड़ी बत्ती बुझा दी और छोटी जला दी.

मुझे कमरे में प्रवेश करते देख इन्होंने कहा, "भारती, बच्चों को मेरे पास सुला दो. यों अच्छा नहीं लगेगा."

"मैं ने कहा था, पर वह मानी नहीं. उस ने कहा कि आप को परेशानी होगी."

सुन कर यह हैरान हो गए, "भारती, सुनीता ठीक तो है न... उसे कोई परेशानी तो नहीं? ऐसी कौन सी बात हो गई जिस के कारण वह दूसरों का ध्यान रखने लगी?"

"पता नहीं, पर कोई बात तो है. वह बोल रही थी कि वह बात बताने ही यहां आई है."

"उस के जीवन में किसी व्यक्ति का प्रवेश तो नहीं हुआ?"

"काश, ऐसा हुआ हो. कोई तो ऐसा हो जो उस की भावनाओं को समझ सके. विमाता के व्यवहार ने उसे इतना कष्ट दिया कि पिता भी उसे पराए से ही लगते थे. इसी कारण आज तक वह अकेले ही जीवन बिता रही है. किसी पर उसे विश्वास ही नहीं रहा कि कोई तो उसे...."

"भारती, सब ठीक हो जाएगा. ज्यादा नहीं सोचते."

"मैं भी न सोचूं तो कौन सोचेगा? दुनिया को तो अपने ही प्रपंचों से समय नहीं मिलता. पिता भी कैसे कट गए. नाता था, मात्र पैसे देने तक. क्या जीवन मात्र पैसों से चलता है, प्यार की कोई चाह नहीं होती बच्चे को?"

"भारती, जीवन तो सुखदुख दोनों से मिल कर बनता है. किंतु हर समय हम दुख को ले कर रो तो नहीं सकते? जीवन में सब कुछ वैसा तो नहीं होता, जैसा हम चाहते हैं."

"शब्दों के जाल बुनना बहुत आसान होता है, पर जीवन में आए कष्ट को झेलना बहुत कठिन."

मेरी बात ने इन्हें कुछ देर के लिए चुप कर दिया था. फिर इन्होंने कहा, "ऐसा लगता है कि कष्ट की अधिकता से मन की कोमल भावनाएं आहत हुई हों और आज किसी ने उन भावनाओं को सहला दिया हो?"

"ऐसा ही लगता है, तभी तो आज सुन्नी की सूखी आंखों से जल की धारा को बहते मैं ने देखा है."

"कितना सुखद परिवर्तन है. अब सो जाओ...." कह कर इन्होंने बत्ती बुझा दी थी.

—क्रमशः

होली का हल्ला



व्यंग्य • लाज ठाकुर

"होली की बधाई हो," सूरज ने मेरे माथे पर गुलाल का छोटा सा टीका लगाया.

"तुम्हें भी होली मुबारक," मैं ने उस की हथेली पर से गुलाल उठा कर उस के माथे पर मला. फिर विनोद, अनुराग और रमेश से गले मिला. मैं ने उन्हें और उन्होंने मुझे गुलाल लगाया. उन सब को कुरसियों पर बैठने को कहते हुए मैं ने मिठाई का डब्बा खोल कर मेज पर उन के सामने रख दिया. वे लोग बैठ गए.

"क्या हुआ?" फूफाजी सामने वाले द्वार की चौखट पर मुंह बाए खड़े हम लोगों को घूर रहे थे.

"फूफाजी, ये लोग होली खेलने आए हैं," मैं ने बताया.

"होली खेलने आए हैं?" उन्होंने मेरे मित्रों पर नजरें गड़ाईं. "शुक्र है, मैं तो डर गया था कि जाने क्या मनहूस समाचार सुनाने को आए हैं. मेरा कलेजा तो तेजी से धड़क रहा है."

फूफाजी खाली कुरसी पर बैठ गए.

"आप का कलेजा तेजी से क्यों धड़क रहा है? अगर आज्ञा हो तो आप के माथे पर भी गुलाल का टीका लगा दूं?" अनुराग उठ कर फूफाजी की ओर बढ़ने लगा.

"होली खेलने के तुम्हारे इसी ढंग ने तो मुझे दहला दिया था," उन्होंने हाथ के इशारे से अनुराग को रोका, "न होली के रंग, न होली का हुड़दंग. मुंह लटकाए आए, माथे पर डरतेडरते गुलाल का हलका सा टीका लगाया, जैसे किसी अजनबी की जेब में हाथ डाल रहे हों. फिर मुंह फुलाए गले मिले और मिठाई का टुकड़ा गाल में दब कर गुपचुप बैठ गए. यह होली होती है? पू नगर में सन्नाटा है. कभीकभार 'होली है का घुटाघुटा सा नारा यों सुनाई देता है, जैसे सर्द रात में ठंड से ठिठुरते किसी चौकीदा का 'जागते रहो' का लरजता हुआ स्वर खिड़की से गरदन निकाल कर देखो, सड़ पर कोई रंग डालता नजर नहीं आता. ऐस लगता है, जैसे शहर में कर्फ्यू लगा हो."

फूफाजी अपने जमाने के काफी उस्ताद किस्म के लड़कों में थे. होली के दिन तो उन की हुड़दंग अपनी जवानी में होती थी. लेकिन अब उन्हें मलाल है कि आजकल होली का पहले जैसा हल्ला नहीं होता. तभी ऐसी घटना हो गई कि वह चिंघाड़ते हुए अपने कमरे में भाग खड़े हुए. शायद उन का पहले जैसी होली न मनाने का मलाल दूर हो गया था.



"फूफाजी, शरीफाना होली खेलने का तो यही ढंग है..." रमेश ने कुछ कहना चाहा.

"अरे भई, तुम शरीफ लोगों को क्या डाक्टर ने कहा है कि होली खेलो? होली खेलनी है तो पूरी मस्ती में आ जाओ. हर तौरतरीके को भूल जाओ. कम से कम आज के दिन तो सब बंदिशों से आजाद हो जाओ."

फूफाजी ने हम सब की आंखों में झांका, "तुम लोगों ने हमारे जमाने की होली नहीं देखी? वाह...पूरे 3 दिन तक होली चलती थी. सब कारोबार बंद...बस होली के रंग और भांग. आजकल तो 3 घंटे भी होली नहीं खे[illegible] जाती. लोग नहाएधोए यों घूमते फिरते हैं जैसे किसी बरात में आए हों. हम लोग तो एक सप्ताह पहले से होली की तैयारी में जुट जाते थे."

"भला सप्ताह भर पहले क्या करते होंगे?" सूरज ने पूछ लिया.

"जनाब, महल्ले के निकट के मैदान में गड्ढे खोदे जाते. गंदे नालों और जोहड़ों का सड़ा हुआ पानी ला कर उन में भरा जाता. फिर नीले, लाल, काले, हरे आदि रंग उन में घोले जाते. मुंह पर पोतने को तवों की कालिख में मिट्टी का तेल मिला कर डब्बे भर लिए जाते. जहांतहां से तारकोल चुरा कर लाया जाता था." फूफाजी जोश में बोले चले जा रहे थे, "होली के दिनों में पिचकारियों में रंग भरा जाता. रंग से भरी बालटियां उठाए कुछ लड़के अलग से साथ होते. पहले तो अपने महल्ले के बच्चों. [illegible], जवान मर्दऔरतों पर रंग डाला जाता. बीमारों और मुरदों तक को न बख्शा जाता... मेरा मतलब है हर किसी पर रंग

डाला जाता. सभी के चेहरों और सिर पर कीचड़, कालिख, तारकोल आदि का ऐसा लेप किया जाता कि होली से कई दिन बाद तक नगर की आधी आबादी 'भूत,' 'चुड़ैल,' 'पिशाच' नजर आती.

"दूसरे महल्लों पर भी होली के हल्ले होते थे. हर पार्टी की कोशिश होती थी कि 'मियां की जूती मियां के सिर हो' यानी कि दूसरे का रंग छीन कर उसी का हुलिया बिगाड़ने की कोशिश की जाती. रंग डालने और डलवाने वाले एकदूसरे से गुत्थमगुत्था हो जाते. लातघूंसों का प्रयोग आम था. पिचकारियां वैसे तो रंग बरसाने के लिए होती थीं, परंतु रंग समाप्त होने पर उन्हें एकदूसरे के सिर पर बरसाने की खुली छूट थी. जानते हो, मेरी बांह पर यह जख्म का निशान कैसे बना?" फूफाजी ने अपनी कमीज की बांह ऊपर को खिसकाई.

"किसी की पिचकारी लगी होगी?" रमेश ने बूझने की चेष्टा की.

"नहींनहीं, मेरा एक पक्का दोस्त था, रामे. एक बार होली पर वह बालटी में रंग भर कर मेरे ऊपर डालने को आया. लेकिन मैं ने उसी को उसी के रंग से नहलाने के लिए बालटी पर हाथ डाल दिया. इसी कोशिश में कुछ रंग छलक कर मेरी बांह पर गिरा और बाकी उस पर. रंग में तेजाब कुछ ज्यादा ही डला हुआ था. मेरी बांह की चमड़ी उतर गई और उस के जीवन की गाड़ी पटरी से उतर गई."

"अरे, आप रंग में तेजाब भी डाला करते थे?" विनोद ने आश्चर्य से उन की ओर देखा.

"अजी साहब, हम लोग तो ऐसेऐसे रंग तैयार करते थे कि जिस पर रंग पड़ जाता, सारा जीवन उस होली को और उस रंग डालने वाले को याद करता. अब मुझे ही देख लो, जब भी इस जख्म के निशान को देखता हूं रामे की सूरत आंखों के सामने उतर आती है और रामे के रिश्तेदार जब मेरी सूरत देखते हैं तो उन की आंखों में खून उतर आता है," फूफाजी ने ठंडी सांस छोड़ी, "होली पर मिठाई, पकवान बनाने में तो रामे का जवाब नहीं था."

"क्या आप होली पर मिठाई बेचा करते थे?" सूरज ने टोका.

"क्यों भाई, इस प्लेट में जो मिठाई है, क्या वह बेचने के लिए है?" फूफाजी भड़क उठे. मगर दूसरे ही क्षण उन का स्वर नम्र हो गया, "जैसे तुम लोग होली के अवसर पर मिठाई से मुंह मीठा कराते हो, हम लोग भी मिठाइयां, पकवान बांटते थे. मगर हमारी पूरियों में रूई की पूनी बेल दी जाती थी, हलवे में नमक होता. पान में जामुनी रंग के छोटेछोटे टुकड़े डाले जाते. कुछ दिन पहले यार लोग भांग की जगह नीम की पत्तियां पीसते, कोई गाजर के हलवे में डालने को लाल मिर्च पीसता. एक इमामदस्ते में कांच के टुकड़े कूटकूट कर बारीक करता तो दो लोग उस चूरे को कपड़े में छान कर बिलकुल आटे जैसा बनाते."

"क्या आप लोग शीशे का बुरादा भी खाने की वस्तुओं में मिलाते थे?" मैं ने हैरानी से पूछा.

"हां," फूफाजी ने उत्तर दिया. फिर अतीत से उभरे, "अरे नहीं, मनोज बेटा, मैं शायद होली की बजाय बसंत पंचमी पर पतंग की डोर का मांझा बनाने लग गया था. यानी उसे बनाने की तरकीब की ओर भटक गया था."

"मैं भी सोचूं कि यह कैसी अंतड़ीफाड़ मिठाई बन रही है," मैं ने फूफाजी से मुसकराते हुए कहा.

"नहींनहीं, अंतड़ियों को हानि तो तब होती थी, जब पूरियों के साथ रूई पेट में पहुंच जाती थी. उसे निगलने वाला सारी उम्र 'हाय होली...हाय होली' कहता रहता था," फूफाजी फिर मेरी ओर घूमे, "तुम्हारे छोटे मौसा के नीले दांत का रहस्य यह है कि उस ने उस रसगुल्ले में कस कर दांत गड़ाए थे, जिस के बीच मैं ने बड़ी सफाई से एक कंकड़ छिपा दिया था."

फूफाजी की गरदन अपने कारनामों



महल्ले के लड़कों ने फूफाजी को घेरे में ले रखा था और उन पर पिचकारियों से रंगों की बौछार हो रही थी.

मिला. हम बीचबीच में रोनी आवाज में 'होली है' का नारा भी लगा देते. लोगों के घूरने की परवाह हमें कहां थी. एक तो होली की मस्ती, उस पर भांग का नशा. हमारी यह मस्तियां बढ़ती ही जा रही थीं.

"लेकिन हमारी सारी मस्ती तब हवा

पर तन गई थी. वह आगे बोले, "लोगों को उल्लू बनाने के लिए और भी कई हथकंडे हम लोग प्रयोग में लाया करते थे. जैसे किसी जीतेजागते लड़के को अरथी पर लिटा देते. फिर नगर के किसी भले आदमी का नाम ले कर रोतेपीटते हम लोग अरथी कंधों पर उठाए श्मशान की ओर चल पड़ते. उस भले आदमी की जानपहचान के लोग भी 'शवयात्रा' के साथ हो लेते. श्मशानघाट में चिता पर अरथी से 'लाश' उठा कर रख दी जाती और यार लोग 'होली है भई होली है' का शोर मचा कर भांगड़ा डालते.

"फिर वह 'लाश' भी नाचने वालों में शामिल हो जाती और सचमुच अफसोस करने वाले लोग हकीकत जान कर अपनी झेंप मिटाने के लिए हमें मारने दौड़ते. एक बार तो मैं स्वयं भी बुरी तरह फंस गया था..."

"आप भी बुद्धू बन गए थे?" रमेश ने उन की बात काटते हुए पूछा.

"हां भई, एक ऐसी ही शवयात्रा के साथ मैं भी अपने कुछ साथियों के संग जा

हुई, जब लाश को चिता पर रख कर सचमुच आग दिखा दी गई और अरथी के साथ आए कुछ नौजवानों ने हम लोगों को श्मशानघाट के एक कोने में ले जा कर पीटपीट कर अधमरा कर दिया."

"यह तो बहुत बुरा हुआ था आप के साथ," विनोद ने हमदर्दी जताई.

"बुरा कैसा जी," फूफाजी कुरसी की पीठ से टिक गए, "होली तो भई होली ही है."

"होली है भई, होली है," तभी अचानक इस शोर के साथ ही पानी से भरा हुआ एक छोटा सा गुब्बारा फूफाजी के माथे से टकरा कर फूट गया. पानी से उन के कपड़े तर हो गए. फिर दरवाजे की ओट से पड़ोसी का नन्हा बंटी 'होली है' चिल्लाता सड़क की ओर भागा.

"अरेअरे, यह क्या बेवकूफी है, जाहिलपना है. पकड़ोपकड़ो इस बदमाश को," फूफाजी कुरसी को झटके से उलटाते हुए बंटी के पीछे भागे.

"अब बंटी की खैर नहीं," सूरज ने कहा.

हम लोगों के चेहरे फीके पड़ गए. हमें विश्वास था कि फूफाजी बंटी को पकड़ कर खूब पीटेंगे और उस मासूम की चीखपुकार की आवाजें अब आईं कि अब आईं.

मगर बंटी के रोनेचिल्लाने की बजाय फूफाजी की चिल्लाहट उभर रही थी. हम लोग दौड़ते हुए सड़क पर आ गए.

महल्ले के लड़कों ने फूफाजी को घेरे में ले रखा था. उन पर पिचकारियों से रंगों की बौछारें हो रही थीं. गुलाल, मिट्टी या राख जो कुछ भी किसी के हाथ में था, फूफाजी पर फेंक रहे थे.

फूफाजी ने एकाध को झपट कर दबोचना चाहा कि सड़क पर फैले रंग पर उन का पांव फिसला और वह सड़क पर लंबी तान गए. लड़कों की बन आई और वह रंग डालडाल कर फूफाजी के इर्दगिर्द नाचने लगे.

बड़ी कठिनाई से फूफाजी को उन बंदरों के चंगुल से निकाला गया.

"यह भी कोई तरीका है... जान न पहचान खालाबी सलाम. भई, होली खेलने वालों से होली खेलो," फूफाजी आंखों से गुलाल और धूल पोंछते हुए चिंघाड़ रहे थे. "होली खेलने के भी कुछ तरीके होते हैं. यह नहीं कि किसी भी अजनबी को राह चलते रंग डालो, उस के कपड़ों का सत्यानास कर दो.

"वैसे अपने परिचितों पर भी रंग शरीफाना ढंग से ही डालना चाहिए. यह नहीं कि हर किसी को रंग में पूरी तरह डुबो कर नाली में गिरा हुआ चूहा बना डालो. देखोदेखो... शैतानों की टोली फिर पिचकारियां लहराते हुए इधर ही आ रही हैं," फूफाजी घर की ओर भागते हुए बोले, "अरे भई, जल्दी से अंदर आ कर दरवाजे, खिड़कियां बंद कर लो." कहते हुए वह दरवाजे को पार कर गए. ●

ये पत्नियां

मैं अदालत में बेंच सहायक के पद पर काम करता था. मेरी नईनई शादी हुई थी. अतः मेरा कार्यालय जाना पत्नी को भी अच्छा नहीं लगता था.

हर रोज पत्नी को मनाना पड़ता, "चलो 7 घंटे के लिए छुट्टी दे दो, दिन भर बेंच पर बैठ कर मुद्दा सुनाना पड़ता है."

एक दिन पत्नी आश्चर्य प्रकट करते हुए बोली, "इतने बड़े अफसर हो फिर भी तुम्हें बेंच पर बैठना पड़ता है, मेज कुरसी की व्यवस्था नहीं है तुम्हारे दफ्तर में. ये नेपाल के कार्यालय भी कैसेकैसे होते हैं."

—एम.पी. पौड्याल

*

हमारी भाभी अकसर शेखी बघारती रहती थीं, 'हमारा घर बहुत पुराना है तथा वहां नक्काशीदार एवं महंगा पुराना फर्नीचर है. पुराने सामान को संभाल कर रखना चाहिए, वक्त पर काम आता है.' आदिआदि.

भैया उन की इस आदत से बहुत परेशान थे. एक बार हमारी 80 वर्षीया नानी हमारे घर आईं. वह बीमारी के कारण रात भर खांसती थीं. एक दिन भाभी ने भैया से कहा, "आप की नानी कब तक रहेंगी? रात को इन की खांसी के कारण नींद नहीं आती."

भैया ने जवाब दिया, "पुरानी चीजों का आदर करना भूल गईं?" —भोलानाथ मिश्रा

*

एक दिन मजाकिया स्वभाव वाले मेरे चाचाजी ने चाची से पूछा, "शादी के समय सब लोग घोड़ी पर ही क्यों बैठते हैं, गधे पर क्यों नहीं?"

मेरी चाची ने उत्तर दिया, "शायद इसलिए कि दुलहन एक साथ दो गधों को देख कर डर न जाए." —शशि बाला ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



साथी बना लो

निज वेदना की छलछलाती
आंख का मोती बना लो,
प्रिय मुझे कैशोर्य के
पतझड़ का साथी बना लो.

राह के कटु शूल शर से
मुरझा गई जो अनखिली,
उस कली के शूल से
मधुमास को साथी बना लो.

गहरे अंधेरों की मशालें
जल कर बुझेंगी रोज ही,
निज दीप के रीते प्रणय की
तुम मुझे बाती बना लो.

जानती हूं फिर सुबह को
लौटा नहीं सकती कभी,
किंतु प्रिय निज प्रीत संध्या
को तुम्हीं साथी बना लो.

प्रिय मुझे कैशोर्य के
पतझड़ का साथी बना लो.

—प्रीता आर्य

लेख • शशिकांत कपूर

संबंधियों से संबंध कैसे हों?

चाहे प्रेम विवाह हो या माताि द्वारा निश्चित किया ग विवाह, संबंधियों से किया जाने व व्यवहार पतिपत्नी के आपसी संबंधों महल की नींव का पत्थर बन जाता है. अ पति के संबंधियों के साथ पत्नी का अ पत्नी के संबंधियों के साथ पति के सं नीतिपूर्ण व व्यावहारिक होने चाहिए. देखा जाता है कि कभीकभी पति व प दोनों के परिवार आपस में इतना घुल जाते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है वे एकदू को वर्षों से जानते हैं.

साससुर, जेठजेठानी, देवरदेवरा ननदननदोई आदि के साथ आदरसम्मान प्रेमयुक्त व्यवहार कर के पत्नी अपने प का दिल आसानी से जीत सकती सासससुर को मांबाप की तरह समझ वैवाहिक जीवन की सफलता की कुंजी

जहां यह आशा की जाती है नवविवाहिता बहू संपूर्ण रूप से दू



परिवार में कर रम जाए, उन की जाए, वहीं यह भी आशा करना निरर्थक होगा कि लड़के के संबंधी भी नई आने वा वधू को खुले हृदय से स्वीकार करें. ज तक हो सके प्यारभरे दिल से नववधू

ागत किया जाए और उसे अपने अच्छे गुणों व व्यवहार का दर्शन करने का अवसर दिया जाए.

संबंधियों से संबंध कैसे हों इस के कुछ महत्त्वपूर्ण हलुओं पर नीचे प्रकाश डाला जा रहा है :

स्पष्ट विचार और आपसी तालमेल

जहां यह बात महत्त्वपूर्ण है कि किस प्रकार की बहू होनी ाहिए, वहीं इस विषय में भी विचार स्पष्ट होने चाहिए कि ामाद किस प्रकार का हो? नौकरीपेशा हो या व्यापार करने ाला? लड़की पढ़ीलिखी हो तो किस स्तर तक? नौकरी करने ाली हो या न हो? इस विषय में दोनों परिवारों के विचार यदि ष्ट हों तो दोनों परिवारों को नवागंतुक दामाद या नववधू ो खुले हृदय से स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी. हां इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि सभी गुणों ो संपूर्णता में प्राप्त करने की इच्छा चांद की मांग करने के राबर होगी. यदि दोनों परिवारों की संतुष्टि इस बात से हो ाए कि स्वभाव, घराना, सुंदरता, परिवारों के आर्थिक स्तर ादि बहुतकुछ ठीकठाक हैं व स्वीकार्य हैं तो रिश्ता तय हो ाना चाहिए.

दहेज

दहेज की प्रथा जहां कुरीति समझी जाती है वहीं यह भी च है कि यह प्रथा वर्षों से चली आ रही है और इसे समूल ष्ट होने में भी वर्षों का समय लग जाएगा. उपहारस्वरूप हेज को उचित ठहराया जाता रहा है. अकसर देखने में आता कि वर पक्ष के कुछ तथाकथित प्रगतिशील लोग भी कन्या क्ष से कुछ इस प्रकार की गोलमटोल बातें किया करते हैं, ाजी, हमारे घर तो सब कुछ है. हां, यदि आप अपनी लड़की ो कुछ देना चाहें तो खुशी से दीजिए. हम इस के बीच नहीं ाएंगे.' इस प्रकार की बातों की आड़ में वे अप्रत्यक्ष रूप से हेज की मांग पेश कर देते हैं. श्रेयस्कर होगा कि उचित शिक्षा व सामाजिक चेतना के प्रसार द्वारा यह प्रथा कम की ाए.

दहेज देना या बरी बनाना यदि आवश्यक हो ही जाए ब इस विषय में दोनों परिवार स्पष्ट कर लें कि यह काम कैसे कया जाएगा ताकि दोनों परिवारों की पसंद का भी खयाल खा जा सके. यह बात स्पष्ट कर लेने से एक ही प्रकार की स्तुएं दोनों पक्षों द्वारा खरीदे जाने से भी बचा जा सकता है.

यदि दहेज देने का सामर्थ्य बहुत अधिक हो तब भी इस ाम में विवेकपूर्ण तरीके से चलना चाहिए. दहेज इतना धिक नहीं दिया जाना चाहिए कि दहेज तो हो जाए प्रमुख ौर लड़की के गुण व सुंदरता आदि उस के सामने कुछ भी नजर

पतिपत्नी के संबंधों में मधुरता बनी रहे इस के लिए पतिपत्नी को तो प्रयत्न करने ही पड़ते हैं, साथ ही पति व पत्नी के परिवारों को भी इस में अहम भूमिका निभानी पड़ती है. प्रस्तुत हैं इन संबंधों की सहजता में सहायक कुछ सुझाव.

न आएं. इस विषय में यह कहना उचित होगा कि लड़की यदि अच्छी है, वह सब कुछ स्वयं बना लेगी. दहेज कितने दिन चलेगा? यह भी आवश्यक है कि विवाह से पहले दोनों संबंधियों के परिवारों के कुछ समझदार लोग आपस में बैठ कर यह स्पष्ट कर लें और सभी बातों का खुलासा कर लिया जाए कि बरात कितनी होगी, दहेज कितना होगा आदिआदि. हैसियत के विषय में झूठे प्रदर्शन से बचना चाहिए. यदि सब कुछ दोनों पक्षों को पसंद आ जाए तो ठीक है अन्यथा वही उपयुक्त अवसर है जब स्पष्ट रूप से रिश्ते की बातचीत खत्म कर दी जाए. इस प्रकार बाद में पैदा होने वाली कई समस्याओं से बचा जा सकता है.

कहावत है 'इज्जत खो देता है रोजरोज का आनाजाना.' खास कर जब संबंधी एक ही शहर में रहते हों तब इस बात पर अवश्य ध्यान देना चाहिए.

देखा यह जाता है कि एक ही शहर में रहने वाली लड़की के मांबाप इस बात को बहुत सरलता से लेते हैं. सोचते हैं, चलो बिटिया से मिल आते हैं, दामाद से मुलाकात कर लेते हैं. उन की मानसिकता यह जानने की होती है लड़की ससुराल में कैसी है? खुश तो है? उस ने ससुराल में कैसा तालमेल बना रखा है? यदि यह मिलनाजुलना विवेकपूर्ण व संयम में न रहे तब इस का अर्थ संबंधी के परिवार वाले गलत भी लगा सकते हैं. उन्हें यह प्रतीत होने लगेगा कि शायद लड़कीवालों को उ पर भरोसा नहीं है.

दूसरी तरफ लड़केवालों का विशे आवभगत कराने के दृष्टिकोण से संबंधिय के यहां आनाजाना लड़कीवालों के लि निश्चित रूप से एक खर्च का बहाना ब जाता है व बोझ भी. विवाहोपरांत कु त्योहारों पर भी भेंट आदि देने की प्रथा है अतः समझदारी इसी में है कि शुरुआ उतने से ही की जाए जितने का निबाह सा उम्र स्थायी रूप से किया जा सके. जन्मदि व शादी की वर्षगाठों के अवसरों पर बहु कीमती भेंट के स्थान पर स्वादिष्ट केक कार्ड आदि दे कर भी काम चलाया ज सकता है क्योंकि भेंट में कीमत नहीं, भावन प्रधान होती है.

आपसी बातचीत का तरीका सामान्य रूप से उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए. संबंधिय को एकदूसरे के परिवारों के लोगों के विष में अपनी राय स्वयं तक सीमित रखनी चाहिए. होता यह है कि हम हर ऐरेगैरे से अपने संबंधियों या वरवधू के विषय में फालतू की बातें बोलते रहते हैं औ गैरजिम्मेदारी से पेश आते हैं. हमारी बातें सुनने वाले लोग भी समझदारी से काम नहीं लेते और संबंधियों को भी सारी बातें बत आते हैं.

इस के बाद चाहे जितनी सफाई दे

दोहरा मानदंड न अपनाएं

आज हम जीवन के हर क्षेत्र में मानदंडों का दोहरापन अपनाने लगे हैं. अपनी आंख में पड़े शहतीर की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता पर दूसरे की आंख में पड़े साधारण तिनके की तरफ हमारा ध्यान तुरंत चला जाता है. बेहतर तो यही है कि दूसरे की आलोचना व छिद्रान्वेषण में अपना समय व्यतीत न करें.

धनी बनना, राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना या सामाजिक ख्याति प्राप्त करना तो इनसान के हाथ में नहीं है पर अच्छा इनसान बनना, सब से अच्छे संबंध कायम करना तो उस के हाथ में है ही. जीवन का सार ही यही है.

हर समय तथा हर परिस्थिति में रचनात्मक और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं. मानव समाज में व्याप्त समस्याओं, बुराइयों, चाहे वह दहेज की समस्या हो या आपसी संबंध की, को दूर नहीं कर सकते पर उन के प्रति अपने दृष्टिकोण को अवश्य बदल सकते हैं. आज के समाज की यही मांग है.



रहिए किंतु आपसी संबंधों में दरार तो पड़ ही चुकी होती है. इस का नतीजा भुगतना पड़ता है नवविवाहित वरवधू को. शायद इन्हीं कारणों से 'हनीमून' की प्रथा बहुत कारगर सिद्ध हो रही है. न रहे बांस, न बजे बांसुरी. वरवधू अपने संबंधियों से दूर किसी रमणीक स्थान पर अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत अपने ढंग से कर रहे होते हैं और इधर संबंधियों को भी आपसी तालमेल व प्रेमपूर्ण व्यवहार का अवसर मिल जाता है.

विवाहोपरांत केवल पतिपत्नी ही एक दूसरे के सुखदुख के साथी नहीं होते अपितु उन के परिवारों में भी निकटता आ जाती है. उन के परिवारों में जो कुछ भी घटित होता है, जो भी सुखदुख के अवसर होते हैं उस में पूरी आत्मीयता व सक्रियता से दोनों परिवार के लोग सम्मिलित होते हैं व एकदूसरे के काम आते हैं. दोनों परिवारों को एकदूसरे के लिए सम्मान की भावना रखनी चाहिए. इस से नवदंपती के आपसी संबंध भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते. दोनों परिवारों के आपसी संबंध जब मधुर होते हैं तभी वरवधू का वैवाहिक जीवन खुशहाल होता है. जहां कहीं यह नहीं हो पाता है, वहां तरहतरह के कलह व मनमुटाव का वातावरण वैवाहिक जीवन

बेटीदामाद के घर लड़की के मांबाप का बारबार जाना रिश्तों में तनाव ला सकता है.

का सारा मजा किरकिरा कर देता है. अतः यह नौबत आने न पाए इस के लिए वर व वधू से अधिक उन के परिवार वालों को खयाल रखना चाहिए.

दोनों पक्ष के रिश्तेदारों का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे किसी बात को मानहानि के रूप में न लें और आपसी समझौते से ही सब समस्याओं का हल निकालें. किसी भी निर्णय पर पहुंचने से पहले यह ध्यान में रहे कि किसी भी पक्ष के आदर व सम्मान को नजरअंदाज न किया जाए.

वरवधू पक्ष के परिवारों में उपहारों का आदानप्रदान तो होता ही रहता है. इस संबंध में एक सावधानी बरतनी आवश्यक है कि बारबार उन भेंटों या उपहारों की चर्चा कर के किसी पक्ष को छोटा जतलाने की कोशिश न की जाए. मांबाप को चाहिए कि लड़की को ऐसी शिक्षा दें कि वह हर हाल में अपने ससुराल में खुश रह सके. इस काम में लड़के के मातापिता भी अपने बेटे का पूरा सहयोग करें और वधू के साथ सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए उस का मार्गदर्शन करें. ●

संभाल कर रखिए पुरानी दोस्ती

लेख • मृणालिनी

सालों पहले बंबई जा बसे नरेंद्र अपने पुश्तैनी शहर जयपुर अपने छोटे भाई के घर आए. आने के सा ही तरोताजा हो कर उन्होंने जो सब पहला काम किया, वह था फोन घुमाना. के फोन करने भर की देर थी कि उन के दोस्त जो अभी भी जयपुर में ही रहते घंटे दो घंटे के अंतराल से समय मिलते आ जुटे.

थोड़ी ही देर बाद सुरेंद्रजी का घ उन्हीं कहकहों से गुलजार हो गया बरसों पहले लगा करते थे. बस फर्क इत था कि तब यह मकान पुराने ढंग का और नरेंद्र, सुरेंद्र दोनों ही कालेज में पढ़ वाले छात्र थे. आज न केवल ये दोनों भ प्रौढ हो चुके हैं बल्कि उन के बच्चे भी ब हो चले हैं.

"आश्चर्य है भाईसाहब, आप अभी तक अपने दोस्तों के पतेठिकाने याद और फोन नंबर वगैरह भी? मुझे तो गोवि



का पता तक नहीं मालूम कि वह अब कहां है? आप को तो पता है कि मेरा कितना गहरा दोस्त था वह," चकित हो कर सुरेंद्रजी ने अपने बड़े भाई से कहा. नरेंद्रजी भी मुसकराए बिना नहीं रह सके.

"तुम क्या सोचते हो सुरेंद्र, मैं बंबई बस गया तो मैं ने अपने दोस्त भी छोड़ दिए? अरे, मेरे ये दोस्त तो जयपुर में रहते हैं. इसलिए अगर किसी दोस्त का पता बदल जाता है तो दूसरा उस के हालचाल लिख भेजता है. लेकिन मेरे जो पुराने दोस्त और सहपाठी अन्य जगहों पर रहते हैं, मेरे पास उन सब के भी पते हैं. उन के हालचाल भी मालूम हैं. पिछले महीने तो मैं अपने एक बचपन के साथी देवधर की बेटी की शादी में शामिल होने भोपाल भी गया था."

सचमुच यह चौंकाने वाली बात थी सुरेंद्रजी के लिए जो अपने जीवन की व्यस्तताओं में दोस्तों को कब का भूल चुके हैं. यही नहीं नातेरिश्तेदारों की भी उन्हें काफी याद दिलाने पर ही याद आती है. बहुत हुआ तो अपने ही भाईबहनों को कभीकभार पत्र लिख देते हैं.

दीपिका की शादी हुई तो जहां अनेक परिजन और रिश्तेदार घर में एकत्रित हुए वहीं उस की मां की कालेज के जमाने की वे बहन जैसी सहेलियां भी अकेली या अपने पतियों के साथ आईं, जिन का जिक्र अकसर ही दीपिका अपनी मां के मुंह से सुना करती थी. जहां रतना मौसी ने आ कर दीपिका को उबटनचंदन लगाना शुरू किया, वहीं शकुंतला मौसी ने भंडार घर की जिम्मेदारी संभाल ली और उन के पति ने जनवासे की. दीपिका समेत सभी लोग चकित हो रहे थे मां के इन मैत्री संबंधों की प्रगाढ़ता देखदेख कर.

आज के युग में जहां रक्त संबंधी तक व्यावहारिक चालाकियां करने से बाज नहीं आते, वहीं दीपिका की मां के ये मानस नातेदार जिस उल्लास और गंभीरता से विवाह की जिम्मेदारी संभाले हुए थे, मानो उस के खास मौसीमौसा हों.

वास्तव में दोस्ती निभाने से निभती है और चलाने से चलती है. जो लोग रिश्तों के नजदीकीपन को ही महत्त्व देते हैं, दोस्ती को नहीं, वे यह सचमुच भूल जाते हैं कि दोस्ती भी एक रिश्ता है, जो कभीकभी रक्त संबंधियों के रिश्ते से भी ज्यादा प्रगाढ़ व प्रभावशाली होता है.

दोस्ती एक ऐसा मानसिक संबंध है जिसे पूरी ईमानदारी और स्नेह भावना से अगर निभाया जाए तो उस के आगे नजदीकी रिश्तेदारियां भी फीकी पड़ जाती हैं. यह सच है कि पारिवारिक जिम्मेदारियों में फंसने से पहले की सच्ची दोस्ती का निर्वाह अकसर बाद में नहीं हो पाता. कारण कि तरहतरह की जिम्मेदारियां व अन्य महत्त्वपूर्ण बातें आड़े आ जाती हैं. उन के आगे मैत्री संबंधों का कोई विशेष मूल्य नहीं समझा जाता.

समाज विज्ञान के व्याख्याता डा. हरिश्चंद्र भार्गव का कहना है, "छात्र जीवन में जहां मित्रता खिलवाड़ से जुड़ी होती है, वहीं उम्र गुजरने के साथसाथ उस का संबंध मन की भीतरी गहराई से जुड़ता

आज के युग में जहां सगेसंबंधी भी अपने हो कर अपनों जैसा व्यवहार नहीं करते, वहीं पुराने दोस्त न केवल जीजान से सहायता करते हैं बल्कि वृद्धावस्था में पुरानी यादों को जिंदा भी रखते हैं. लेकिन ऐसे कितने लोग हैं जो पुरानी दोस्ती बरकरार रख पाते हैं?

चला जाता है. जहां तक मैं समझता हूं, दोस्ती की खास जरूरत बड़ी उम्र में होती है जबकि बच्चे भी बड़े हो जाते हैं और हमारे अनुभव भी."

डा. भार्गव का विचार है, "नई उम्र की दोस्ती बड़ी उम्र में अधिक काम आती है क्योंकि तब हमारे पास पुराने अक्स और यादों के अलावा कुछ और नहीं होता है जिसे दोहरा कर अतीत को प्यार से याद किया जाए. इसलिए पुराने दोस्तों से न केवल संपर्क बनाए रखना चाहिए बल्कि समय मिलने पर कभीकभार उन के पास चले जाना या उन्हें ही बुला लेना चाहिए."

प्रसिद्ध रंग निर्देशक कमलाधरजी भी डा. भार्गव के विचार से सहमत हैं. उन का भी यही मानना है कि जिंदगी चाहे जितनी व्यस्त हो जाए और चाहे जितनी बीहड़, उस में दोस्तों की जगह हमेशा रहनी चाहिए ताकि जिस तरह कंटीले कैक्टस पर एक नन्हा सा फूल उग कर उस की उदासी सोख लेता है, वैसे ही दोस्ती के अपनत्वभरे स्पर्श से जिंदगी के सारे दुखों को सहलाया जा सके. पल दो पल ठहर कर प्यार पाया जा सके.

अगर आप चाहते हैं कि आप के कुछ अपने बीते पल रहें, आप उन्हें जिंदा रख सकें तो आप अपनी पुरानी दोस्ती जीवित रखें. अपने वे लोग जीवित रखें जिन से आप ने कभी सुखदुख बांटे थे या कि आप जिन के साथ मिल कर अब भी अपने छोटेबड़े सुखदुख बांटना चाहते हैं.

आप लाख व्यस्त रहें या लाख परेशान परंतु अपने दोस्तों से संपर्क जरूर बनाए रखें. चाहे दो शब्द ही लिखें, लिखते जरूर रहें ताकि आप के संपर्क सूत्र न टूटें. अपने हालचाल के साथसाथ अपने दोस्तों के भी हालचाल जानते रहें तो आप को ही नहीं, उन्हें भी भावनात्मक सहारा मिलता रहेगा. जिस तरह आप अपनेआप को अकेला नहीं महसूस करेंगे उसी तरह आप के दोस्त भी.

अगर आप के पत्र का उत्तर न आए तो एक निश्चित अवधि तक इंतजार के बाद अपनी ओर से ही फिर से पत्र लिख कर दोस्त के हालचाल जान लीजिए. प्रायः इस चक्कर में ही पत्राचार का क्रम टूट जाता है और सालों गुजर जाते हैं. बाद में पता चलता है कि हमारा वह दोस्त हमारी पहुंच से काफी दूर जा चुका होता है.

इसलिए अपनी ओर से ऐसी कोई चूक मत कीजिए कि आप अकेले रह जाएं और प्रौढावस्था में जब आप पुराना गुजरा जमाना याद करना चाहें तो कोई चश्मदीद गवाह न जुटे, कोई साझीदार न जुटे, अतः पहले से ही सावधान रहिए.

अपने पास पते वाली डायरी रखिए. इस में सारे दोस्तों के पते नोट कर के रखिए और जरूरत के अनुसार उस में सुधार आदि भी करते रहिए. दोस्तों के फोन नंबर भी अपने पास रखिए और समयसमय पर अपना पता बदलने की सूचना भी उन्हें देते रहें.

आप को जान कर आश्चर्य होगा कि अपने जूट उद्योग से गंभीरता से जुड़ी व्यवसायी घराने की विद्याजी अपने सारे मित्रों के जन्मदिन और उन की विवाह आदि की वर्षगांठ सदैव याद रखती हैं. कब किसे बधाई कार्ड भेजना है, किसे जन्मदिन की मुबारकबाद, यह और चाहे भूल जाएं विद्याजी नहीं भूलतीं.

यही कारण है कि आज जबकि वह खुद कालेज में पढ़ रहे बच्चों की मां हैं, उन की पुराने दिनों की दोस्ती वैसी ही तरोताजा है जैसी कि उन के बच्चों की. 45 वर्षीया विद्याजी सिर्फ पत्राचार से ही

दोस्त की सलाह

"आज पहली बार मुझे अपने मित्र की इच्छा पूरी न होने का अफसोस हो रहा है," झगड़ालू पत्नी से पति ने कहा.

"क्या इच्छा थी उस की?"

पत्नी के पूछने पर पति ने बताया, "यही कि मैं तुम से शादी न करूं?"



संतुष्ट नहीं रहती, बल्कि 2-4 साल में एक बार अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक मित्रों से पतिदेव समेत मिलतीजुलती भी रहती हैं. उन के आपसी संपर्क इतने सजीव लगते हैं मानो अभी कल की ही बात हो.

उम्र बढ़ने के साथसाथ जहां जीवन मूल्यों में भारी बदलाव आता है, बदले हुए समय के साथ हमारा जीवन भी बदलता व प्रभावित होता चला जाता है. ऐसे में पुराने समय की गुजरी यादें एक ऐसा सहारा होती हैं कि उन के माध्यम से हम न केवल अपनेआप को खुश बल्कि जिंदा भी रख सकते हैं.

हमें बच्चों के दोस्तों में झांक कर हास्यास्पद बनने की कोशिश न करनी पड़े और न ही हमें नई पीढ़ी के कंधे छू कर यह एहसास करना पड़े कि दरअसल यही दोस्ती है. इस के लिए आवश्यक है कि हमारी अपनी मंडली हमारी पहुंच के बाहर न हो.

अगर आप के स्थानीय दोस्त मौजूद हैं तब तो कहना ही क्या? उन से अकसर

पिता पुत्र के साथ अपने दोस्तों की तसवीरें देखते हुए : अपनी खूबसूरत जिंदगी को कौन नहीं याद रखना चाहेगा?

मिलबैठ कर बतियाया जा सकता है. हां, अगर कोई दोस्त दूर भी हो तो उस से संबंध बनाए रखे जा सकते हैं.

याद रखिए, पुराने दोस्त उतने ही आवश्यक हैं जितनी कि हमारी यादें.

अगर सचमुच आप कभीकभी अतीत का रेशमी परदा उठा कर पीछे बांधना चाहते हैं और चाहते हैं कि आप का मन सदैव दोस्तों से गुलजार रहे तो अपने दोस्तों को कभी मत भुलाइए. उन्हें पत्र लिखिए, फोन कीजिए और उन से मिलनेजुलने का सिलसिला कायम रखिए.

यदि आप उन के सुखदुख बांटेंगे तो वे भी पीछे नहीं रहेंगे. तब आप पाएंगे कि आप भी एक खुशदिल इनसान हैं क्योंकि आप के पास आप के दोस्त हैं, उन की सच्ची दोस्ती है. ●



मेहमानों को कैसे आमंत्रित करें?

लेख ● सुरभि सक्सेना

जून का महीना, तिस पर ग्वालिय
की गरमी, जगमोहन के य
आयोजित प्रीतिभोज का सारा का सा
खाना एक तरह से फेंक ही देना पड़ा.

उन्होंने 300 लोगों को आमंत्रित कि
था लेकिन आमंत्रणपत्र पहुंचाने में वह इत
विलंब कर गए कि कुछ लोग ही उन के य
पहुंच पाए. आयोजन का सारा मजा मेहम
के अभाव में जाता रहा, तिस पर इत
महंगा खाना बरबाद हुआ सो अलग.

वास्तव में बुलाना तो चाहते
जगमोहन अपने सभी परिचित मित्रों
और अन्य मुलाकातियों को. लेकिन वह प्रीति
भोज की अन्य व्यवस्थाओं में इस क
उलझ गए कि उन्हें निमंत्रणपत्र समय
भिजवाने का ध्यान ही नहीं रहा.

अतः कुछ मेहमान इसलिए नहीं
पाए कि उन का दूसरा कार्यक्रम उसी ता
में पूर्व निश्चित हो चुका था. कुछ मेहम
को इतनी जल्दबाजी में कार्यक्रम तय क
कठिन हो गया. और कुछ इसलिए नहीं
सके कि जिस समय कार्ड उन के घर प
तब वे अपने घर में थे ही नहीं. अ
जगमोहन ने समय पर आमंत्रण

तरित करवाए होते तो यह नौबत न ती.

दरअसल सिर्फ आयोजन और उस की ारी ही सब कुछ नहीं होती, महत्त्वपूर्ण ता है मेहमानों को बुलाने का तरीका. ल्दबाजी में औपचारिकता सी कर के ाया गया मेहमान आप की लाख तैयारी अपनी अनुपस्थिति से पानी फेर सकता

अगर दावत की तैयारी में कोई कमी जाएगी तो वह ऐन मौके पर भी पूरी जा सकती है और अगर पूरी नहीं भी हो हेगी तो भी ऐसा कोई पहाड़ नहीं टूट ड़ेगा. जिन्हें हम बुलाते हैं वे भी कोई गैर तो हीं होते. थोड़ी सी असुविधा वे भी झेल कते हैं. हम अपनी मजबूरी बता कर उस लिए उन से क्षमा भी मांग सकते हैं. किन अगर उन्हें बुलाते समय सही तरीकों इस्तेमाल न किया जाए तो निश्चित ही ामोहन जैसी स्थिति का सामना करना ड़ेगा.

"आज शाम को आप हमारे साथ ना खाइए. मेरा छोटा भाई और उस का रिवार आया हुआ है. वे लोग बहुत खुश ो," मनोज ने फोन पर रतनकुमार से र्फ इतना ही कहा.

रतनकुमार शाम को अकेले ही अपने नष्ठ सहकर्मी मनोज के घर खाना खाने े आए. उन्हें अकेला आया देख सभी चौंक . मनोज की पत्नी सपना तो बहुत उदास . उस ने रतनकुमार की पत्नी और बच्चों तो विशेषतौर पर बुलाया था. उस ने उन मनपसंद केले की आइसक्रीम भी जमाई . लेकिन मनोज के आधेअधूरे आमंत्रण के रण सिर्फ रतनकुमार ही आए, उन के च्चे व पत्नी नहीं.

निमंत्रण इतना स्पष्ट और खोल कर ा जाना चाहिए ताकि कोई गलतफहमी रहे. आप जिस आदमी को बुलाएंगे तनकुमार की तरह वही अकेला मौजूद हो एगा. इसलिए अगर सपरिवार किसी को ाना चाहते हैं तो स्पष्ट कहिए.

कुछ लोग ऐसा सोच लेते हैं कि जब पति आ रहा है तो पत्नी तो आएगी ही, वह अकेली कहां रह जाएगी. ऐसा सोचना गलत है. जहां सिर्फ पति को बुलाया जाता है वहां सिर्फ पति ही पहुंचता है, पत्नी नहीं. इसलिए अगर आप पतिपत्नी दोनों को ही बुलाना चाहते हैं तो स्पष्टतः कहिए कि शाम को या फलां दिन, आप दोनों ही आएं. इतना ही नहीं, अगर आप किसी पूरे परिवार को बुलाना चाहते हैं तो यह भी खोल कर ही कहना पड़ेगा वरना पति-पत्नी दोनों चले आएंगे और बच्चों को छोड़ आएंगे.

एकबार तो हमारे सहकर्मी गणेश के घर बहुत ही दिल-

आए दिन प्रीति-भोजों व पार्टियों के आयोजन करना आज सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक हो गया है. परंतु मेहमानों को आमंत्रित करते समय बरती गई ढील ऐसे आयोजनों का मजा किरकिरा कर सकती है. ऐसी स्थिति से बचने के लिए जानिए आमंत्रण के सुव्य-वस्थित तरीके.

चस्प घटना घटी. उन के बच्चे का जन्मदिन था और उन्होंने अचानक ही दावत की योजना बनाई. लिहाजा जल्दीजल्दी फोन कर के अपने 8-10 मित्रों को खाने का निमंत्रण दे दिया. दावत में सभी मित्र अकेले ही आए. अपनेअपने बच्चों को छोड़ आए. अब चूंकि बच्चे का जन्मदिन था इसलिए उस ने हमउम्र दोस्तों को न पा कर मचलना शुरू कर दिया. तब गणेश दंपती ने ड्राइवर भेज कर सभी अनुपस्थित बच्चों को बुलवाया और फिर शाम 7 बजे कटने वाला केक ऊंघते बच्चों के बीच ऊंघते ही बच्चे ने काटा.

'माधुरी, तुम शाम को दफ्तर से मेरे पास होती हुई जाना,' एक रोज माधुरी को अपनी भाभी का यह संदेश एक चिट पर लिखा हुआ उस के दफ्तर में मिला. लिहाजा लंच के बाद उस ने अपने पति निर्मल को फोन कर के भाभी के घर जाने का कार्यक्रम तय करना चाहा तो मालूम पड़ा कि वह बहुत व्यस्त हैं. अतः शाम को कहीं जाना संभव नहीं हो पाएगा. इसलिए भाभी के यहां जाने का कार्यक्रम अगले रोज के लिए सरका कर माधुरी अपने घर आ गई.

उस ने सोचा, 'कोई खास बात होती तो भाभी अपने दफ्तर भी क्यों जातीं? चलो, आज नहीं तो कल मिल लेंगे,' यही सोच

निमंत्रण पत्र

पतिपत्नी ने बड़े उत्साह से बच्चे के जन्मदिन की तैयारी शुरू की. सिर्फ ऊंचे ओहदे वाले जानपहचान के व्यक्तियों व संबंधियों को बुलाने का निर्णय लिया गया. हिसाब लगा कर देखा गया, खर्च से ज्यादा उपहार आने की पूरी उम्मीद थी. खूबसूरत निमंत्रण पत्र छपवाए. अच्छीअच्छी चीजें कुछ घर में बनाई गईं, कुछ बाहर से मंगवाई. फिर पतिपत्नी बच्चे के साथ तैयार हो कर मेहमानों का इंतजार करने लगे. शाम 8 बजे तक कोई नहीं आया. अचानक पति को खयाल आया, उस ने भागदौड़ व सोचविचार में निमंत्रणपत्र तो बांटे ही नहीं.

कर माधुरी और निर्मल संतुष्ट हो गए.

अगले रोज जब वे भाभी के घर पहुंचे तो मालूम हुआ कि भाभी ने माधुरी और निर्मल के लिए कबाब और उन के मनपसंद कई व्यंजन बनाए थे. वह देर रात तक उन की प्रतीक्षा करते हुए भूखी टंगी रही.

सारी बात जान कर माधुरी को भाभी पर ही खीज हो आई, अगर दफ्तर हो कर ही गई थीं तो ढंग से किसी को पूरा संदेश ही कह या लिख आतीं. फिर भाभी ने तो यह भी नहीं लिखा था कि निर्मल को भी ले आना, अगर मैं अकेली ही आ जाती तब भी क्या होता? भाभी की आकांक्षा तो फिर भी अधूरी ही रहती. माधुरी ने सिर्फ सोचा ही नहीं बल्कि लाड़ से भाभी को समझा भी दिया कि भविष्य में आमंत्रित करते समय इस बात का ध्यान रखें.

चाहे अपने करीबी लोग हों या दूरदराज के नातेदार जिन्हें भी आप आमंत्रित कीजिए, उन्हें पूरी शालीनता व आग्रह से बुलाइए. चलतेचलते कार्ड थमा देना या मुंह से कह देना तब तो ठीक है जब आप सिर्फ रस्म अदायगी करना चाहते हों लेकिन जब आप सचमुच किसी को बतौर मेहमान बुलाना चाह रहे हैं तब हलके से बुलावे से काम नहीं चलेगा. उस समय तो आप को पूरी शिष्टता व नम्रता से पेश आना होगा.

"चीना, तुम माला और सुजाता को मेरी ओर से संदेश दे देना कि वे इस आने वाले रविवार को मेरे घर डोसा खाने आएं. मैं खुद डोसा बनाऊंगी," प्रमिला ने चीना से कहा. वह बातों के बीच चीना से यह कहना भूल गई कि वह भी माला और सुजाता के साथ आए.

चीना यह तो समझ गईं कि प्रमिला उसे बुलाना चाहती है किंतु उस के स्पष्ट आग्रह के अभाव में वह चाह कर भी उस दिन प्रमिला के घर नहीं आ पाई. अलबत्ता उस ने सुजाता और माला को प्रमिला का संदेश जरूर दे दिया.

कायदे से प्रमिला को चीना से सब



पहले यही कहना चाहिए था कि आने वाले रविवार को तुम मेरे घर डोसा खाने आना और माला व सुजाता से भी कह देना. अगर प्रमिला इस तरह से कहती तो चीना अवश्य आती.

अगर आप घर के लोगों को ही अपना मेहमान बनाना चाहते हैं तो घरवालों को भी पूरा सम्मान दीजिए, पूरे आग्रह से उन्हें बुलाइए. यह न समझिए कि आप के बच्चे का मुंडन या जन्मदिन है तो घर के लोगों से क्या आग्रह करना, वे तो आएंगे ही.

एक ही शहर में रह रहे अपने भाईबहनों को समय से काफी पहले ही आमंत्रित कीजिए ताकि वे इस खास मौके पर आप के मेहमान बनें. विवाहित बहनों के ससुराल पक्ष को अगर बुलाना चाहते हैं तो बेगार मत टालिए. पूरे सम्मान और आग्रह

अगर आप फोन पर किसी को आमंत्रित कर रही हैं तो सारा कार्यक्रम विस्तृत रूप में बताएं.

के साथ ही उन्हें भी आमंत्रित कीजिए. फिर चाहे वे पति की बहनें हों चाहे पत्नी की, दोनों को ही उचित सम्मान से आमंत्रित करना ही व्यवहारकुशलता है.

'चाहो तो अपनी सास से कह देना...,' 'तुम्हारी जेठानी आएं तो उन्हें भी ले आना...,' 'जीजाजी को भी ले आना साथ में...' जैसे चलताऊ वाक्य कह कर किसी भी ऐसे व्यक्ति को मत आमंत्रित कीजिए जिसे आप सचमुच बुलाना चाह रहे हैं. खुद जा कर या फोन द्वारा संदेश दें अथवा पत्र लिख कर उस व्यक्ति को आमंत्रित करें. अगर मेहमान का संयुक्त परिवार है और आप सभी को आमंत्रित करना चाहते हैं तो घर के सब से बड़े व्यक्ति से ही आग्रह कीजिए कि वह सभी को ले कर आएं.

अगर किसी खास मौके पर मेहमानों को बुलाना हो तो वह तारीख तय होते ही दूर के मेहमानों को फोन, तार या पत्रों द्वारा सरसरी खबर अवश्य भेज दीजिए ताकि वे सहूलत से अपने आने का कार्यक्रम बना सकें.

अगर कोई कार्यक्रम इतनी जल्दी में तय हो कि निमंत्रणपत्र अधिक पहले न भेजे जा सकें तो जिन्हें आप सचमुच बुलाना चाहते हैं, उन्हें फोन या तार द्वारा अवश्य सूचित कर दें और निमंत्रणपत्र भी डाक में छोड़ दें. अगर कार्ड मिल सकेगा तो ठीक वरना फोन, तार और त्वरित डाकसेवा वगैरह से तो उन्हें सूचना मिल ही जाएगी. आप का इस तरह से बुलाना और उन का इस

तरह से आना तय मानिए संबंधों में जो गहराई और रागात्मकता भरेगा, वह कहने की बात नहीं.

बनारस में रहने वाले मधुकर जी अपने यहां पूजा के अवसर पर कभी अपनी बहनों को आमंत्रित कर लेते हैं तो कभी तीर्थ की दृष्टि से अपने वृद्ध रिश्तेदारों को.

ऐसा नहीं कि अपनी सुविधाअसुविधा का वह इस चक्कर में ध्यान ही नहीं रखते. कभीकभी वह स्वयं भी उन के यहां चले जाते हैं. हां, समय निकाल कर अपने घर मेहमानों को बाकायदा आमंत्रित करना उन्हें बहुत अच्छा लगता है.

"दरअसल अब संयुक्त परिवार नहीं है. हम लोग अपने घरपरिवारों से कटेकटे रहते हैं. हम चाहते हैं कि बच्चे जरा संबंधों का निर्वाह और उन का होना भी देखें समझें. इसलिए हम लोग अकसर गंगाघाट और काशी की प्राचीनता को पसंद करने वाले अपने निकटतम मित्रों और रिश्तेदारों को आमंत्रित करते रहते हैं. एकदूसरे के यहां आनेजाने से आपसी संबंध पुनर्जीवित हो उठते हैं," मधुकरजी कहते हैं.

मेहमान

ठहरना चाहते अतिथि को जल्दी विदा कर देना और विदा चाहते अतिथि को रोक लेना दोनों सम्मान रूप से आपत्तिजनक होते हैं. —*होमर*

आज के परिवेश में जब आदमी की दिनचर्या बिलकुल ही सिमट गई है, मधुकरजी का ऐसा सोचना एक स्वस्थ परिवेश की संरचना में सहायक है.

इसी संदर्भ में एक बात और है. यदि आप पत्र लिख कर किसी को आमंत्रित कर रहे हैं तो यह ध्यान रखिए कि पत्र का मजमून ऐसा हो जिसे पढ़ कर पाने वाले को सचमुच प्रसन्नता हो. वह आप के हार्दिक आग्रह को समझ सके. मेजबानी का सही कायदा तो यही है कि न्योता चाहे घरेलू आयोजन का हो या सरकारी का, आमंत्रण में संदेश मुखर होना चाहिए ताकि मेहमान को मेजबान से मिलने की उत्सुकता बनी रहे.

'आप को तो आना ही पड़ेगा,' 'आप के आने से कितनी खुशी होगी, क्या बताएं,' 'आप से ही तो हमारे आयोजन की सार्थकता होगी,' इत्यादि ऐसे वाक्य हैं जिन का प्रयोग कर के ही आप एक अच्छा व शालीन मेहमाननवाज बन पाएंगे.

मेहमानों को नववर्ष के अवसर पर, दीवाली, ईद, होली और क्रिसमस आदि के अवसरों के अलावा जन्मदिन के आयोजनों पर यों ही बिना किसी बड़ी दावत के भी आमंत्रित कर सकते हैं. आवश्यक नहीं कि स्थानीय मेहमान ही बुलाए जाएं, बाहर के अतिथियों को भी अपनी सुविधा और समय के हिसाब से न्योता जा सकता है. नन्हे निक्की की ओर से आप ही उस की बूआ और मौसी को खत लिख सकते हैं कि 'निक्की बूआ/मौसी को अपने जन्मदिन पर बुला रहा है.' फिर देखिए, कैसे खींच लाता है उन लोगों को छोटे से निक्की का तोतला प्यार.

सच तो यह है कि अगर बुलाने वाला सच्चे आग्रह के साथ बुलाए तो आने वाला खुद को रोक नहीं पाता है. आप के बुलाने में वह बात होनी ही चाहिए कि आप के मेहमान का दिल जुड़ जाए, वह अपनेआप को आप के प्यार में बंधा हुआ महसूस करे.

जब आप को मेहमानों को बुलाने की कला आ जाएगी तो सिर्फ आप के मेहमान ही नहीं, आप भी अपनेआप को एक अलग ही तरह के आनंद से भरपूर पाएंगे. आमंत्रण का एक खास आग्रह आप को भीतर तक न केवल सहज बल्कि हलका और रूमानी भी बना डालेगा. फिर आप जिसे भी एक बार 'हमारे यहां आइए' कहेंगे, वह कहना सिर्फ कहना ही नहीं होगा, आप के शब्द आप की भावनाओं का पर्याय बन जाएंगे और तब आप एक अनूठा उपहार पाएंगे. जानते हैं क्या? लोग आप को एक योग्य मेजबान कहने लगेंगे, सच.

आप की छवि बिगाड़ सकते हैं ये आश्वासन

लेख • अरविंद राज

उस दिन कीर्ति भाभी ने गहरी उदासी ओढ़ ली थी. आखिर मैं ने उस घोर खामोशी का कारण पूछ ही लिया.

भाभी गंभीर अंदाज में अपनी भड़ास निकालते हुए बोली, "आजकल लोगों की बात का कोई ठिकाना नहीं रहा. मेरी सहेली प्रभा ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, 'तुम कानपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. के फार्म भरो. मैं भी भर रही हूं. रही बात फार्म मंगवाने की, यह जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दो.' मैं उसी के आश्वासन पर निर्भर रही. उस ने अपना फार्म तो भर कर भेज दिया, लेकिन मेरी तरफ ध्यान तक नहीं दिया."

मैं ने पूछा, "क्या प्रभा ने आप को कोई सूचना भी...?"

बीच में ही मेरी बात काट कर वह उत्तेजित हो उठीं, "सूचना को मारो गोली. इस बाबत जब मैं उस से पूछने गई तो उस ने बड़े आराम से बात टालनी चाही, 'मैं समझ रही थी कि अपने फार्म का प्रबंध तो तुम ने स्वयं ही कर लिया होगा. दरअसल मैं तुम से मिल भी न सकी, क्योंकि इधर घर के कामों में बहुत उलझ गई. वह तो



किसी दोस्त या संबंधी के किसी कार्य में आप का सहायक होना आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता व एकदूसरे के प्रति विश्वास को प्रबल करता है. पर यदि आश्वासन दे कर आप नहीं निभा पाए तो आप को भर्त्सना का शिकार भी होना पड़ सकता है. बेहतर है झूठे आश्वासन न दें.

इन्होंने जाने कहां से एक फार्म ला कर दे दिया.' इस तरह औपचारिक खेद प्रकट कर प्रभा ने बात आईगई कर दी."

हमारे समाज में अनगिनत ऐसे लोग हैं जो इसी प्रकार के झूठे वादों में फंस कर अपना काम बिगाड़ चुके हैं और अब पछता रहे हैं.

हर वर्ग के लोग एकदूसरे की सहायता कर अपना काम चलाते हैं. जिस काम को करने या कराने में आप को कठिनाई होगी, वही काम आप का दोस्त अपनी व्यवहारकुशलता अथवा पहुंचपैठ के बल पर आसान बना देगा.

इसी लिए आश्वासन का महत्त्व अधिक बढ़ जाता है. लोग अपने परिचित से आश्वस्त हो कर अपने काम से ही निश्चिंत हो जाते हैं.

इस के विपरीत यदि किसी के सामने कोई समस्या उत्पन्न हो और वह उसे अपने मित्रों के बीच प्रकट कर दे तो कुछ लोग अपनी धाक जमाने के लिए जानापहचाना जुमला उछाल देते हैं, "बस, इतनी सी बात यह काम तो मैं करवा दूंगा."

पर तुरतफुरत आश्वासन देने वाले ये लोग इतने फिक्रमंद कम ही मिलेंगे कि आप के लिए कुछ फालतू वक्त निकाल सकें. ऐसे आश्वासनों से बचना ही लाभदायक रहता है.

मधुर संबंधों का टूटना

अकसर लोग अपने मधुर से मधुरतम संबंध भी स्थायी बनाए रखने में केवल इसलिए असफल रहते हैं कि वे अपने निकटतम व्यक्ति का समुचित ध्यान नहीं रख पाते.

सीमा कल्पना की पड़ोसिन थी और सहेली भी. पर एक दिन सीमा कल्पना की वजह से बैंक में से रुपए निकालने न जा

बच्चों को प्रलोभन न दें

कई मातापिता अपने बच्चों को ऐसे आश्वासन देते हैं जिन के प्रलोभन से बच्चे पढ़ाई में जीतोड़ मेहनत करते हैं. यद्यपि यह प्रलोभन बच्चों को परोक्ष रूप से कड़ी प्रतिस्पर्धा के लिए प्रेरित करता है, तथापि मध्यमवर्गीय परिवारों में अनेक बार ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं कि उचित समय पर बच्चे के लिए निर्दिष्ट वस्तु उपलब्ध नहीं हो पाती.

कुछ लोग अपने दोस्त के बच्चों को बातोंबातों में आश्वासन दे आते हैं. किंतु महाशयजी जब दोबारा मित्र के यहां पदार्पण करते हैं तो खाली हाथ ही होते हैं. ये बच्चे से किया वादा सर्वथा भूल चुके होते हैं. फलतः कुछ नासमझ बच्चे उन के प्रति अशोभनीय व्यवहार भी कर बैठते हैं.

अलबत्ता झूठे और प्रवंचक व्यक्ति को न तो कोई पसंद करता है और न ही उस का कहीं विश्वास किया जाता है. अगर आप सोचसमझ कर आश्वासन देंगे तथा उसे याद रख कर पूरा कर देंगे तो निस्संदेह, आप अपने प्रियजनों में भले और विश्वासपात्र समझे जाएंगे और अपने स्नेह संबंधों को शाश्वत बनाए रख सकेंगे. ●



यदि आप किसी कार्य को करने में सक्षम नहीं हैं तो अपने मित्र अथवा संबंधी से स्पष्ट रूप से न कर दें.

सकी. दूसरे दिन बैंक की छुट्टी थी. सीमा का काम रुक गया.

उधर कल्पना सीमा को बिना बताए बैंक अकेली चली गई. लौटने पर सीमा ने उस से शिकायत की. कल्पना ने जवाब में केवल यही कहा, "वाकई सीमा, मुझे तुम्हारी बात बिलकुल याद नहीं रही."

नतीजन सीमा ने उसे स्वार्थी मान कर किनारा कर लिया. अब दोनों के बीच कटुता बढ़ती जा रही है.

अकसर लोग ऐसी छोटीछोटी बातों पर गौर नहीं करते. लेकिन ऐसी असावधानी से ही शुभचिंतकों के मन में भ्रम पैदा हो जाता है. फिर वे अपने संबंधों में आई दरार को कभी नहीं पाट पाते.

आश्वासन देने में कभी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए. कथनी जितनी सरल है, करनी उतनी ही कठिन होती है. वचन को निभाना अपनी विश्वसनीयता में प्रगाढ़ता लाना है.

कभीकभी लोग अपने सरस संबंधों के कारण जबरदस्ती काम थमा कर चलते बनते हैं. लेकिन काम का जिम्मा लेने वाले मित्र में उस काम को पूरी करने की क्षमता नहीं होती. ऐसे में वह मानसिक तनाव में उलझ जाता है. इसलिए अच्छा यही है कि काम सौंपने वाले से अपनी असमर्थता प्रकट कर तुरंत पल्ला झाड़ लें.

महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि अपने स्वजन से आश्वस्त हो कर हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ जाना चाहिए. बल्कि अपने काम के प्रति हमेशा सजग रहना चाहिए और उसे येनकेनप्रकारेण स्वयं करने या कराने का प्रयत्न करना चाहिए.

अलबत्ता झूठे और प्रवंचक व्यक्ति को न तो कोई पसंद करता है और न ही उस का कहीं विश्वास किया जाता है. अगर आप सोचसमझ कर आश्वासन देंगे तथा जो याद रख कर पूरा कर देंगे तो निस्संदेह, आप अपने प्रियजनों में भले और विश्वासपात्र समझे जाएंगे ●

अजनबी शहरों में सामंजस्य ऐसे करें

लेख • नीलम कुलश्रेष्ठ

बहुत पहले गुजरात के नवसारी शहर के राजा के पास कुछ पारसियों का एक दल पहुंचा. उन्होंने उस राज्य में बस जाने की आज्ञा चाही. राजा अजनबियों को अपने राज्य में रहने की आज्ञा देने में हिचकिचाने लगे. तब पारसियों के मुखिया ने एक प्याले में दूध मंगाया व थोड़ी शक्कर मंगवाई. दरबार में उन्होंने उस शक्कर को दूध में मिला दिया और कहा, "जैसे कि यह शक्कर इस दूध में घुलमिल गई है, वैसे ही हम लोग गुजराती प्रजा में घुलमिल जाएंगे."

नवसारी के राजा उन के उत्तर से इतने खुश हो गए कि तुरंत ही उन्हें अपने राज्य में बसने की अनुमति दे दी. तब से पारसी व्यापारी गुजरात में बसते चले गए व उन के परिवार भारत के अन्य शहरों में भी फैलते चले गए. दूध में वह शक्कर की तरह कुछ इस तरह मिले कि आज भी कुछ परिवारों की स्त्रियां गुजराती साड़ी क



ंचल पहनती हैं व वे भाषा गुजराती ोलते हैं. लेकिन फिर भी कुछ मामलों में ह अपनी ही जाति में सिमटे हैं.

भारत में असंख्य जातियां हैं. यहां की स्कृति पांच सितारा जीवन से ले कर कसी गांव में चलती ठचहठचह बैलगाड़ी बीच झूलती हुई सी है. अकसर नौकरी या यापार के सिलसिले में लोगों को दूसरे ाहर में बसना पड़ता है. यदि यह दूसरा ाहर अपने ही प्रदेश का हुआ तो विशेष रेशानी नहीं होती क्योंकि रिश्तेदार भी ासपास ही रहते हैं व संस्कृति का जनबीपन भी नहीं झेलना पड़ता.

लेकिन मुश्किल तो तब होती है, जब कसी अन्य प्रदेश के शहर में बस जाना पड़े. हां नई संस्कृति का आकर्षण मन को ींचता है, वहीं भाषा व खानपान की मस्या भी बनी रहती है. आरंभ में उस देश के लोगों में अजनबीपन सा दिखाई ही ता है. वे भी समझते हैं, परदेसी हैं, आज हां, कल कहीं और बस जाएंगे.

आरंभ में भाषा संबंधी बड़े ही ट्टेमीठे अनुभव होते हैं.

उत्तर प्रदेश का एक परिवार गुजरात आ बसा. एक पड़ोसी उन के पास आ कर ोला, "अपनी कार हटा लीजिए, पीछे टारा है."

वह सज्जन झुंझला गए क्योंकि उन की ार पुरानी थी. वह समझे उन की कार को टारा कहा जा रहा है.

"कार जैसी भी है, हमारी , जहां है वहीं खड़ी रहेगी," वह गुस्से से बोले.

"खटारा खड़ा है, बाजू में हटा लो."

"हम तो अपने घर के सामने ही खड़ी करेंगे. हम क्यों बाजू में खड़ी करें?"

"खटारा कब से खड़ा है, हार्न नहीं सुनाई दिया?"

बड़ी बहस के बाद उन्हें पता लगा कि यहां ट्रक को खटारा कहते हैं. सज्जन उन की कार को खटारा नहीं कह रहे थे बल्कि यह कह रहे थे कि ट्रक का रास्ता रुक रहा है. इसलिए रास्ते में से कार हटा लें.

सब से पहले तो किसी भी प्रदेश में जा कर वहां की भाषा पर ध्यान देना बड़ा आवश्यक हो जाता है. पहले समझने की कोशिश करनी चाहिए कि आप की भाषा के कुछ शब्दों का अर्थ भी वहां वही है या कुछ और, नहीं तो कभीकभी बड़ा अनर्थ हो जाता है.

महाराष्ट्र के लेफ्टिनेंट देहरादून के बाजार में निकले. बड़े मुलायम लहजे में उन्होंने एक दुकान पर खड़ी स्त्री से कहा, "बाईजी, जरा कंघा दिखाना."

वह महिला चौंक गई, "फिर से कहना."

वह और भी नम्र लहजा बना कर बोले, "बाईजी, जरा वह कंघा दिखाना."

ाषा व संस्कृति की भिन्नता के कारण कई बार अजनबी शहरों में हने गए लोगों की स्थिति खासी हास्यास्पद हो जाती है. इस स्थिति से बचा जा सकता है यदि आप शुरू से ही सामंजस्य व कुछ ासखास बातों का ध्यान रखें.

अब तो उस औरत का हाथ उन की कमीज पर था, "तुम क्या बोले? तुम्हारी मां बाईजी... तुम्हारी बहन बाईजी."

वह सकपकाए से समझ नहीं पाए कि आखिर बात क्या हो गई. काफी देर बाद उन्हें समझ में आया. लोगों ने बताया कि उत्तर प्रदेश में निकृष्ट धंधा करने वाली औरत को बाईजी कहा जाता है, जबकि महाराष्ट्र में 'बाईजी' शब्द किसी भी महिला को सम्मान देने के लिए बोला जाता है.

उत्तर प्रदेश में स्त्रीपुरुष के संबंधों को ले कर 'लफड़ा' शब्द कहा जाता है, जबकि पश्चिमी प्रदेशों में यह आम शब्द है. किसी भी काम में रुकावट हो या गड़बड़ हो तो बड़ी आसानी से कह दिया जाता है कि लफड़ा हो गया. एक उत्तरप्रदेशीय अफसर बंबई की अपनी प्राइवेट कंपनी में पहले दिन अपनी स्टेनो से बोले, "ये कुछ कागज टाइप कर देना."

उस स्टेनो ने राय दी, "सर, यह रहने दीजिए. लफड़ा हो जाएगा."

"तुम्हारा क्या मतलब है... क्या लफड़ा हो जाएगा?" वह तेजी से बोले.

"सर, यह बात ठीक नहीं है."

वह काफी देर तक अपनी स्टेनो को डांटते रहे कि वह तो पहले दिन ही दफ्तर आए हैं. उन्होंने उस के साथ ऐसा क्या लफड़ा कर दिया? बड़ी मुश्किल से वह स्टेनो समझा पाई कि इस तरह कागजों को टाइप करने से कुछ विभागीय जांच हो सकती है.

किसी भी अजनबी प्रदेश में जाते ही वहां के शब्दों पर ध्यान देना चाहिए. आरंभ में बोलना कम, सुनना अधिक चाहिए. गुजरात में आते ही मेरे पति को एक गुजराती मित्र अकसर कहते थे, "अच्छा, चलो."

हर बार मैं गंभीरता से उत्तर देती, "नहीं, अभी रात हो गई है, बाद में हम लोग चलेंगे." बाद में मेरी समझ में आया कि गुजरात में कुछ लोग इसी तरह विदा मांगते हैं.

जो लोग दूसरे प्रदेश के शहर में जा कर बसते हैं, उन्हें एक फायदा यह होता है कि उन्हें तरहतरह के व्यंजनों का स्वाद लेना व उन्हें बनाना आ जाता है. यदि वहां जाते ही कोई परिवार आप को खाने पर निमंत्रित करे तो कभी भी खाना देख कर नाकभौं मत चढ़ाइए. आप सहजता से खाना आरंभ करेंगे तो वही खाना आप को भी प्रिय लगने लगेगा.

मुझे गुजरात के एक घर का भोजन आज भी याद है. उन्होंने बड़े स्नेह और मेहनत से सब्जियां बनाई थीं, खमण बनाया था, मसाला भात (पुलाव) बनाया था. मैं इंतजार कर रही थी कि कब पूरी आए, तब खाना आरंभ हो. लेकिन इस विशेष भोज में से पूरी नदारद थी. मसाला भात को ही सब्जियों के साथ खाना था.

दूसरे प्रदेशों के तौरतरीके

पश्चिमी प्रदेशों के बहुत से शहरों में कुछ लोगों की आदत है कि मेहमान के खाने की मेज पर बैठते ही स्वयं पहले खाना आरंभ कर देते हैं. यदि आप उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश या राजस्थान के रहने वाले हैं तो इस आदत को अपना अपमान मत समझिए. बाद में धीरेधीरे आप के संपर्क में आ कर लोग स्वयं ही खाने के लिए आग्रह करना सीख जाते हैं.

हम भारतीयों में अपना प्रदेश हमेशा अपने साथ रहता है. ऐसा स्वाभाविक ही है जिस प्रदेश की मिट्टी से हम बरसों जुड़े रहे हैं, क्या उसे सहज ही भुलाया जा सकता है आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, नए शहर में आ कर नए पड़ोसियों से थोड़ाबहुत संपर्क अवश्य रखना चाहिए.

विवाह में या समारोह में सब को अपना प्रदेश याद आता है, वहां के रीतिरिवाज याद आते हैं. लेकिन इस का यह मतलब नहीं है कि आप हमेशा कहते रहें कि हमारे प्रदेश में तो ऐसा होता है वैसा होता है. जाहिर है आप की ये बातें दूसरों को ठेस पहुंचाएंगी, सब को ही अपने यहां की आलोचना बुरी लगती है. इस से मनमुटाव ही बढ़ता है.



दूसरे प्रदेश के लोगों का खाना देख कर नाकभौं मत सिकोड़िए. आप सहजता से खाएंगे तो वही खाना प्रिय लगने लगेगा.

हर नए प्रदेश में कदम रखते ही हर भारतवासी सब से पहले आसपड़ोस में अपनी जाति वाले को ढूंढ़ता है. यदि जाति वाला न मिला तो उपजाति वाला ढूंढ़ा जाता है. यदि वह भी न मिला तो अपने प्रदेश के व्यक्ति को ही ढूंढ़ कर संबंध बना लिए जाते हैं. यह बात स्वाभाविक है. लेकिन आप इतने संकीर्ण भी न बनें कि दूसरी जाति वालों को पराया मान कर संपर्क ही न बनाएं.

दूसरी जाति वालों के संपर्क में आने से आप के परिवार का उदारवादी दृष्टिकोण बनेगा. दूसरे, आप को दूसरी जाति की संस्कृति जानने का मौका मिलेगा. दूसरे प्रदेश में जा कर ही तटस्थ रह कर अपने प्रदेश की अच्छाइयां व बुराइयां पहचान सकते हैं. इस तरह दूसरी संस्कृति की अच्छी बातें अपनाने का भी मौका मिलता है.

किसी भी नए शहर में जा कर अपनी पसंद के कुछ परिवार चुने जा सकते हैं. संपर्क बढ़ाने के बहुत अच्छे साधन हैं, त्योहार. आप अपने त्योहारों पर उन के यहां अपने यहां के व्यंजन पहुंचाइए. दूसरे धर्म के लोगों को कभी भी उन के त्योहारों पर शुभकामनाएं देना न भूलें. आप तो अपने शहर से यहां चले आए हैं, अब आप के सुखदुख के साथी सब से पहले आप के पड़ोसी हैं.

आप नए शहर में यदि सामंजस्य स्थापित नहीं करना चाहेंगे व हमेशा ही नाक चढ़ाए रहेंगे कि आप की संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ है तो अपनेआप को तकलीफ देंगे. इस तरह कोई भी आप से मधुर संबंध बनाने के लिए तैयार नहीं होगा.

मेरी एक परिचित महिला का हमेशा यही रोना था, ''यहां गुजरात के परदेस में अपना कौन बैठा है, सब पराए हैं. मैं तो किसी से संबंध नहीं रखती.''

एक बार वह गंभीर बीमारी के कारण अस्पताल में दाखिल हुई तो पड़ोसियों ने उन की देखभाल की. तब उन का सिर शर्मिंदगी से उठ न सका. जातियां चाहे लोगों की अलग हों, आर्थिक स्तर भी चाहे अलग हों, लेकिन लोगों को बांधे रखने वाली सब से मजबूत कड़ी होती है इनसानियत. आप नए शहर में इसी का सूत्र पकड़ कर आगे बढ़िए. कोई शहर आप के लिए अजनबी या बेगाना नहीं रहेगा.

मेरी एक मित्र कुमायूं से गुजरात में रहने आई. उन्होंने एक बहुत दिलचस्प घटना सुनाई, ''कभीकभी भाषा बड़ी अजीब समस्या खड़ी कर देती है. आरंभ में

एक भाजी वाला जोरों से मुझे आवाज लगाता था, 'मोटी बेन, भाजी जुड़ए.'

"इत्तिफाक से कालोनी के उस तरफ मैं ही मोटी थी. एक दिन जोर से चिल्लाई, 'मैं क्या इतनी मोटी दिखाई देती हूं कि तुम बारबार मोटी कहते हो.'

"पहले तो भाजी वाला कुछ समझ नहीं पाया. बाद में उस ने बताया कि मैं तो आप को बड़ी बहन मानता हूं. गुजराती में 'मोटी' का मतलब है 'बड़ी'."

नए शहर में अकसर ऐसे छोटेमोटे हादसे होते रहते हैं. गुस्सा न हो कर ऐसी स्थितियों का धीरज से सामना करना चाहिए.

धोबी और गोभी

उत्तरी अंडमान में दिगलीपुर ही एक ऐसी जगह है जहां गोभी मिलती है. वैसे तो यहां एकदूसरे को जोड़ने वाली भाषा हिंदी ही है पर सब के हिंदी बोलने व समझने के ढंग निराले हैं.

गेस्ट हाउस में ठहरे एक अधिकारी ने वहां के रसोइए से पूछा, "यहां धोबी मिलता है?"

"हां साब, बहुत मिलता है," जवाब आया.

"बुला कर लाओ."

"अभी नहीं, सीजन में मिलता है."

"अरे भई, अभी प्रेस करवाना है."

"हां, साब, पूरा फ्रेश मिलता है."

बाद में उन्हें मालूम हुआ कि वह धोबी को गोभी समझ कर जवाब दे रहा था.

बचपन में उत्तर प्रदेश में हमें डांटडांट कर सिखाया जाता था कि बिना चप्पल के घूमने से बीमारी हो जाती है. लेकिन अब हम ऐसे प्रदेश में आ कर बस गए हैं जहां चप्पल कमरों में लाना मना है. लोग घर में आते समय बाहर के दरवाजे के पास चप्पल उतार देते हैं और भीतर नंगे पैर घूमते हैं. पुरानी आदत के कारण बिना चप्पल पहने अधिक चलने से हम लोगों के तलवे दर्द करते हैं या जुकाम हो जाता है.

लेकिन इस आदत से घर का फर्श बेहद चमचमाता रहता है. कहने का मतलब यह है कि दूसरे प्रदेश में यदि आप को लोगों में कोई ऐसी आदत दिखाई दे जो कि बिलकुल आप से उलटी है, तब भी आप को थोड़ा मन मार कर उन की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए.

हर व्यक्ति चाहता है कि वह कभी होटल या रेस्तरां में कुछ खाए. नए प्रदेश में नई तरह के व्यंजन मिलते हैं. फिर भी आजकल हर शहर में मिलीजुली संस्कृति दिखाई पड़ ही जाती है. हो सकता है, नए शहर के व्यंजन आप को रास न आ रहे हों. थोड़ी कोशिश कर के देखिए, आप कोई न कोई ऐसा होटल ढूंढ़ने में सफल हो ही जाएंगे जहां आप के प्रदेश का खाना बनता हो.

किसी भी अहिंदी प्रदेश में आते ही लोग बहुत खुश होते हैं कि उन के बच्चे 3 भाषाओं के ज्ञानी बन जाएंगे–हिंदी, अंगरेजी व स्थानीय भाषा. स्थिति बिलकुल इस से भिन्न होती है. अंगरेजी माध्यम की पढ़ाई और ऊपर से भाषाओं की खींचतान के कारण बच्चे कोई भी भाषा ठीक से नहीं सीख पाते. आधा तीतर आधा बटेर की स्थिति हो जाती है. ऐसी हालत में आरंभ से ही बच्चों की भाषा पर बहुत अधिक ध्यान देना चाहिए.

हैदराबाद की शकीला को गुजरात में आ कर बेहद धक्का लगा. हैदराबाद की तहजीब की मिसाल तो हर जगह दी जाती है. वहां किसी समारोह में मेहमान का दरवाजे पर स्वागत कर के उसे आग्रहपूर्वक खाना खिलाया जाता है, जबकि यहां मेहमान सीधे 'चांदला' (भेंट के रुपए) दे कर खाने पर जुट जाते हैं.

आरंभ में तो वह भूखी ही उठ कर आ गई. वह बताती है, "मैं तो हैरान रह गई कि जब एक दूल्हे ने अपनी दुलहन से कहा कि चल बाजू में खड़ी हो जा, फोटो लेनी है, जबकि हमारे हैदराबाद में आप कहे बिना

कोई बात नहीं करता. यहां के मुसलमानों व वहां के मुसलमानों की संस्कृति में बहुत अंतर है. यहां पर वे एक थाल में सब्जी व पूरी रख कर बीच के बड़े कटोरे में दाल रख देते हैं और सभी उसी में से खाते जाते हैं. इन सब बातों को देख कर बहुत दिल घबराता है."

जगहजगह भारत में इतनी तरह की संस्कृति फैली हुई हैं कि कहीं दूसरी जगह बसने पर अपनेआप को थोड़ा बदलना पड़ता है. जातिगत रूप से आप संकीर्ण न हों, लेकिन जब कहीं भी आप नए शहर में पहुंचें तो किसी न किसी सांस्कृतिक संगठन से अवश्य जुड़ें. इस से आप के बच्चों में हर उम्र के व्यक्ति से तालमेल बैठाने की भावना पैदा होती है. अपने शहर में बच्चे ये बातें रिश्तेदारी में जा कर सीखते हैं जबकि नए शहर में ये संगठन सिखाते हैं. आप भी अपनी संस्कृति के लोगों में मिलबैठ कर तनावमुक्त होते हैं.

जातिगत संगठनों के संपर्क के अलावा आप स्थानीय लोगों से भी मधुर संबंध बनाएं. मुसीबत में वे लोग भी आप की सहायता करेंगे. लेकिन यह सहायता आप को तभी मिलेगी जबकि आप भी उन की मुसीबत में उन के साथ खड़े होंगे.

मेरे एक परिचित अनेक देश घूमे हुए हैं. मैं जब भी उन से पूछती कि वहां के लोग कैसे हैं? वह जगह कैसी है? तब वह हमेशा एक ही उत्तर देते, "सब जगह एक सा ही है."

उन का उत्तर मुझे अचरज में डाल देता क्योंकि विदेश जा कर तो लोग वहां की डींगें हांकने से नहीं थकते. बाद में उन की बात का अर्थ समझ में आया कि जो भी अंतर होता है, वह बाहरी होता है क्योंकि एक आम आदमी सभी से मिलजुल कर रहना चाहता है.

फिल्मी तारिका रीता भादुड़ी की मां चंद्रिमा भादुड़ी का उदाहरण देना चाहूंगी. एक बार हम लोग उन के घर गए थे. उन के यहां उन के मद्रासी व गुजराती पड़ोसी निमंत्रित थे. लेकिन उन्होंने विशेष रूप से बंगाली तरीके से साड़ी बांधी हुई थी. बातचीत के दौरान उन्होंने बताया, "50 वर्ष से हमारा परिवार बंगाल से बाहर बस गया है, लेकिन हम ने अपनी बंगाली संस्कृति को आज भी बचाए रखा है."

आप जहां बसे हैं, वहां के लोगों से मेलजोल बढ़ाइए. लेकिन अपनी संस्कृति को क्षति न पहुंचाइए क्योंकि यही संस्कृति आप को पीछे छूटे रिश्तेदारों से जोड़े रखेगी. नए शहर में अपनेआप को बदलिए, लेकिन इतना भी नहीं कि आप अपनी शख्सियत ही भूल जाएं.

कुछ लोगों के ऊपर दूसरे प्रदेश की संस्कृति का भूत इस कदर सवार होता है कि वे स्वयं को उसी रंग में रंग डालते हैं. अपनी संस्कृति का सम्मान करने का यह मतलब नहीं है कि आप रूढिवादी हैं. इस का सम्मान करने का मतलब है, अपनी अस्मिता और अपने परिवार का सम्मान करना. •

क्रेश या कैदखाना

कामकाजी मातापिताओं की बढ़ती व्यस्तता के कारण क्रेश यानी शिशु सदन तथा दिन में बच्चों की देखभाल करने वाली संस्थाएं अच्छाखासा मुनाफा कमाने लगी हैं. मातापिता तो अपने बच्चों को ऐसी संस्थाओं में छोड़ कर प्रायः निश्चित हो जाते हैं, किंतु वहां उन के बच्चों पर क्या बीतती है, यह जानने के लिए अमरीकी टीवी कैमरे ने जब गुप्त रूप से संस्थाओं की फिल्म बनाई तो बड़े ही खौफनाक दृश्य देखने को मिले.

एक केंद्र में एक परिचारक ने एक बच्चे को पटक दिया था, तो दूसरे में किसी बच्चे को थ[illegible] मारमार कर चुप कराया जा रहा था. डायनी सायर द्वारा प्रस्तुत इस टीवी रिपोर्ट में ऐसी संस्था[illegible] को पागलखाना और अंगभंग करने वाली संस्थाएं घोषित किया गया है.



आप कितनी उदार हैं?

लेख ● सुमन ग

"शालू मेरी सहेली है. अकसर की अपने पति से झड़प जाती है. शालू को वहम रहता है कि उस पति चोरीछिपे अपने भाईभाभी के लि अपनी मांबहन के लिए पैसा खर्च क रहते हैं, जबकि चंदन को शालू तंगदिली का भरपूर एहसास है. अतः चाहते हुए भी अपने स्वजनों पर धेला खर्च नहीं करता और न उस के स्वजन की आकांक्षा ही करते हैं. वे सब हैं भी अच स्थिति में. वे चंदन से आर्थिक सहायता मुहताज तो कतई नहीं हैं.

चारू के घर में भी अकसर झड़प हो रहती है. उसे यह कतई रास नहीं आता उस के बैंक के उच्च पदस्थ पति घर आने वाले अपने इष्ट मित्रों का उ आतिथ्य करें. वह इसे पैसा लुटाने की स देती है एवं पति के राह पर न आने के लि उन की मलामत करती रहती है.

विनीता के पति लेखक हैं. उ पढ़नेलिखने का शौक है. किसी भी वि को ले कर वह अकसर समाचारपत्रों के लि अपनी प्रतिक्रिया ही लिखते रहते हैं या फि अपने संबंधियों एवं मित्रों से पत्राचार

करते रहते हैं. पर विनीता को यह सब रास नहीं आता. वह चिढ़ती रहती है और कुछ न कुछ कहती रहती है. हर आने वाले के सामने वह पति के इस शौक की भर्त्सना करती रहती है, उन्हें नीचा दिखाती रहती है.

ममता को आज भी यह शिकायत है कि राजेश अपनी बीमार भाभी को डाक्टर को दिखाने स्वयं क्यों ले गया और उस ने भाभी की बीमारी पर आटोरिकशा एवं दवा के निमित्त पैसे क्यों खर्च किए. क्या उस की भाभी उस के भैया के साथ नहीं जा सकती थी. यह अलग बात है कि तब तक राजेश यह नहीं जानता था कि उस की यह 'सेवा' भी उस की तंगदिल पत्नी के गले की फांस बन जाएगी और वह उसे वक्तबेवक्त ताने देती रहेगी, मानो राजेश ने कोई बुरा काम किया हो.

लगभग यही स्थिति आज हर घरपरिवार की है. जहां हम 'वसुधैव कुटुंबकम' का खोखला नारा अलापते नहीं अघाते, वहीं वास्तव में हमारे दिल तंग होते जा रहे हैं. हम अपनत्व की भावना को सर्वथा भूल चुके हैं. अपना कौन है, पराया कौन है, इस का हमें इस कदर 'एहसास' हो गया है कि आज हम अपने ही स्वजनों के प्रति अनासक्त एवं विरक्त हो गए हैं. हमारे संबंधों में बेवजह की वितृष्णा, दूरी एवं कृत्रिमता घर कर गई है.

अतः यदि चारू कुछ देर के लिए शिल्पा से मिलती भी है तो वह मुलाकात सहज औपचारिक, कृत्रिम एवं रूखी होती है, क्योंकि चारू को भय है कि कहीं अपनी भाभी शिल्पा के प्रति उस से कोई 'अपराध' न हो जाए और शिल्पा महीनों के लिए रूठ जाए.

यही बात नवनीत के साथ हुई. उस ने अपने ज्येष्ठ भ्राता के यहां हुए किसी पारिवारिक समारोह में अपनी भाभी से यही तो कहा था कि भाभीजी, बेहतर होता, आज भैया के बैंक अधिकारी मित्रों के लिए कुरसियां किराए पर मंगवा लेतीं, ताकि उन्हें कालीन पर नहीं बैठना पड़ता. पर नवनीत की भाभी रागिनी ने इस सुझाव को सहज भाव से स्वीकार करने के स्थान पर हर किसी से यही कहा, "बड़े आए हैं, हमें सलाह देने वाले. हमारे घर में जैसा हम चाहेंगे, वही तो होगा." यदि रागिनी चाहती तो अपने देवर के इस सुझाव को सहज भाव से ले कर बात को आईगई भी कर सकती थी. नवनीत ने भी तो यह सुझाव अपने भाई की प्रतिष्ठा के लिए ही तो दिया था.

शीला जब भी पीहर जाती है, अपने मायके से काफी साड़ियां, ब्लाउज एवं अन्य सामग्री ले कर आती है. लेकिन उस के पति को यह सब कतई नहीं सुहाता. वह स्वयं यह अन्य सामग्री अपनी पत्नी के लिए सहज ही जुटा सकता है.

लोग आजकल संबंधों को स्वार्थ के चश्मे से देखने लगे हैं. इसी प्रवृत्ति के कारण वे उम्मीद करते हैं कि सब उन के प्रति उदार हों. लेकिन यह कैसे संभव है जबकि आप स्वयं दूसरों के प्रति अनुदार रहते हों?

पर यही शीला अपनी एकमात्र ननद को वर्ष में एक बार भी भूले से भी साड़ीब्लाउज नहीं देती. शीला की ननद को अपनी भाभी से ऐसी अपेक्षा या आशा कतई नहीं है. लेकिन क्या केवल लेते रहने का ही नाम जिंदगी है? जब शीला को लेना आता है तो फिर उसे देना क्यों नहीं आता भला?

दीपिका अपने पीहर वालों को खाने के लिए अकसर आमंत्रित करती रहती है. कभीकभी उसे अपने पीहर में अपने ही भाइयों एवं भाभियों से काफी अपमानित भी होना पड़ता है. बेवजह की जलीकटी भी सुननी पड़ती है. पर यही दीपिका अपने देवरों को, उन के परिवारों को, अपने जेठ के बच्चों को ही क्या, अपनी एकमात्र ननद के परिवार तक को खाने के लिए आमंत्रित नहीं करती. हो सकता है, दीपिका को भी कभी उस की जेठानी ने खाने हेतु नहीं बुलाया हो, पर फिर भी उस का इसी कारण अपने देवरों को न बुलाना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं. काश, दीपिका एक नई शुरुआत ही करती और फिर देखती कि एकदूसरे के यहां आनेजाने के सिलसिले कैसे चालू हो जाते हैं.

यह कैसी विडंबना है कि हम पड़ोसियों से मेलजोल बढ़ा लेते हैं, अपने बच्चों के मित्रों के परिवारों से भी संबंध बढ़ा लेते हैं, पति के मित्रों एवं पत्नी की सहेलियों तक से अपने संबंध इतने प्रगाढ़ कर लेते हैं, पर अपने ही पति के छोटे या बड़े भाइयों एवं उन की बहनों के परिवार हमें अस्पृश्य एवं 'वर्जित' लगते हैं. कैसी है यह समझ और कैसी है यह सोच? हम यह भूल जाते हैं कि इस ओछे एवं एकपक्षीय व्यवहार से 'पति' नामक जीव अत्यंत ही मर्माहत होगा. हो सकता है, वह कभी कुछ न कहे, पर निश्चय ही पत्नी ऐसी ओछी हरकतों से उस के हृदय में तो स्थान नहीं ही बना सकती.

रत्ना के पति पहली बार जोधपुर से मुजफ्फरपुर आए हैं. मुजफ्फरपुर लीचियों के लिए काफी प्रसिद्ध है. ऐसे में यदि विमल बाबू अपने भाईबहनों के लिए लीचियों की एक टोकरी ले भी जाते हैं तो कौन सा तूफान आ गया. क्या इस से रत्ना के हिस्से की लीचियां कम हो गईं. पर रत्ना ने इतनी सी बात पर अपने पति का खाना हराम कर दिया. उस का पति बिना खाना खाए बैंक चला गया. ऐसी भी अनुदारता भला किस काम की?

रुपए की अहमियत

यदि आप का भाई या कोई मित्र विदेश में है तो निश्चय ही उस से छोटा सा, प्रतीकात्मक उपहार पा कर भी आप को प्रसन्नता होती है, चाहे उस की कीमत नगण्य ही क्यों न हो, क्योंकि वह भावनाओं का प्रश्न होता है. आप को लगता है कि अमुक व्यक्ति आप को चाहता है, आप का ध्यान रखता है. बच्चे भी बड़ी उम्मीद से अपने दूरस्थ 'अंकलजी' का इंतजार करते हैं. ऐसे में आप सौपचास रुपए को क्यों अहमियत देती हैं और भला काहे अपने व अपने पति के बीच दूरी व तनाव पैदा करती हैं. आप के पति आप के लिए तो हमेशा ही करते रहेंगे, उन की कमाई तो सदा ही आप के लिए है, पर उस पर दूसरे का भी तो हक होता है. आप उन के स्वजनों को, उन के अपनों को क्यों इस 'सुख' से वंचित रखती हैं. नदी के जल में से दोएक डोलची निकाल लेने से नदी खाली नहीं होती और न ही तनिक सा 'अंश' पा कर पाने वाला बहुत ज्यादा उपकृत हो जाता है.

रोहिणी यदि ये पंक्तियां पढ़ रही होंगी तो निश्चय ही वे अगली बार खुद भागलपुर की रेशमी चादरें अपने सभी देवरों व ननदों के लिए ले जाएंगी. 5-6 चादरों की कीमत 3-4 सौ रुपए से अधिक तो नहीं होगी, पर अवश्य ही इस बार रोहिणी देने के सुख की अनुभूति करना चाहेंगी एवं अपने पति के भाईबहनों को ही नहीं, वरन अपने पति को भी एक सुखद आश्चर्य से भर देंगी. कोई इन चादरों का मोल चुकाना भी चाहेगा तो रोहिणी इन का पैसा कदापि स्वीकार नहीं करेंगी, सच कदापि नहीं. ●

दिखावे में ज्यादा खर्च न करें

लेख • सुरभि सक्सेना

लगभग आधे शहर को ही न्योत डाला प्रमोद ने अपने इकलौते बेटे के जन्मदिन पर और तैयारी भी ऐसी की कि लोग आंखें फाड़े देखते रह गए. स्वादिष्ट मसालेदार सब्जियों और पूरीपुलाव के साथसाथ प्रमोद ने चाय, आइसक्रीम का स्टाल भी लगवा दिया और काफी की मशीन भी. लगा ही नहीं कि यह जन्मदिन का खाना था बल्कि लग तो यह रहा था कि हम किसी शाही दावत में शामिल हो रहे हैं.

जहां 4 चीजों से बहुत ही अच्छे ढंग से काम चल सकता था वहां 14 चीजें परोस डालीं प्रमोद ने. सिर्फ जन्मदिन की दावत में ही हजारों रुपए फूंक डाले.

कुछ दिखावाप्रिय लोगों ने प्रमोद के इस विशाल आयोजन की जहां खुले दिल से प्रशंसा की, वहीं कुछ समझदार और पैसे की कद्र करने वाले लोग भी थे, जिन को यह दावत नागवार लगी. हालांकि यह सही है कि उन की गांठ से कुछ नहीं जा रहा था. पैसे प्रमोद के खर्च हुए थे. वह चाहे पूरी बरात निकाल डालता अपने बेटे के जन्मदिन की दावत में, किसी को क्या पड़ी थी? किंतु पैसे की इस तरह बरबादी जिस से भी नहीं देखी



अपनी हैसियत से अधिक खर्च करने को कई लोग आजकल बड़प्पन समझने लगे हैं. लेकिन दिखावे की यह प्रवृत्ति अंततः कठिनाइयां ही खड़ी करती है. अगर आप भी इन्हीं लोगों में से एक हैं तो समय रहते स्वयं को सुधारें.

गई, उसी ने इस तरह के दिखावे के प्रति अरुचि और नाराजगी प्रकट की.

"कितना पैसा बरबाद करते हो प्रमोद तुम, इतने में तो अच्छीखासी शादी व बरात की खातिरदारी हो सकती थी. ऐसा दिखावा किस काम का कि बगैर सोचेसमझे अपने रुपयों में आग लगा दो? तुम्हें मना नहीं कर रही किंतु जरा सोचसमझ कर ढंग से मीनू रखते. जानते हो, किसी से ठीक से खाया भी नहीं गया. और काजू किस तरह डलवाए हैं तुम ने बादाम के हलवे में? अरे निकदार का भी अपना हिसाब होता है, वरना काजू का हलवा नहीं बन सकता था क्या?" प्रमोद की बड़ी बहन ने कहा, जो जयपुर के एक महाविद्यालय में व्याख्याता हैं. इस का प्रमोद और उस की पत्नी दोनों ही बुरा मान गए.

"जीजी को तो हमारी खुशी राई भर नहीं सुहाती. देखा, किस तरह से भाषण देने लगीं? अरे, एक ही तो भतीजा है. यह भी नहीं होता कि उस का ही उछावबधाव मना लें. बस, जब देखो तब पैसों की बरबादी को रोती रहेंगी," प्रमोद की पत्नी लता ने नाराजगी से कहा.

अब चूंकि प्रमोद भी लता के ही समान दिखावा पसंद है इसलिए उस ने भी पत्नी को समझाने की बजाय उस की शिकायत में सहमति ही जताई. लिहाजा सामने से तो दोनों जीजी से लिहाजवश कुछ नहीं बोले, किंतु भीतर से वे उन से कुछ खिंचेखिंचे ही रहे.

वास्तव में कुछ लोग इतने दिखावाप्रिय होते हैं कि जहां जो खर्च नहीं करना चाहिए वहां व्यर्थ ही खर्च कर डालते हैं. अगर कोई उन्हें इस विषय में समझाना भी चाहे तो वे उस की बात पर ध्यान नहीं देते उलटा बुरा मान जाते हैं.

हिना के बेटा हुआ तो उस के भाई ने बतौर बख्शीश नर्सिंग होम की नर्सों व अन्य परिचारिकाओं में इतने रुपए लुटा दिए जिस का कोई हिसाब नहीं. अब अगर कोई यह सोचे कि यह हिना के भाई की खुशी थी जो उस ने इस तरह रुपए लुटाए तो यह आकलन गलत है. अगर कोई दिखावा न कर सकने वाला या दिखावे में रुचि न रखने वाला व्यक्ति अपनी खुशी इस तरह जाहिर नहीं करे तो इस का यह मतलब नहीं कि वह खुश नहीं होता. सच तो यह है कि वह अपनी खुशी को इस तरह के आडंबरों के माध्यम से नहीं जताता.

मौके पर किसी को भी ईनामबख्शीश देना दिखावा नहीं होता लेकिन इस विषय में अति कर देना ही दिखावा कहलाने लगता है. बतौर रस्म किया गया खर्च अगर सीमा के अंदर ही हो तो कभी अखरता नहीं है और न ही वह हमारा आर्थिक संतुलन बिगाड़ता है. इसलिए ऐसे अवसरों पर अगर हाथ संभाल कर खर्च व वाहवाही के चक्कर में ज्यादा न पड़ा जाए तो न केवल हम अपने पैसे बचा लेते हैं बल्कि दिखावटी भी नहीं लगते.

मोहिनी के बेटी हुई तो पालना के मौके पर उस की बड़ी ननद कंचन पूरे 10,000 रुपए का सामान ले कर आ गई. जिस में कई चीजें ऐसी भी थीं जो 7-8 साल तक न बच्ची के काम आ सकती थीं न परिवार में अन्य किसी के.

लेकिन अब चूंकि ननद कीमती उपहार ले कर आई थी इसलिए उस का मान रखना ही था इसी लिए मोहिनी व उस के पति ने, मिल कर जैसेतैसे खासी विदाई



बहन और उस के पति व बच्चों को दी. लेकिन फिर भी जितना खर्च वह कर के आई थी मोहिनी की ओर से उस की भरपाई नहीं हो पाई. कारण कि इतने तंगहाल में जब वह हाल ही में प्रसव से निबटी थी, उस के व उस के पति के हाथ में इतना पैसा ही नहीं था, जो वे दे पाते.

लिहाजा बहन के ससुराल वालों को आज तक इस की शिकायत है. ऐसा उन्होंने मोहिनी के सामने तो नहीं कहा, लेकिन मिलनेजुलने वालों से मालूम हुआ कि वे लोग नाराज हैं. उन का कहना है कि हम ने तो अपनी ओर से इतना किया. जिस ने भी बधावा देखा, उसी ने जी खोल कर तारीफ की. लेकिन उन लोगों ने विदाई में न कंचन को ज्यादा कुछ दिया और न हम लोगों के लिए ही भिजवाया. हमारे तो 10 हजार रुपए खर्च हो गए. एक तोले की तो जंजीर और बच्ची के कड़े ही थे.

अब सवाल यह उठता है कि कंचन और उस के ससुराल वालों को क्या जरूरत थी इतना खर्च कर के बधावा भेजने की और फिर बदले में उतना ही या उस से भी ज्यादा मिलने की उम्मीद करने की? होना तो यह चाहिए था कि वे सामान्य तरीके से

पार्टी की शान छप्पन पकवान परोसने में नहीं, बल्कि मेहमानों के बेहतर आदरसम्मान में है. ▲

बच्ची के लिए कोई सुंदर सा उपहार ले आते जो ज्यादा कीमती न होता.

ऐसा करने से न उन्हें अखरता और न ही मोहिनी और उस के पति को भारी पड़ता. जो कीमती सामान कंचन ने भाई की बच्ची को दिया, चाहे वह लाख महंगा हो लेकिन तत्काल तो उस के उपयोग लायक नहीं था, उलटे उस के भाई को उस की विदाई भारी पड़ गई.

अगर कंचन इतना खर्च महज दिखावे में नहीं करती तो न वह परेशानी में फंसती और न ही उस के भाईभाभी.

ये तो खुशी के मौके के उदाहरण थे. कई बार तो ऐसा भी देखने में आता है कि तेरहवीं और श्राद्ध जैसे आयोजन भी लोग ऐसे मनाते हैं मानों नए वर्ष की दावत दे रहे हों.

एक बार हमारे एक मित्र परिवार ने जानकारी दी कि उन के किसी परिचित अपने पिता की तेरहवीं पर इस तर .सा बहाया कि लोग दंग रह गए. दरअसल लोगों को दंग करना ही उन का उद्देश्य भी

था. उन की ही तरह प्रोफेसर त्रिदेव अपने पिता का श्राद्ध हर वर्ष इस धूमधाम से मनाते हैं कि उन के भी परिचितों व रिश्तेदारों को हर बार नए सिरे से दंग होना पड़ता है.

कितने आश्चर्य की बात है कि लोग खुशी के मौके पर तो दिखावा करने में बेतहाशा रुपए खर्च करते ही हैं, दुख और अफसोस के मौकों पर भी इस आदत से बाज नहीं आते. अब अगर किसी के लिए बरसी, तेरहवीं और श्राद्ध उन के परिवार के संस्कार हैं तो उसे बेशक किया जा सकता है, लेकिन सादगी के साथ. क्या जरूरी है कि ऐसे मातमी आयोजन भी छप्पन व्यंजनों और अन्य बाहरी सजावट के साथ निबटाए जाएं?

वास्तव में यह सिर्फ दिखावा ही नहीं, बल्कि एक शर्मनाक प्रवृत्ति है.

पैसे के दुरुपयोग से बचें

अगर पैसा कहीं सही जगह पहुंच रहा हो, किसी ऐसे हाथ में जा रहा हो जिस का कुछ औचित्य हो, तब तो पैसे लुटाने का फिर भी कोई मतलब है. लेकिन अगर भीड़भाड़ का मौका हो और दिखावे में आप खर्च पर खर्च करते चले जाएं तो यह न केवल आडंबर होगा बल्कि इस तरह आप पैसे का दुरुपयोग ही करते हैं.

बरात वगैरह में पैसे लुटा देना और उन का यों अकारथ चले जाना तब तो और भी गलत है जब हम आर्थिक तंगी झेल रहे हों. कुछ घंटों की घटिया शान के लिए अगर आप बाजे वालों और अन्य नाचनेगाने वाले लोगों पर पानी की तरह से पैसा बहा सकते हैं तो निश्चित ही आप एक निहायत दिखावा करने वाले और सस्ती लोकप्रियता में रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं.

दिखावे में आ कर सामर्थ्य से बढ़ कर खरीदारी कर लेना और फिर उसे इस्तेमाल न कर पाना तो बहुतायत में देखा जाता है. चाहे पूरा महीना दिक्कत में गुजरे लेकिन रिश्तेदारी में होने वाली शादी के लिए नई साड़ी, वह भी महंगी खरीदी जाएगी क्योंकि रिश्तेदार देखेंगे, यह प्रवृत्ति गलत है. शादी अपनी जगह है और खरीदारी अपनी जगह. कोई आवश्यकता नहीं ऐसे दिखावों के लिए खुद को दिक्कत में डाल कर खरीदारी करने की.

बेदर्दी से दिखावे पर किया गया खर्च चाहे वह सजावट व रोशनी के ऊपर हो और चाहे 10 किलो के बादाम की सजावट वाले केक पर. यह सब सिवाय मूर्खता और अपने भविष्य की असुरक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं है. लोग हमारी तारीफ करेंगे या खुले दिल से हमें वाहवाही मिलेगी, ऐसा सोच कर किया जाने वाला कोई भी खर्च उचित नहीं है.

दिखावा अस्थाई होता है

लोगों को प्रभावित करने की भावना से किया गया दिखावा और दिखावे पर किया गया खर्च अस्थाई बातें हैं क्योंकि क्या पता बाद में कोई उस से भी बढ़ कर खर्च करने वाला निकले जो 500 रुपयों की जगह 1000 रुपए नाचते लोगों को थमा दे तब आप से फिर कौन प्रभावित रहेगा?

अगर आप मौका देख कर समझबूझ कर काम करने वालों में से हैं तब तो कुछ नहीं वरना आप को भी संभल कर रहना होगा. पता नहीं कब ऐसे दिखावे की सजा आप को भी भुगतनी पड़ जाए. अलबत्ता सावधान हो जाइए, आज से क्या, अभी से ही व्यर्थ के तामझाम पर व्यय करना छोड़ दीजिए. ऐसा नहीं कि कंजूस बन जाइए, दिल खोल कर खर्च कीजिए लेकिन वहीं जहां सार्थकता हो. निरर्थक खर्च किया गया पैसा न आप को यश देगा न सहारा बल्कि आप 'हड़बड़िया' और 'शोबाज' ही कहे जाएंगे, तिस पर आर्थिक संकटों से भी आप का सामना आए दिन होता ही रहेगा. तब आप को क्या आवश्यकता है दिखावे पर खर्च करने की? याद रखिए, लाखों खर्च कीजिए लेकिन तब जब आप को उस खर्च की सार्थकता दिखे.



अमीर संबंधी से कैसे निभाएं?

लेख • विमला रस्तोगी

ज्यादातर व्यक्तियों की मानसिकता होती है कि वह अपने बराबर वालों से रिश्तेदारी व मेलजोल रखते हैं. कहा भी जाता है कि रिश्तेदारी (बेटीबेटे का विवाह) अपने बराबर वालों से ही जोड़नी चाहिए. रहनसहन और धन की असमानता वाले 2 परिवारों की रिश्तेदारी निभ नहीं पाती. ऐसे बहुत से उदाहरण देखने को मिलते हैं.

लेकिन कभीकभी एक ही परिवार में जन्मे पले भाईबहनों में आगे चल कर कोई बहुत रईस बन जाता है तो कोई साधारण ही रह जाता है. जैसे किसी साधारण परिवार की लड़की का विवाह खूबसूरती के कारण किसी धनी परिवार में हो जाए या परिवार का ही कोई व्यक्ति प्रखर बुद्धि होने के कारण बड़ा अधिकारी बन जाए. ऐसे ही मामा, चाचा या भानजा, भतीजा कोई भी रिश्तेदार अपने दूसरे रिश्तेदार से बहुत ज्यादा धनी हो सकता है.

रिश्तेदारी के बीच बनी इस अमीरीगरीबी की रेखा में तालमेल बिठाना आसान नहीं है. यदि रईस भाई या रिश्तेदारों को पैसे का घमंड न हुआ तो कभीकभी आने वाले अपने गरीब भाई या रिश्तेदार को भरपूर प्यार व आदर सम्मान (छोटे या बड़े होने के मुताबिक) देंगे. यदि उन्हें घमंड होगा तो वे अपने घर पर किसी साधारण रिश्तेदार के आने में अपमान समझेंगे.

सब से पहली बात यही है कि

रिश्तेदारी के बीच बनी अमीरीगरीबी की रेखा में तालमेल स्थापित करना मुश्किल तो है लेकिन नामुमकिन नहीं. यदि कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो अमीर संबंधी स्वयं भी आप से संबंध बनाए रखने को लालायित होंगे, केवल आप ही नहीं.

यदि आप का धनवान संबंधी बहुत घमंडी है तो उस के घर जा कर अपने स्वाभिमान को ठेस न पहुंचाएं. वह स्वयं यदि आप के घर कभी आ जाए तो वह अलग बात है. प्रायः घमंडी रईस अपने स्तर से नीचे के रिश्तेदारों के घर बहुत कम ही जाते हैं. जहां से उन का कोई काम निकलता है या जो संबंधी उन के काम आ सकते हैं, वे लोग वहीं जाते हैं.

हां, यदि आप को अमीर रिश्तेदार का स्वभाव पसंद है, आप के जाने पर वह अपने घर में आप की इज्जत करता है, आप को मानसम्मान देता है, आप की आवभगत करता है तो आप का भी फर्ज बनता है कि अपने घर आने पर उस की अच्छी तरह आवभगत करें. रुपएपैसे खर्च करने में तो आप उस की बराबरी नहीं कर सकते लेकिन अपना व्यवहार इतना शिष्ट, सरल व मधुर रखें कि आप के व्यवहार के कारण वह आप के घर में होने वाली छोटीमोटी असुविधाओं की तरफ ध्यान ही न दे. अच्छे व्यवहार में कुछ खर्च नहीं होता तथा सामने वाला व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रहता.

आप अपने छोटे मकान को कोठी में नहीं बदल सकते किंतु अपने अमीर संबंधी के आने की सूचना मिलने पर उसे साफसुथरा या व्यवस्थित तो अवश्य कर सकते हैं. मसलन घर के जालों की सफाई पर विशेष ध्यान दें.

रहने वाले घर में लगे जाले बहुत बुरे लगते हैं और गृहिणियों की अकर्मण्यता का सबूत देते हैं. रसोई की अलमारियों की सफाई पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए. घर में इधरउधर बिखरे सामान को यथास्थान रख कर घर को ए[...] व्यवस्थित घर का रूप दें.

कभीकभी ऐसा भी देखा जाता है [...] अधिक धनवान घरों में जहां ज्यादात[...] काम नौकर करते हैं तथा घर की मालकि[...] ठीक से उन के कामों पर नजर नहीं र[...] पाती तो घर में अव्यवस्था हो जाती [...] यद्यपि पैसे की इफरात के कारण ऐसे लो[...] अच्छा खाना खाते हैं, अच्छे कपड़े पहनते[...] पर उन के घर में जाने पर अव्यवस्था स्प[...] दिखाई देती है.

अतः छोटा पर साफसुथरा व्यवस्थि[...] घर आप के अमीर मेहमान को आकर्षि[...] करेगा, उन्हें सुकून भी देगा. साथ ही सा[...] गृहस्वामिनी के रखरखाव की प्रशंसा [...] होगी.

संबंधी के आने से पहले नाश्ते व ख[...] आदि का मीनू भी बना कर रख लिया ज[...] तो उस के आने पर गृहिणी की चिंता व श्र[...] दोनों ही कम हो जाते हैं. जैसे वह थोड़ी [...] मीठी सोंठ तथा चटनी बना कर फ्रिज [...] रख ले. प्याज टमाटर का मसाला भून [...] और मटर आदि भी छील कर रख सक[...] है.

ब्रेड के हलके फुलके किस्मकिस्म [...] नाश्ते जैसे ब्रेड की उपमा, रौक टोस्ट[...] सूजी के चीले (जो उत्पम की तरह बनते[...] बना कर गृहिणियां अपनी पाक कला [...] सबूत देने के साथ अपना घरेलू बजट [...] संतुलित रख सकती हैं.

मेहमान के ठहरने और रात को [...] का इंतजाम आप पहले ही निश्चित कर[...] अतः घर की सफाई करते समय आप [...] कमरे में उन के ठहरने या सामान रखने[...] इंतजाम अवश्य कर लें.



अव्यवस्थित व गंदा घर उकताहट पैदा करता है,अतः मेहमान के आने से पहले घर को अवश्य साफ कर लें.

मान लीजिए आप ने बच्चों वाले कमरे को उन के लिए चुना है तो बच्चों की मेज या कुछ कपड़े आप अपने कमरे में ले आइए ताकि कमरा भराभरा न लगे और इस कमरे में आप के संबंधी अपना सामान रख सकें. यदि आप के घर में बिस्तर कम है तो उस मेहमान के आने से पहले आप साफ सुथरे बिस्तरों का इंतजाम अवश्य कर लें. बिस्तर चाहे कीमती न हों पर साफ जरूर होने चाहिए.

कभी आप उस संबंधी के घर गए हों और उन्होंने आप को होटल में खाना खिलाया तो उन के आने पर आप भी 300-400 रुपए खर्च कर के उन्हें होटल में खाना तो नहीं खिला सकते. लेकिन किसी अच्छी मिठाई की दुकान से 40-50 रुपए की अच्छी मिठाई तो अवश्य ला सकते हैं. ऐसा न हो कि आप कालोनी के किसी मिठाईवाले से घटिया किस्म की मिठाई ले आएं और उम्मीद करें कि वह अमीर रिश्तेदार उसे प्रेम से खाए व प्रसन्नता व्यक्त करे. ऐसी मिठाई वह नहीं खा सकेगा. बाद में आप तथा परिवार के अन्य सदस्य संबंधी पर टीकाटिप्पणी करेंगे कि 'बहुत घमंडी हो गए हैं.'

इसी प्रकार यदि आप के धनी संबंधी के घर विवाह, जन्मदिन की दावत या अन्य कोई आयोजन है जिस का निमंत्रण आप के पास आया है तो वहां जाने से पहले आप कुछ तैयारियां, विशेष रूप से कपड़ों आदि के संबंध में अवश्य कर लें. यदि पूरे परिवार को साथ ले जाने की क्षमता नहीं है तो एक या दो व्यक्ति ही चले जाएं.

हां, यदि बच्चों के साथ जा रहे हैं तो बच्चों को बैठनेउठने, बोलनेचालने और खानेपीने के तौरतरीके अच्छी तरह समझा दें. ऐसा न हो कि उस अमीर संबंधी के घर जा कर आप के बच्चे मिठाइयों, ठंडे पेयों या आइसक्रीम पर टूट पड़ें, जल्दीजल्दी खातेपीते और फर्श पर गिराते चले जाएं.

अपने धनी संबंधी के घर किसी उत्सव या दावत के आयोजन के अवसर पर जा कर आप घर बाहर के कार्यों में उस का अथवा उस की पत्नी का हाथ बटाएं.

आप के धनी संबंधी यदि आप के बच्चों या आप को उपहार स्वरूप कपड़े आदि देते हैं तो आभार प्रकट करें. हां, कभी आप के धनवान संबंधी आप के घर आएं तो आप उन को या उन के बच्चों को कपड़े देने की भूल न करें.उन्हें कोई सजावटी वस्तु दे दें या फिर उन के बच्चों के हाथ में अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ रुपए ही दे दें.

इन छोटीमोटी बातों का ध्यान रखने पर आप के धनवान रिश्तेदार को आप से या आप के घर आने पर असुविधा न होगी तथा आप के उन से संबंध भी मधुर बने रहेंगे. उन का आना आप को भी बोझ नहीं लगेगा. ●

युवतियां क्या करें जब युवक किराएदार हो

लेख ● अशोक मनोरम

एक दिन दिव्या की मां हमारे य
आई. उस समय दीदी रसोई में थ
जीजाजी बरामदे में अपना स्कूटर साफ क
रहे थे. आवाज देने पर जब दीदी बाह
आई, तो दिव्या की मां से अभिवादन के ब
वहीं कुरसियां निकाल लाई और बोल
"आइए, यहीं बैठते हैं. सामने से बह
अच्छी हवा आ रही है."

दिव्या की मां बोली, "नहीं, कमरे
ही चलो न, वहीं बैठ कर बातचीत करेंगे

मुझे ऐसा लगा कि जरूर कोई ऐ
बात है, जिसे दिव्या की मां, मेरे त
जीजाजी के सामने नहीं करना चाहती





दी उन्हें ले कर बैठक में चली गई. मेरा ान भी उन्हीं की बातों में अटक गया. मैं ठक के दरवाजे के पास ही एक पत्रिका ढ़ने का अभिनय कर रहा था.

कमरे से दिव्या की मां की आवाज फ सुनाई पड़ रही थी, "जानती हो रेखा, र ऊपर वाले फ्लैट में जो शरद बाबू रहते न, उन्होंने आज अपने उस छोकरे राएदार राकेश से खूब लड़ाई की. असल शरद बाबू की लड़की प्रीति का स लड़के से कई दिनों से चक्कर चल रहा . मामला धीरेधीरे काफी आगे बढ़ गया . इस बात का खुलासा तो आज तब हुआ, ब शरद बाबू ने उन दोनों का प्रेमपत्र पकड़ या. उन्होंने राकेश को जल्दी ही मकान छोड़ देने और 'देख लेने' तक की धमकी दी है."



"लेकिन इस में सिर्फ राकेश का ही तो दोष नहीं है. शरद बाबू ने प्रीति पर इतना अंकुश क्यों नहीं रखा कि वह इस चक्कर में ही नहीं पड़ती?" दीदी ने बीच में ही टोकते हुए कहा.

"यही बात तो मैं भी कहती हूं. राकेश तो लड़का है. अगर लड़कों को लड़कियों की ओर से थोड़ा सा भी बढ़ावा मिलेगा तो वे भी आगे बढ़ेंगे ही, लेकिन शरद बाबू अपनी बेटी को तो कोई दोष नहीं देते."

ऐसे प्रेमप्रसंग प्रायः सुनने को मिलते रहते हैं. ऐसी घटना का घटित होना कोई असहज या अस्वाभाविक बात भी नहीं है. लड़के और लड़कियां, आग तथा तिनके की तरह होते हैं. आग बढ़ कर तिनके तक जाए या तिनका उड़ कर आग तक जाए, अप्रिय घटना तो दोनों ही स्थितियों में घटित होती ही है.

आजकल अधिकांश (विशेष कर मध्यम वर्गीय परिवार के) लोग अनेक विषम परिस्थितियों के बीच जी रहे हैं. दिनोदिन बढ़ती महंगाई और सीमित आय के बीच सामंजस्य स्थापित करना उन के लिए उस ऊंचे तार पर चलने के समान है, जिस के नीचे आग जल रही होती है. एक तो वैसे ही संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण लोगों को मकान का एक छोटा सा हिस्सा ही मिल पाता है. इस में परिवार के

किराएदार लड़के का मकानमालिक की लड़की के प्रति आकर्षण सहज ही हो जाता है जो अकसर एक बड़ी समस्या बन जाता है. फिर भी इस से निजात पाई जा सकती है यदि लड़की स्वयं कुछ बातों का खास ध्यान रखे.

सभी सदस्यों के लिए पर्याप्त शयनकक्ष, अध्ययन कक्ष, बैठक, अतिथि कक्ष वगैरह की व्यवस्था कर पाना दुष्कर होता है. इस के बावजूद उन्हें अपने उस छोटे से मकान का कमरा किराए पर किसी को देना पड़ता है.

हमारे समाज में ऐसे अनेक लोग हैं, जो यह सोचते हैं कि हमें चाहे कितनी भी परेशानियां क्यों न हों, हमारी संतानें अच्छी तरह लिखपढ़ लें. इसी लिए वे उन्हें पढ़ाने के लिए प्रादेशिक राजधानियों अथवा महानगरों में भेजते हैं. चूंकि हमारे देश में भीषण जनसंख्या विस्फोट के कारण आवास समस्या दिनोदिन अधिक गंभीर होती जा रही है, इसलिए वहां रहने के लिए उन्हें संतोषजनक कमरा नहीं मिल पाता है. लड़कियां तो छात्रावास वगैरह में या अपने किसी संबंधी के यहां रह लेती हैं, लेकिन लड़कों को तो किराए के ही मकान में रहने के लिए विवश होना पड़ता है. फलतः वे उन्हीं लोगों के पास जाते हैं, जो अपने छोटे से ही मकान का एक कमरा किराए पर देना चाहते हैं. यहां पर 'लंगड़े को अंधा और अंधे को लंगड़ा चाहिए' वाली बात लागू होती है अभिप्राय यह कि मकानमालिक को किराएदार और किराएदार को मकान चाहिए.

चूंकि हर मकानमालिक के लिए हर समय यह संभव नहीं हो पाता कि वह सिर्फ अपनी ही शर्तों पर या अपने मन लायक व्यक्ति को ही कमरा किराए पर दे. अत

युवक किराएदार रखने के लिए शर्तें

जिन युवतियों के मकान में किराएदार के रूप में कोई युवक रह रहा हो, उन्हें निम्नलिखित सावधानियां बरतनी चाहिए.

- *मर्यादित दूरी बनाए रखें. जरूरत पड़ने पर बातचीत जरूर करें, मगर उतनी ही, जितने से काम चल जाए.*
- *एकांत स्थान में कुछ पल भी साथ न रहना पड़े, इस के लिए सदा सचेत रहें.*
- *अभिभावकों पर इस बात का दबाव डालें कि किसी परिचित मध्यस्थ के ही माध्यम से किराएदार रखें.*
- *उस का सहीसही नाम, पिता का नाम, स्थायी पता वगैरह अवश्य मालूम कर के लिख लें, ताकि कोई ऐसीवैसी बात होने पर काररवाई करने में सुविधा हो. कुछ लोग दूसरे शहर का होने के कारण अपना स्थान, पता गलत बता देते हैं. अतः उस के द्वारा बताए गए पते का सत्यापन अवश्य कर लें.*
- *जन्मदिन वगैरह के अवसर पर कोई उपहार स्वयं न दें. यदि आप के परिवार से उस का संबंध अधिक मधुर हो तो यह काम अभिभावकों को ही करने दें.*
- *उस के कमरे के सामने अपनी पैंटी या ब्रा सूखने के लिए नहीं फैलाएं.*
- *कभी उसे कोई बात बतानी हो, तो दरवाजे पर दस्तक दे कर बाहर बुला लें क्योंकि हो सकता है कि वह अपने कमरे में अकेले रहने के कारण आधे कपड़ों में हो.*
- *जब वह बिना किसी अवसर के आप को कोई उपहार देना चाहे, तो उस की औचित्यहीनता को स्पष्ट कर दें. यदि अभिभावकों से सांकेतिक अनुमति मिल जाए तो ले लें, मगर थोड़ी कड़ी और थोड़ी नम्र आवाज में भविष्य में ऐसा कष्ट न करें, जरूर कहें.*
- *कुछ लड़के ट्रांजिस्टर या टेपरिकार्डर पर तेज आवाज में फिल्मी गाने बजा कर अपनी प्रेम भावनाओं को मकान मालिक के घर की युवतियों के सामने प्रकट करना चाहते हैं. यदि आप का भी किराएदार ऐसा ही करता है, तो अपने अभिभावकों द्वारा उसे ऐसा करने से मना करवा दें.*
- *यदि वह प्रायः आपत्तिजनक बातें कहता रहे तो उसे कभी चतुराईपूर्वक टेपरिकार्डर से टेप कर लें.*
- *यदि वह कोई आपत्तिजनक हरकत करे या बातें करे, तो निस्संकोच यह बात अपने अभिभावक को बता दें.*



किराएदार लड़के से मौके-बेमौके उपहार आदि लेना लड़के को बढ़ावा देना है, जो घातक सिद्ध हो सकता है.

उन्हें उन युवकों को भी कमरा किराए पर देना पड़ता है, जो उन के परिचित नहीं होते. बड़े शहरों में तो कुछ लोग अपने नाम से आवंटित 2 या 3 कमरों के फ्लैट में से ही एक कमरा किराए पर दे देते हैं.

हमारी सामाजिक संरचना कुछ ऐसी है कि कद्दू चाकू पर गिरे या चाकू कद्दू पर, हर हाल में हानि तो कद्दू की ही होगी. इसी तर्ज पर यह माना जाता है कि लड़का लड़की से संबंध बनाए या लड़की लड़के से, बदनामी तो हर हालत में लड़की की ही होती है. इसलिए वैसे मकानमालिक अंदर ही अंदर चिंता तथा तनाव से घिरे रहते हैं, जिन के परिवारों में कोई युवती (पत्नी, पुत्री या पुत्रवधू) हो और उन्होंने किसी युवक को किराएदार के रूप में रख लिया हो. वे मकानमालिक हमेशा तनावग्रस्त रहते हैं, जिन्होंने अपने मकान के संपृक्त हिस्से में ही युवक को किराएदार रखा है.

यदि वह युवा विवाहित हो या अपनी मां अथवा पिताजी के साथ रहता हो तो यह अधिक चिंता की बात नहीं है, पर यदि वह अविवाहित हो और अकेले ही उस मकान में रह रहा हो तो मकानमालिक की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है.

ऐसी स्थिति में उस परिवार की युवती का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने अभिभावक को यथासंभव चिंता और तनाव से मुक्त रखे.

विपरीत लिंग होने के कारण किसी युवक और युवती में परस्पर आकर्षण उत्पन्न होना अस्वाभाविक नहीं है. चूंकि मकानमालिक के घर की युवती और किराएदार युवक को प्रायः एक ही मकान में रहना होता है, इसलिए उन दोनों में यह आकर्षण प्रायः शीघ्र और अधिक हो जाता है. ऐसा भी देखा जाता है कि एक ही मकान में रहने के कारण वे दोनों थोड़ा सा एकांत मिलते ही शारीरिक संबंध भी स्थापित कर लेते हैं.

ऐसे मामलों में प्रायः लड़कियों को काफी विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है. ऐसा भी देखा जाता है कि उस स्थिति में अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए अभिभावक उस युवक या युवती की हत्या तक कर देते हैं और उसे आत्महत्या का रूप दे कर मामले को रफादफा करने की कोशिश करते हैं. जो इस कोशिश में सफल नहीं हो पाते, उन्हें कारावास की सजा भुगतनी पड़ती है. इस प्रकार एक युवती की थोड़ी सी असावधानी के कारण पूरा परिवार समस्याओं और बदनामी से घिर जाता है.

प्रायः देखा जाता है कि मकानमालिक के घर की युवा सदस्या की छोटी सी भूल या छोटे से गलत काम को युवक किराएदार 'बढ़ावा' समझ लेता है.

ऐसी स्थितियां हमारे समाज में प्रायः उत्पन्न होती रहती हैं. अतः युवतियों को चाहिए कि वे इस मामले में विशेष रूप से सतर्क व सजग रहें. ●

इन बातों को छिपाना ठीक नहीं

लेख ● मंजु नागोरी

विभा ने विवाह के कुछ दिन बाद ही पति की नामर्दी के कारण तलाक ले लिया था. तलाक के लगभग 4 वर्ष बाद विभा के विवाह की बात एक दूजवर से चली, जिस की पत्नी 3 छोटे बच्चे छोड़ कर प्रसव में ही चल बसी थी. विभा की बढ़ती उम्र व नाम के संग लगे तलाकशुदा के लेबल के कारण घरवाले चाहते थे कि जैसेतैसे यह ब्याह हो ही जाए ताकि विभा के बाद के भाईबहनों का रास्ता साफ हो.

चर्चा चलने पर विभा ने भविष्य की बाबत, मसलन घर में उस के साथ कैसा व्यवहार होगा, बच्चों को वह कैसे रखना चाहेगी आदि के बारे में तमाम चर्चाएं कीं. चर्चा के बीच तलाक क्यों हुआ का कारण विभा ने स्पष्ट बता दिया और अपनी मां के पास जा कर कहा, "अलमारी में से मेरे तलाक के कागज दे दो, मैं दिखाना चाहती हूं."

मां ने आनाकानी की. इसे गैरजरूरी समझा व तर्क दिया, "सब साफसाफ बता तो दिया है. अब दिखा कर ही क्या होगा?" पर विभा नहीं मानी. वह सोचती थी, प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या. ब्याह बाद कोई झंझट उठे, शकशुबहा हो, इस से कहीं ज्यादा बेहतर और सुरक्षित स्थिति है कि पहले ही सारी बात खुलासा कर दी जाए. फिर जंचे, मन माने तो ब्याह करो, नहीं तो मत करो.

विभा ने अपने तलाक के कागज निकाल कर उम्मीदवार को दिखाए. उम्मीदवार ने कहा भी कि इस की क्या जरूरत थी, आप ने कहा मैं ने भरोसा कर लिया, बस. पर विभा जानती थी कि इस की जरूरत थी. विभा की साफगोई से स्वाभाविक था, सामने वाला पक्ष प्रभावित होता.

सब तरफ की चर्चाएं, भविष्य, घर, बच्चों की योजनाओं पर खुल कर चर्चा कर के विभा ने विवाह किया व आज वह सुखी दांपत्य जीवन बिता रही है. उस के बीते कल का पति की निगाहों में खुलासा हो जाने के कारण दांपत्य का आधार निष्...



वश्वास व दृढ़ता से टिका हुआ है. कहीं कोई 'शकशुबहा, तानेबाजी, व्यंग्य या छींटाकशी नहीं है.

अंजु की एक छोटी सी भूल ने उस के वाहिक जीवन में जहर घोल देने में कोई कसर नहीं छोड़ी. अंजु की पीठ पर एक छोटा ा सफेद दाग था, यह बात अंजु की मां ानती थी. इलाज भी कराया था. फलतः ाग फैला तो नहीं पर मिटा भी नहीं.

जब अंजु की सगाई हो गई तो अंजु ने ह बात अपनी मां से कही कि वह दाग की ात बता दे उस के ससुराल पक्ष को, पर मां ो डर था कि कहीं जरा सी बात पर रिश्ता टूट जाए. अतः वह चुप रही. साथ ही अंजु े भी समझाया कि यह बात अपने तक ही खे. अंजु ने अपना भय कई तर्कों के माध्यम जतलाया पर मां के सामने उस की एक न ली. और अंजु को जिस बात का भय था ही हुई.

ससुराल में पहले ही रोज जब नाइन ने बटन कर अंजु को नहलाया तो दाग देख र चौंक गई. हाथ पीछे हटा कर बोली, बहूरानी, तुम्हारी पीठ पर यह दाग सा क्या ?"

घबराई अंजु रोने लगी. नाइन ने काल ही पूरे घर में यह बात फैला दी. अंजु रोना व दाग की साक्षी नाइन का हल्ला नों ने यह प्रमाणित कर दिया कि उन्हें खा दिया गया है.

अकसर लोग शादी-ब्याह या अन्य महत्त्वपूर्ण अवसरों पर छोटी-मोटी बातें व अपनी कमियों को छिपा जाते हैं. लेकिन बाद में जब ये बातें खुलती हैं तो काफी अपमानजनक साबित होती हैं. तो फिर क्यों न ऐसी बातें पहले से ही स्पष्ट कर दी जाएं?

परिणाम वही हुआ जो अंजु को भयभीत किए रहता था. उसे अगली सुबह ही घर के नौकर के संग उस के मायके रवाना कर दिया गया. अंजु के मांबाप ने लाख कहा कि यह दाग खतरनाक नहीं है. डाक्टरी इलाज हो चुका है. पर अंजु के ससुराल वाले एक ही बात पकड़ कर रह गए कि उन्हें धोखा क्यों दिया, पहले बताया क्यों नहीं.

यह ठीक है कि हर छोटीबड़ी बात बताने की किसी को भी जरूरत नहीं पर ऐसी बात जो बाद में किसी दूसरे रास्ते से खुल जाने का अंदेशा हो उसे स्वयं ही बता देना या साफ कर देना ज्यादा ठीक है. ऐसा कर देने पर जहां अपने मन में भी कोई दुविधा नहीं रहती वहीं सामने वाले पर भी इस स्पष्टवादिता का प्रभाव अच्छा पड़ता है और वह निर्णय लेने में स्वतंत्र हो जाता है. उसे ठीक जंचे तो प्रस्ताव स्वीकार करे वरना इनकार कर दे. ऐसे में भविष्य के लिए तो कोई शिकायत नहीं रहेगी.

साफगोई जरूरी है

ऐसा नहीं है कि केवल विवाह संबंधों में ही यह साफगोई जरूरी है. व्यापार, आपसी संबंध व किसी भी प्रकार के लेनदेन में साफ बात कह कर अपनी स्थिति बता देना ज्यादा ठीक होता है. दुरावछिपाव करने से तात्कालिक तौर पर भले ही बात बन जाए पर खुल जाने पर उसे संभालना बड़ा कठिन हो जाता है व अपने पक्ष की विश्वसनीयता भी नष्ट होती है.

अपने शरीर के छोटेबड़े दोष जो वस्त्रों में छिपे रहते हैं, शरीर के किसी अंग की गलत बनावट या अंगभंग को रिश्ता होने से पूर्व छिपाना अपने पांव पर स्वयं कुल्हाड़ी चलाना है. कोई ऐसा रोग जो अब तो काबू में आ गया हो पर मौसम बदलने पर उभर आता हो, को भी स्पष्ट बता देना ठीक है ताकि बाद में यह न सुनना पड़े कि हमें इस बात की भनक तक न पड़ने दी, हम से धोखा किया गया.

प्रायः लेनदेन में भी या कर्ज चुकाते समय 'आज देंगे, कल देंगे' कह कर टालने वाले लोग अपने संबंध बिगाड़ लेते हैं और अपनी छवि और विश्वसनीयता भी खो बैठते हैं. यदि नीयत साफ है व जिस को जो देना है वह देना ही है तो उसे आजकल कह कर टालने की बजाय स्पष्ट कह देना ठीक है कि इन दिनों फलां कारण से थोड़ा हाथ तंग है, हमें आप को देना ही है, कुछ दिन की मियाद और दो, तब तक हम इंतजाम जरूर कर लेंगे. आप को तकलीफ हुई इस का अफसोस है. पर आप हमारे अपने हैं, हमारी मजबूरी समझते हैं. इस साफ चर्चा से जहां खुद को कोई तनाव नहीं होगा वहीं सामने वाला भी थोड़ा और धैर्य रख लेगा व संबंध भी पूर्ववत बने रहेंगे.

हमारे एक परिचित का जवान लड़का निहायत लापरवाह है. घर के व्यवसाय में उस की कोई रुचि नहीं है. एक दिन टोकने पर वह पिता से बोला, "आप मुझे आइसक्रीम पार्लर खुलवा दो, मैं चला लूंगा." पिता ने एक शर्त रखी, "पहले 3 महीने नियम से घर की दुकान पर वक्त पर बैठने की आदत डाल लो. ग्राहक से बात करना सीख लो. मैं पार्लर खुलवा दूंगा." वह लड़का जो रातदिन जिद कर रहा था कि पार्लर खुलवा दो, इस चर्चा के बाद हाथपैर समेट कर बैठ गया. इधर स्पष्ट चर्चा से पिता भी उस के कहने पर जो रुपया उस के पार्लर पर लगाते उस से बच गए और बेटे की नीयत व कार्यक्षमता भी पता चल गई.

प्रायः मांबाप अपने बच्चों से घरेलू परेशानी, आर्थिक तंगी की चर्चा करना ठीक नहीं समझते व स्वयं तकलीफ पा कर बच्चों को पहले जैसी ही खुली सुविधाएं देते रहते हैं. वे सोचते हैं, 'हम अपनी परेशानियों में बच्चों को क्यों घसीटें.' पर यह गलत सोच है. बच्चों को वस्तुस्थिति बता कर उन्हें ज्यादा समझदार बनाया जा सकता है और मांबाप की परेशानियों में उन का क्या सहयोग हो सकता है, यह भी जतलाया जा सकता है.

बच्चे भी परिवार का हिस्सा हैं. सुख



विवाहपूर्व ही सभी बातें स्पष्ट कर देनी चाहिए ताकि बाद की परेशानियों से बचा जा सके.

में उन्हें भागीदार बनाना व तकलीफ में उन्हें काट कर अलग कर देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है. बच्चे भी मांबाप के सुखदुख में भागीदारी महसूस कर पाएं, उम्र के हिसाब से अपनी जिम्मेदारी समझें, इस के लिए उन्हें साफसाफ समझाना ज्यादा ठीक है. बहाने बनाना, छिपाना या टालना ठीक नहीं.

मेरे बड़े लड़के के विवाह की बात चली तो पति के एक मित्र बोले, "भैया, लड़की वालों को बता दें क्या कि भाभी बच्चे की सगी मां नहीं हैं? भाभी को यह पता चलेगा तो कहीं नाराज न हो जाएं?" पति ने यह बात मुझ से कही. मुझे तो कुछ भी अटपटा नहीं लगा.

मैं ने जवाब दिया, "जो सच है वह सच ही रहेगा. फिर दूसरी मां होना कोई अपराध तो नहीं. सारी बात खुलासा कर के ही बेटे का ब्याह करूंगी. सामने वाले को जंचे तो करे या न करे, इस की परवाह नहीं. पर गफलत में रख कर शादीब्याह जैसा काम करना मुझे तो पसंद नहीं."

वे बातें जिन का प्रभाव अपने आने वाले दिनों पर पड़ने की संभावना हो या जिन के किसी तीसरे के द्वारा बताए जाने का भय हो उन्हें खुद ही स्पष्ट कर देना ज्यादा उचित है, ताकि अपनी विश्वसनीयता बनी रहे व सामने वाले को भी निर्णय लेने में कोई दुविधा या हिचक न रहे.

'साफ कहना सदा सुखी रहना' तनाव-मुक्त जीवन बिताने का गुर है. इसे सदैव पल्ले से बांधे रखना चाहिए. हां, वे बातें जो गैरजरूरी हों या नितांत वैयक्तिक हों व जिन्हें न बताने पर भी न उन के खुलने का भय हो, न ही बता देने पर कोई लाभ होता हो लेकिन हानि होने की संभावना जरूर हो तो उन्हें अपने हृदय में ही दफन रहने देना चाहिए.

विवाहपूर्व के साधारण से प्रेम प्रसंगों की चर्चा न करना ही ठीक है लेकिन अगर कोई बात खुल गई है और बहुतों को मालूम हो तो बता देना व गलती स्वीकार कर लेना निश्छल हृदय का परिचायक है. किंतु विवाहपूर्व धोखे या नादानी से हो गया कोई अनैतिक कर्म जो केवल खुद को या मातापिता को ही पता हो उसे बताना ठीक नहीं.

ठीक और गलत के बीच एक झीना सा परदा है, पर इस का निर्णय ही सुखद या दुखद जीवन की नींव रख देता है. अपने विवेक से काम लें. सही निर्णय लेना व साफसुथरी बात बिना लागलपेट के करना ज्यादा उचित है ताकि सामने वाला आप का भरोसा कर सके और वही बात उसे यदि औरों से कभी पता भी चले तो उसे इस की पूर्व जानकारी रहे व आप की विश्वसनीयता बनी रहे.

वास्तव में 'हमें धोखे में रखा ग' यह भाव ही तमाम मधुर संबंधों में विष घोलने को काफी है, अतः इस से बचाव रखना ही समझदारी है. ●

अगर करनी हो सच्ची तीमारदारी

लेख ● रेणुका पालित

बेटे चिंटू को स्कूल से ले कर लौट रही थी. तभी मैं ने देखा कि हमारी चारपांच पड़ोसिनें लकदक पोशाक में कहां जा रही हैं. सभी को साथ जाते देख कर अपनी जिज्ञासा रोक न सकी और बढ़ कर पूछ ही लिया, "आप लोग किधर जा रही हैं?"

"क्या आप को पता नहीं, अपने क्लब की नई सदस्या शीला कुमारी की तबीयत खराब है? सुना है टाइफाइड हो गया है," विमला, जो किसी अन्य कार्यक्रम के अनुरूप तैयार हुई प्रतीत हो रही थी, कहा, "मुझे उसी बिल्डिंग में सोनू के जन्मदिन पर जाना ही है, सोचा जब शीला के यहां भी हो लूंगी."

"मुझे भी कुछ खरीदार



नी थी. सोचा एक पंथ जो काज हो एगा, वरना 'शीला क्या सोचेंगी,'' ला ने फरमाया.

साथ जा रही नीलम, शालू, शर्मीला, रीबकरीब सभी का यही कार्यक्रम था. वे हीं न कहीं जा रही थीं और पड़ाव के तौर बीमार शीला को देखने की औपचारिकता भी निभाना चाह रही थीं, ताकि द में कोई शिकवा न रह जाए. घर आ कर ने चिंटू को खाना दिया और यह सोचने पर जबूर हो गई कि क्या बीमार शीला के प्रति उन की सच्ची सहानुभूति है.

महिलाओं के बीच अकसर यह देखने मिलता है कि अपनी किसी बीमार हेली, रिश्तेदार या पड़ोसिन को देखने ने का बाकायदा कार्यक्रम बनाती हैं और जाय उस की मुश्किलों को कम करने के स के लिए छोड़ आती हैं ढेरों समस्याएं. तना ही नहीं, बीमार सहेली के घर से पस आते ही उस की अस्तव्यस्त गृहस्थी नुक्ताचीनी करना भी उन के कार्यक्रम अहम हिस्सा बन जाता है.

इतना तो सर्वविदित है कि संयुक्त रिवार के बिखरते ही हर भारतीय हिणी को अपने घर की 'पीर, बावरची, श्ती, खर' यानी सभी कुछ होना पड़ता अतः किसी गृहिणी के बीमार पड़ते ही स की गृहस्थी का अस्तव्यस्त होना भाविक है. खासतौर से जिन के बच्चे टे हैं

स्त्री स्वभावतः सहनशील होती है. तः अपनी छोटीछोटी बीमारी को वह यों नजरअंदाज कर देती है. अथवा वह इस ास में रहती है कि एकाध गोली निगल र ही हालत में सुधार हो जाए. परंतु कई र उस का यह प्रयास ही बड़े खतरे को मंत्रण दे डालता है.

कई बार ऐसा भी देखने को मिलता है डाक्टरों द्वारा बिस्तर पर पूरा आराम रने की हिदायत के बावजूद ममतावश मां हकार्य निबटाने लग जाती है, जिस का रिणाम होता है रोग की पुनरावृत्ति.

बीमार व्यक्ति की मिजाजपुरसी आजकल औपचारिकता बन कर रह गई है. लेकिन बिना तन व धन की सहायता के यह औपचारिकता क्या बीमार व्यक्ति की परेशानियों को और नहीं बढ़ाती?

ऐसी अवस्था में अगर हम मित्र या पड़ोसी के सच्चे हमदर्द हैं तो हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम उन की गृहस्थी के उलझे हुए कार्यों को यथासंभव सुलझाएं. हम मात्र तफरीह करने, वक्त गुजारने, गप्पें लड़ाने या मात्र औपचारिकता निभाने के लिए बीमार के घर न जाएं. जो कार्य आम दिनों में काफी आसान नजर आते हैं, बीमारी में वही कार्य बेहद मुश्किल लगते हैं.

कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि जब मां बीमार हो जाती है तो बच्चे स्कूल जाना बंद कर देते हैं. इस के पीछे मुख्यतः कारण होता है स्कूल यूनीफार्म का न धुलना,



यदि पड़ोसिन बीमार सहेली के कुछ छोटेमोटे काम निबटा दे तो यह उस की सच्ची तीमारदारी होगी.

समय पर नाश्ता तैयार न होना और स्कूल में दिए गए गृहकार्य का पूरा न होना. ये कार्य ऐसे हैं जिन्हें कोई भी 'सच्ची सहानुभूति' रखने वाली पड़ोसिन चाहे तो आसानी से निबटा सकती है.

घरेलू या कामकाजी दोनों तरह की महिलाओं के पास क्रमशः दोपहर में और शाम को एकदो घंटे का वक्त ऐसा अवश्य निकलता है जिस में वे गप्पें लड़ाती हैं या टीवी देखती हैं या फिर बुनाईकढ़ाई में व्यतीत करती हैं. इन्हीं दो घंटों को हम बीमार पड़ोसिन को दें तो संभवतः हम अच्छे पड़ोसी धर्म का पालन कर सकते हैं.

मसलन, उन के रसोईघर में जा कर यदि नाश्ता तैयार कर दें. सवेरे के लिए कुछ सब्जी और दाल बना कर फ्रिज में रख दें. बच्चों की अस्तव्यस्त यूनीफार्म पर प्रेस कर दें. पड़ोसिन की अस्तव्यस्त दवाओं की मेज को व्यवस्थित कर दें. इन कामों में आप प्यार से बच्चों की मदद भी ले सकती हैं. आप आजमा कर देखें, बच्चे खुशीखुशी आप की मदद करने को तत्पर हो जाएंगे.

अस्वस्थता में स्पर्श सुख से बढ़ कर और कोई सुख नहीं होता. अपनी बीमार सहेली के बालों में धीरेधीरे उंगलियां फेरती हुई यदि आप कहें, 'घबराओ नहीं, जल[illegible] अच्छी हो जाओगी ' या 'खुद को अकेला म[illegible] समझो' तो आप की आत्मीयताभरे ये[illegible] शब्द किसी भी लंबेचौड़े भाषण से ज्या[illegible] सुखद अनुभूति देंगे. उन के बच्चों के[illegible] बालों में तेल डाल दें या थपकियां दे कर सु[illegible] दें तो गृहस्वामिनी ही नहीं, बच्चे भी आ[illegible] को अपनों से भी बढ़ कर समझेंगे.

बीमार पड़ोसिन या सहेली [illegible] शारीरिक मदद के साथ कभीकभी आर्थि[illegible] मदद की भी जरूरत पड़ती है. अ[illegible] यथाशक्ति यह मदद भी करें.

ऐसा नहीं है कि आप के किए [illegible] प्रतिदान नहीं मिलेगा. मौकेबेमौके पड़ो[illegible] ही एकदूसरे के काम आते हैं. लेकिन ऐ[illegible] तभी होगा जब बीमार के प्रति आप की सच्[illegible] सहानुभूति होगी. परंतु याद रखें, आप [illegible] इन सारे क्रियाकलापों, इन सारे अच्छे का[illegible] के गड़गोबर हो जाने की आशंका है, य[illegible] आप सारे महल्ले में अपने इन कार्यों का ढो[illegible] पीटती फिरेंगी.

विषाक्त न बन जाए संबंधों की प्रगाढ़ता

लेख • रमाकांत 'कांत'

संगीता व सुमन एक ही कार्यालय में कार्य करती थीं. दोनों घनिष्ठ सहेलियां थीं. किसी बात को ले कर उन में कोई दुरावछिपाव नहीं था. संगीता अपने घरपरिवार के नाजुक मसलों पर भी सुमन से मशविरा करती रहती थी. सासननद के विरुद्ध विषवमन करना तो रोज की ही बात थी. उधर अविवाहित सुमन के चरमोत्कर्ष पर चल रहे गुप्त प्रेमप्रसंगों का पूरा भेद संगीता को मालूम हो गया था.

संयोगवश दफ्तर के किसी मामले को ले कर दोनों में गहरा मतभेद हो गया. परिणामस्वरूप उन की नजदीकियां दूरियों में तथा मित्रता दुश्मनी में बदल गई. एक दिन आवेश में संगीता ने सुमन के प्रेमप्रसंग सार्वजनिक कर दिए. सुमन कौन सी कम थी. उस ने भी संगीता की ननद से मिल कर ऐसीऐसी बातें की कि उस का घर युद्धस्थली बन गया.



रमेश एक बैंक अधिकारी है. उस की नियुक्ति बैंक की ग्रामीण शाखा में हो गई. गांव वालों की यथेष्ट बैंकिंग आवश्यकताओं के मूल्यांकन एवं पूर्ति की आकांक्षा में वह उन से अत्यधिक जुड़ता चला गया. अपने

अच्छे दोस्त व सहयोगियों से मधुर संबंधों की कामना किस व्यक्ति की नहीं होती. परंतु संबंधों की प्रगाढ़ता बढ़ाने के चक्कर में कहीं आप दूसरों के समक्ष अपनी जिंदगी को 'खुली किताब' तो नहीं बना रहे. ऐसी स्थिति से बचने के लिए क्या करें?

मातहत कर्मचारियों से भी वह काफी घुलमिल गया. मैनेजर को इतना नजदीक पा कर ग्रामीण ऐसी ऋण सहायताएं चाहने लगे जो बैंक नियमानुसार देय नहीं थीं. ऋणों का पुनर्भुगतान भी अवरुद्ध होने लगा. मातहत कर्मचारी भी उस के आदेशों का अनुपालन मुश्तैदी से नहीं करते थे. रमेश ने ज्यों ही सख्ती करनी चाही ग्रामवासी रुष्ट हो उठे और कर्मचारी मायूस. उन के संबंधों में एक अजीब सा खिचाव आ गया. अब रमेश को समझ में आने लगा कि उसे एक सीमा से अधिक संबंधों की प्रगाढ़ता नहीं बढ़ानी चाहिए थी. वह उस गांव में वे विकास कार्य नहीं करा सका जिस के सपने संजो कर वह आया था.

यद्यपि दोनों उदाहरण कुछ भिन्न अवश्य हैं किंतु भावातिरेक में संबंधों को सीमा से अधिक बढ़ाने से होने वाले दुष्परिणाम की विषाक्तता से अवश्य जुड़े हैं. संगीता एवं सुमन ही नहीं वरन अन्य बहुत से लोग पहले तो इतने अंतरंग होते चले जाते हैं कि परस्पर 'घीखिचड़ी' ही बन जाते हैं. इस घुलनेमिलने के दौरान वे एकदूसरे के गोपनीय जीवन वृत्तांतों तक को जान लेते हैं. उस समय तो वे स्वयं से अधिक अपने साथी पर विश्वास करते प्रतीत होते हैं.

वे किंचित भी परवाह नहीं करते कि यदि संबंधों में तनिक भी कटुता आ गई तो अंजाम क्या होगा? कभी न कभी कोई ऐसी घटना घट ही जाती है जिस से उन के मधुर संबंधों में कड़वाहट भर जाती है. वैसी स्थिति में उन के परस्पर 'ब्लैकमेल' होने की भी नौबत आ जाती है. पारिवारिक एवं मैत्री संबंधों में ऐसा विशेष रूप से होता है. कब संबंध बने, घनिष्ठ हुए एवं घनिष्ठता के बोझ से धराशायी हो गए, पता भी नहीं चलता. प्रायः ऐसे संबंधों की परिणति संगीता एवं सुमन की तरह शत्रुता में हो जाती है.

संबंधों की दीर्घकालीन मधुरता के लिए आवश्यक है कि उन में पर्याप्त दूरी बनाए रखते हुए घनिष्ठता रखी जाए. पर्याप्त दूरी बना कर घनिष्ठता रखना भी एक कला है. इस का सीधा तात्पर्य है कि अंतरंगता तो अवश्य रखें किंतु उन अंधेरे प्रसंगों को उजागर नहीं करें जिन की चर्चा भी अरुचिकर प्रतीत हो. ऐसे प्रसंग याद रखने के लिए नहीं वरन शिक्षा ले कर विस्मृत कर देने के लिए होते हैं. उन्हें किसी अन्य (चाहे वह कितना ही विश्वसनीय क्यों न हो) को बताना उन्हें उलटा जीवंत बनाना है.

अतः सदैव याद रखें कि जीवन के गोपनीय एवं अंधेरे पक्ष में जहां तक संभव हो किसी को साझेदार नहीं बनाएं. दूसरे पक्ष का भी कर्तव्य है कि यदि किसी अंतरंग ने भावुकता एवं अपनत्ववश आप को कुछ बता दिया है तो कृपया उस के विश्वास को खंडित नहीं करें. ऐसे रहस्यों का परदाफाश करने वाला व्यक्ति कुछ और साबित कर पाए या नहीं, मगर यह अवश्य साबित करता है कि वह भरोसे योग्य नहीं है.

पतिपत्नी के अंतरंग संबंधों में भी आवश्यक व यथेष्ट दूरी अवश्य रखनी चाहिए. संभव है, विवाहपूर्व कोई यौन दुर्घटना घट गई हो अथवा प्रणय संबंध बन गए हों. भावातिरेक में या खुली पुस्तक बनने की चाह में यदि आप ने उन पृष्ठों को खोल कर रख दिया तो जीवन में जहर भी घुल



अपने सहकर्मियों से भी अधिक प्रगाढ़ता अच्छी नहीं. क्योंकि संबंधों की घनिष्ठता से कामचोरी व भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है.

परिधि का अतिक्रमण करना अथवा करने देना खतरे से खाली नहीं है. रमेश के उदाहरण को ही ले लें. एक आदर्शवादी चाह ले कर वह ग्राम्य सेवा के लिए गया किंतु संबंधों की प्रगाढ़ता उसे ले डूबी.

सकता है. कोई बड़ी बात नहीं कि उस के कारण आप के दांपत्य जीवन में कड़वाहट घुल जाए. पतिपत्नी के मधुर संबंधों में एक बार कड़वाहट आ जाने के बाद पुनः मधुरता ला पाना अत्यंत कठिन होता है. संभव है कटुता आप की गृहस्थी ही चौपट कर दे. अतः पतिपत्नी भी यथेष्ट गोपनीयता अवश्य बरतें, बशर्ते कि वह आवश्यक हो.

संबंध चाहे कितने ही अभिन्न क्यों न हों, उन में भी तनिक निजीपन तो होना ही चाहिए. निजीपन को समाप्त कर देना संबंधों की प्रगाढ़ता नहीं वरन स्वयं के अस्तित्व को समाप्त करना है. अतः अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए निजी एवं गोपनीय तथ्यों को स्वयं तक सीमित रखा जाना चाहिए, भले ही अभिन्नता कितनी ही घनिष्ठ क्यों न हो. एक बार किसी गोपनीयता का भंग हो जाना, उस का सार्वजनिक बन जाना है. छिपाने योग्य जीवन के पृष्ठ अनायास ही कब खुल जाएंगे, आप भी नहीं जानते. न जाने किस क्षण अंतरंग महोदय गोपनीयता को भंग कर आप को भयाक्रांत कर दें, कोई नहीं जानता.

यही स्थिति प्रशासनिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में भी है. वहां भी संबंधों की

ग्रामीणों को नजदीक से देखसमझ कर उन्हें वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाने के लिए एक प्रशासनिक दूरी का रखना नितांत आवश्यक था. उक्त दूरी रखते हुए वह अपने प्रशासनिक अधिकारों व ग्रामीणों से सहानुभूति के तालमेल द्वारा ग्रामीण विकास की जड़ता को समाप्त कर सकता था.

रमेश ने जब भी ग्रामीणों को समझाने का यत्न किया होगा या अपने सेवा नियमों की दुहाई दी होगी तो ग्रामीणों ने उसे घनिष्ठता पर आक्षेप समझा होगा. मनचाही अपेक्षाएं चाहे वे गलत ही हों, जब पूर्ण नहीं होतीं तो कटुताओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है. अतः ग्रामीणों के अड़ियल रुख से रमेश में भी खिन्नता पैदा हो गई. फलस्वरूप वह गांव विकसित होने के बदले मैनेजर और ग्रामीणों के खींचतान में उलझ कर रह गया.

व्यावसायिक सफलता के लिए आवश्यक है कि हर संभव गोपनीयता रखी जाए. इसे 'बिजनेस सीक्रेट' अथवा 'ट्रेड टेक्टिक्स' भी कहते हैं जिन की रक्षा व्यवसाय की रक्षा है. वहां तो संबंध ही स्वार्थमय होते हैं. हर कोई प्रतिस्पर्धी के व्यावसायिक रहस्यों को जान कर लाभान्वित होना चाहता है. अतः सदैव स्वयं अपनी

सीमाओं में रहते हुए अन्यों को भी उन की सीमाओं में रहने के लिए बाध्य करें. भावुकतावश 'बिजनेस सीक्रेट' बता देना आप के लिए घातक सिद्ध हो सकता है.

यदि आप नौकरी करते हैं तो वहां भी ऐसा ही है. न जाने सहकर्मी कब आप की कमजोरियों को ढाल बना लें या हथियार के रूप में प्रयोग कर लें, कोई नहीं जानता. यदि आप मातहत हैं तब तो सीमोल्लंघन से अवश्य बचें. आप के वरिष्ठ तो चाहते ही हैं कि संबंधों की प्रगाढ़ता स्थापित कर आप से हर प्रकार के कार्य करवाए जा सकें. उन्हें कभी भी अपनी परेशानियों एवं कमजोरियों से अवगत नहीं करवाएं.

संभव है इस से आप को क्षणिक सहानुभूति अवश्य प्राप्त हो जाए किंतु अंतिम परिणाम सुखद नहीं हो सकता. सहानुभूति की कीमत पर अवांछित अपेक्षाएं आप पर थोपी जा सकती हैं. प्रायः महिला कर्मचारियों के साथ तो ऐसा ही होता है. वे भावुकता के क्षणों में अपने साथियों एवं अधिकारियों के समक्ष संपूर्ण हृदय खोल कर रख देती हैं. उन्हें थोड़ी



सहानुभूति तो प्राप्त होती है किंतु उस की ओट में कई अन्य वर्जनाएं भी ग्रसित करने लगती हैं. ऐसे सहकर्मी या अधिकारी महिला कर्मचारियों के गोपनीय रहस्यों की ओट ले कर अन्य दुष्चक्र चला बैठते हैं, जो किसी नई कमजोरी की पृष्ठभूमि बन जाते है.

यदि आप अधिकारी हैं तो मातहत कर्मचारियों के साथ इतना नहीं खुलें कि वे उच्छृंखल हो जाएं, दफ्तर का अनुशासन ही समाप्त हो जाए. आखिर कुछ सेवा शर्तें हैं जिन का अनुपालन अवश्य होना चाहिए. आप को यह भी सुनिश्चित करना है कि कर्मचारी नियोक्ता की अपेक्षाओं पर खरा उतर रहे हैं अथवा नहीं. संबंधों की घनिष्ठता की ओट में कामचोरी एवं भ्रष्टाचार पनपने लगता है. यदि ऐसा होता है तो वह आप की असफलता है.

अतः गरिमामय संबंध रखते हुए कर्मचारियों के साथ घनिष्ठता बरतें.

दफ्तर को दफ्तर ही रहने दें, घर नहीं बनाएं. वस्तुतः कर्मचारी उस अधिकारी की सर्वाधिक प्रशंसा करता है जो उन में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धी भावनाएं जगा कर सामूहिक भावना से कार्य करने हेतु प्रेरित कर पाता है. कर्मचारियों को यह विश्वास होना चाहिए कि उस का अधिकारी उन के भविष्य के प्रति सजग एवं हिताकांक्षी है.

तात्पर्य यह है कि सुंदर एवं मधुर जीवन के लिए आवश्यक है कि हम संबंधों की सीमा एवं उन की गरिमा को समझें. उन्हें इतनी ही प्रगाढ़ता दें जितनी उचित है. अतः संबंधों को विषाक्त होने से बचाने के लिए गोपनीय रहस्यों को अपने तक सीमित रखें. जरूरत से ज्यादा किसी से अंतरंगता न बढ़ाएं और उचित दूरी बनाए रखें.

यदि ऐसा नहीं कर सके तो संबंध स्वीकारते बनेंगे न नकारते. संभव है आप को सुमन संगीता की तरह आप को भी लांछित होना पड़े अथवा रमेश की तरह असफलता का मुंह देखना पड़े.

न कहने से डरिए मत

लेख • रूपनारायण काबरा

जब मेरे पड़ोसी महेश का स्थानांतरण प्रतापगढ़ हो गया तो उन के विदा होते वक्त मुझे बहुत दुख हुआ था. तब मैं ने दिल से ही कहा, "देखिए, फिर कब मिलना होता है. लेकिन कभी आप जयपुर आएं तो हमारे यहां जरूर आइएगा."

कुछ महीनों बाद एक दिन उन का पत्र आया, 'मैं प्रशिक्षण के सिलसिले में आ रहा हूं, पत्नी और बच्चे भी आने की जिद कर रहे हैं, आप से मिलने को आतुर हैं. देखिए, अगर आए तो इस बार आप के साथ ही ठहरेंगे, पूरा हफ्ता भर कितना अच्छा रहेगा, फिर एक साथ रहेंगे.'

अब सही बात तो यह है कि किसी भी दोस्त का थोड़े समय के लिए तो आना अच्छा लगता है, पर 24 घंटे ही उस का साथ रहना और वह भी पूरे हफ्ते भर और फिर उन के शैतान, उच्छृंखल बच्चे. मैं तो पत्र पढ़ कर ही सिहर उठा, पत्नी भी परेशान हो उठी लेकिन मित्र को यह कैसे लिख दिया जाए कि 'नहीं, आप हमारे यहां मत ठहरना.'

मन मार कर यही लिखना पड़ा, 'हमें बड़ी खुशी होगी आप के आगमन से.'

लेकिन हम जानते थे कि खुशी होगी या मुसीबत टूट पड़ेगी. अब स्नेह की जगह परेशानी ने ले ली.

मैं ने महेश को तुरंत यह क्यों नहीं लिख दिया, 'एकाध दिन की बात तो अच्छी भी लगती है, पर पूरा हफ्ता तो अत्यधिक है.'

सभी की तरह मैं भी तो संकोची हूं, स्पष्टवक्ता नहीं हूं और साफ 'न' कहना मुझे अच्छा नहीं लगता है. मैं क्या चाहता हूं और लोग मुझ से क्या चाहते हैं, इस दुविधा को हल करने में मैं अपने को असमर्थ पाता हूं. 'न' कह कर भी तो मुझे संतोष नहीं होता है, एक अपराध भाव सा महसूस होता है.

दूसरों की सहायता करना जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है. यह अच्छी बात है पर इस का अर्थ यह तो नहीं कि जो हम से कुछ अनुरोध करे, उस के लिए हम अपना समय, शक्ति, सुविधा, धन सभी कुछ खो दें. अनुरोध तो कोई भी कर लेगा तो दिक्कत तो अपने को हो जाती है न.

यदि सहज भाव से, निर्विकार, बिना कुछ असुविधा महसूस किए हम सच्चे मददगार होना चाहते हैं और इस के लिए प्रशंसा की कामना करते हैं या आत्मतुष्टि अथवा दूरदर्शितापूर्ण स्वार्थ भाव है तो बात अलग है. लेकिन

यदि 'हां' इसी लिए करते हैं कि 'न' करने में हमें एक अपराधबोध लगता है, अच्छा नहीं लगता तो फिर गलत 'हां' कर रहे हैं. ऐसी 'हां' 'न' से अधिक दुखद होगी.

हम न चाहते हुए भी 'हां' क्यों कर देते हैं इस के सामान्यतः प्रमुख कारण ये हैं :

● हम प्रशंसा, सराहना व मान्यता के भूखे हैं. जब हम किसी नई जगह जाते हैं, नए क्लब में जाते हैं तो कई परिस्थितियों में 'न' कहना चाहते हुए भी 'हां' भर देते हैं. नहीं देना चाहते, पर दे देते हैं. मात्र अपनी एक प्रशंसासूचक 'पहचान' बनाने के लिए.

● हम किसी की भावना को आघात नहीं पहुंचाना चाहते. जिसे हम पसंद करते हैं, जो हमें अच्छा लगता है या साथ रहता है, पड़ोसी है, उसे हम सहज में निराश नहीं करना चाहते. इसलिए यदि कोई मित्र हमें 'रात्रिभोज' पर निमंत्रित कर लेता है तो हम मना नहीं कर सकते यद्यपि हम यह भी समझते हैं कि हमारे जाने से उन को असुविधा ही होगी.

कई बार ऐसा भी होता है कि निमंत्रण मात्र औपचारिक था, लेकिन आप ने 'न' कहना अच्छा ही नहीं समझा और जा पहुंचे. तब वे निश्चय ही परेशान हो गए.

विपत्ति में दूसरे की सहायता करना अच्छी बात है लेकिन इस का यह मतलब कतई नहीं है कि उस की उचित-अनुचित सभी मांगें मान कर व्यर्थ ही कुंठा और बीमारियों को बुलावा दे दिया जाए. ऐसे में विनम्र इनकार क्या उचित नहीं है?



'न' नहीं कह सकने से हम अपने लिए ही नहीं दूसरे के लिए भी मुसीबत खड़ी कर सकते हैं. कई बार हम जल्दी में होते हैं, जैसे गाड़ी ही पकड़नी है पर मेजबान के चायपानी के आग्रह को नहीं टाल सकने के कारण हम गाड़ी ही चूक जाते हैं. हम चाहते हुए भी 'न' नहीं कह पाते.

● दूसरे को अपने प्रति आभारी बनानें की कामना : कई बार पड़ोसी बाहर जाता है, हफ्ते के लिए. आप को कहता है कि उस के लान एवं पौधों को संभालना है, पानी देना है. वह अपनी बिल्ली या कुत्ता भी आप के पास छोड़ जाता है और आप मान लेते हैं, इस उम्मीद में कि हमारे प्रति आभारी हो कर भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर वह भी हमारी इसी प्रकार मदद करेगा. बाद में आप को इस संबंध में निराशा भी हो सकती है.

कभीकभी कोई स्वेच्छा से ही अपनेआप को आप की सेवा में प्रस्तुत करता है. जैसे कि आप बजार जाएं तो पीछे से आप के छोटे बच्चों को संभालना. लेकिन सावधान रहिए, इस के बदले में आज नहीं तो कल वह आप से 'वसूली' कर लेगा, जो संभवतः भारी पड़ेगा. आप 'न' कह देते तो यह बात ही पैदा नहीं होती.

जीवन में 'न' कहना और सीखना क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हर बार जब आप नहीं चाहते हुए भी समर्पण कर जाते हैं यानी 'हां' कह देते हैं. तब आप के मन में खीज पैदा होती जाती है और यह संचित खीज आप के मन को कुरेदती रहती है. आप अंदर ही अंदर कुढ़ते हैं. इस से आप के सिग्दर्द, अल्सर तथा चर्म रोग हो सकते हैं या फिर कोई अन्य मनोवैज्ञानिक तकलीफें शुरू हो सकती हैं, जैसे अनिद्रा आदि.

'न' कहने के लिए आप को यह स्वीकारना होगा, समझना होगा और मानना होगा कि आप को अपने स्वत्व को बनाए रखना है. अर्थात आप को अपनेआप से कहना है, 'मैं बना रहूं, इस का मुझे अधिकार है. अपनी सहिष्णुता, अपनी उदारता को सीमित करने में मुझे शर्मिंदगी महसूस नहीं करनी है.'

कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो निस्स्वार्थ हों. वे अपनी निजी, सहज मानवीयता को अस्वीकारते हैं और यह प्रदर्शित करना चाहते हैं कि हम 'श्रेष्ठ' हैं. यह श्रेष्ठता प्रदर्शन की भावना ज्यादा नहीं चल सकती.

जो वास्तव में निस्स्वार्थ है वह स्वयं अपने से भी उतना ही प्यार करता है, जितना औरों से. वह 'हां' या 'न' कहने से पूर्व अपनी और दूसरे की पूरी परिस्थिति को समझने का प्रयास करता है. मान लो, आप ने अपनी निस्स्वार्थ भावना में किसी को भी घर पर ठहरने की स्वीकृति दे डाली. पर इसे आप के 'अपनों' ने स्वीकार नहीं किया तो हो गई न घर में ही मुसीबत. अब झगड़ते रहिए अपनी पत्नी और बच्चों से, अपनी उदारता के प्रशंसापत्र को लिए हुए.

मनोवैज्ञानिक ऐटिक फ्रोमेन का कथन कितना सटीक है, ''यदि अपने पड़ोसी को इनसानियत के नाते प्यार करना गुण है, अच्छी बात है तो स्वयं को प्यार करना भी कोई दोष नहीं, बुरी बात नहीं, क्योंकि मैं खुद भी तो एक इनसान हूं.''

फिर एक स्वाभिमानी व्यक्ति को 'न' कब कहना चाहिए? लीजिए, कुछ निर्देश बिंदु प्रस्तुत हैं :

● बिना सोचेसमझे किया गया अनुचित अनुरोध : मान लो, यदि आप का मित्र या पड़ोसी कहता है कि जरा अपनी

डूबना बेहतर है

एक व्यक्ति ने प्रसिद्ध पत्रिका के संपादक को नदी में डूबने से बचा लिया. कुछ दिनों बाद उस व्यक्ति ने अपनी रचना के साथ संपादक को पत्र लिखा, 'आप को याद होगा मैं ने आप को डूबने से बचाया था.'

संपादक ने सखेद रचना वापस लौटाते हुए जवाब लिखा, 'ऐसी रचना छापने से बेहतर है मुझे आप नदी में डुबो दें.'



अपनी जरूरत को नजरअंदाज कर दूसरे की मांग पूरी करना कहां तक जायज है?

कार से मुझे स्टेशन छोड़ आओ, रात को 11 बजे की गाड़ी पकड़नी है. जबकि यातायात के अन्य साधन रिकशा, आटो इत्यादि उपलब्ध हों तो यह मांग अनुचित है और स्वार्थपूर्ण है. आप इसे 'न' कह कर ठुकरा सकते हैं. लेकिन यदि किसी गंभीर बीमारी जैसे, दिल का दौरा या कोई दुर्घटना इत्यादि के लिए आप से सहायता मांगी जा रही है तो आप को जाना ही चाहिए, यदि संभव हो तो.

● ऐसी मांग, जो आप की नैतिक मान्यताओं के विरुद्ध हो : जैसे दूसरे के लिए झूठी गवाही देना, बच्चे की डायरी में 'बीमार' लिख कर उसे गृहकार्य न करने की सजा से बचाना या कोई मित्र आप के घर खाने के वक्त शराब मंगाए, मांसमछली मंगाए, जो आप पसंद न करें तो आप 'न' कह सकते हैं.

जब आप के किशोर बेटे या बेटी को उन के पुरुष एवं महिला मित्र अनुचित समय पर घर से बाहर ले जाने का प्रस्ताव रखें. यदि आप को उन की किसी भी मांग से मर्यादा का उल्लंघन लगे या आप का विवेक जिसे उचित नहीं माने तो आप 'न' कहने में संकोच मत कीजिए.

● जो स्वयं कर सकता है लेकिन उसी काम को करने के लिए आप से कहता है : जैसे, आप का बच्चा टीवी सीरियल का आनंद लेने के चक्कर में अपना गृहकार्य आप से हल कराता है, आप का पड़ोसी स्वयं दफ्तर से लौटते वक्त सब्जी ले कर नहीं आता है और आप की पत्नी व बच्चे से यह काम करने को प्रायः कहता है तो आप 'न' कर दीजिए.

● जब आप के स्वयं के कार्य का हर्ज हो : जब आप यह समझते हैं कि किसी की मांग स्वीकारने से आप का पारिवारिक जीवन अस्तव्यस्त होता है. आप का प्रथम कर्तव्य है अपने परिवार के सदस्यों की सुखसुविधा का ध्यान रखना. उन की उपेक्षा कर के पड़ोसी का खयाल रखना परिवार में कलह उत्पन्न कर सकता है. आप का पुत्र पिकनिक पर जाने की इजाजत मांगता है और इस के लिए पैसे जुटाने के लिए यदि आप को कर्ज लेना पड़ता हो तो आप का 'न' कहना उचित होगा.

घर में यदि आप की पत्नी को पालतू कुत्ते, बिल्ली पसंद नहीं हैं, उन से एलर्जी है तो अपने बच्चों को उन्हें घर में रखने की इजाजत न दें.

जब कोई काम घर में लोगों की मरजी के विरुद्ध हो रहा है, जैसे पिताजी ने दीवाली पर सभी को अपने पास बुलाया है.

आप की पत्नी जानेआने के इतने खर्चे के खिलाफ है. बच्चे छुट्टियों का और दीवाली का आनंद यहीं लेना चाहते हैं तो 'न' कर दीजिए.ऐसी स्थिति में 'न' कहना स्वार्थपूर्ण नहीं है, अपराधबोध भी नहीं होगा क्योंकि यह 'न' आप पूरे परिवार की खुशी के लिए कर रहे हैं. हां, पिताजी को थोड़ी नाराजी अवश्य हो सकती है. अब आप सभी को, एक ही समय, सभी प्रकार से खुश तो नहीं कर सकते.

'न' कैसे कहें , इस के लिए निम्न सुझाव लाभकारी होंगे :

कोई आप से ज्यादा उम्मीद करने लगे, इस से पूर्व ही 'न' कर दीजिए अर्थात 'न' कहने में तत्परता बरतिए. यदि आप से कोई 2 हजार रुपए उधार मांगता है और आप को नहीं देने हैं तो तुरंत कहिए, ''माफ करना दोस्त, इस समय तो मैं मजबूर हूं. तुम्हारी मदद नहीं कर सकता.'' संकोच में ऐसा मत कहिए कि अच्छा, देखूंगा, घर पर पूछूंगा, पासबुक देखूंगा. कोशिश तो करूंगा.

फिर जब आप 'न' कहेंगे तो उसे बुरा लगेगा. आप स्वयं भी जब तक 'न' नहीं कर लेंगे, चैन से नहीं रहेंगे.

हासपरिहास प्रिय व्यक्ति अधिक कार्यकुशल

विनोदी स्वभाव का हंसीमजाक करने वाला व्यक्ति ज्यादा कार्यकुशल होता है. यह निष्कर्ष निकाला है अमरीका के बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों के प्रमुख व्यक्तियों ने. उन के अनुसार जड़, गंभीर, अंतर्मुखी व्यक्तियों की तुलना में विनोदप्रिय व्यक्ति अधिक सृजनशील, अधिक संवेदनशील और अधिक कल्पनाशील होता है. वह लकीर का फकीर नहीं होता तथा आधुनिक तौरतरीके अपनाने में अधिक दिलचस्पी रखता है. उन का कहना है कि विनोदप्रिय तथा परिहास करने व सहने में सक्षम व्यक्तियों की ही आज आवश्यकता है.

आप को 'न' कहने का अधिकार आप से निवेदन करने वाले से कहीं अधिक है. खासतौर से तब, जब बच्चे अपनी अनुचित मांगें पेश करते हैं. जैसे कि बच्चों ने बाजार चलने के लिए कहा. आप ने उनकी बात मानी और अपनी कार में या आटो में सवार हुए.

अब बच्चे कोई दूसरा प्रस्ताव करने लगें तो आप तुरंत कहिए, ''देखो, बाजार चलना है तो चलो, नहीं तो चलो घर.'' ऐसी दृढ़ता को बच्चे सामान्यतः स्वीकार कर लेते हैं. आप सफाई पेश करने लगेंगे तो वे आप पर सवार हो जाएंगे.

बिना क्रोध किए और बिना उखड़े बोलिए. 'न' कहना हो तो गरम हो कर, क्रोधित हो कर या उखड़ कर मत कहिए. कोमल स्वर में 'न' कहिए, इस का विरोध सामान्यतः नहीं होगा. उखड़ने पर तो प्रतिरोध भी हो सकता है, बुरा भी लगता है, प्रार्थी भी आहत महसूस करता है. एक बार आप सही तरीके से 'न' कहना सीख जाएंगे तो आप पाएंगे कि इस से कई पुरानी नाराजियां भी दूर हो सकती हैं. आप पूरे विश्वास और शांतचित्त से इनकार कर सकते हैं.

कभी जब इनकार करना मुश्किल जान पड़े और 'न' करना ही है तो आप यही कहिए, ''मुझे खेद है, मैं आप की सेवा नहीं कर सकता, आप कोई और काम बताइए, मुझे आप को 'न' कहना अच्छा तो नहीं लग रहा है, पर क्या करूं मजबूरी है. आप कोई और काम कहिएगा.''

परिवार, मित्र व पड़ोसियों के प्रति हमारी प्रतिबद्धताएं, कृतज्ञताएं जीवन के सत्य हैं, पर सब से बड़ा सत्य यही है कि आप अपने लिए भी हैं. इसी लिए 'हां' कह कर आत्मयंत्रणा को आमंत्रित मत कीजिए. इस से तो अच्छा है 'न' कहना. 'न' कहना सीखिए. यह भी जीवन की एक आवश्यकता है. 'न' कहने की जब जरूरत हो डरिए मत, संकोच मत कीजिए. आप बहुत सुखी रहेंगे. ●

लेख • ओ.पी. गुर्जर

क्या आप कान के कच्चे हैं?

शेक्सपियर के विश्वप्रसिद्ध नाटक 'ओथेलो' में दुष्ट इयागो नायक ओथेलो के कान में ऐसी बातें भर देता है कि ओथेलो अपनी पत्नी डेसडेमोना के चरित्र पर शक करते हुए उस का गला घोंट कर उस की हत्या कर देता है. उस की पत्नी बहुत वफादार व निर्दोष थी, पर ओथेलो कान का कच्चा था, और बिना कुछ सोचेसमझे व बिना ठोस सुबूत के उस ने पत्नी हत्या जैसा जघन्य अपराध कर दिया था.

कहावत है कि कहने वाले से सुनने वाला चतुर होना चाहिए, इसलिए हर सुनीसुनाई बात पर पूर्ण रूप से विश्वास न कर, उस बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर, फिर सोचसमझ कर निर्णय लेना चाहिए. किसी की कही हुई बात को ज्यों की त्यों गले उतार लेना या विश्वास कर लेना काफी हद तक नुकसानदायक साबित हो सकता है. कारण यह कि कुछ लोग तो बिलकुल सफेद झूठ बोलते हैं, कुछ लोग नमकमिर्च लगा कर बात पेश करते हैं, और विरले ही लोग ऐसे होते हैं जो शतप्रतिशत सच बोलते हैं.



अतः कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देना ही बेहतर है. कुछ बातों पर आधा विश्वास किया जा सकता है, और कुछ पर ही पूर्ण रूप से.

क्या आप कान के कच्चे हैं? यदि नहीं तो आप एक समझदार, संजीदा व सुखी इनसान हैं, जो सुनते सब की हैं, पर करते मन की हैं. यदि आप कान के कच्चे हैं तो आप अभी तक बच्चे हैं. जैसे बच्चा हर बात पर आसानी से विश्वास कर लेता है, ठीक वैसे ही आप कर रहे हैं. यदि आप कान

आपसी संबंध प्रेम और सद्भाव पर टिके होते हैं. परंतु कुछ विकृत मानसिकता वाले लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी उलटीसीधी बातों द्वारा इन में जहर घोलने से बाज नहीं आते. इस के लिए वे लोग तो दोषी हैं ही, क्या आप की बिना सोचेविचारे विश्वास कर बैठने की प्रवृत्ति भी कम उत्तरदायी है?

के कच्चे हैं तो आप दूसरों का नुकसान तो करेंगे ही, स्वयं के पांवों पर भी कुल्हाड़ी मार लेंगे.

यदि आप कान के कच्चे हैं तो आप अपनी पत्नी का प्रेम, दोस्तों का विश्वास, रिश्तेदारों का स्नेह, मातहतों का सहयोग व पड़ोसियों का प्यार अवश्य खो देंगे.

प्रकृति ने कान सुनने के लिए दिए हैं, पर हर किसी बात को सुन कर विश्वास करने के लिए नहीं.

इतिहास साक्षी है कि जो लोग कान के कच्चे थे, उन का फायदा दूसरे लोगों ने कैसे उठाया और कैसे उन पर कहर बरपा किया. मंथरा ने कैकेयी के कानों में विष वमन कर राम को वनवास दिलवा दिया, और बेटे के वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु हो गई. मामाश्री शकुनी ने दुर्योधन के कानों में विष घोलघोल कर और दुर्योधन की महत्त्वाकांक्षा को बढ़ाबढ़ा कर महाभारत करवा दिया. इसी तरह नारद मुनि जैसे बड़े लोगों ने लोगों के कच्चे कानों का फायदा उठा कर खूब लड़ायाझगड़ाया है.

इगलैंड के राजा किंग लियर की चालबाज पुत्रियों ने अपने पिता की झूठी प्रशंसा कर सारा राज्य भेंटस्वरूप पा लिया था और कान के कच्चे राजा लियर को दरदर भटकने के लिए मजबूर कर दिया था.

अतः खूब सोचसमझ कर यह सलाह दी जाती है कि कम से कम बड़े ओहदे वालों को, राजनीतिबाजों व महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को, सरकारी अधिकारियों को, पतिपत्नी

बेकार की बातों पर ध्यान न दें

यदि आप चाहते हैं कि लोग आप को कान का कच्चा न कहें तो निम्न उपायों पर गंभीरता से गौर करें:

- *किसी सुनीसुनाई बात को तर्क की कसौटी पर कस कर ही विश्वास करें.*
- *जिस के विरुद्ध आप के कान भरे जा रहे हैं, एक दफा उस से भी खुल कर बात कर लें ताकि वस्तुस्थिति का पता चल सके.*
- *प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व व चरित्र देख कर ही उस की बातों पर विश्वास या अविश्वास करें. अनजान आदमी की बातों का कतई भरोसा न करें.*
- *चापलूसी करने वालों व दूसरों की बुराई करने वाले लोगों से जहां तक हो सके दूर रहें तथा उन की बातों पर शतप्रतिशत विश्वास न करें.*
- *चापलूसी करने वाले व बुराई करने वाले लोगों को कभीकभी कभार टोकें या फटकार दें. उन से यह साफ तौर पर कह दें कि व्यर्थ की बातों के लिए आप के पास वक्त नहीं है.*
- *बेकार की बातों पर बिलकुल ध्यान न दें. एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल दें, उन बातों पर तब तक विश्वास न करें जब तक कि स्वयं आप को उन की सचाई का विश्वास न हो जाए.* ●



मातहत की चापलूसी भरी बातों पर ध्यान न दे कर उसे इस के लिए फटकार दें. ▲

, नईनवेली दुलहन को तथा सासश्वसुर कभी भी कान का कच्चा नहीं होना चाहिए, अन्यथा वे ताक लगा कर बैठी थराओं के या मुसकान बिखेरते नारदमुनि से चतुर लोगों के शिकार बन सकते हैं.

होशियार पत्नियां, चतुर नौकर, लबाज मातहत, धोखेबाज इनसान कान कच्चे लोगों का फायदा तुरंत उठा कर ना उल्लू सीधा करने से नहीं चूकेंगे.

यदि आप कान के कच्चे हैं तो लोग प के कानों का फायदा जरूर उठाएंगे. या में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो एक झूठ सौ दफा दोहराने की कला जानते हैं, : ऐसे लोगों से भी सावधान रहने की वश्यकता है.

वैसे आप को कान में उंगली डाल कर नहीं बैठना है, बल्कि कान का पक्का ना है. सोचविचार कर, मनन कर निर्णय की क्षमता पैदा करनी है. दूसरों की लूसी भरी बातों को, प्रशंसा व गान को, मिर्चमसाला लगी बातों को के तराजू पर तोल कर निर्णय लेना है, सी की कही हुई बात को वैसे के वैसे वास कर लेना, आज के समय में कतई देमंद नहीं है.

यदि आप चाहते हैं कि लोग आप को का कच्चा न कहें तो निम्न उपायों पर

गंभीरता से गौर करें:

● किसी सुनीसुनाई बात को तर्क की कसौटी पर कस कर ही विश्वास करें.

● जिस के विरुद्ध आप के कान भरे जा रहे हैं, एक दफा उस से भी खुल कर बात कर लें ताकि वस्तुस्थिति का पता चल सके.

● प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व व चरित्र देख कर ही उस की बातों पर विश्वास या अविश्वास करें.

● चापलूसी करने वालों व दूसरों की बुराई करने वाले लोगों से जहां तक हो सके दूर रहें तथा उन की बातों पर शतप्रतिशत विश्वास न करें.

● चापलूसी करने वाले व बुराई करने वाले लोगों को कभीकभार टोकें या फटकार दें. उन से यह साफतौर पर कह दें कि व्यर्थ की बातों के लिए आप के पास वक्त नहीं है.

● बेकार की बातों पर बिलकुल ध्यान न दें. एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल दें. उन बातों पर तब तक विश्वास न करें जब तक कि स्वयं आप को उन की सचाई का विश्वास न हो जाए. ●

सहानुभूति पाने की आदत से सावधान

लेख • सैन्नी अशो

एक व्यक्ति के पिता का देहां
गया.

कुछ दिन तक रोनेधोने वाल
तांता लगा रहा. हमदर्दी और
प्रकट करने वाले लोग बैठतेउठते
आंख बचा कर निकलने वाले पनि
भी आतेजाते और धैर्य बंधाते रहे.
के रिश्तेदार हाजिरी देने पहुंचे.
सगेसंबंधी कई दिन के लिए डेरा डाल
गए. घर में मेला लगा रहा.

एक तो पिता के देहांत का दुख, उ
शोक प्रकट करने वालों के मेले से वह
स्वयं भी अधमरा हो गया. उस की मां ब
रोनेधोने वालों के सुर से सुर मिलाति
मरणासन्न हो रही थी. मनहूसों का साम्राज

किसी तरह घर में कुछ शांति आई
व्यक्ति काम पर निकला. अब जहां भी किस
में कुछ बाधा पड़ती, वह मुंह लंबा कर के साम
से कहता, "मेरे पिता का देहांत हो गया है. अग
मेरा यह काम कर दें तो मुझे बड़ी मदद मिलेगी
का काम अधिकांश मौकों पर फौरन हो जाता.
कहीं पिता की मृत्यु का हवाला देने लगा.

उस व्यक्ति के पिता 80 वर्ष के हो कर मरे थे
समय से बीमार थे. स्वयं घर के ल
के देहांत की कामना कर
गैर जिम्मेदारय



रवाहियों के कारण घर की हालत ठीक नहीं रहती
रस्मों को निभाने के नाम पर उधार ले कर व्यर्थ के
किए जाते थे. लोगों से हमदर्दी पाने की आदत पूरे
ार को पड़ गई थी. लोग उन की रोनी सूरत देखने
चने लगे थे.

अब पिता की मृत्यु के कारण उस व्यक्ति को घर
खिया की हैसियत से हर कहीं सहानुभूति पाने का
र मिल गया था. लेकिन कुछ ही दिनों में यह
ा भी खत्म हो गया. लोग पुनः भावना में बहने के
य व्यावहारिक हो गए.

'सहानुभूति' का अर्थ है दूसरे की अनुभूति में
ल होना. क्या यह संभव है? किसी के दर्द में
ल हो कर हमदर्दी महसूस करना क्या मुमकिन
भी नहीं. बात अजीब लगेगी, मगर यह सच है
हानुभूति या हमदर्दी पाने का प्रयत्न करना
ती है. यह भी उतना ही सच है कि सहानुभूति
नहीं, प्रकट की जाती है या अपने अनुभवों के
र पर हम किसी दुखी व्यक्ति के दुख को समझने
हो जाते हैं, इसी कारण बिन मांगे मदद करते हैं.
सी अनुभूति दो व्यक्तियों को असंभव है.

अधिकांश मौकों पर हमदर्दी पूरा दिखावा होती
सामने वाले को हृदय से नहीं, लोकलाज के भय
ाज या दस्तूर से दिलासा देते हैं अथवा मदद देते
ः हम दूसरों की नजरों में ऊंचा उठने के लिए
भूति और सहयोग प्रदान करते हैं. साथ ही यह
ी रहता है कि कल को यदि हम लाचार हुए तो
मदद करने कौन आएगा?

हानुभूति बुरी चीज नहीं है. यह मानव का
स्वभाव है. लेकिन अपनी रूढ़ जीवनशैली और
त पर दुखी होने के स्वभाव के कारण जब हम
भूति पाना चाहते हैं और सहानुभूति पा भी जाते
हानुभूति लेने व देने वाले दोनों पक्ष पाखंडी बन
. उन्हें गलत कारणों से हमदर्दी लेने या देने की
लत पड़ जाती है.

क लेखक की मां मर गई. लेखक की कहानी
ड़ी पत्रिका में नहीं छप पाती थी. उस ने मां पर
लिखी और किसी तरह संपादक के सामने
र कहानी बड़ी पत्रिका में छपवा ली. लेकिन
में जब उस की कोई कहानी उस पत्रिका में नहीं
वह निराश हो गया. संयोग से उस के पिता का
त हो गया. उस ने पिता पर कथा रची और
य बड़ी पत्रिका में छपवा ली. अब बेचारा और

दुख में दूसरों से सहानुभूति की उम्मीद करना मानव का सहज स्वभाव है. लेकिन हर वक्त दुखी रहने का ढोंग करना और लोगों की सहानुभूति का नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करना अनुचित है. आप का यह रवैया दूसरों की नजरों में आप को गिरा सकता है.

माथे की पट्टी

एक व्यक्ति के माथे पर पट्टी देख कर उस के मित्र ने सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में कहा, "अरे, तुम्हें क्या हो गया? चलो तुम्हें घर छोड़ आऊं?"

"वहीं से तो आ रहा हूं," सहज उत्तर मिला.

कुछ नहीं लिख पाता. दुखदर्द और मृत्यु की निराशाजनक कथाएं लिखता है, संपादकों को भेजता है और अधिकांश कहानियों को अप्रकाशित पा कर अपनी पुस्तकें छापता है, तिकड़में लड़ा कर बेचता है. लोग उस से बचने का प्रयत्न करते रहते हैं. किसी को उस का विलाप पसंद नहीं आता. वह अपने दृष्टिकोण से सदा बंधा रहता है.

कुछ लोगों को अपने दुखदर्द बढ़ाचढ़ा कर सुनाने का चसका लग जाता है. इसी प्रकार बहुत से लोग गधे की तरह व्यर्थ के दुखदर्द को सुनने के आदी या ढोंगी बन जाते हैं. इस से झूठी हमदर्दी जताने का फैशन विकसित होता है. सहज अभाव को असहज रोनेपीटने में व्यक्त किया जाता है. हंसनेमुसकराने वाले लोगों को मनहूस बन कर बैठने को बाध्य किया जाता है. बरबादियों के असली कारण अपने कर्मों को छिपा कर दूसरों को दोष दिया जाता है.

समझदार व्यक्ति गूंगा बन कर बैठ जाता है. और वहां से खिसकने का मौका ढूंढ़ता है. वह इन मनहूसों को खूब जानता है. दुख की लंबी कथा सुनाइए, हमदर्दी पाइए और फिर उसी मनहूस दिनचर्या में गुम हो जाइए ताकि फिर मुसीबत जन्म ले और रोनेधोने का अवसर उपलब्ध हो. रोनाधोना सुन कर पुचकारने वाले भी कम नहीं मिलते. वे बड़ी गंभीरता से कहेंगे, "आप जैसे समझदार व्यक्ति को रोनाधोना नहीं सुहाता. आप अपना काम कीजिए."

जिन्हें वास्तव में ही कर्म करने आते हैं, वे क्यों रोएंगेधोएंगे हर किसी के आगे? निकम्मे आदमी को तो हर हालत में दुखी होना है. कर्म यदि सही तरीके से न कि जाएं तो भी दुख बढ़ते हैं. परंतु सहानुभू पाने की आदत वाले लोग यह सब छि जाते हैं.

एक नालायक बेटे का बाप मर गय घर में रोनाधोना शुरू हो गया. नालाय बेटा चीख रहा था, "हायहाय, पिताज अब मुझे लात कौन मारेगा?"

धैर्य बंधाने पहुंचे लोग उस नालाय की बात पर हंसने की बजाय रोने उतावले हो रहे थे. अधिकांश स्त्रीपुर आपस में कह रहे थे, "बहुत प्यार पितापुत्र में..."

एक पड़ोसी, जो पितापुत्र के रोजरो के झगड़ों और गालीगलौज से परेशान बोला, "बेटा, लात मैं तुझे मार दि करूंगा. चुप हो जा, खैर मना."

जो लोग नालायकी के बाव हमदर्दी चाहते हैं, उन्हें अंततः ऐसे व्यं सुनने ही पड़ते हैं.

दुखी रहते हुए सहानुभूति चाह अपमानजनक बात है. सहानुभूति मिलती है जब हमारे उपाय श्रेष्ठ होते सहानुभूति बिना चाहे मिलती आई है. बच्चा खुश है. उसे देख कर हम च उठते हैं. उस में और हम में एकसी अनुभ समा गई. यही सहानुभूति है. अब हम बालक के लिए कुछ करने को तत्पर हैं. लोग जीवन को सही ढंग से जीते हैं, उन जब संयोग से विपत्ति आती है तो लोग के लिए प्राण देने को भी स्वयं तत्पर उठते हैं. यही हमदर्दी है.

लोग कटु सत्य कहने से बचने अपना समय बचाने के लिए हम सहानुभूति प्रकट करते हैं, हमारी समस्या को हल करने के लिए नहीं. कोई दुखवादी अपने दुख का वर्णन करते पाता है कि सुनने वाला धैर्यपूर्वक सुन र तो सुनाने वाले को मजा आने लगता है अपनी सभी मुसीबतों का कारण लोगों या किसी घटना विशेष को मान और जहां का तहां रह जाता है.

लेख ● डा. सुमन कौल

तुनकमिजाजी किस काम की

पत्नी को खुश करने के इरादे से रंजन ने उस का जन्मदिन कुछ नए ढंग से नाने की सोची. दफ्तर से ही घर फोन कर उस ने पत्नी को एक रेस्तरां में बुला लिया. स दिन उस ने उसे उपहार देने, फिल्म खाने व किसी बड़े होटल में खाना खिलाने कार्यक्रम बनाया था. पत्नी के रेस्तरां में हुंचते ही उस ने उसे प्रेम सहित उपहार कड़ाया. बेहद खुश हो कर पत्नी त्सुकतावश उपहार का लिफाफा वहीं ल कर देखने लगी. दूसरे ही पल साड़ी का पीला देख कर उस का मिजाज बिगड़ या. पीले रंग से उसे चिढ़ थी. रेस्तरां में ही स ने पति को उस की खराब पसंद, पैसे रबाद करने और जानबूझ कर उसे दुखी रने का आरोप लगा कर खरीखोटी सुनाई र पैर पटकती वापस घर चली गई. पति लाख मनाने समझाने पर भी अपनी कमिजाजी के कारण उस ने खुशी का का और उमंग दोनों चौपट कर दिए.

कल दफ्तर में मेरे पास एक परिचित हला आईं. उन का काम करवाने का श्वासन दे कर मैं ने चाय मंगा ली. दुकान दफ्तर तक लाने में चाय कुछ ठंडी हो गई . चलते हुए वह बोलीं, ''क्या ठंडी चाय



पिलाई. कभी मेरे दफ्तर आना. गरमागरम चाय पिलवाऊंगी, वह भी किसी चीज के साथ, खाली नहीं."

मेरी एक सहेली है सुधा. वह तो इतनी तुनकमिजाज है कि पता ही नहीं चलता कि वह किस बात पर खफा हो जाएगी. एक बार खाना खाते समय उस के पति किशोर ने बातों ही बातों में कह दिया, "भाभी 'दम आलू' बड़े जोरदार बनाती हैं. जो खाए उंगलियां चाटता रह जाए." सुन कर भुनभुनाती हुई सुधा उठी और बची हुई सब्जी फेंक कर बोली, "जाओ, वहीं जा कर खाओ."

ऐसे तुनकमिजाज लोग और इस तरह के किस्से आप को भी देखनेसुनने को मिलते ही रहते होंगे. सामान्य या खुशनुमा माहौल को बेजायका करने में ऐसे तुनकमिजाज लोगों को कुछ भी समय नहीं लगता. वे किस बात पर कब, कहां तुनक कर खड़े हो जाएंगे कुछ कहा नहीं जा सकता. जीवन के प्रति उन का नजरिया उदासीनता व नाराजगी भरा होता है. कितना ही अच्छा काम हो, वे उस में भी खामियां, आलोचना करने का नुकता निकाल ही लेंगे. ये औरों से ही नहीं अपने से भी असंतुष्ट व नाखुश रहते हैं, जो बात-बेबात बिदक कर जता देते हैं.

गुस्से से यह स्थिति कुछ भिन्न है, फिर भी गुस्से का मिश्रण इस में जरूर होता है. आकांक्षा की अपूर्ति पर भावों का अनियंत्रित ज्वार, जो धीरेधीरे आदत की शक्ल ले लेता है, व्यक्ति को तुनकमिजाज बना देता है. गुस्सा खत्म होने पर आदमी का स्वभाव बदल जाता है. उस का व्यवहार रुचिकर व आकर्षक हो सकता है. किंतु तुनकमिजाजी एक स्थायी स्वभाव है जो व्यक्ति को उस मनोदशा से उबरने ही न
देता.

सहनशीलता या सुख जैसे शब्दों
तुनकमिजाज लोगों का शायद दूरदूर त
कोई संबंध नहीं होता. ये तो शायद बने हैं
हर स्थिति व अवसर में से अपने लिए
ढूंढ़ निकालने के लिए या उस पर खीज
अकड़ने व आलोचना करने के लिए. अक
ये लोग अपने को सही व श्रेष्ठ मानते
दूसरों को कमियों से परिपूर्ण. ऐसे ल
किसी की भावनाओं की परवाह नहीं क
और न किसी की प्रतिष्ठा का खयाल क
हैं. ये अपने इस व्यवहार के समर्थन में
दलीलें भी जुटा लेते हैं. इन में अहंकार ब
होता है. कुल मिला कर यह एक नाग
स्थिति है.

किसी मजबूरी या शिष्टाचार
कुछ समय के लिए तो कोई ऐसी आ
बरदाश्त भी कर सकता है, किंतु हमेश
लिए नहीं. ऐसा व्यक्ति खुद तो दुखी र
ही है अपने परिवार, पड़ोसियों, संबं
और सहकर्मियों को भी दुखी बनाए र
है. यह जहां कहीं भी रहता है एक
माहौल में कड़वाहट भर देता है. कभी
तो स्थिति नियंत्रण के बाहर हो जात
सहन करना कठिन हो जाता है, झगड़े
की नौबत आ जाती है. यानी हर हाल
इस आदत का परिणाम दुखदायी ही हो
आजकल अकसर होने वाले पारिवा
कलहों व विघटनों के कारणों की छान
करने पर ज्ञात हुआ है कि महिला
बढ़ती तुनकमिजाजी भी इस का एक
कारण रही है.

यों प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवह
आदत को शालीन, सभ्य और आकर्ष

छोटीछोटी बातों पर खफा हो जाना, दूसरे की भावनाओं की कदर किए बिना अपनी बात पर अड़े रहना आप के अहंकार की तुष्टि भले ही कर दे, परंतु इस तुनकमिजाजी के कुप्रभावों को क्या आप झेल पाएंगे?



ऐसी तुनकमिजाजी किस काम की, जिस से निकटतम रिश्तों में भी तनाव आ जाए. ▲

ाना चाहता है. आमतौर पर विवाहपूर्व ड़कियों में इन गुणों के समावेश पर विशेष र दिया जाता है. परंतु क्या कारण है कि म्यता की मूरत बनी ये कन्याएं विवाह चात कुछ वर्षों में ही तुनकमिजाज व ड़चिड़ी हो जाती हैं?

असल में विवाह को आदर्श, खुशहाली मौजमस्ती के जीवन का प्रवेश मानने के रण लड़कियां इस के प्रति कुछ दिवास्वप्न न लेती हैं. जबकि वास्तविकता इस से न्न है. विवाह के बाद उन्हें अनुभव होता कि अब तक की आजादी भी उन से छिन है. और घर, बाहर काम की अधिकता हें कुछ शौक या इच्छा पूरी करने की सत ही नहीं देती. कुछ बनने या कर पाने इच्छा दिल में दबा कर ये पारिवारिक यत्वों में फंस जाती हैं. यानी सामर्थ्य व यता होने पर भी कुछ खास न कर पाने विवशता उन्हें कचोटती रहती है.

यही मजबूरियां उन के स्वभाव में धीरे चिड़चिड़ाहट भर देती हैं. जीवन उतारचढ़ाव, समस्याएं या चिंताएं भी तुनकमिजाज बना देती हैं. पैसा, दे या सुंदरता के कारण उपजा अहंकार कभीकभी तुनकमिजाजी स्वभाव का क होता है.

कई बार इस के कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक कारण भी होते हैं. दिनरात की जीतोड़ मेहनत के बाद व्यक्ति प्यार व प्रशंसा के चंद बोल सुनना चाहता है, जो उसे खुशी व हिम्मत देते हैं. इन के अभाव में भी वह खीज उठता है. लगातार उपेक्षा या आलोचना सुनने से उस का मिजाज बिगड़ जाता है. वह भी बदले में दूसरों के साथ वैसा तिरस्कारपूर्ण रवैया इख्तियार कर लेता है. लंबे अरसे तक एकरसता व ऊबभरा वातावरण उसे दुखी बना देता है. शारीरिक अस्वस्थता, मनोविकार और मनोग्रंथि भी इस मनःस्थिति की जनक हो जाती है.

चेतन मन से वे अपने ऐसे व्यवहार या स्वभाव के प्रति अनभिज्ञ होते हैं. तेजी से बढ़ते इस युग में उन्हें ठहर कर चिंतनमनन या आत्मविश्लेषण करने की फुरसत ही नहीं है. वे इस से बेखबर होते हैं कि उन्हें अपनी तुनकमिजाजी के कारण कितनी असफलता, अपमान व दुख झेलना पड़ा. कितना ही खूबसूरत या गुणी व्यक्ति हो लेकिन यह एक अवगुण सब पर पानी फेर देता है.

रुपए निकलवाने के लिए मैं बैंक गई तो खजांची के सामने लंबी पंक्ति लगी थी और वह जल्दीजल्दी सब का काम करता जा रहा था. एक आधुनिका आते ही सब से आगे जा कर खड़ी हो गई और लोगों के विरोध करने और कर्मचारी द्वारा पंक्ति में खड़े होने के अनुरोध करने पर तुनक कर बोली, "मुझे सब पता है कि कितने नियम से काम होते हैं यहां. अभी कोई भाईभतीजा आ जाएगा तो झट काम हो जाएगा. उठ कर चाय पीने खिसक जाएंगे. हमें क्या कुछ काम नहीं है? महिलाओं के लिए अलग पंक्ति भी नहीं लगाई हुई है..." कर्मचारी ने घूर कर उस महिला को देखा और काम में लग गया. मेरे आने तक उस के बाद आए लोगों का काम होता जा रहा था और वह टोकन आने के इंतजार में इधर से उधर भुनभुनाती घूम रही थी. यह सब उस के तुनकमिजाज व्यवहार का ही परिणाम था.

मित्रता के नियम

सच्ची मित्रता के नियम इस क्रम से सूचित होते हैं, आने वाले का स्वागत करना और जाने वाले को शीघ्रता से विदा करना.

— पोप

प्यार, शालीनता व नरमी का व्यवहार लोगों को आप का काम जल्द करने को मजबूर कर देता है. तुनक कर बिना विचारे जो भी मुंह में आए बक देने से बना काम भी बिगड़ जाता है. हमदर्दी रखने वाले लोग भी बिदक जाते हैं.

ऐसे व्यक्तियों का कोई अंतरंग मित्र नहीं होता. क्योंकि किस बात पर वे कैसे पेश आएंगे कहना मुश्किल है. आदत पहचानते ही लोग किनारा कर लेते हैं.

एक लेखिका से मेरा परिचय मित्रता में बदलने लगा था. पहली ही बार जब मैं उन के घर गई तो मेरी सहानुभूति बटोरने के खयाल से वह उसी दिन की एक घटना सुनाने लगीं. उन के तलाक से नावाकिफ किसी परिचित ने उन से पूछ लिया, "आप के [...] क्या काम करते हैं?" बस इसी बात [...] उन्होंने बवंडर खड़ा कर दिया. उसे [...] खरीखोटी सुनाई. उन के अनुसार उ[...] जानबूझ कर चिढ़ाने के लिए पूछा था. उ[...] के शब्दों में, "आजकल पति के बारे में प[...] का रिवाज ही नहीं है. मुझ से परिचित ह[...] मेरे बारे में बात करो. पति से क्या ले[...] देना?"

इस घटना को सुन कर उन के रवै[...] नजरिए के प्रति सहानुभूति के शब्द [...] कह सकी, लेकिन झटपट वहां से खिसक[...] ही अपनी खैर समझी. सोचा, 'न मालू[...] भी अनजाने में ही ऐसा कुछ न पूछ बै[...] उन्हें नागवार लगे.'

उस के बाद हमारी नमस्ते से आ[...] कभी बात नहीं हो पाई.

ऐसी तुनकमिजाज महिलाओं[...] अपनत्व का अभाव रहता है और यह [...] उन्हें अधिक से अधिक बदमिजाज ब[...] जाती है. इन का ससुराल, घर, प[...] सभा, संगठन आदि कहीं भी तालमेल [...] हो पाता. ये अकसर तनावग्रस्त व स[...] रहती हैं. मानसिक उथलपुथल का [...] शरीर पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है. इन्हें [...] बीमारियां जकड़ लेती हैं. अब [...] तुनकमिजाजी किस काम की जिस में [...] अलावा कुछ हाथ ही नहीं लगता.

बेहतर हो यदि हम समयसम[...] अपने व्यवहार पर नजर डालते रहें. [...] परिस्थिति या माहौल से उपजी एक[...] या ऊब को तोड़ने की कोशिश करें. [...] बुरे इनसान या स्थितियों में भी कुछ [...] अच्छाई व खुशी हासिल की जा सक[...] बशर्ते हमें अपना उदासीन नजरिया ब[...] होगा. खुशमिजाज बनने का प्रयत्न [...] होगा. ऐसा करने पर ही जिंदगी [...] वास्तविक आनंद मिलेगा. हमारा व्य[...] पूर्ण विकास और निखार पा सकेगा [...] हम परिवार, दफ्तर, सभा, संगठन [...] समाज में आकर्षण का केंद्र बनेंगे, मिल[...] व गुणी कहलाएंगे.



मंजीरे प्रीत के

बौराया सा
आया फागुन
चंचलचंचल
हुई दिशाएं.
नयननयन
अनुरागी खुशबू
लाजभरा पलकों पर पहरा,
भीगीभीगी
सांस बावली
बहका जाए काजल गहरा.
ढोल मंजीरे
बजे प्रीत के
पागलपागल
हुईं हवाएं.
रोमरोम
डूबा रंगों में
धूपछांव सी देही महके,
अधरअधर
बिल्लौरी खुशियां
रसवंती स्वर गूंजे लहके.
रंग रसीली
केसर मेहंदी
नव शृंगारित
हुईं कलाएं.

—सावित्री

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेक

★★ किंग अंकल

निर्मातानिर्देशक : राकेश रोशन
संगीत : राजेश रोशन
मुख्य कलाकार : जैकी श्राफ, शाहरुख खान, अनु अग्रवाल, नगमा, परेश रावल, देवेन वर्मा और बेबी पूजा रूपारेल

फिल्मकारों के साथ यह दिक्कत है कि अगर वह अच्छी फिल्म बनाना चाहें तो भी व्यावसायिक बाध्यता उन के आड़े आ जाती है. 'किंग अंकल' के साथ भी यही हुआ है. निर्मातानिर्देशक राकेश रोशन ने इस फिल्म के लिए एक बहुत अच्छा विषय चुना और फिल्म बनानी शुरू की लेकिन व्यावसायिक बाध्यता की वजह से उन्हें फिल्म के अंत में जबरदस्ती कुछ फार्मूले ठूंसने पड़ गए और नतीजा हुआ फिल्म दो भागों में विभक्त हो गई.

फिल्म का पहला भाग लगभग डेढ़ पौने दो घंटे का है. इस भाग में राकेश रोशन ने अपना निर्देशकीय जौहर दिखाया है. उस ने जरा भी उकताहट पैदा नहीं होने दी है. इस भाग में भावुकता भी है, कामेडी भी है. फिल्म के दूसरे भाग में जम कर ढिशुमढिशुम है.

ऐसा कहा जाता है कि राकेश रोशन अपनी यह फिल्म अमिताभ बच्चन को ले कर पूरी करना चाहते थे, लेकिन जैकी श्राफ को ले कर उन्होंने कोई गलती नहीं
है. एक कठोर व्यक्ति, जो उसूलों का पा
है, की भूमिका में अशोक बंसल (जै
श्राफ) की हरकतें दर्शकों को गुदगुदाती
हंसाती हैं और रुलाती भी हैं. फिल्म में
एक बहुत अमीर आदमी दिखाया गया
जिस का एक और भाई अनिल (शाह
खान) तथा बहन सुनीता (निवेदि
सराफ) है. अनिल कविता (नगमा) से प्य
करता है, लेकिन उस के बड़े भाई को
पसंद नहीं. अनिल घर छोड़ कर चला ज
है. अशोक बंसल अपनी बहन की शादी
अमीर नौजवान (दिलीप ताहिल) से
देता है. अब अशोक बंसल अपने महल
घर में अकेला रह जाता है. अचानक
दिन उस की मुलाकात एक अनाथ बच्च
होती है जो उसे 'किंग अंकल' के नाम
पुकारती है. वह उस की जिंदगी में हल
मचा देती है और वह उसे प्यार
लगता है. तभी अनाथालय की मैट्रन
उस का प्रेमी उस बच्ची के मांबाप बनने
ढोंग कर अशोक बंसल से पचास
रुपए ऐंठ लेते हैं लेकिन उन का भांडा
पर अशोक बंसल दोनों को खत्म कर ब
को अपना लेता है.

फिल्म में दर्शकों की दिलचस्पी
रहे, निर्देशक ने इस बात का पूरा
रखा है. फिल्म का गीतसंगीत भी स्त
है. गीत ठूंसे हुए नहीं लगते, फिल्म



हिस्सा लगते हैं. फिल्मी गीतों पर आधारित पैरोडी रोचक है. फिल्म का संपादन चुस्त है और पटकथा सशक्त. संवाद अनीस बाजमी ने लिखे हैं, जो काफी कसे हुए हैं. छायाकार नदीम खान ने पहाड़ों पर पड़ी बर्फ के दृश्य खूबसूरती से कैमरे में बंद किए हैं.

अभिनय की दृष्टि से जैकी श्राफ के बाद बेबी पूजा रूपारेल ने प्रभावित किया है. शाहरुख खान ने वैसे काम तो ठीकठाक किया है परंतु उस के हिस्से कुछ कम ही दृश्य आ पाए हैं. नगमा सामान्य रही है. अनु अग्रवाल ने हलकाफुलका अभिनय कर थोड़ा सा देह प्रदर्शन भी कर लिया है. सुष्मिता मुखर्जी ने दुष्ट औरत की भूमिका अच्छी तरह कर ली है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

फिल्म 'किंग अंकल' के एक दृश्य में अनु अग्रवाल और नगमा : नायिकाओं की खानापूरी. ▲

★ गेम

निर्माता : रमेश जे. शर्मा
निर्देशक : अनिल शाह
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : नसीरुद्दीन शाह, आदित्य पंचोली, राहुल राय, संगीता बिजलानी, डौली मिन्हास, सुरेश ओबराय, कुलभूषण खरबंदा, किरनकुमार, महेश आनंद, आलोकनाथ, पंकज बैरी आदि.

'गेम' एक अपराध फिल्म है, जिस में गैंगवार लड़ाई को प्रमुखता से दिखाया

गया है. फिल्म की शुरुआत ही अपराध के शतरंज से होती है. जब एक बच्चा अपने पिता से यह सीखता है कि 'अगर शतरंज जीतना हो तो दुश्मन के राजा को मारना जरूरी है' और यही बच्चा अपने मातापिता की हत्या देख कर अपराध के शतरंज पर

पिछले बारह महीनों में

★ ★ बेटा, प्रेम दीवाने, अश्विनी, मुसकराहट.

★ मेरे सजना साथ निभाना, शोला और शबनम, मीरा का मोहन, इंसाफ की देवी, पनाह, कैद में है बुलबुल, जिंदगी एक जुआ, खुदा गवाह, जो जीता वही सिकंदर, कसक, पायल, हनीमून, माशूक, सपने साजन के, पुलिस और मुजरिम, आज का गुंडाराज, बेखुदी, बोल राधा बोल, खेल, हीररांझा, बेवफा से वफा, यलगार, द्रोही, राजू बन गया जेंटलमैन, उमर पचपन की दिल बचपन का, घरजमाई, दिल आशना है, युगांधर, तिरंगा, बलमा.

○ विश्वात्मा, अधर्म, जान तेरे नाम, आई लव यू, सूर्यवंशी, सनम तेरे हैं हम, रात, इंदिरा, विरोधी, सरफिरा, सातवां आसमान, बसंती तांगेवाली, इंतहा प्यार की, खिलाड़ी, त्यागी, हमला, लंबू दादा, गंगा का वचन, जागृति, पुलिस अफसर, दीवाना, जुल्म की हुकूमत, निश्चय, चमत्कार, राधा का संगम, हमशक्ल, दीदार, तहलका, सोने की जंजीर, जीना मरना तेरे संग, महबूब मेरे महबूब, जुनून, बलवान, दिल वाले कभी न हारे, दुश्मन जमाना, फूलवती, जिगर, संगीत, बाज, अपराधी, गीत, अनाम, अभीअभी, खुलेआम, दिल ही तो है.

अपने मोहरे चलाना शुरू करता है और देखते ही देखते वह अपराध की दुनिया का बादशाह विक्रम (नसीरुद्दीन शाह) बन जाता है.

वैसे नसीरुद्दीन शाह बहुत बढ़िया अभिनेता है. अपने अभिनय से उस ने इस अपराध फिल्म को थामे रखा है, अन्यथा जितने अधिक पात्र इस फिल्म में हैं, उस से वह बिखर कर रह जाती.

नसीरुद्दीन शाह को छोड़ कर फिल्म में लगभग सभी खलनायक हैं. राजा (आदित्य पंचोली) सिनेमा टिकटों की ब्लैक करता है. विजय (राहुल राय) पढ़ालिखा युवक है, जिसे हालात जेल की सींखचों में पहुंचा देते हैं. ये दोनों विक्रम के लिए काम करते हैं. चौधरी (कुलभूषण खरबंदा) दूसरे गैंग का प्रमुख है. कमाल (किरनकुमार) और उस का भाई (महेश आनंद) उस के साथ मिले हुए हैं.

इतनी सारी घटनाओं को आपस में जोड़े रखना सचमुच मुश्किल काम था परंतु निर्देशक अनिल शाह ने मेहनत से यह काम कर दिखाया है. फिर भी कई जगह वह गलतियां कर गया है.

वैसे तो अपराध फिल्मों में संवाद ज्यादा अहमियत नहीं रखते, फिर भी इस फिल्म में कहींकहीं अच्छे संवादों का प्रयोग किया गया है. गीतसंगीत टांयटांय फिस्स है. गीतकार समीर और संगीतकार आनंद मिलिंद ने चलताऊ गीतसंगीत ही दिया है.

फिल्म के सभी पात्रों के अभिनय पर दृष्टि डालें तो नसीरुद्दीन शाह के बाद अगर किसी ने अभिनय किया है तो वह है कुलभूषण खरबंदा. उस ने बिहारी भाषा का प्रयोग कर गजब का अभिनय किया है. शायद यह उस का अब तक का सब से बढ़िया अभिनय होगा. किरनकुमार का अभिनय आम फिल्मों जैसा है. राहुल राय और आदित्य पंचोली सामान्य रहे. संगीता बिजलानी ने तो सहनायिका की खानापूर्ति की है. शराबी और भ्रष्ट पुलिस अफसर की भूमिका में आलोकनाथ खूब जमा है.

बिंब प्रतिबिंब

* कुमार शानू का भोंडा वैभव प्रदर्शन *

फिल्म जगत का दस्तूर भी निराला है. चढ़ते हुए सितारे अपने वैभव प्रदर्शन के लिए अपने या अपनी पत्नी के जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ आदि किसी भी अवसर को चुन सकते हैं. पिछले दिनों ऐसा ही तमाशा कुमार शानू ने एक पांच सितारा होटल में किया.

कुमार शानू 7 वर्ष पहले तक स्टेज पर फिल्मी गाने गा कर अपनी आजीविका कमाता था. बंबई आ कर संघर्ष किया. गुलशनकुमार ने 'आशिकी' में उसे गाने का बड़ा अवसर दिया.

'आशिकी' के गाने जबरदस्त हिट हुए. यही नहीं, उस के बाद उस के लगभग सारे गाने हिट होते चले गए. हालत यह गुजरी कि पहले जो संगीतकार उस से मिलना तक गवारा नहीं करते थे, वे उस से रिकार्डिंग की तारीख लेने के लिए इंतजार करने लगे. इस सब के बीच कुमार ने खासा पैसा भी बनाया है, बंगला भी खरीद लिया है, जिस का नाम 'आशिकी' रखा है.

अपनी इसी संपन्नता का प्रदर्शन करने के लिए उस ने अपने विवाह की सातवीं वर्षगांठ मनाई. चढ़ते सूरज को अर्घ चढ़ाने सुधाकर बोकाड़े, जितेंद्र, दिनेश पटेल, कल्याणजी आनंदजी, नदीम श्रवण, आर.डी. बर्मन, आशा भोंसले और अनु मलिक से ले कर पार्श्व गायन की सारी हस्तियां मौजूद थीं.



संपन्नता का प्रदर्शन करने के लिए उस की पत्नी भारी-भरकम सोने का हार और कंधों से भी नीचे लटकने वाले झुमके पहने थी. मंच पर फिल्मी हस्तियों ने मौके को खुशगवार बनाने के लिए शैंपेन की बोतलें

खोलनी शुरू कीं तो सचमुच स्टेज पर जैसे शैंपेन की बारिश होने लगी. बात यहीं तक होती तो गनीमत थी. लगातार आधे घंटे तक जुहू का इलाका रंगबिरंगी आतिशबाजियों के धमाकों से गूंजता रहा.

* पर्यावरण समस्या : अब छोटे परदे पर *

पर्यावरण एक ऐसा ज्वलंत विषय है, जिस के संबंध में आम लोगों में जागृति लानी जरूरी है. निर्देशिका अलका मैत्रा ने अपने नए मराठी टीवी सीरियल 'ही वाट दूर जाते' में इस विषय को प्रभावशाली तरीके से उठाया है. गोआ में अंधाधुंध खनिज दोहन से वहां के गांवों की अर्थव्यवस्था पर जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, उसी को विषय बना कर मराठी कथाकार डा. सुभाष भेंडे ने 'उध्वस्त' नामक उपन्यास लिखा था. इसी उपन्यास को अलका ने अपने धारावाहिक का आधार बनाया है.

हाल ही में अलका ने अपने सीरियल का एक शो रखा था. वहीं डा. सुभाष भेंडे मिल गए. उन से पूछा, "अधिकांश कलाकारों का अनुभव रहा है कि फिल्मीकरण में उन की रचना के साथ न्याय नहीं हो पाता है. इस बारे में आप के क्या विचार हैं?"

"मैं तो पूरी तरह संतुष्ट हूं. हां, इतना जरूर है कि इस माध्यम द्वारा प्रस्तुत करते समय कुछ परिवर्तन तो करने ही पड़ते हैं क्योंकि यह इस माध्यम की मांग होती है. अलका ने भी कुछ जगह यही किया है लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है."



* रानी : एक नया पाकिस्तानी चेहरा *

हिंदी फिल्मों में पाकिस्तानी मूल की अभिनेत्रियों के आने का सिलसिला जारी है.

इसी क्रम में एक नई अभिनेत्री रानी बरास्ता अमरीका दाखिल हुई है. उस का असली नाम कमल गिल है. जन्म लायलपुर में हुआ, परवरिश बरमिंघम (ब्रिटेन) में हुई, जहां से यह न्यूयार्क पहुंची.

उस की हिंदी की पहली फिल्म 'को... बात नहीं' है. अमरीका में बन रही एक अन... हिंदी फिल्म में भी उस की मुख्य भूमिका है. उस ने अभिनय और नृत्य का प्रशिक्षण लिया है.

पिछले दिनों रानी भारत आई हुई थी. अपनी पृष्ठभूमि के बारे में उस ने बताया, "अमरीका के एक टी... चैनल के लिए 'गुड मार्निंग एशिया' और 'विजन आ... पाकिस्तान' प्रस्तुत कर रही हूं. खालिद अलताफ की फिल्म 'सोने का पिंजरा' में भी भूमिका की थी."

"हिंदी फिल्मों में नियमित रूप से काम करने और बंबई में बसने के बारे में क्या विचार है?"

"यदि मेरी फिल्म च... और अच्छे प्रस्ताव मिले... खयाल बुरा नहीं है."

आ...



* महेश भट्ट का नया शिगूफा *

चर्चा में रहना कोई महेश भट्ट से सीखे. कोई न कोई नया शिगूफा छोड़ते ही रहते हैं. 'पीत पत्रकारिता' से उन्हें नफरत है, लेकिन 'पीत वक्तव्य' से नहीं. हाल ही में उन्होंने एक पत्रकार से कहा, "पूजा अगर मेरी बेटी नहीं होती तो मैं उस से शादी कर लेता."



एक जमाना था, जब महेश अपनी एक फिलम पर महीनों मेहनत करते थे, तब कहीं जा कर उस फिल्म की शूटिंग शुरू होती थी. अब तो वह फिल्मों की फैक्ट्री हो चले हैं. उन की आशिकमिजाजी के किस्से तो इतने मशहूर हैं कि पूछिए मत. वर्षों तक बिना शादी किए वह परवीन बाबी के साथ रहते रहे. तब उन का कहना था, "मैं वैवाहिक संबंधों को नहीं मानता."

संभवतः इसलिए उन्होंने अपने बसेबसाए घर को छोड़ कर अपने से बहुत कम उम्र वाली अभिनेत्री सोनी राजदान से शादी कर ली.

अब महेश भट्ट ने नया शिगूफा छोड़ा है, "मैं गैरवैवाहिक संबंधों को नहीं मानता. ऐसे संबंध अधिक देर तक नहीं टिकते क्योंकि उन में प्यार नहीं होता. ऐसे संबंधों में देह का आकर्षण ही प्रमुख होता है."

इसे कहते हैं 'नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली चली हज को.' •

कहानी ● रामदेव लाल श्रीवास्त

करती थी. इसलिए गीतांजलि
सुबह के नाश्ते तथा दोपहर
रात्रि के भोजन के समय
मुलाकात हो सकती थी.

बड़े भाई साहब उस
निकटता पाने के लिए बे
रहने लगे थे. एक दिन मौका
ही उन्होंने गीतांजलि से कहा,
तुम से कुछ खास बात क
चाहता हूं."

"खास बात?" गीतां
चौंक पड़ी थी.



बड़े भाई साहब

गतांक से आगे

गीतांजलि नर्स के रूप में अस्पताल में कार्यरत थी. बड़े भाई साहब की ड्यूटी किताबों की दुकान पर हुआ

"हां."

"तो कहो न?"

"यहां नहीं, तुम्हें मेरे कमरे चलना होगा."

"चलो."

गीतांजलि बेझिझक उन के कमरे में चली गई, "हां, अब बोलो."

बड़े भाई साहब साहस बटोरने लगे थे. गीतांजलि ने प्रोत्साहित किया, "संकोच कैसा, बोलो? मैं ने तो यहां आ कर यही सीखा है कि हृदय की सफाई बहुत जरूरी है."

"गीतांजलि, मैं तुम से विवाह करना चाहता हूं."

गीतांजलि थोड़ी देर तक चुप रही. फिर बोली, "तुम तो यहां संन्यासी बनने आए थे, फिर यह बात दिमाग में आई कैसे? मैं ने सुना है कि तुम विवाह के डर से ही भागते रहे हो."

पूर्व कथा

बड़े भाई साहब शुरू से ही अध्यात्म में डूबे रहते थे अतः घरवालों द्वारा विवाह की बात चलाने पर उन्होंने विवाह से साफ मना कर दिया. दबाव पड़ने पर वे रामकृष्ण मिशन चले गए. वहीं मिशन की नर्स गीतांजलि से उन की मुलाकात हुई. पहली ही भेंट में भाई साहब की आध्यात्मिकता उड़नछू हो गई. अब आगे पढ़ें.



गीतांजलि दनदनाती हुई बड़े स्वामी के कमरे में चली गई. स्वामीजी ने बैठने को कहा तो वह रो पड़ी.

धर्म के भंवर में फंस कर बड़े भाई साहब स्वामी तो बन गए लेकिन नर्स गीतांजलि के रूपसौंदर्य को देख कर वह स्वयं पर अंकुश न लगा सके. आखिरकार गीतांजलि की शिकायत पर उन्हें आश्रम छोड़ना पड़ा. लेकिन उन के मन ने जो यह नई राह पकड़ी थी क्या वह उसे कभी छोड़ पाए?

"तुम ने मुझे मोह लिया है, गीतांजलि."

"तुम्हें अपने घर लौट जाना चाहिए."

"मैं तुम्हें भूल नहीं पाऊंगा."

"यह संवेग है, जिस तेजी से आया है, उसी तेजी से चला जाएगा."

"नहींनहीं गीतांजलि, यह संवेग नहीं, स्थायी भाव बन चुका है, तुम्हारे बिना मैं मृतप्राय हो जाऊंगा."

"मुझे जानते हो तुम, मेरा अतीत, मेरा वर्तमान?"

"मैं कुछ भी नहीं जानना चाहता, गीतांजलि."

"तुम वासना और प्रेम में अंतर कर सकते हो, हरिदास?"

"तुम मेरी प्राणवल्लभा बन गई हो, गीतांजलि."

"साहित्य में दखल रखते हो, शायद इसी लिए ऐसेऐसे शब्दों का प्रयोग कर रहे हो. सुनो, मैं बाल विधवा हूं. मैं ने सारे सपनों को हमेशा के लिए मिटा दिया है. मरीजों की सेवा ही मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य रह गया है. तुम अपने मन को मजबूत करो हरिदास, अपने आध्यात्मिक जगत में लौट जाओ. स्वामी विवेकानंद के पदचिह्नों पर चलो, तुम्हारा मार्ग वही है. तुम भटक गए थे, हरिदास."

इस के बाद गीतांजलि झटके से कमरे के बाहर चली गई. बड़े भाई साहब पर कोई असर नहीं हुआ बल्कि गीतांजलि और गहराई से उन के दिलोदिमाग में बैठ गई थी. उस की संगत पाने के लिए वह कोई मौका नहीं छोड़ते थे.

गीतांजलि बाघिन सी घूरती, नागिन सी फुफकारती, पर बड़े भाई साहब पर कोई असर नहीं होता. एक दिन रात की ड्यूटी कर के गीतांजलि अपने कमरे में आई ही थी, अभी कपड़े भी बदले नहीं थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया. खोलने पर भाई साहब दिखाई पड़े.

"तुम?" गीतांजलि ने चौंकते हुए कहा.

उत्तर में बड़े भाई साहब उस के पैरों पर गिर पड़े.

गीतांजलि किंकर्तव्यविमूढ़ हो कर थोड़ी देर तक खड़ी रही. फिर चीख पड़ी, "हरिदास, उठो, अपनी और आश्रम की मर्यादा समझो."

बड़े भाई साहब पर असर हुआ और वह उठ कर खड़े हो गए. "मुझे जीवनदान दे दो, गीतांजलि, मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लो."

गीतांजलि की दोनों आंखें बरसने लगी थीं, "मैं हाथ जोड़ती हूं हरिदास, तुम इस समय यहां से जाओ."

उस के आंसुओं ने बड़े भाई साहब पर असर किया. वह धीरेधीरे कमरे के बाहर चले गए. गीतांजलि ने आज स्वयं को अपमानित अनुभव किया था. वह चुपचाप बैठ कर हरिदास के बारे में सोचने लगी. उस ने मन ही मन कहा, 'यह आदमी शायद मुझे सस्ती लड़की समझता है, इसी लिए एक के बाद एक कदम बढ़ाता ही जा रहा है.'

हर बार गीतांजलि बड़े भाई साहब के आंखों की भाषा पढ़ती रही, जहां केवल वासना का ज्वार ही दिखाई पड़ा. 'वह मुझ पर बल प्रयोग भी कर सकता है,' यह सोच कर भीतर ही भीतर गीतांजलि कांप उठी



'अब कुछ करना पड़ेगा. इस पुरुषप्रधान समाज में अंत में दोष मुझी पर आएगा. क्या मैं कहीं और चली जाऊं जहां हरिदास जैसे लोग न हों.'

7 साल के आश्रम जीवन में वह पहला कटु अनुभव था. वह कमरे से तेजी से बाहर निकली और दनदनाती हुई बड़े स्वामी के कमरे में चली गई. स्वामीजी ने देखा कि उस का चेहरा तमतमाया हुआ है. उन्होंने संकेत से बैठने के लिए कहा.

बैठते ही गीतांजलि फूटफूट कर रोने लगी. स्वामीजी उठे, उन्होंने उस के सिर पर हाथ फेरा, "क्या बात है, पुत्री?"

गीतांजलि की रुलाई और बढ़ गई. स्वामी स्नेहपूर्वक हाथ फेरने लगे, "बोलो पुत्री बोलो...?"

बड़े भाई साहब जब अपनी आदत के अनुसार सुबह 8 बजे घर से निकले तो अम्मां ने उन्हें रोक लिया, "कहां जा रहा है?"

गीतांजलि ने बड़े भाई साहब की सारी दास्तान बता दी. स्वामीजी की आंखों से अंगारे बरसने लगे. उन्होंने बड़ी कठिनाई से अपनेआप को संभाला, "जाओ पुत्री जाओ, मैं उसे सजा दूंगा."

गीतांजलि लौट गई. अब उस का मन शांत था, जैसे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो.

दूसरे दिन प्रातः नाश्ते के बाद स्वामीजी ने बड़े भाई साहब को कमरे में बुलाया. उन्हें देखते ही स्वामीजी ने कहा, "हरिदास, तुम्हें आज ही घर जाना होगा."



वक्त

वक्त को बदलने की
कोशिश मत कर प्यारे,
उसे वक्त पर छोड़ दे
वक्त खुद बखुद बदल जाएगा.
—जुनेजा 'विकल'

"स्वामीजी...?"

"तुम ने आश्रम की मर्यादा भंग की है."

"मैं ने...?"

"हां, तुम ने..."

"स्वामीजी..."

"जाओ, और घर जाने की तैयारी करो. दोपहर बाद मैं इस आश्रम में तुम्हें नहीं देखना चाहता."

अचानक दरवाजे पर रिकशा आ कर रुका. अम्मां आहट लेने लगीं. आवाज बड़े भाई साहब जैसी लगी. वह दौड़ीं.

हाथों में अटैचियां तथा कंधे पर झोला लटकाए खादी का कुरतापाजामा पहने बड़े भाई साहब खड़े थे. अटैची रख कर उन्होंने अम्मां के पैर छुए.

अम्मां ने उन्हें छाती से लगा लिया और फूटफूट कर रोने लगीं, "बेईमान, तू अम्मां को भूल गया था, 6 माह बाद तुझे याद आई."

बाबूजी निर्विकार बैठे थे. अत्यंत प्रसन्नता से भरे हुए हम छोटे भाईबहन स्तब्धवत खड़े थे.

धीरेधीरे सब सामान्य हो गया. बड़े भाई साहब के लिए लड़की देखी जाने लगी. डर था कि कहीं फिर न भाग जाएं. प्रस्ताव पर प्रस्ताव आ रहे थे, उस के साथ लड़कियों के फोटो भी.

बड़े भाई साहब फोटो में गीतांजलि को ढूंढ़ते और निराश हो एक ओर रख देते. एक दिन वह ऊब गए, "अम्मां, मुझे बारबार फोटो मत दिखाओ, तुम लोगों को जो पसंद हो, वही रिश्ता मान लो. अब मुझ से पूछने या फोटो दिखाने की कोई जरूरत नहीं है."

बाबूजी ने एक लड़की पसंद कर ली. विवाह की तारीख निश्चित हो गई. लड़की के गहनेकपड़े की फिक्र होने लगी. दानदहेज सब पहले ही तय कर लिया गया था.

विवाह का दिन आया. बड़े भाई साहब ने सारी रस्में स्वप्न देखते हुए व्यक्ति की भांति पूरी कीं. चेहरा सपाट बना रहा. उस पर कभी कोई भाव आया ही नहीं. हंसीठिठोली का किसी अवसर पर भी भाई साहब पर कोई असर नहीं पड़ा.

भाभी के आ जाने से घर में चारों ओर हंसीखुशी का वातावरण था, लेकिन बड़े भाई साहब एक कोने में बैठ कर विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, दयानंद सरस्वती, गांधी तथा टैगोर का साहित्य पढ़ रहे थे. अपने साथ जो 2 अटैचियां लाए थे, उन में कपड़े तो 4-6 जोड़ी ही थे, शेष किताबों से भरी पड़ी थीं.

सुहागरात को भी बड़े भाई साहब रात के 11 बजे घूम कर लौटे थे. पड़ोस की रिश्ते की भाभी ने उन्हें भाभी के कमरे में पहुंचा दिया था. दूसरे दिन पता चला कि भाई साहब काफी रात तक किताबें ही पढ़ते रहे थे. वह नई भाभी की उपस्थिति कतई नकार गए थे. अंत में किताब पढ़तेपढ़ते ही सो गए थे.

नई भाभी के आने पर भी बड़े भाई साहब की दिनचर्या में कोई फर्क नहीं आया

था. वह प्रातः पहले की तरह 8 बजे निकल जाते थे और रात को 11-12 बजे घूम कर वापस आते थे. बाबूजी जैसे हार मान चुके थे. अब उन की कोशिशें इस बात के लिए थीं कि बड़े भाई साहब को छोटीमोटी कोई नौकरी मिल जाए.

वैसे बड़े भाई साहब को भविष्य की कतई चिंता नहीं थी. उन का पत्नी से कोई रागात्मक संबंध नहीं बन सका था. वह उन के चेहरे पर गीतांजलि का चेहरा ढूंढ़ते थे और निराश हो कर आंखें फेर लेते थे. घर के भीतर गीतांजलि को न पा कर अब उसे बाहर ढूंढ़ने लगे थे. धार्मिक कार्यक्रमों में एक आशा ले कर जाते थे कि शायद गीतांजलि कहीं दिखाई पड़ जाए. जहां गीतांजलि थी वहां जाने का साहस खो चुके थे. बड़े स्वामीजी की आंखों में जलते अंगारों को वह भूल नहीं पाए थे.

अब अकसर नई भाभी की दबीघुटी सिसकियां सुनाई पड़ने लगी थीं. दो महीने में ही उन्हें एहसास हो चुका था कि बड़े भाई साहब उन्हें कुछ नहीं दे सकेंगे. पतिसुख की बात तो दूर थी उन्हें तन पर कपड़ा और पेट-भर खाना भी नहीं दे सकेंगे

कभीकभी उन का रुदन और दबीघुटी सिसकियां रात की नीरवता को भंग करने लगी थीं. धीरेधीरे अम्मां को सब कुछ पता चल गया. एक दिन उन्होंने भाभी को समझाया, "बहू, तुम चिंता मत करो, हौसला ऊंचा रखो, इसे तो मैं ठीक करूंगी."

दूसरे दिन जब बड़े भाई साहब अपनी आदत के अनुसार 8 बजे घर से निकले तो अम्मां ने उन्हें टोक दिया, "कहां जा रहा है...?"

"अयोध्या."

"क्या है वहां?"

"एक धार्मिक अनुष्ठान है."

"तू मेरे प्राण क्यों लेना चाहता रे...?"

"क्या हुआ अम्मां?"

"घर में नई बहू है और तू आवारागर्दी करता फिर रहा है... आखिर तेरी जिम्मेदारियां कोई दूसरा उठाएगा?"

"कैसी जिम्मेदारियां, अम्मां?"

"अरे, तू किस लोक का आदमी है रे... अब वह भी अम्मां से पूछेगा...?"

"जिस की शादी हो जाती है, क्या वह कैद हो जाता है?"

"नहीं, कैद तो नहीं हो जाता लेकिन तेरी तरह आवारागर्दी भी नहीं करता. सुबह 8 बजे निकलता है और रात को 12 बजे लौटता है, यही तेरा कर्तव्य है क्या? बहुत पढ़लिख गया है. अरे, क्या खाक पढ़ा है न, बड़ीबड़ी पोथियां पढ़ता है, उन में यही सब लिखा है क्या?"

"जल्दी लौट आऊंगा अम्मां..."

"नहीं, घंटेभर बाद नहीं लौटा तो आज से मेरा अन्नजल बंद."

बड़े भाई साहब चले गए. उन्होंने अम्मां की बात को गंभीरता से नहीं लिया.



"बस, यही बच्चे का नवीनतम चित्र है. ठीक हो... न खींचा था."

आदत के अनुसार रात के 12 बजे ही लौटे.

दरवाजा मैं ने खोला, "हद कर दी बड़े भाई साहब आप ने."

"अम्मां बहुत नाराज हैं क्या?"

"नाराज, आज वह सुबह से ही अपने कमरे में हैं. आज उन के मुंह में न अन्न का एक दाना गया, न जल की बूंद. उन्होंने नहीं खाया तो घर में भी किसी ने कुछ नहीं खाया. रसोई वैसे ही बनी पड़ी है."

बड़े भाई साहब अम्मां के कमरे की तरफ गए और हाथ जोड़ कर खड़े हो गए, "अम्मां, क्षमा कर दो, अब ऐसी गलती नहीं होगी."

अम्मां उठीं और घूर कर बड़े भाई साहब को देखा, "तू भीतर कैसे आ गया? जा बाहर जा."

अंतःकरण और न्यायोचित

कायरता पूछती है, "क्या यह भय रहित है?" औचित्य पूछता है, "क्या यह व्यवहारिक है?" अहंकार पूछता है, "क्या यह लोकप्रिय है?" किंतु अंतःकरण पूछता है, "क्या यह न्यायोचित है?" – पंशन

बड़े भाई साहब चौखट के बाहर हो गए. उन के बाहर होते ही अम्मां ने दरवाजा बंद कर लिया और भीतर से ही बोलीं, "मैं 7 दिनों तक अन्नजल ग्रहण नहीं करूंगी. उस के बाद ही दरवाजा खुलेगा...अगर जिंदा रही तो..."

बड़े भाई साहब दरवाजा पीटपीट कर प्रार्थना करने लगे, "अम्मां, ऐसा दंड मत दो...मैं तुम्हारा बंदी बना रहूंगा. बिना तुम्हारी आज्ञा के चौखट भी नहीं लांघूंगा. अम्मां, एक बार मौका दे दो, सिर्फ एक बार..."

लेकिन दरवाजा नहीं खुला. बड़े भाई साहब फूटफूट कर रोने लगे. हम सब भाई बहन चीखनेचिल्लाने लगे, पर कोई असर नहीं हुआ.

भाभी दौड़ी हुई आईं, "अम्मां, मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है, दरवाजा खोल दो, अपनेआप को सजा मत दो. अम्मां, सब कुछ मेरे कारण हो रहा है, सजा मुझे दो."

भीतर से कोई आवाज नहीं आई. बाबूजी दौड़ते हुए आए, "दरवाजा खोलो, यह क्या कर रही हो? सिर पर पड़ेगी तो खुद ही समझेंगे...तुम अपनी जान क्यों जोखिम में डालती हो...कुछ हमारी तो सोचो..."

उन के कहने का भी कोई असर नहीं हुआ. यह बात बिजली की तरह पूरे महल्ले में फैल गई कि विक्रम की अम्मां ने उस से तंग आ कर अन्नजल छोड़ दिया है.

'गांधीजी ने भी यही किया था,' किसी ने टिप्पणी की. महल्लेभर की औरतें इकट्ठी होती गईं लेकिन दरवाजा नहीं खुला. शाम होतेहोते बात दूसरे महल्लों तक पहुंच गई.

तीसरे दिन सुबह अम्मां ने अपनी जिद छोड़ दी. जब तक वह बंद रहीं, घर में रसोई नहीं बनी. वह चुपचाप निकलीं. नित्यक्रिया से निवृत्त हो कर जल ग्रहण किया. फिर पुकारा, "बहू, एक प्याला चाय बना ला."

घर में फिर से सुखशांति लौट आई. बड़े भाई साहब का तो जैसे कायाकल्प हो गया. अब वह करीबकरीब घर पर ही बने रहते थे. सही माने में आज्ञाकारी पुत्र बन गए थे, अम्मां के श्रवणकुमार.

अम्मां सब्जी खरीदने स्वयं जाती थीं. जब सब्जी लेने निकलतीं तो भाई साहब भी उन के साथ चल पड़ते. सब्जी की डोलची खुद ले कर आते. रात को सोने के पहले अम्मां के पैर दबाते. वह हमेशा उन का मुंह देखते रहते थे. बाहर जाना होता तो उन से आज्ञा लेते और घंटे आध घंटे में लौट आते.

अम्मां अब बहुत खुश थीं. दिनरात मनातीं कि बेटे को कोई नौकरी मिल जाए. बाबूजी के प्रयासों से बड़े भाई साहब को एक विकास प्रखंड में ग्राम अधिकारी की नौकरी मिल गई. उन्होंने तुरंत जा कर कार्यभार संभाल लिया. अकेले गए थे, रहने

की कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी. किसी की बैठक में एक चारपाई डाल कर पड़े रहते थे, स्वयं ही कुछ बना लेते थे.

महीने दो महीने के बाद 2-4 दिनों के लिए घर आते थे. लेकिन भाभी के प्रति उन का व्यवहार पहले जैसा ही रहा. अब भी गीतांजलि की उन्हें तलाश थी. अपना खर्चा निकाल कर पूरा वेतन अम्मां के हाथ पर रख देते थे, पर अम्मां उसे भाभी को रखने के लिए दे देती थीं.

अपनी ओर से बड़े भाई साहब ने भाभी को न एक गज कपड़ा ला कर कभी दिया, न ही एक रुपया उन के हाथ पर रखा.

भाभी अब अपनी जिंदगी का लेखाजोखा करने लगी थीं. जब तक अम्मांबाबू हैं, रोटी, कपड़ा शायद मिलता रहेगा, लेकिन उस के बाद? बड़े भाई साहब पर अब उन को कतई विश्वास नहीं रहा था.

भाभी आठवीं जमात तक पढ़ी थीं. उन का अम्मां पर पूरा विश्वास था. भाभी को लगता कि जैसे वह उन की सगी मां हैं.

एक रात भाभी उन के कमरे में गईं और उन के चरणों पर अपना सिर रख दिया.

"बहू..."

"अम्मां, एक प्रार्थना ले कर आई हूं. जब तक प्रार्थना स्वीकार करने का वादा नहीं करोगी, बताऊंगी नहीं. अम्मां, मेरा दुलार रख लो."

"बोल, बहू बोल, मैं जानती हूं कि मेरा बेटा तेरे लायक नहीं है. बोल बेटी, बोल..."

"अम्मां, मैं पढ़ना चाहती हूं ताकि अपने पैरों पर खड़ी हो सकूं."

"यह तो अच्छी बात है. मैं भला मना क्यों करूंगी, लेकिन बेटी, स्कूल जाना क्या अच्छा लगेगा?"

"नहीं मां, घर पर रह कर पढ़ाई करूंगी और प्राइवेट परीक्षा दे दूंगी."

"इस में कोई अड़चन नहीं है बेटी, खूब पढ़ो."

भाभी पढ़ने लगी थीं. उन्होंने प्राइवेट हाई स्कूल का फार्म भर दिया था. मैं उन की मदद करने लगा. 6 साल में वह बी.ए., बी.एड. हो गईं.

बाबूजी ने भागदौड़ कर एक स्कूल में उन की नियुक्ति करा दी. उस के दूसरे साल ही बाबूजी चल बसे थे. उन के चले जाने के बाद अम्मां जैसे निष्प्राण हो गई थीं. घर पर से उन का नियंत्रण अब ढीला पड़ गया था.

बड़े भाई साहब अब महीनों तक घर नहीं आते थे. अम्मां अब कुछ नहीं बोलती थीं. भाभी और बड़े भाई साहब के बीच की खाई अब काफी चौड़ी हो गई थी. काफी उम्र बीत जाने पर एक कन्या हुई थी, जिस पर सभी को आश्चर्य हुआ था. प्रकृति ने शायद अपना कर्तव्य निभाया होगा.

अम्मां के जाने के बाद भाभी और बड़े भाई साहब के बीच जो कर्तव्य और प्रेम का कमजोर तार था, वह भी टूट गया. इस का कारण गीतांजलि थी. भाभी ने कई बार भाई साहब को उस का नाम ले कर स्वप्न में बड़बड़ाते हुए सुना था.

अब जब भी भाई साहब घर आते, भाभी कुछ कटाक्ष कर देतीं और वह तिलमिला कर उठ कर चले जाते. एक दिन नौकरी से उन का मन भर गया. उन्हें लगा, जैसे उन का कोई दायित्व नहीं रहा.

घर में भाभी ने पूरी मोरचाबंदी कर ली थी. अब तक उन्होंने बड़े भाई साहब को काफी सहा था, अब उन के बरदाश्त करने की जैसे सीमा आ गई थी. बड़े भाई साहब भाभी को जीवन के हर मोड़ पर नकारते आ रहे थे, अब भाभी ने नकारना शुरू कर दिया था.

बड़े भाई साहब ने अब अपनी हार स्वीकार कर ली थी. उन्होंने जुआ [illegible] कर रख दिया था. उन के घर में प्रवेश करते ही नोकझोंक शुरू हो जाती [illegible] अब भाई साहब चुपचाप खिसक लेते थे. यही कारण

था कि अब वह माह में 4-6 दिन ही घर पर रह पाते थे. शेष दिनों बाहर रहने को जैसे मजबूर थे.

अनाम भूख अब भी बड़े भाई साहब को सताती थी. कोई विकल्प नहीं था. सौंदर्यानुभूति भी उन्हें तंग करती थी. उन की आंखों में 'दिवास्वप्न' नाचा करता था.

उन दिनों 'रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे' का बड़ा शोर था. देश के कोनेकोने से झुंड के झुंड कारसेवक तमाम बाधाओं को पार करते हुए अयोध्या पहुंच रहे थे. बड़े भाई साहब कब पीछे रहने वाले थे.

नवंबर 1990 की बात है. कारसेवकों की भीड़ राम ध्वनि करती हुई विवादित स्थल की ओर बढ़ रही थी. मजिस्ट्रेट भीड़ को तितरबितर होने तथा आगे न बढ़ने की लगातार चेतावनी दे रहा था. लेकिन चेतावनी की परवाह किए बिना भीड़ आगे बढ़ती रही. पुलिस बल उन्हें रोकने का असफल प्रयास कर रहा था.

भीड़ अभी हनुमान गढ़ी से काफी दूरी पर थी कि पुलिस बल की एक लौह दीवार उन्हें घेर कर खड़ी हो गई. विवश कारसेवक वहीं जमीन पर बैठ गए. राम ध्वनि अब भी जारी थी. उसी बीच एक पत्थर आ कर पुलिस वालों के बीच गिरा, जो किसी असामाजिक तत्त्व की भड़काने वाली काररवाई थी. अचानक बिना चेतावनी के गोलियां चल पड़ीं. मजिस्ट्रेट को आदेश देते हुए किसी ने नहीं सुना.

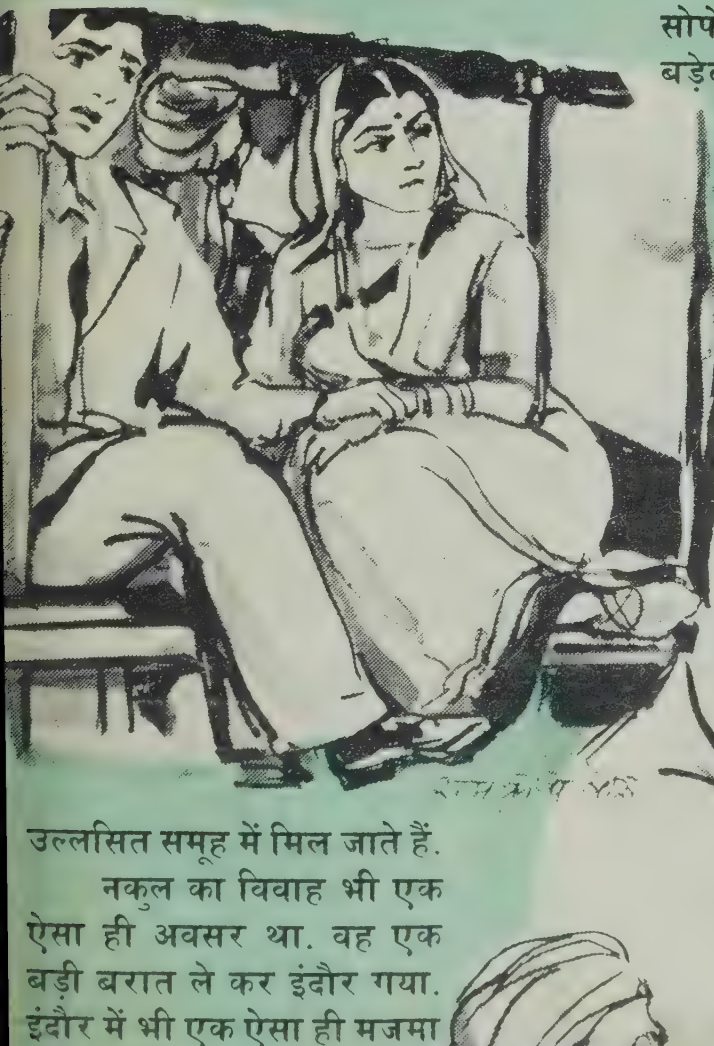
बड़े भाई साहब अगली पंक्ति में थे. पहले उन्हीं को गोली लगी और वह वहीं धराशायी हो गए. फिर एकएक कर के लाशें गिरने लगीं. उसी बीच भगदड़ मच गई. भाई साहब की लाश अन्य लाशों के साथ अस्पताल पहुंचा दी गई थी. पोस्टमार्टम के बाद लाश घरवालों को सौंप दी गई.

भाभी की आंखें पथरा गई थीं. एक कतरा आंसू भी नहीं गिरा था. वह एकटक भाई साहब की गोलियों से छलनी लाश को देख रही थीं. आंखें मानो जबान बन गई थीं, जो कह रही थीं, "मैं ने तुम्हें कुछ नहीं दिया, न तुम से कुछ पाया. हम नदी के दो किनारे ही बने रहे. जाओ, हम दोनों ने बहुत भोगा है. तुम्हें तो मुक्ति मिल गई. हम अभी भोगने के लिए हैं. त्याग और संन्यास का तुम्हारा फितूर हम सब के लिए कितना मंहगा पड़ा, यह हम लोग ही जानते हैं. धर्म की दी गई पीड़ा हमारा सारा जीवन झुलसा गई."

दहशत

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

'शादी के बाद नकुल और परिधि एक सोफे पर बैठा दिए गए. छेड़छाड़ जारी थी. बड़ेबुजुर्ग कभीकभी अंदर ही अंदर





सागर में जिस तरह देशदेश की नदियां आ कर मिल जाती हैं उसी तरह विवाह के समय दूरदूर से जाने, अनजाने लोग भी आ कर एक लहराते उल्लसित समूह में मिल जाते हैं.

नकुल का विवाह भी एक ऐसा ही अवसर था. वह एक बड़ी बरात ले कर इंदौर गया. इंदौर में भी एक ऐसा ही मजमा जमा था. जितनी जल्दी एकदूसरे से जानपहचान की जा रही थी उतनी जल्दी ही लोग भूलते भी जा रहे थे. आखिर इस भीड़भाड़ में कितने चेहरे याद रहते हैं.

नवविवाहित नकुल और परिधि ने जिस उत्साह से सांची घूमने का कार्यक्रम बनाया था वह तो यात्रा के दौरान हुई गड़बड़ से ही ठंडा पड़ गया था. परंतु वहां पहुंच कर प्राचीन गुफाएं देखने के लालच में उन्हें जिस दहशत ने आ घेरा था क्या उस से उन्हें निजात मिल सकी?

मुसकराते हुए अनुशासन का अंकुश लगा देते थे, परंतु नाकामयाबी पर क्रोध नहीं आता था. वे सोचते 'ऐसा अवसर कौन सा बारबार आता है.'

''कहो पारू, खुश हो न?''

''जी मौसाजी,'' परिधि ने मुसकरा कर लज्जा से सिर हिला दिया.

''तो कब आ रही हो हमारे यहां? नकुल बाबू को साथ ले कर आना. यह मेरा निमंत्रण है,'' मौसाजी के स्वर में प्यार था, औपचारिकता नहीं.

नकुल ने ध्यान से देखा. तो यह हैं मौसाजी. याद रखना होगा. बचपन में पहाड़े याद करना इतना कठिन नहीं लगता था, जितना इस समय इतने सारे चेहरे और रिश्ते याद रखना. अजीब विडंबना है.

इस बार मौसाजी ने नकुल को संबोधित कर के कहा, ''नकुल बाबू, पारू को ले कर हमारे यहां भोपाल जरूर आइएगा. बहुत सुंदर शहर है.''

''जी, जरूर आऊंगा,'' नकुल ने लजीले स्वर में कहा. एकाएक किसी से खुल कर बात करना संभव नहीं होता.

''भई, वादा करना होगा,'' मौसाजी ने इसरार किया.

''जी,'' नकुल ने हौले से परिधि की ओर इशारा करते हुए कहा, ''यह तो अब इन पर ही निर्भर है.''

मौसाजी ठठा कर हंस पड़े, ''यह है अच्छे पति की पहली पहचान...अपनी नकेल पत्नी के हाथ में दे देना...''

आसपास जो भी इस संवाद को सुन रहे थे, खिलखिला कर हंस पड़े. नकुल लजा गया और परिधि अपने में ही सिमट गई.

असलीनकली सबतरह की सालियां मौजूद थीं, लगीं टांग खींचने.

परिधि ससुराल में केवल तीन दिन रही मां की बीमारी का संदेश ले कर भाई आ पहुंचा. परिधि तो जाने को तैयार हो गई पर नकुल न जा सका. सोचा, 'कुछ दिन बाद लंबी छुट्टी ले कर जाऊंगा.'

नकुल ने बेमन से परिधि को भाई सहित ट्रेन में चढ़ा दिया. परिधि मां की बीमारी से इतनी चिंतित नहीं थी, जितना कि नकुल से बिछड़ने की व्यथा से दुखी थी.

10 दिन बाद नकुल भी अपनी ससुराल इंदौर जा पहुंचा. अपनी सास को एकदम स्वस्थ व हट्टीकट्टी देख कर चकित रह गया. बेटी को बुलाने का बहुत पुराना नुसखा था.

खैर, यह सब तो छोटीमोटी बातें थीं असल और प्रमुख बात तो यह थी कि इन छुट्टियों को अब हनीमून में बदलना था नकुल और परिधि, जब भी अवसर मिलता, घूमनेफिरने व सैरसपाटे का कार्यक्रम बनाते, परंतु लज्जा के मारे किसी से कुछ न कह पाते. हां, इंदौर और उस के आसपास के सब दर्शनीय स्थल सालेसालियों की निगरानी में अवश्य देख लिए. सब से मुश्किल यह थी कि उन्हें अकेले जाने का कोई अवसर नहीं मिलता था. साफसाफ कैसे कहें कि मेहरबानी कर के हमें अकेले छोड़ दो. वे सोचते, 'छोटे तो चलो नादान हैं, पर बड़ेबूढ़ों को तो समझना चाहिए.'

पांचवें दिन भोपाल से मौसाजी का फोन आ गया कि तुरंत पारू और नकुल को भेज दें. इस निमंत्रण पर दोनों का दिल उछल पड़ा. सोचा, 'मौसामौसी को तो पटा लेंगे और अकेले खूब घूमेंगे.'

शारि



"ऐसा है कि यहां एक पैसेंजर गाड़ी आएगी लेकिन वह भी रात में." स्टेशन मास्टर ने कहा.

भोपाल में दोनों का विशेष स्वागत हुआ. बहुत अच्छा लगा. मौसाजी ने पर्यटन स्थलों की सूची बना दी. हर दिन एक जगह घूम कर आ सकते थे. सुबह जाओ और शाम तक वापस. नकुल को भी यह अच्छा लगा.

सांची के स्तूप परिधि ने भी नहीं देखे थे. नकुल ने भी वहां जाने की इच्छा प्रकट की.

"सुबह की पंजाब मेल पकड़ो," मौसाजी ने कहा, "बंबई जाने वाली हर ट्रेन पर्यटन स्थल होने के कारण सांची पर एक मिनट को यात्रियों की सुविधा के लिए रुकती है. और ज्यादा दूर भी नहीं है. देखने के बाद जो कोई ट्रेन इधर आए, उस में बैठ कर आ जाना, ठीक...?"

"जी," नकुल ने उत्साह से कहा.

दूसरे दिन दोनों सुबह उठ कर जाने के लिए तैयार हो गए. नया जोड़ा था, इसलिए भड़कीले कपड़े पहनना बुरी बात नहीं थी. नकुल ने आकर्षक रंगीन कमीज और उस से मेल खाती पैंट पहन ली थी. कंधे पर कैमरा लटका लिया और आंखों पर धूप का काला चश्मा लगा लिया. परिधि ने बंगलौरी सिल्क की बहुमूल्य जरीदार चौड़े बार्डर की साड़ी पहनी. गले में सोने की चेन और ऊपर से लाकेट वाला भारी हार पहना. नाक में हीरे की लौंग और कानों में सोने के टाप्स. कंधे पर सुनहरा पर्स, जो रुपयों से भरा हुआ था. अन्य शृंगारप्रसाधन की वस्तुएं भी उस में थीं. दूर से ही लगता था कि नवविवाहित जोड़ा चला आ रहा है.

पंजाब मेल आने में कुछ देर थी, इसलिए बेसब्री से दोनों हाथ में हाथ डाले टहलते रहे और न जाने क्याक्या निरर्थक बातें करकर के हंसते रहे. वे इस बात से बेखबर थे कि सब लोग व्यंग्यभरी मुसकराहट से उन्हें ही देख रहे हैं.

अचानक शोर मचा कि पंजाब मेल आ रही है. प्लेटफार्म पर भगदड़ सी मच गई. घुसपैठ का सा आलम छा गया. जब इस अनियंत्रित भीड़ से पाला पड़ा तो नकुल को एहसास हुआ कि उस का 'अति विशिष्ट व्यक्ति' का दर्जा समाप्त हो गया है. वह अब आम आदमियों के समूह में है. परिधि का हाथ पकड़ कर एक डब्बे से घुस गया. ट्रेन के चलने तक दोनों खड़े रहे.

ट्रेन चल पड़ी तो दोनों ने देखा कि एक

बर्थ पर अधेड़ पतिपत्नी पैर पसार कर बैठे हुए हैं. उन की लड़की खिड़की के पास बैठी हुई थी. उस औरत ने परिधि की ओर देखा और मुसकरा दी. परिधि भी संकोच से मुसकरा दी.

"नई शादी हुई है?" उस ने निरर्थक प्रश्न पूछा.

परिधि ने लजा कर सिर हिला दिया.

पति को कंधा मार कर औरत ने कहा, "नूतन वधू...इन के लिए जगह बनाओ."

पति शीघ्र ही सिमट गया और पत्नी के पास खिसक गया. नकुल और परिधि ने एकसाथ 'धन्यवाद' कहा और बैठ गए.

साड़ी की ओर प्रशंसा से देखते हुए महिला ने कहा, "बड़ी अच्छी साड़ी है...तुम्हारे ऊपर बड़ी खिल रही है."

नकुल मुसकराया और परिधि लजाई.

"हार काफी भारी है...8-9 तोले का तो होगा?" उस ने पूछा.

"शायद," परिधि ने कहा, "मुझे ठीक पता नहीं."

"कब हुई शादी?"

"20-25 दिन हो गए हैं..."

पति मुसकराया और पत्नी हंसी.

"यह क्या करते हैं?" उस ने नकुल की ओर संकेत किया.

परिधि ने पति की ओर देखा.

नकुल ने कहा, "सरकारी बैंक में हूं."

"ओह," महिला खिलखिलाई, "रुपया ही रुपया..."

तभी लड़की बोली, "मां, देखो, दीदी के हाथों में कितनी सुंदर मेहंदी लगी है."

"हां, अभी तो मेहंदी भी नहीं छूटी...तेरे हाथों में भी ऐसी ही लगवाऊंगी."

लड़की बोली, "धत."

परिधि भी हंसे बिना न रह सकी. नकुल मुसकराया.

तभी अधेड़ आदमी ने पूछा, "कहां जा रहे हो?"

"सांची," नकुल ने गर्व से कहा.

"क्या?" उस ने अचरज से कहा, "सांची जा रहे हो?"

"हां क्यों, क्या हुआ?"

"पर यह गाड़ी तो सांची नहीं जाएगी. सांची के लिए तो बंबई जाने वाली ट्रेन में बैठना था."

"क्या यह पंजाब मेल नहीं है?" नकुल ने घबरा कर पूछा.

"पंजाब मेल तो है, पर यह बंबई से आ रही है," उस ने सलाह दी, "अगले स्टेशन पर उतर जाना."

सिर मुंडाते ही ओले पड़े. पहली बार तो हनीमून यात्रा को निकले और वह भी उलटी दिशा में. कुछ यात्री हंसे तो कुछ लोगों ने सहानुभूति प्रदर्शित की. परिधि के माथे पर घबराहट के मारे पसीना चमकने लगा. दिल धड़क रहा था. वह नकुल का हाथ पकड़ कर बोली, "अब क्या होगा?"

"अगले स्टेशन पर उतर जाएंगे," नकुल ने अपने स्वर में नियंत्रण रखते हुए हुए कहा.

किसी ने सांत्वना दी, "अब अगला स्टेशन 2 घंटे बाद आएगा."

अधेड़ दंपती इस तरह चिंतित थे, मानो वे दोनों उन्हीं के रिश्तेदार हों.

कोई एक घंटा हुआ होगा कि ट्रेन की गति कम होने लगी.

"लगता है, क्रासिंग है," एक यात्री ने कहा, "दूसरी ओर से ट्रेन आ रही होगी."

एक छोटे स्टेशन पर गाड़ी रुक गई. नकुल ने परिधि का हाथ पकड़ा और उठ खड़ा हुआ. अपने हितैषियों को धन्यवाद दे कर दोनों तुरंत उतर गए.

एकदम सुनसान स्टेशन था. नाम भी कभी नहीं सुना था. नकुल खोया सा खड़ा था और परिधि के दिल में तरहतरह की आशंकाएं उभर रही थीं. वहां की निर्जनता भय पैदा कर रही थी. किसी अनहोनी की शंका दबाए नहीं दब रही थी. इधरउधर देखा. बैठने को एक बेंच भी न थी. दोनों बारबार घड़ी देख रहे थे.



"कुंवर साहब, बाई साहिबा तो यहीं की हैं सो हुई हमारी बेटी और आप मेहमान. अब मेहमान से रुपया लूंगा तो क्या मुंह दिखाऊंगा." बाबू खां बोला.

10 मिनट बाद दूसरी ट्रेन धड़धड़ाती हुई निकल गई. 5 मिनट बाद यह ट्रेन भी चल दी. जो कुछ चहलपहल थी, वह भी जाती रही. सब्र पर बेचैनी हावी हो रही थी.

"यहीं रुको," नकुल को और कुछ न सूझा तो कहा, "मैं स्टेशन मास्टर से पूछ कर आता हूं."

परिधि घबरा कर बोली, "नहींनहीं, मैं भी साथ चलूंगी."

दोनों स्टेशन मास्टर के कक्ष में पहुंचे. छोटा स्टेशन होने के कारण बहुत सारे काम स्टेशन मास्टर को स्वयं करने पड़ते थे. उस के पास केवल एक सहायक था. ट्रेन को हरी झंडी दिखा कर अभीअभी आ कर बैठा था. दोनों को उस ने आश्चर्य से देखा.

नकुल ने अपनी कहानी सुनाई और पूछा, "भोपाल के लिए अब कौन सी गाड़ी मिलेगी और कब तक...?"

स्टेशन मास्टर, जो अभी तक बड़ी गंभीरता से सुन रहा था, मुसकरा पड़ा और बोला, "नईनई शादी हुई है? मेरी बेटी की भी अभी शादी हुई है. आप लोग खड़े क्यों हैं...बैठिए."

दो लंगड़ी सी धूलधूसरित कुरसियां थीं. नकुल ने पास पड़े झाड़न से थोड़ा सा पोंछा और फिर दोनों बैठने लगे.

स्टेशन मास्टर ने कहा, "संभल के... ऐसा है कि यहां एक पैसेंजर गाड़ी आएगी, लेकिन वह भी रात में."

नकुल घबरा गया, "रात में...?"

परिधि का स्वर भी कांप गया, "रात में...? अब क्या होगा..."

नकुल ने चिंतित स्वर में कहा, "[illegible] करेंगे क्या दिनभर"

"मौसाजी भी चिंता [illegible] परिधि की आंखें गीली हो गईं.

नकुल ने अपनी घबराहट दबाते हुए कहा, "कोई बात नहीं. बाहर देखते हैं कोई टैक्सी तो मिल ही जाएगी."

स्टेशन मास्टर मुसकराया और फिर हंस पड़ा, "टैक्सी तो नहीं, हां...बैलगाड़ी तो मिल ही जाएगी."

परिधि ने मन ही मन कोसा, 'कैसा हंस रहा है हमारी विपत्ति पर. इस की बेटी होती तो...'

स्टेशन मास्टर का टेलीफोन बज उठा. उस ने चीखचीख कर विभागीय भाषा में बात की और कुछ लिखा.

फिर मुसकरा कर बोला, "लो, आप का काम बन गया. एक मालगाड़ी आने वाली है. मैं उसे एक मिनट को रोक लूंगा. उसी में बैठ कर चले जाना."

"मालगाड़ी में?" नकुल को विश्वास न हुआ.

"हां, गार्ड के केबिन में बैठ जाना...मैं बोल दूंगा."

परिधि ने अपने बहुमूल्य वस्त्रों व आभूषणों को देखा. मन में विचार आया, इन के साथ मालगाड़ी में कैसे बैठ सकेगी. फिर भी संतोष की ठंडी सांस छोड़ी.

"बहुतबहुत धन्यवाद," नकुल ने कृतज्ञता से कहा.

स्टेशन मास्टर लापरवाही से बोला, "काहे का धन्यवाद. मुसीबत में पड़े यात्रियों की मदद करना तो इनसानी कर्तव्य है."

"कब आएगी गाड़ी?" नकुल ने पूछा.

"एक घंटे में. तब तक चाय पीजिए."

नकुल और परिधि उठने लगे.

"अरेअरे, कहां जा रहे हैं? यहां कुछ नहीं मिलेगा. ट्रेन के समय पर ही चाय वाला आता है."

स्टेशन मास्टर ने अपने खलासी को पुकारा, "अरे मातादीन...मातादीन..."

"जी," मातादीन अलादीन के जिन्न की तरह प्रकट हुआ.

"साहब लोगों के लिए चाय बना कर लाओ, और कुछ खाने को भी."

"नहींनहीं," नकुल ने उलझन में पड़ कर कहा, "इतना कष्ट मत उठाइए. हम लोग खा कर चले थे."

स्टेशन मास्टर ने उत्तर नहीं दिया. वह किसी काम से बाहर चला गया.

थोड़ी देर बाद मातदीन दो गिलासों में चाय ले आया. एक तश्तरी में कुछ बिस्कुट भी थे. गिलास गंदे थे. पर उन्होंने अनदेखी कर दी.

थोड़ी देर बार मातादीन गिलास उठाने आया. नकुल ने पर्स खोल कर पैसे देने चाहे तो उस ने सिर हिला दिया, "साहब ने मना कर दिया है," कह कर वह चला गया.

मालगाड़ी आने पर स्टेशन मास्टर ने लाल झंडी दिखा कर उसे रोक लिया. गार्ड से बात की और नकुल व परिधि को उस में बैठा दिया. गाड़ी चलने लगी तो कृतज्ञता से दोनों ने स्टेशन मास्टर को धन्यवाद दे कर प्रणाम भी किया.

जब वे भोपाल पहुंचे तो दिन के 12 बजे थे. सोचा, 'अगर इस अनुभव के बाद वापस घर इतनी जल्दी पहुंच जाएंगे तो सब लोग हंसी उड़ाएंगे.'

नकुल ने पूछा, "चलना है सांची?"

"क्या अभी दिल नहीं भरा?" परिधि गुस्से से बोली.

"इतनी जल्दी घर जा कर करेंगे क्या?"

"सो तो है."

"मैं पूछ कर आता हूं."

"नहीं, मैं भी साथ चलूंगी."

"भरोसा नहीं रहा मुझ पर?" नकुल हंसा.

"नहीं, मुझे अकेले अच्छा नहीं लगेगा."

दोनों पूछताछ खिड़की पर पहुंचे. मालूम हुआ कि एक ट्रेन आ रही है अभीअभी, वह सांची जाएगी. दोनों लपक कर पहुंचे. ट्रेन की आवाज आ रही थी. जब रुकी तो नकुल ने 2-3 लोगों से पूछ कर पुष्टि कर ली कि वास्तव में ही यह ट्रेन सांची

रुकेगी. दूध का जला छाछ को भी फूंकफूंक कर पीता है. ट्रेन में बैठ गए और कुछ ही देर में वे सांची के स्टेशन पर थे.

सांची के स्तूप कुछ अधिक दूर नहीं थे. वह प्रसिद्ध द्वार, जिसे अब तक तसवीरों में ही देखा था, उन के सामने था. इतनी सुंदर मूर्तियां होंगी, यह आशा न थी. मुग्ध से खड़े रह गए. यह सब देखने में अधिक समय नहीं लगा. अन्य कोई दर्शनीय स्थल वहां था भी नहीं.

जब वापस आए तो 2 बजे थे. ट्रेन के लिए पूछा तो पता लगा भोपाल के लिए गाड़ी अब 6 बजे मिलेगी. पूरे 4 घंटे कैसे और कहां बिताएं?

टहलते हुए बाहर निकले. पर्यटकों की न तो भीड़ थी और न ही चहलपहल. जी उकताने लगा. एक इकलौता तांगा खड़ा था. तांगेवाला पैर पसारे सो रहा था. उसे हिलाया नकुल ने. वह अचकचा कर आंखें मलता हुआ उठ बैठा. सब से पहले उस ने पास रखा रंगबिरंगा साफा अपने सिर पर रखा. बड़ीबड़ी मूंछों पर हाथ फेर कर उन्हें नुकीला किया.

"जी साहब," उस ने पूछा, "कहां जाएंगे?"

"पता नहीं," नकुल उस की भावभंगिमा पर मुसकरा कर बोला, "तुम ही बताओ?"

"स्तूप ही देखने आते हैं लोग. वहां चलेंगे?"

"वह तो देख आए. दरअसल ट्रेन में अभी 4 घंटे हैं. अगर आसपास कुछ और हो तो बताओ."

तांगेवाले ने सोच कर कहा, "साहब, यहां से कुछ ही मील दूर बहुत पुरानी गुफाएं हैं. खंडहर सी पड़ी हैं...पर अंदर की मूर्तियां देखने लायक हैं. एक ही पत्थर की हैं. एक गुफा में अजंन्ता जैसी चित्रकारी है. आप देखेंगे तो हैरान रह जाएंगे."

"बहुत देर लग जाएगी." नकुल ने परिधि की ओर देखा.



जख्म

जख्म अपने सहलाते क्या हो,
जमाने को दिखलाते क्या हो,
इक बार लब को सी के देखो,
दर्द को जरा पी के देखो,
जिंदगी क्या है?
मौत तुम से घबराएगी.

—सुनीता पांडे

परिधि अब रोमांटिक मुद्रा में थी. वह बोली, "चलो न, मौसम भी सुहावना है."

तांगेवाले ने कहा, "साहब, मेरा घोड़ा हवा से बातें करता है. आधे घंटे में पहुंचा दूंगा. एक घंटा घूमिए...समय से वापस."

"क्या लोगे?" नकुल ने पूछा.

"जो जी चाहे दे दीजिए. आज तो बोहनी भी नहीं हुई. बच्चों के लिए कुछ तो घर ले जाना है," तांगेवाले ने गहरी सांस ले कर कहा.

"भई अब तुम ही बता दो तो अच्छा है. बाद में तकरार हो तो अच्छा नहीं लगेगा," नकुल ने कहा.

तांगेवाले ने ध्यान से दोनों को देखा. सोचा, अच्छेखासे अमीर दिखाई दे रहे हैं. पर ठगना उस के जमीर में नहीं था.

"वैसे तो मैं 25 रुपए से कम नहीं लेता, पर आप 20 रुपए ही दे दीजिएगा." उस ने चाबुक संभाला.

"20 रुपए?" परिधि ने चौंक कर कहा.

"बाई साहिबा, 20 रुपए तो कुछ भी

नहीं हैं. मैं ने तो 50-50 रुपए भी कमाए हैं,'' तांगेवाले ने गर्व से कहा.

''नए लोग देख कर ठग रहे हो क्या?'' परिधि ने तीव्र स्वर में कहा.

तांगेवाले का मुंह उतर गया. उदासी से बोला, ''मैं क्या ठगूंगा बाई साहिबा, लोग मुझे ही ठग ले जाते हैं.''

नकुल को यह बहस अच्छी नहीं लगी. 20 रुपए देना उसे भी खल रहा था पर जब आदमी सैरसपाटे के लिए आए तो रुपए का मुंह नहीं देखना चाहिए. विवाहित जीवन की शुरुआत में पति को संकुचित और कंजूस भी नहीं दिखाई देना चाहिए. उस ने परिधि को चुप रहने का संकेत किया.

''ठीक है भई, 20 रुपए ही देंगे, पर आधे घंटे में पहुंचा देना. ऐसा न हो कि हमारी ट्रेन छूट जाए.''

''चिंता मत कीजिए, कुंवर साहब.'' उस ने आदर से कहा, ''अगर ट्रेन छूट गई तो अगले स्टेशन पर पकड़ लूंगा. मेरा शेरा तूफान मेल है.''

नकुल उस की बात पर हंस पड़ा. परिधि भी बिना मुसकराए न रह सकी.

''यहीं समय से पहुंचा दो, वही बहुत है,'' नकुल बोला.

तांगेवाले ने पीछे की सीट झाड़ते हुए कहा, ''आओ बाई साहिबा, संभल कर बैठना.''

दोनों पीछे संभल कर बैठ गए. तांगे की सवारी का अपना ही मजा है. सूरज बादलों में छिप रहा था और ठंडी हवा चलने लगी थी. आसपास की हरियाली ने तो वातावरण को मादक बना दिया था. परिधि सरक कर नकुल से चिपट गई.

''ट्ट ट्ट ट्ट ट्ट ट्ट, चल बेटा शेरा अपनी चाल,'' तांगेवाले ने चाबुक से घोड़े को छूते हुए कहा, ''बाबू खां की इज्जत तेरे हाथ में है.''

'बाबू खां?' परिधि चौंक गई. वेशभूषा और बातचीत से किसी भी तरह से यह आभास नहीं हुआ था कि तांगेवाला मुसलमान भी हो सकता है. कुछ महीने पहले ही भोपाल के एक भाग में हिंदू और मुसलमानों के बीच दंगे हुए थे. तब से काफी तनाव चल रहा था. वह नकुल के कान में फुसफुसाई तो उस ने हाथ दबा कर खामोश रहने को कहा.

''बाई साहिबा, आप तो यहीं की लगती हैं,'' बाबू खां ने मौन भंग करते हुए कहा, ''लेकिन कुंवर साहब यहां के नहीं हैं.''

''मैं दिल्ली का हूं.'' नकुल ने इस अंदाज से कहा, मानो दिल्ली के लोग छंटे हुए बदमाश होते हैं.

''नईनई शादी हुई है?'' बाबू खां ने चाबुक फटकारते हुए कहा.

''तुम्हें क्या दिखता है,'' परिधि ने झल्ला कर कहा.

बाबू खां झिड़की खा कर घोड़े से बोला, ''चल शेरा, अपनी चाल दिखा.''

कुछ ही मिनटों में काले बादल घिर आए. अंधेरा छाने लगा. ठंडी हवा से बदन सिहरने लगा. चारों तरफ जंगल ही जंगल था. पक्षियों के कलरव से आकाश गूंजने लगा. तभी गर्जना सुनाई दी.

''यहां शेर है क्या?'' नकुल ने दिल की घबराहट को छिपाते हुए पूछा.

''एक नहीं, कई शेर हैं, कुंवर साहब.'' बाबू खां हंस कर बोला, ''लेकिन सारे शेर मेरे दोस्त हैं. मैं तो उन्हें नाम से भी पुकारता हूं. एक बब्बर शेर है, लाला...और उस के साथ जो शेरनी रहती है, उसे मैं बुलाता हूं लालारुख के नाम से. बड़े खूंखार हैं दोनों, पर मेरे दोस्त हैं.''

परिधि डर के मारे आधी हुई जा रही थी. बादल कड़के. बिजली चमकी. बाबू खां ने 'ट्ट ट्ट ट्ट' कर के घोड़े को चाबुक छुआया. घोड़े की रफ्तार और तेज हो गई.

''लगता है, सामने झाड़ में शामली है,'' बाबू ने कहा, ''नरभक्षी है. जब से शिकारियों की गोली खाई है, बस आदमियों का ही शिकार करती है.''

''भई, वापस चलो,'' परिधि ने डर

कर लगभग चीखते हुए कहा.

"बाई साहिबा, डरो मत. मेरे होते शेर आप का कुछ नहीं बिगाड़ सकता," बाबू खां ने अकड़ कर कहा.

हिरनों के एक झुंड ने जंगल से निकल कर सड़क पार की और दूसरी ओर ऊंचेऊंचे पेड़ों के बीच खो गया. बाबू खां को लगाम खींच कर घोड़े को रोकना पड़ा.

"हिरन भाग रहे हैं," उस ने मस्ती से कहा, "जरूर शेर इन का पीछा कर रहा है."

अब तो नकुल का दिल भी हिल गया. सुंदर सुहावना मौसम अचानक इतना भयानक भी हो सकता है, यह अंदाजा उसे आज ही हुआ.

"क्या आगे जाना ठीक होगा?" नकुल ने चिपटती हुई परिधि को सांत्वना से दबाते हुए पूछा.

"अरे कुंवर साहब, इतमीनान रखें. शेरों के बीच तो मैं पला हूं. मैं सब को जानता हूं. बहुत पुराना बाशिंदा हूं," बाबू खां ने घमंड से छाती फुलाते हुए कहा, "बस, अब आ ही गए. दूर ही कितना है."

शीघ्र ही तेज हवा से बादल उड़ गए. हलकी बौछार सड़क को केवल गीला कर पाई. पहले सूरज की लाली दिखाई दी और फिर वह अपने पूरे तेज के साथ निकल आया. परिधि की हृदय गति कुछ सामान्य हुई. उस ने धीरे से कहा, "मुझे नहीं देखनी कोई गुफावुफा, इस से कहिए वापस चले."

नकुल ने साहस बंधाया, "अब तो आ ही गए हैं. मौसम भी अच्छा हो गया है, चिंता मत करो."

"मुझे इस से डर लग रहा है," परिधि ने बाबू खां की ओर संकेत करते हुए कहा.

"डरने की क्या बात है? मैं जो साथ हूं," नकुल ने किसी फिल्मी हीरो का संवाद दोहराया. वैसे अंदर ही अंदर वह भी बेचैन था.

बाबू खां ने कहा, "यह जगह देख रहे हैं न, साहब? तीन दिन पहले यहां डाकुओं ने एक बस को लूट लिया था. सैलानियों की बस थी. बहुत सारे तो विदेशी थे..."

"क्या कहा?" परिधि एकाएक भयभीत स्वर में बोली, "क्या यहां डाकू भी आते हैं?"

"अरे, बाई साहिबा, यह तो इलाका ही डाकुओं का है. मंगल सिंह का इलाका है...बड़ा जालिम डाकू है," उस ने चाबुक हवा में लहराते हुए कहा.

"तो तुम हमें यहां लाए क्यों?" परिधि ने चीख कर कहा.

बाबू खां हंस पड़ा, यह हंसी भयंकर अट्टहास सी लगी.

नकुल ने धीरे से कहा, "शांत रहो...तसल्ली रखो."

"रुपयापैसा, जेवर कुछ नहीं छोड़ता, मंगल सिंह," बाबू खां ने चटखारे लेते हुए कहा.

परिधि का हाथ अपने आभूषणों पर गया. नकुल को भी कुछ ऐसा एहसास हुआ

अर्द्धांगिनी साथ छोड़ सकती है

जो पति अपनी पत्नी को बिलकुल समय नहीं देते और हर वक्त अपने शौक में खोए रहते हैं, उन्हें पत्नी से जुदा होना पड़ सकता है.

लंदन की एक अदालत में गोल्फ प्रेमी पति से दुखी एक पत्नी ने तलाक की याचिका दायर की. पत्नी का आरोप था, "वह मुझ से अधिक गोल्फ को पसंद करते हैं. आधीआधी रात तक गोल्फ खेलते हैं. उन का इंतजार करतेकरते मैं थक जाती हूं."

पत्नी के आरोप का जवाब देने के लिए पति महोदय अदालत में उपस्थित नहीं हुए. वह [illegible] समय गोल्फ खेल रहे थे. अदालत ने पत्नी के पक्ष में फैसला सुनाते हुए कहा कि इस असहनी[illegible] पत्नी अपने पति के साथ नहीं रह सकती.

कि बाबू खां उन्हें लूटने की ही नीयत से यहां लाया है. दूरदूर तक सन्नाटा था. एक भी आदमी दिखाई नहीं दे रहा था.

नकुल का इशारा समझ कर परिधि ने आहिस्ता से अपने आभूषण उतारे और पर्स में डाल लिए. सोचा, अब उन्हें सावधान रहना है, अपनी रक्षा आप ही करनी है. सीधे दिखने वाले इनसान ही धोखा देते हैं.

बाबू खां बोले जा रहा था, "पर आप को डरने की जरूरत नहीं. मंगल सिंह मेरा दोस्त है. उस ने मेरी मां के हाथ का बना सालन और रोटी खाई है. बहुत इज्जत करता है मेरी..."

'ओह, तो बाबू खां मंगल सिंह के गिरोह का आदमी है. फुसला कर लोगों को यहां जंगल में ले आता है और लूट लेता है. एक तो यहां आना ही मूर्खता थी, और उस पर इतने सारे आभूषण भी लाद लिए,' नकुल पछता रहा था और परिधि दहशत से जड़ हो गई थी.

"लीजिए साहब, गुफाएं भी आ गईं," बाबू खां ने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "बस, बेटे बस...आप जल्दी से घूम आइए...मैं शेरू को दानापानी देता हूं."

परिधि लगभग कूद पड़ी. वह तो नकुल ने संभाल लिया, नहीं तो मुंह के बल गिरती. उस ने बाबू खां को डरीडरी निगाहों से देखा. उस की बड़ीबड़ी नुकीली मूंछ देख कर अब और डर लगा. वह अंदर तक कांप गई.

नकुल ने सोचा, क्यों न कैमरे से बाबू खां की एक तसवीर ले ले? अगर जिंदा बच गया तो पुलिस को दिखा कर उस की शिनाख्त तो करवा सकता है. लेकिन तसवीर उस की निगाह बचा कर उतारनी होगी. कहीं उसे शक न हो जाए.

दोनों ने एकदूसरे का हाथ पकड़ा और तेजी से कदम उठाते हुए गुफा की ओर चल पड़े. मन में बारबार यह विचार उठ रहा था कि कहीं मंगल सिंह के आदमी और बाबू खां उन्हें गुफा में ही तो नहीं मार डालेंगे? अंदर जाना ठीक भी होगा या नहीं? मुड़मुड़ कर पीछे देख रहे थे. बाबू खां कहीं नहीं दिखाई दे रहा था. सोचा शायद मंगल सिंह को खबर देने गया हो. मुसीबत तो यह थी कि लौटने का कोई साधन भी नहीं था. इतना आतंक उन्होंने पहले कभी महसूस नहीं किया था. दोनों के दिल बुरी तरह धड़क रहे थे. गुफा के द्वार पर पहुंच कर उन्होंने देखा, अंदर गहन अंधकार था.

परिधि ने रोका, "अंदर मत जाओ खतरा है...भाग चलो."

"कहां जाएंगे भाग कर? वैसे अगर छिपना ही पड़ा तो यह गुफा ही अच्छी है."

बड़े बेमन से वह नकुल का हाथ पकड़े अंदर घुसी. हाथ और कस कर पकड़ लिया. हवा में तीव्र गति से कोई तीर सा आया और परिधि के सिर को छूता हुआ निकल गया. वह डर कर चीख पड़ी. नकुल को भी डर लगा कि यह क्या बला है?

धैर्य रखते हुए थोड़ा अंदर गए ही थे कि एकाएक प्रकाश में आ गए. राहत की सांस ली. तब समझ में आया कि इन गुफाओं में तो चमगादड़ों का बसेरा होता है. उन पर हमला उन्होंने ही बोला था. दीवारों पर बनी मूर्तियां देख कर अचरज हुआ कि क्या ये सब इनसानी हाथों का करिश्मा हैं.

हिम्मत कर के आगे बढ़ते गए और देखते गए. तुरंत ही दूसरे द्वार पर निकल आए. आगेपीछे दूरदूर तक देखा, कोई हमलावर दिखाई नहीं दिया. ठंडी सांस ले कर दूसरी गुफा में घुसे और फिर तीसरी में. अजंता जैसी सुंदर चित्रकारी देख कर मुग्ध हो गए. क्षणभर भयमुक्त भी हो गए. इस के बाद तो जल्दीजल्दी दो और गुफाओं में गए और फिर लौटने का निर्णय लिया. मन में भारी बेचैनी थी. आने वाले संकट से लड़ना भी तो था.

आहिस्ताआहिस्ता सावधानी से पैर रखते हुए चौकन्ने हो कर दोनों उस ओर

चले, जहां तांगा छोड़ आए थे. सोचने लगे, 'पता नहीं अब तक उन पर हमला क्यों नहीं हुआ?' शायद उन्हें लूटने के लिए कोई और जगह चुनी होगी.

परिधि ने लगभग कांपते स्वर में कहा, "मैं तो सारे आभूषण दे दूंगी. बस जान बख्श दें. आप कुछ रुपया अंदर की जेब में रख लीजिए...मैं अपना पर्स भी दे दूंगी."

नकुल ने अपनी घबराहट को छिपाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "देखो तो सही, क्या होता है. शायद कोई मदद ही मिल जाए."

"कौन मदद करेगा इस बियाबान जंगल में," परिधि ने हताश स्वर में कहा.

नकुल ने उत्तर नहीं दिया.

वे तांगे के पास पहुंचे. बाबू खां का कोई पता न था.

तभी एक झाड़ी में से आवाज आई, "अरे, इतनी जल्दी आ गए आप. क्या सारी गुफाएं नहीं देखीं?"

नकुल ने कहा, "अब जल्दी से वापस ले चलो. बहुत देर हो गई है...अंधेरा भी हो रहा है."

"बैठिए," बाबू खां ने घोड़े को थपथपाते हुए कहा, "चल मेरे शेरा. तूफान मेल है मेरा शेरा."

इस बार उन्हें हंसी नहीं आई. बाबू खां और डरावना लग रहा था. वे सोचने लगे, 'पता नहीं क्या षड्यंत्र रच रहा है?'

ठंडी हवा के थपेड़े खा कर परिधि नकुल के कंधे से लग कर सो गई. पता नहीं चला कि कब स्टेशन आ गया.

"अरे, स्टेशन आ गया?" परिधि ने चौंक कर कहा. उसे सहसा विश्वास ही न हुआ कि वह यहां जीतीजागती खड़ी है.

नकुल नीचे उतर चुका था. परिधि को उतरने के लिए सहारे के लिए अपना हाथ बढ़ाया. नीचे उतर कर जब उस ने मुसकराते हुए नकुल को देखा तो लगा उसे स्वयं मुसकराए कई साल हो चुके हैं. वह मुसकराना भूल तो नहीं गई?

नकुल ने जेब में हाथ डाला और 20 रुपए निकाल कर बाबू खां की ओर बढ़ाए.

बाबू खां पीछे हट गया तो नकुल ने उसे आश्चर्य से देखा.

"रहने दीजिए, कुंवर साहब."

"क्या?" परिधि ने गुस्से से पूछा, "तुम ने 20 रुपए नहीं मांगे थे?"

नकुल ने सोचा, जान बच गई है. अगर लुट गए होते तो पास में कुछ न रहता. दरियादिली से 5 रुपए और जोड़ते हुए कहा, "लो भई, 25 रुपए ले लो. अब तो खुश हो?"

परिधि को पति पर क्रोध आया परंतु घूर कर देखा बाबू खां को.

बाबू खां ने बड़ी नम्रता से कहा, "कुंवर साहब, बाई साहिबा तो यहीं की हैं सो हुईं हमारी बेटी, और आप हुए हमारे मेहमान. अब अगर मेहमानों से रुपए लूंगा तो क्या दुनिया को मुंह दिखाने लायक रह जाऊंगा?"

नकुल अवाक रह गया और परिधि की आंखें झुक गईं. ●

नया समाल

कहानी ● शोभा मेहरोत्र

मुझे आज भी वह दिन याद है, जब मैं 13 वर्षों के अंतराल के पश्चात अचानक सुनीता का पत्र पा कर विभोर हो उठी थी. क्षणभर को किंकर्तव्यविमूढ़ सी ठगी रह गई. फिर पत्रवाहक को बैठने को कह मैं उत्तर लिखने में व्यस्त हो गई.

विवाह पूर्व जिस प्रकार उस का संदेश मिलते ही चप्पल पहन चल पड़ती थी, अब वैसा कर पाना नितांत असंभव था. दूसरे दिन ही मेरे बेटे की परीक्षा थी, तत्काल मेरा जाना संभव न था. अतः प्रत्युत्तर में लिख दिया कि आगामी सोमवार को मैं आ सकूंगी.

सुनीता से मेरी मित्रता की कहानी भी विचित्र थी. हमारे बीच आयु में 6 वर्ष का अंतर था. जिन दिनों वह विश्वविद्यालय में बी.ए. कर रही थी, मैं 9वीं कक्षा की छात्रा थी. पर वय का यह अंतराल हमारी मैत्री में बाधक न बन कर सहायक ही बना.

मुझे उस के सान्निध्य में वही सुख, संरक्षण का आभास होता, जो बड़ी बहन के साथ मिलता है. कक्षा छोड़ कर सिनेमा देखने, चाट खाने, जलपानगृह में दोसा खाने के क्षेत्र में वही मेरी गुरु थी. फिर उस का विवाह भी मुझ से काफी पूर्व हो गया. अब वह थोड़ा सा अंकुश भी समाप्त हो गया कि लड़कियों को अकेले इधरउधर नहीं घूमना चाहिए. विवाह होते ही पैसों का अभाव समाप्त हो गया. हम और भी स्वतंत्रता

घूमतीं.

जैसा कि किशोरावस्था में स्वाभा

है, मैं उन दिनों सुनीता व उस के पति मन

से बेहद प्रभावित थी. लंबे, सांवले जीज

मुझे बेहद शिष्ट, संयमी व शालीन ल

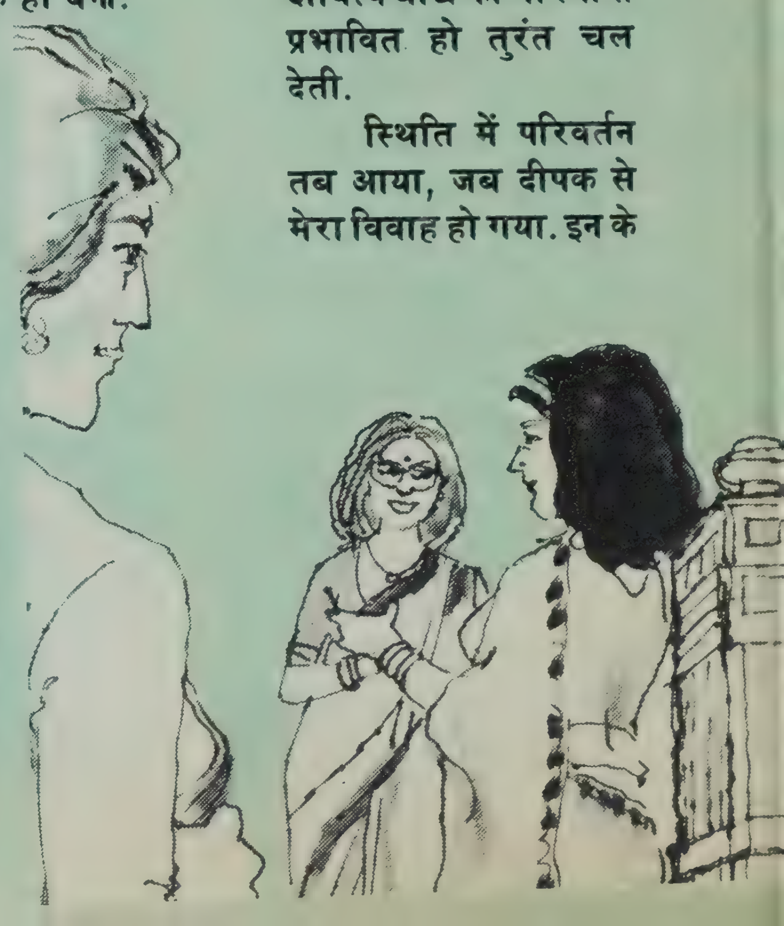
सत्य तो यह है कि मैं ने तब तक परिवा

बाहर किसी पुरुष को इस प्रकार नजदी

देखा भी न था.

सुनीता के मायके व ससुराल दोनों स्थानों में मुझे वही स्वीकृति प्राप्त थी, जो परिवार के अभिन्न सदस्य को मिलती है. तनिक सा कष्ट होते ही मेरी पुकार होती और मैं दायित्व बोध की गरिमा से प्रभावित हो तुरंत चल देती.

स्थिति में परिवर्तन तब आया, जब दीपक से मेरा विवाह हो गया. इन के



म, फिर 2 पुत्रों के जन्म ने मुझे अपनी ृहस्थी में इस प्रकार डुबो दिया कि मुझे किसी सखी की याद तक न रही. अब न वह ालसुलभ चपलता ही शेष थी, न अवकाश ही था कि पुरानी मित्रता को नेभाया जा सके. कुछ समय तक सुनीता के त्र आते रहे. फिर उत्तर के अभाव में उस ने भी पत्र भेजना बंद कर दिया.

सुनीता मेरी प्रतीक्षा न कर सकी और अगले ही दिन अपने बच्चों सहित आ गई. उसे देखते ही मुझे लगा कि मैं तो उसे कभी भूली ही नहीं थी. बच्चे सुनीता मौसी के लाए खिलौनों में व्यस्त हो गए. उस के किशोर पुत्रपुत्री अंकुर व आकांक्षा को मेरे छोटेछोटे बच्चे खिलौनों जैसे ही लगे. वे चारों शीघ्र ही मित्र बन गए.



वही स्नेह, वही अपनापन, दोनों के हृदय भीगभीग गए. न जाने कितनी अनकही बातें थीं हमारे बीच. न जाने कितने प्रसंग अधूरे थे. पूरे 13 वर्षों का लेखाजोखा देना व पाना था.

बातचीत में पता चला कि वह भी लखनऊ आ गई है, यद्यपि पति की नियुक्ति कानपुर में ही है. परंतु बच्चों का दाखिला यहां हो गया है, यहीं उस ने मकान बनवाना भी प्रारंभ कर दिया है. मेरा अपना कोई लखनऊ आ गया है, यह विचार करते ही जीवन में मानों फूल खिल गए.

संसार में सब से प्रिय रिश्ता मायके का होता है. फिर उस में बचपन की मित्रता तो सोने पर सुहागा, क्योंकि इस में रक्त संबंधियों जैसी विवशता नहीं होती. होता है केवल निःस्वार्थ प्रेम, लेनदेन से परे, एक सुखद, सहज, मानवीय अनुभूति, जिस पर प्रेम का भव्य प्रासाद खड़ा हो सकता है.

हम प्रायः एकदूसरे के घर आनेजाने लगे. समय का अंतराल स्नेह को मिटा न सका था. अनुकूल परिस्थितियों को पाते ही प्रेमधारा पुनः फूट निकली. दोनों परिवारों में ऐसा दृढ़ स्नेहसूत्र बंधा कि लगने लगा कि यह बंधन चिरस्थायी होगा.

एक तो सुनीता मुझ से आयु में बड़ी थी. फिर उस के पति भी उम्र के अनुसार मेरे पति से पद में भी बड़े थे. अतः दीपक उन का बहुत आदर करते. वह भी दीपक को छोटे भाई सा ही [illegible] देते. मेरी कोई [illegible] थी. मझे [illegible]ता कि

शायद बड़ी बहन सुनीता जैसी ही होती होगी. उस के बच्चे मुझे सगों जैसे ही प्यारे लगते. यद्यपि कभीकभी वे मूर्खतापूर्ण बातें भी करते, पर वे दोष भी मुझे प्यारे लगते. उन समस्त गलतियों के प्रति मेरा हृदय क्षमाशील बना रहता. प्रेम सचमुच अंधा होता है.

एक दिन सुनीता की बेटी आकांक्षा ने कहा, ''मौसी, कितने दिन हो गए, आप वही चूड़ियां पहने हैं, इन्हें बदलती क्यों नहीं?''

मैं ने हंस कर उत्तर दिया, ''तुम्हारे विवाह में ही नई पहनूंगी.''

बड़ा ही परिहासपूर्ण वातावरण था. सभी हंसीमजाक कर रहे थे कि अचानक आकांक्षा बोली, ''इसे पहन कर आप पूरी महरी लगती हैं.''

श्रम करने के लिए कई सेवक हैं तो फिर व्यर्थ की आपाधापी क्यों?

मेरे घर की स्थिति ठीक विपरीत थी. सीमित आय के कारण घर की पूर्ण व्यवस्था मेरे हाथ में थी. विपरीत गृहस्थ वातावरण होने पर भी हमारी मित्रता में कोई अंतर न था. मुझे लगता कि शायद उस जैसी परिस्थितियों में मैं वैसा ही करती जो वह कर रही है.

कुछ समय पश्चात हम पड़ोसी भी बन गए. हम हर जगह साथ जाते, मानो एक के बिना दूसरी का अस्तित्व ही अधूरा हो. हमारी मित्रता के निर्वाह में हमारे पतियों का सहयोग निश्चय ही सराहनीय था, अन्यथा यह संबंध कितने दिन निभ पाता? यदि एक दिन भी मैं उस के घर न जाती तो तुरंत बुलावा आ धमकता.

नेहा और सुनीता की दोस्ती विवाह के बाद पहले से भी प्रगाढ़ हो गई थी. वह सुनीता को अपनी बड़ी बहन की तरह मानती और उस के दुखसुख में परछाईं सी लगी रहती. लेकिन सुनीता के घर एक किराएदार परिवार के आते ही ऐसा परिवर्तन हुआ कि नेहा को अपनी हैसियत एक पुराने फेंके गए रूमाल सी लगने लगी. आखिर ऐसा क्या हुआ?

क्षणभर को मैं अवाक रह गई. हमारे यहां बच्चों को इतनी छूट नहीं दी जाती कि वे बड़ों से अशिष्टता करें. पर तुरंत ही मैं उसे बच्ची मान कर हंसने लगी.

जैसेजैसे हम नजदीक आते गए, सुनीता के घर की बहुत सी बातें स्पष्ट होने लगीं. उस का दैनिक जीवन देख कर यह भी स्पष्ट हो गया कि वेतन के अतिरिक्त भी वहां आय के अन्य स्रोत हैं. दिनरात धन का अपव्यय होता, बच्चे मनमाना व्यय करते, नौकर जितना चाहते लुटाते, गृहस्वामिनी चौके में पैर भी न रखती.

चौके में क्या बन रहा है, कौन कितना खा रहा है, कितना पिछले दरवाजे से फेंका जाता है, सुनीता को इन बातों से कोई प्रयोजन न था. जब यथेष्ठ मात्रा में धन है,

सुनीता की और मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी एकदम विपरीत थी. वह गांव से संबद्ध थी तो मैं ने केवल फिल्मों में ही गांव देखा था. वह छोटे कसबों व जिलों में रही थी तो मैं प्रारंभ से ही लखनऊ में थी. हमारे दृष्टिकोण व व्यवहार में भी वही अंतर था, जो इन परिस्थितियों में विकसित हुए व्यक्तित्वों में हो सकता है. अन्य सभी परिचितों व मित्रों से मेरा संबंध अत्यंत सीमित था. सुखदुख में सम्मिलित होने के अतिरिक्त मैं सभी से तटस्थ रहा करती थी.

परंतु सुनीता के संदर्भ में समस्त समीकरण बदल चुके थे. समस्त विपरीत परिस्थितियों के बावजूद दोनों परिवारों में



''तुम्हारे विभाग में ऊपर की आमदनी का जुगाड़ नहीं है क्या?'' नेहा ने कहा तो दीपक ने उसे आग्नेय नेत्रों से घूरा.

दर्शनीय मेल हो चुका था. बहुधा वह मेरे घर बैठी रहती और वहीं से बाजार जाने का कार्यक्रम बन जाता.

सुनीता कहती, ''नेहा, जरा 5 सौ रुपए रख लेना... मैं भी कुछ ले ही आऊंगी.''

मुझे इस में तनिक भी आपत्ति न होती क्योंकि बाद में वह मुझे रुपए लौटा देती थी. फिर अकसर ऐसा होने लगा. मैं उस के समक्ष यह स्पष्ट करने में लज्जा अनुभव करती कि मेरे घर में हमेशा हजार, 5 सौ रुपए नहीं रहते. कभी फीस के लिए रखे रुपए तो कभी दीपक के रखे आवश्यक रुपए ले कर मैं सुनीता के साथ चल देती. मेरे विचार से धनदौलत को मित्रता के बीच नहीं आने देना चाहिए.

मैं सुनीता से पैसा मांगने में कतराती. कई बार तो ऐसा भी हुआ कि मैं अंतिम 10 का नोट भी सुनीता को सौंप देती. फिर मुझे अत्यंत क्षोभ होता क्योंकि तुरंत वापस मांगने में मुझे लज्जा आती.

सुनीता मेरी स्थिति से पूर्णतः अनभिज्ञ थी. वह सीमित वेतनवालों की विवशता समझ ही न पाती. उस के मायके व ससुराल दोनों जगह ऊपरी कमाई की सुविधा थी. वह पैसों की कीमत जानती ही न थी.

बहुधा मुझे अपना जीवनस्तर हेय नजर आता. कभीकभी मैं सोचती, 'काश, दीपक की इतनी आय होती कि मैं भी सुनीता और उस के बच्चों पर हृदय खोल कर व्यय कर सकती.' एक दिन मैं ने धृष्टतापूर्वक दीपक से कहा, ''तुम्हारे विभाग में क्या ऊपरी आमदनी का जुगाड़ नहीं है?''

प्रत्युत्तर में उन्होंने आग्नेय नेत्रों से मुझे देखा तो फिर कुछ कहने का साहस न रहा.

सुनीता के नातेरिश्तेदार नित्य मेला सा लगाए रहते. जीजाजी की चाटुकारिता में ऐसी लच्छेदार बातें होतीं कि चाटुकारिता स्वयं लज्जित हो जाए. जो आता कुछ न कुछ वसूल कर ही जाता. सुनीता के बीमार पड़ने पर कई संबंधी आ जुटे. नौकरों पर ऐसा रोब गांठ जाता, मानो वे जरखरीद गुलाम हों. दूधदही का ऐसा अपव्यय होता कि देखा न जाता. जीजाजी की सरकारी जीप में रिश्तेदारों को लखनऊ घुमाया गया. कपड़ेलत्ते ले कर सब विदा हुए. लेकिन सुनीता अपने लोभी रिश्तेदारों की व्यथा-कथा मुझे ही सुना सकती थी क्योंकि मुझे उस से सच्ची सहानुभूति थी.

अकसर हम साथसाथ घूमने जातीं. अधिकतर बाहर खानेपीने में सुनीता ही व्यय करती. इस के दो कारण थे. एक तो मैं उस पर वही सहज अधिकार समझती थी, जो बड़ी बहन पर होता है और मुझे उस के सामने व्यय करने में वही लज्जाबोध होता, जैसा छोटी बहन को होता है. दूसरे, मुझे लगता कि 10-20 रुपए में सुनीता को क्या अंतर पड़ता है जबकि मेरे लिए उन का मूल्य था.

कभीकभी मैं भी उस के बच्चों पर उदारतापूर्वक व्यय करती थी, भले ही इस से मेरा बजट प्रभावित होता. पर दीपक कभी हस्तक्षेप न करते. मेरा परिवार तनमनधन से सुनीता को समर्पित था.

उन्हीं दिनों सुनीता के गांव में मुकदमेबाजी प्रारंभ हो गई. वह बहुधा उदास रहती. कहती, "पैसा नहीं है, पता नहीं अब खर्च कैसे चलेगा. मुकदमे में बहुत रुपया लग रहा है."

अब तक सुनीता का दुख मेरा दुख और उस की खुशी मेरी खुशी बन चुकी थी. मैं उस की आर्थिक परेशानी में उलझी रहने लगी. मेरे घर का व्यय सीमित था. बच्चे छोटे थे, मैं जैसे चाहती खर्च चला सकती थी. पर सुनीता के यहां ऐसा न था. अंकुर मध्य प्रदेश के इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ रहा था. घर में आएदिन मेहमानों का आनाजाना लगा रहता.

उन्हीं दिनों दीपक को विभाग से 14 हजार रुपया मिला. मैं ने सुनीता तक यह सुखद समाचार पहुंचाने में विलंब नहीं किया. उसे 14 हजार का चेक थमाते हुए मैं ने कहा, "तुम चिंता न करो. अभी इन रुपयों से काम चलाओ. फिर आगे कुछ जीजाजी करेंगे ही."

"जब आवश्यकता होगी, ले लूंगी," ऐसा कह कर सुनीता ने चेक लौटा दिया. हम सुनीता के कुछ काम आ सकेंगे, यह विचार मन में आते ही हृदय से मानो पत्थर उतर गया.

हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब हम ने देखा कि जीजाजी ने अगले ही दिन कार खरीद ली. मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तक तो पैसों का रोना रोया जाता था, आज अचानक नई कार कैसे खरीद ली? फिर मन को आश्वस्त किया, संभवतः विभाग से मिली होगी. पर तुरंत ही यह भ्रम भी टूट गया क्योंकि शीघ्र ही सुनीता के मकान की ऊपरी मंजिल जोरशोर से बनने लगी.

हमारा मोहभंग प्रारंभ हो चुका था. मेरे मायके व ससुराल में सभी उच्च पदों पर कार्यरत थे, परंतु कहीं धन का बाहुल्य न था. 25 तारीख के पश्चात वेतन की प्रतीक्षा बनी रहती. दीपक बहुत ही आदर्शवादी, संतुष्ट व गंभीर स्वभाव के थे. अतः वेतन से अधिक का मन में विचार तक न आता. बच्चे भी इसी वातावरण की उपज थे. सांसारिक प्रलोभनों से दूर, निष्कपट व आत्मकेंद्रित. मौसी का वैभव उन्हें लालायित न कर पाता. मौसी की कार की अपेक्षा अपना स्कूटर व उन के रंगीन टीवी की अपेक्षा अपना श्वेतश्याम टीवी अधिक भाता था.

हमारी छोटीछोटी खुशियां थीं, छोटेछोटे गम थे. दीपक को घरेलू कामों में हाथ बंटाने में लज्जा का अनुभव न होता. मुझे घर के कामों से कभी ऊब न होती. कहीं कोई

दुरावछिपाव नहीं. न दीपक मुझ पर अनावश्यक रोब जमाते और न मैं उन पर शासन करती.

सुनीता के घर जीजाजी का सदैव आतंक छाया रहता. वह स्वयं को प्रबुद्ध व सुनीता को मूर्ख समझते थे. घर में भी उन की अफसरी चलती. पिता का आचरण देख बच्चे भी मां का निरादर करते.

अंकुर जब घर आता तो ऐसा तांडव करता कि सब थरथर कांपते. बातबात में क्रोध करना, सामान फेंक देना उस का दैनिक कार्य था. यद्यपि वह आकांक्षा की तरह बड़ों से अशिष्ट व्यवहार न करता, परंतु नाटकीयता में वह पिता की कार्बन कापी था. धीरेधीरे मैं सुनीता की पारिवारिक उलझनों में ऐसी लिप्त रहने लगी कि अपने दायित्वों की उपेक्षा करने लगी.



तमन्ना

तुम्हें पाने की तमन्ना
एक ख्वाब बन कर रह गई,
दिल की बात दिल में ही रही
पलक झपकते तुम
किसी और की हो गई.

—आलोक बंसल

बच्चे स्कूल से लौटते तो मुझे मौसी के घर पाते. दीपक को दफ्तर जाते समय खाना न मिल पाता क्योंकि सुनीता को छींक भी आती तो मेरा पहुंचना अनिवार्य होता. उस के छोटेबड़े दुखों में मैं मकड़ी की तरह उलझती ही चली गई. कभीकभी मुझे अपनी गलतियों का आभास होता. मैं सुनीता से कहती, "मेरा और तुम्हारा नित्य का मेल कहीं हमारी मित्रता को ही न नष्ट कर दे."

सुनीता तुरंत मेरी बात काट कर मुझे आश्वस्त कर देती. मेरी ओर से तनिक शिथिलता पाते ही वह स्वयं प्रस्तुत हो जाती और अधिकारपूर्वक मुझे अपने घर ले जाती. उस का यह मनुहार मेरे अंतर को सुख पहुंचाता. अपनी उपस्थिति की अनिवार्यता से मुझे गर्व होता.

जिस दिन मैं सुनीता के घर न जाती, मुझे अवकाश ही अवकाश रहता. उसी दिन मुझे घर के जाले, रसोई के गंदे डब्बे नजर आते. पहले मैं घर में ही सिलाईबुनाई करती थी, अब मुझे बाजार के वस्त्र ही अच्छे लगने लगे थे. इन 3 वर्षों में मैं वह सब भूल चुकी थी, जो कभी मेरे प्रिय विषय थे. कभीकभी मेरा हृदय कचोटता. मैं सारा समय सुनीता के साथ ही क्यों नष्ट करती थी.

मैं कई बार निश्चय करती कि आज सुनीता के घर नहीं जाऊंगी पर संध्या होतेहोते मेरे प्राण अकुलाने लगते. मेरे पैर स्वतः उस के घर की ओर बढ़ जाते. मैं स्वयं को आश्वस्त करती कि मेरे न जाने से पड़ोसी यह समझ बैठेंगे कि हमारे बीच अनबन हो गई है.

सुनीता के पारिवारिक दुखड़ों को सुनने में मुझे रस आने लगा था. इतनी संपन्नता, नौकरचाकर, मोटर, बंगला, पुत्रपुत्री सभी कुछ तो था उस के पास, लेकिन फिर भी कितनी अकिंचन. उसे पाईपाई का हिसाब रखना पड़ता. नौकर मालकिन की दृष्टि बचा कर मनमानी करते. जीजाजी की आज्ञा के बिना वह मोटर का उपयोग न कर सकती थी. पुत्र पिछली कक्षा में फेल हो कर इस वर्ष भी उत्तीर्ण होने की स्थिति में न था. पुत्री कभी उस का कहना न मानती. ये सारे दुख वह मुझे गिनगिन कर सुनाती, जिसे सुन कर मेरे मन में संतो[illegible] होता कि मोटर, बंगले के अभाव में [illegible] सुखी हैं.

दृश्य परिवर्तन तो तब हुआ जब जीजाजी के विभाग के समकक्ष पदाधिकारी किराएदार बन कर उन के घर रहने लगे. सुनीता उन की सुघड़ पत्नी और युवा पुत्रियों से शीघ्र ही घुलमिल गई. एक ही विभाग में होने से समान विचार व समान मानसिकता के कारण गोष्ठियों के विषय वीसीआर, जमीनजायदाद ही होते. उन की चर्चा लाखों से प्रारंभ होती और पैसे की कमी पर समाप्त होती. कमाई वाली जगह में नियुक्ति के जोड़तोड़ चलते रहते.

मेरे जाने न जाने से अब सुनीता पर कोई प्रभाव न पड़ता. मेरे जिन बच्चों के बिना उसे नींद न आती थी, अब बहुधा उपेक्षित किए जाने लगे. बच्चों ने शीघ्र ही वहां जाना छोड़ दिया.

उन्हीं दिनों मेरा बड़ा पुत्र अमित बीमार पड़ गया. दीपक कार्यालय जा चुके थे. छोटा बेटा स्कूल में था. मैं सुनीता को स्थिति समझा कर व आग्रह कर के अमित के पास बैठने को कह, डाक्टर बुलाने चली गई.

डाक्टर ने आते ही बुखार देखा, जो अब तक 103 डिगरी तक पहुंच चुका था. लेकिन सुनीता नहीं आई थी. डाक्टर ने मुझे पहले तो डांटा कि इतने बुखार में मैं बच्चे को अकेला छोड़ कर कैसे गई. फिर स्थिति को भांपते ही तुरंत उसे सूई लगा कर मुझे सांत्वना दी.

आसपास से किसी को बुलाने में मुझे संकोच हुआ कि लोग क्या कहेंगे कि बच्चे की बीमारी में भी इतनी पक्की सहेली नहीं आई. मुझे गहरा धक्का लगा. इसी सुनीता के कुत्ते को भी बीमारी होती तो मैं उसे ले कर अस्पताल जाती थी. सुनीता के लिए मेरे व्यक्तिगत दुख कुछ अर्थ ही नहीं रखते थे

मेरा भ्रम टूट चुका था. वास्तव में सुनीता को कभी मित्र की आवश्यकता ही नहीं थी. उसे ऐसा अनुचर चाहिए था, जिस पर वह अपने वैभव का प्रदर्शन कर सके उपकार लाद कर गर्वित हो सके और समय आने पर अपने पारिवारिक झंझट सुना कर हृदय हलका कर सके.

उसे मित्रता की नहीं, एक रूमाल की आवश्यकता थी, जिसे सहेज कर पर्स में रखा जा सके, इत्र से सुवासित कर सके कमर में खोंस कर चल सके. स्त्री की कमर में लटके रूमाल की कीमत से उस का स्तर आंका जाता है. फिर मुझ जैसा रूमाल उस के लिए गर्व का विषय था, जिस से आंसू भी पोंछे जा सकें, फिर नाक पोंछ कर फेंका भी जा सके. वह अब तक मुझे अपना रूमाल बनाए रही, लेकिन मैं मूर्ख इसे मित्रता समझती रही.

अब सुनीता का रूमाल पुराना व अनुपयोगी हो गया था. पूरे 25 वर्ष तक यह रूमाल चला था शायद. अब वह फैशन में भी न था. अतः उस ने उसे फेंकने में देर न की. सुनीता को किराएदार के रूप में नया रूमाल जो मिल गया था, कमर में खोंसने और आंसू पोंछने के लिए.

बच्चों के मुख से

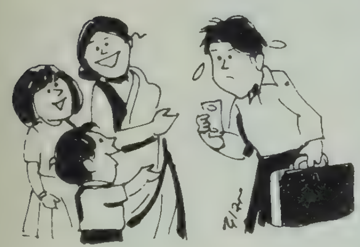
स्कूल में दाखिले की परीक्षा दे कर मेरा 4 वर्षीय चचेरा भाई घर आया तो दादीजी ने पूछा, "परीक्षा कैसी रही?"

उस ने जवाब दिया, "दादीजी प्रश्नपत्र आधा हिंदी में तथा आधा अंगरेजी में था. हिंदी का तो मेरी समझ में नहीं आया और अंगरेजी का आप की समझ में नहीं आएगा. अब मैं आप को क्या बताऊं?"

— रवि खलखो

*

हमारे छोटे चाचाजी हमारे घर आए. वह अपनी आदत के



अनुसार हर बात में कहते, "यह काम किस खुशी में?"

4-5 दिनों के बाद जब वह जाने लगे तो मां ने उन्हें 21 रुपए देने चाहे. किंतु वह कह उठे, "यह किस खुशी में?"

मां के कुछ बोलने से पहले ही मेरा 5 वर्षीय भाई कह उठा, "आप के जाने की खुशी में."

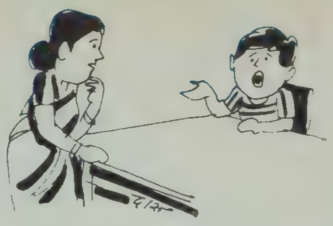
— नीतू वर्मा

*

एक दिन मेरा बेटा अनवर जिद करने लगा, "मैं भी पिताजी की तरह 'बेड टी' लूंगा."

मैं ने उसे समझाते हुए कहा, "नहीं बेटा, बच्चे बेड टी नहीं पीते."

इस पर वह मुंह बनाता हुआ मेज पर जा बैठा और भोले



अंदाज में बोला, "बेड टी नहीं तो 'टेबल टी' ही दे दीजिए."

— मो. अरशद जमील

*

मेरे पिताजी 8 वर्षीय सोनू को विज्ञान पढ़ा रहे थे, "यदि हवा नहीं होगी तो सारे पेड़पौधे नष्ट हो जाएंगे और हम लोग मर जाएंगे."

यह सुनते ही सोनू तुरंत बोल पड़ा, "नहीं, पिताजी हम पंखे की हवा से जी लेंगे."

— मितेश गुप्ता

*

मेरा 3 वर्षीय भाई हिमांशु बहुत ही नटखट व हाजिरजवाब है. सर्दी के मौसम में एक दिन वह बारबार पानी से खेल रहा था. मां के मना करने पर जब वह नहीं माना तो उन्होंने उसे डांटते हुए कहा, "अरे, तू मानता नहीं, पानी से खेलना बंद कर."

यह सुनते ही वह तुरंत बोल पड़ा, "खुद तो आप पोंछा लगाते हुए, बरतन मांजते हुए और कपड़े धोते हुए बड़े मजे से पानी से खेल लेती हैं और मुझे मना करती हैं."

— योगिता अरोड़ा

हमारे नानाजी के घर में उन का पूरा परिवार एक कार्यक्रम के सिलसिले में एकत्र हुआ था. रात को बिस्तर लगाते समय नानाजी ने मेरे 5 वर्षीय मौसेरे भाई से पूछा, "क्यों, छोटूजी, आप रात को बिस्तर तो गीला नहीं करते?"

छोटू तुरंत बोला, "क्यों, चादर नई बिछी है क्या?"

— रेणू अग्रवाल

*

हमारे गांव के मंदिर में एक व्यक्ति आया था, जिसे 'महात्मा' मान कर गांव के सभी छोटेबड़े



आशीर्वाद ले रहे थे.

एक दिन मेरे रिश्ते के चाचा हमारे घर आए और बोले, "चल बेटे, तुझे महात्माजी से कोई अच्छा सा वर दिलवाऊंगा."

यह सुन कर मेरा छोटा भाई तुरंत बोल उठा, "चाचाजी, भैया को वर नहीं वधू चाहिए."

—मुन्ना बाज ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-11...

देवकी बाबू का समाजवाद

सरिता, बीस साल पहले, मार्च (प्रथम) 1973

व्यंग्य ● गोपाल चतुर्वेदी



बाबू देवकीनंदन रेलवे में क्लर्क हैं. जनसाधारण के लिए रेल से संबंधित किसी भी व्यक्ति को जानना गर्व का विषय है. मेरे पास भी बाबू देवकीनंदन के परिचय का नन्हा सूरज है जो थर्ड स्लीपर में स्थान दिला कर गाहेबगाहे मेरे जीवन के संभावित अंधेरे दूर किया करता है. देवकी बाबू का कहना है कि उन का मुख्य काम बिल पास करना है और उन का कार्यक्षेत्र लेखा विभाग है.

रेलवे दफ्तर के बाहर एक मिनी मार्केट है जहां खोमचे वाले हैं, बनेबनाए कपड़ों के ढेर लिए व्यापारी हैं, चायनाश्ता, पानसिगरेट की दुकानें हैं. देवकी बाबू से मेरी भेंट उन के इसी कार्यक्षेत्र में हुई थी.

हमारे नगर में रेल का दफ्तर और विश्वविद्यालय सटे हुए हैं. बीच में चाय की दुकानें हैं, जहां छात्र और बाबू साथ उठतेबैठते हैं, सुखदुख की चर्चा करते हैं. बाबू अफसरों को गरियाते हैं और छात्र प्राध्यापकों को.

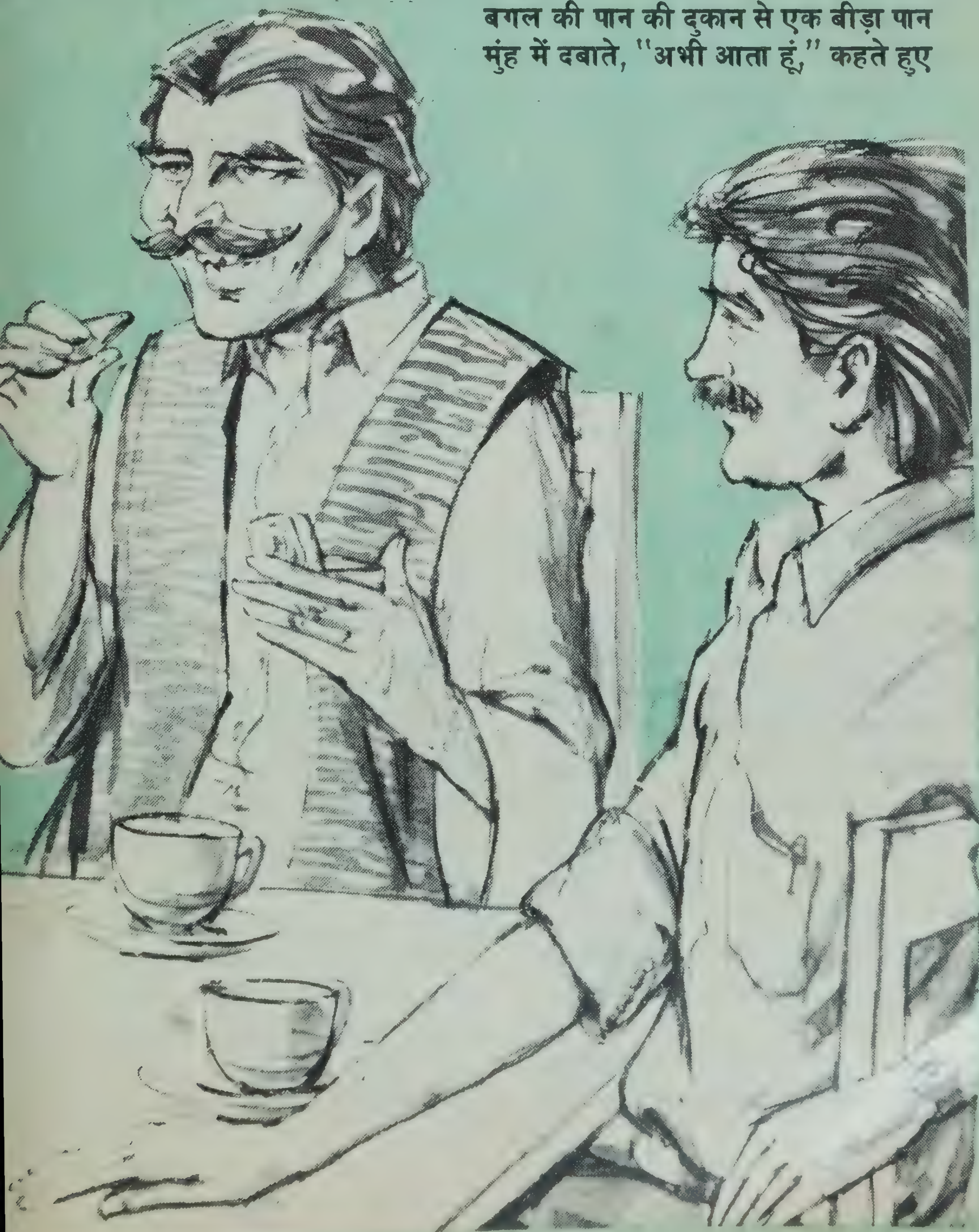
देवकी बाबू एक बुद्धिजीवी बाबू हैं, रेलवे यूनियन के नेता हैं. वह खूब बोलते हैं. दफ्तर में हाजिरी लगाने और दोस्तों से दुआसलाम करने में उन्हें अधिक से अधिक एक घंटा लगता है. इस के पश्चात चाय की दुकानों की रौनक बढ़ाने का उन का असली धंधा शुरू होता है.

मुझ से जब देवकी बाबू मिले थे तो विश्वविद्यालय के चुनाव में प्रचार कर रहे थे. बोले, "देखो भैया, देश में कितनी भी पार्टियां हों, हमारे शहर में सिर्फ दो हैं– एक ठाकुरों की, दूसरी ब्राह्मणों की. मैं तो काफी दिनों से यहां हूं, तुम अभी नए आए हो.

कुर लेक्चरर कोशिश करेगा कि ठाकुर लड़का फर्स्ट आए. यदि रजिस्ट्रार का चले तो चपरासी से ले कर कुलपति तक भी ठाकुर हों. यदि तुम्हें पास होना है, कुछ रना है, अच्छे नंबर लेने हैं तो तिवारी को ट दो. तिवारी अपने प्रोफेसर शर्मा का दमी है. जीत गया तो ठाकुरों की नाक कट एगी."

जब देवकी बाबू से मेरा परिचय बढ़ा ज्ञात हुआ कि उन का पूरा नाम कीनंदन वर्मा है और धर्म, जाति से वह तई उदासीन हैं. ब्राह्मण और ठाकुर के अस्त्र का प्रयोग वह केवल अपने चहेते उम्मीदवार के हित में करते हैं. इस से पहले चुनाव में उन का उम्मीदवार एक ठाकुर था और डाक्टर सिंह का आदमी था. धीरेधीरे देवकी बाबू से रोज की मुलाकात होने लगी. उन का दिन चाय की दुकानों पर बीतता और वहीं उन की यूनियन की गतिविधियों का केंद्र था.

देवकी बाबू की दिनचर्या बड़ी नियमित थी. दफ्तर 10 बजे से लगता था. देवकी बाबू ठीक पौने 11 बजे अपनी साइकिल चाय की दुकान पर खड़ी करते, बगल की पान की दुकान से एक बीड़ा पान मुंह में दबाते, "अभी आता हूं," कहते हुए



रेलवे विभाग में कार्यरत देवकी बाबू भले ही अपनी विभागीय जिम्मेदारियों को निभाने में कोई रुचि न लेते हों, परंतु यूनियन की गतिविधियों, गपशप, कवि गोष्ठियों से ले कर एम.पी. के चुनाव तक में वह अपनी भूमिका बखूबी अदा करते थे. फिर भला सरकारी नौकरी को अहमियत दे कर उन्हें अपने 'समाजवाद' के सपने को अधूरा थोड़े छोड़ना था.

दफ्तर में जाते और 12 बजे तक अड्डे अर्थात चाय की दुकान पर लौट आते.

उन के साथी थे रामसहाय. उन के अनुसार दफ्तर में देवकी बाबू का दबदबा था. यूनियन के नेता जो ठहरे. किसी की क्या मजाल कि देर से आने का कारण भी पूछ ले.

एक दिन सेक्शन में जाते समय देवकी बाबू की अपने अफसर से भेंट हो गई. "इतनी देर कहां हो गई?" उस ने जानना चाहा.

"जी, क्या बताऊं, घर दूर है, साइकिल से आता हूं. आज रास्ते में साइकिल पंक्चर हो गई," देवकी बाबू ने सीधा सा उत्तर दिया.

अफसर भी कब चूकने वाला था, बोला, "लेकिन सुना है, आप की साइकिल रोज पंक्चर हो जाती है?"

वह तो अपनी बात कह कर चला गया, पर देवकी बाबू ने सेक्शन में इस विषय पर लंबा सा भाषण झाड़ दिया, "सुना बड़े बाबू आप ने? साइकिल कोई मोटर थोड़े ही है जो रोज पंक्चर न हो. आप बड़े बाबू हैं तो क्या हुआ, आखिर हैं तो साइकिल वाले ही न. इन अफसरों के अलावा हम सब लोग एक ही जाति के हैं और वह है बाबू जाति. यदि हम सब में एकता हो तो क्या मजाल कि अफसर मुंह भी खोल सकें. समाजवाद आ गया है और वह हम गरीबों की साइकिलों से आया है..."

देवकी बाबू आगे पता नहीं क्याक्या कहते, पर बड़े बाबू ने टोक दिया, "आप जाइए, अपना काम कीजिए, दूसरों को काम करने दीजिए, इन सब बातों में कुछ नहीं रखा."

उस दिन चाय की दुकान पर देवकी बाबू ने कलम और कर्म के मजदूरों की एकता पर काफी देर तक अपने विचार व्यक्त किए. भाव यह था कि यदि सब मजदूर एक हो जाएं तो दफ्तरों और कारखानों में समाजवाद आने में बिलकुल देर न लगे. दफ्तरी समाजवाद का प्रारंभ अफसर का अलग कमरा छीन कर होगा. वह भी बाबुओं के साथ हाल में बैठेगा. चपरासी उस की चाय अलग से न लाएगा. कोई उसे 'सर' नहीं कहेगा.

किंतु सुनने वालों के दुर्भाग्य से देवकी बाबू की समाजवाद की परिभाषा अधूरी ही रह गई. उन के मित्र रमाकांत उन्हें खोजते हुए आ पहुंचे. वह आबकारी के इंस्पेक्टर थे. आते ही बोले, "भाई देवकी, अच्छा हुआ तुम से भेंट हो गई. मैं तो परेशान था."

देवकी बाबू ने उन्हें बात पूरी न करने दी और टोकते हुए बोले, "अरे, इंस्पेक्टर साहब, जब तक मैं जिंदा हूं, आप को परेशान होने की क्या जरूरत है. आदेश दीजिए, बंदा हाजिर है."

रमाकांत ने अपनी परेशानी बयान की, "यार, हमारे नए साहब आए हैं... उन्हें साहित्य का बड़ा शौक है. परसों उन्हें खाने पर घर बुलाया है. सोचा, खाने के बाद एक कवि गोष्ठी हो जाए. तुम से अच्छा आयोजक कौन मिलेगा? जरा 'कंसेशन रेट'



शर्मा ने देवकी बाबू को समझाते हुए कहा, "जब तक मैं यहां हूं, दफ्तर मेरी मरजी से चलेगा. अब आप जा सकते हैं."

का खर्चा बताओ कि कितना लगेगा."

"आप तो अपने आदमी हैं, इंस्पेक्टर साहब," देवकी बाबू ने अपने खास चुनाव अभियान के अंदाज में कहना शुरू किया, "आप से अधिक नहीं, सिर्फ खर्चे भर का लूंगा. सुरीली आवाज वाले शहर के छः सब से अच्छे कवि होंगे. खाना और शराब आप की और ऊपर से यही 100 रुपए दे दीजिएगा."

सौदा पट गया. यह देवकी बाबू का नया रूप था. उन्होंने थोक के भाव साहित्य की एजेंसी भी ले रखी थी. रमाकांत के जाने के बाद देवकी बाबू ने छः कवियों की सूची बनाई. चार रेल के बाबू थे और लेखा विभाग के उन के सहयोगी. पांचवां विश्वविद्यालय का एक छात्र नेता था जिस का कंठ सुरीला था. छठे स्वयं देवकी बाबू थे ही. जोर गले पर अधिक था और कविता पर कम. कविताएं देवकी बाबू इधरउधर से 'लिफ्ट' कर लेते थे.

"भैया मिश्रा," उन्होंने मुझे गुर की बात बताई, "शहर के सरकारी दफ्तरों में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, कभी 15 अगस्त का, कभी 26 जनवरी का. मैं ने अपने रेट तय कर लिए हैं. जिसे जरूरत होती है, उसे सप्लाई कर देता हूं. रेल की नौकरी में यही तो फायदा है कि गए, हाजिरी लगाई और फिर दिन अपना है. चुनाव के दिनों में नेता वोट मांगने आते हैं. क्षेत्र के एम.पी. से जानपहचान रहती है. बंधी आमदनी है. तबादला बिना हमारे चाहे कोई कर नहीं सकता. महंगाई का जमाना है, बिना जोड़तोड़ लगाए खर्चा नहीं चलता. घर जाता हूं तो होमियोपैथिक दवाई बांटता हूं. कुछ उस से भी आमदनी हो जाती है. यह सब न हो, भैया, तो हम दो और हमारे छः [illegible] लालनपालन कैसे हो?"

देवकी बाबू साहित्य के ठेकेदार,

यूनियन के नेता, होमियोपैथिक डाक्टर होने के साथसाथ अपने परिवार के जिम्मेदार प्रमुख भी थे. इसी कारण उन के व्यक्तित्व के प्रति मेरा आकर्षण और बढ़ गया. बस, एक बात समझ में नहीं आती थी कि देवकी बाबू अपनी रेलवे की नौकरी को गंभीरता से क्यों नहीं लेते. मन के एक कोने में शायद देवकी बाबू को भी यह खलता था. कभीकभी जैसे अपने ही मन को समझाने के लिए वह कहते, "मुझे सेक्शन में बैठ कर घुटन सी लगती है. चारों ओर धूल से लिपटी मटमैली फाइलें. कब्रगाह में भला कौन दिन बिता सकता है. उस पर वही बंधाबंधाया काम–बिल आए, उसे एक रजिस्टर में चढ़ाओ, अपने यहां का नंबर दो. फिर यही और दिनभर यही. तुम्हें शायद मालूम नहीं, मेरे हिस्से का काम एक दूसरा बाबू करता है. मैं उसे इस के लिए 50 रुपए देता हूं. उस का भी फायदा होता है और मेरा सिरदर्द बचता है."

उन के तर्क में काफी दम था. कोई भी बुद्धिमान आदमी एक ही प्रक्रिया रोज दोहराएगा तो ऊब महसूस करेगा. मुझे लगा, जैसे विश्वविद्यालय में किताबचट लोग होते हैं वैसे हर दफ्तर में भी कुछ फाइलों के कीड़े अवश्य होते हैं. जिन को नोट और 'ड्राफ्ट' बनाने में सुख की अनुभूति होती है, जिन्हें पुराने 'मेनुअलों' और कायदेकानूनों के अध्ययन में खोए हुए परिचितों से पुनर्मिलन का आनंद मिलता है. यदि ऐसा न होता तो इतने बड़े देश का प्रशासन कैसे चल पाता.

मार्च का महीना था. चाय की दुकान पर मेरा आनाजाना कम हो गया. परीक्षा सिर पर आ गई थी. जब इम्तहान खत्म हुआ तो घर चला गया. ढाईतीन महीने के बाद फिर गोरखपुर आया. चाय की दुकान का क्रम फिर शुरू हुआ. दोतीन बार जाने के बाद भी देवकी बाबू नजर नहीं आए. इलाहाबाद से मेरा दोस्त रमेश आया हुआ था. उसे वापस जाना था. रिजर्वेशन के लिए देवकी बाबू की खोज थी. चाय वाले ने बताया कि उस ने देवकी बाबू को काफी समय से नहीं देखा था. इस बात से मुझे चिंता हुई. मैं उन के दफ्तर जा कर पता लगाने की सोच रहा था कि रामसहाय नजर आ गए.

"देवकी बाबू कहां चले गए?" मैं ने जिज्ञासा व्यक्त की.

रामसहाय ने जो बताया, काफी रोचक था, "कुछ न पूछो, बंधु, तुम लोगों के इम्तहान शुरू होने के बाद काफी कुछ हो गया. हमारे यहां एक नया लेखा अधिकारी आ गया. कोई कालेज से निकला छोकरा, घोर आदर्शवादी. लगता है, उस का एक ही मिशन है, हर सरकारी कर्मचारी अपनी पूरी ड्यूटी करे. कद में नाटा, गोरागोरा, बड़ा मृदुभाषी, पर जिद का पक्का. उस ने दिन में तीन बार सेक्शन का चक्कर लगाना शुरू किया. साढ़े दस बजे हाजिरी का रजिस्टर अपने कमरे में मंगवाने लगा. पूरा सेक्शन परेशान हो गया. देवकी बाबू तो नेता ठहरे. उन्हें नेतागीरी का एक स्वर्णिम अवसर मिल गया. उन्होंने यूनियन के अधिकारी के नाते शर्मा से भेंट की. काफी लच्छेदार ढंग से, जैसी उन की आदत है, अपनी कठिनाइयां व्यक्त कीं. कहने लगे, "शर्माजी, उमर के नाते मैं आप के बड़े भाई के बराबर हूं. यह प्रारब्ध का खेल है कि मैं बाबू हूं, आप अफसर हैं. आप चाहें तो इसे सलाह मानें या प्रार्थना, दफ्तर की जिंदगी में आप को इतना दखल नहीं देना चाहिए. तीनतीन बार हाजिरी लेने से, चक्कर लगाने से काम का स्तर नहीं सुधर सकता. हम लोगों का काम करने का एक बंधा हुआ ढंग है, एक तरीका है, उसे आप एकदम नहीं बदल सकते."

शर्मा ने उन की बात धैर्य से सुनी और बोला, "आप की सलाह के लिए धन्यवाद. जब तक मैं यहां हूं, दफ्तर मेरी मरजी से चलेगा. जिस काम के लिए सरकार आप को, आप के साथियों को तनख्वाह देती है, वह आप को करना पड़ेगा. अब आप जा सकते हैं."

देवकी बाबू चलतेचलते उसे धमकी भी दे आए, "शर्माजी, समय बदल चुका है. जनता जाग चुकी है. हम आप का अन्याय नहीं सहेंगे."

रामसहाय ने आगे बताया कि उन्हीं दिनों रेलवे यूनियन के चुनाव होने वाले थे. इस बार देवकी बाबू भी अध्यक्ष पद के प्रत्याशी थे. उन का विरोधी काफी पुराना और लोकप्रिय मजदूर नेता था और उसे हराना कठिन था. देवकी बाबू किसी मसले की तलाश में थे जो उन्हें क्रांतिकारी की 'इमेज' दे देता. वह देश की राजनीति से भलीभांति परिचित थे और जानते थे कि 'इमेज' ही सब कुछ है. शर्मा की कर्तव्यनिष्ठा ने उन्हें अच्छा अवसर भी दे डाला.

उन के सेक्शन के आधे से ज्यादा लोगों की तनख्वाह देर से आने या दफ्तर के समय में गायब होने के कारण कट गई. देवकी बाबू ने लंच के समय एक मीटिंग बुलाई और उस में एक जोरदार भाषण दिया, "साथियो, इस नए अफसर शर्मा की तानाशाही से आप सभी परिचित हैं. मैं आप से कहना चाहूंगा कि पाप का घड़ा भर चुका है. हमें इस अन्याय का विरोध करना ही होगा. इस देश में शीघ्रता से समाजवादी व्यवस्था आए, इस के लिए आवश्यक है कि हम यहां की भ्रष्ट नौकरशाही का डट कर मुकाबला करें. शर्मा इसी नौकरशाही का प्रतीक है. मैं काफी सोचविचार के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हम लोगों को इस अन्याय का विरोध गांधीजी द्वारा बताए गए अहिंसात्मक ढंग से करना चाहिए. गांधीवादी तरीकों की सफलता के लिए हमारी आपसी एकता एक अत्यंत आवश्यक शर्त है. यदि हम एक हो कर रहें तो हमारी जीत निश्चित है. अभी हाल ही में पूरे राष्ट्र ने एक हो कर पाकिस्तान को शिकस्त दी है. यह छोटा सा अफसर किस खेत की मूली है. हमारी जनता का प्रतिनिधि अर्थात रेल का मंत्री इस अफसर से भी आला अफसर को निकाल सकता है. क्या हम इस छोटे से अफसर का तबादला भी नहीं करवा सकते?"

देवकी बाबू की ओजस्वी वाणी से मीटिंग में काफी देर तक तालियां गूंजती रहीं.

दफ्तर में समाजवाद लाने का सिविल नाफरमानी वाला तरीका जो देवकी बाबू ने अपनाया, वह भी उन जैसा ही अनूठा था. उन्होंने यह निश्चय किया कि अफसर का दफ्तर के अंदर विरोध मौन रह कर होगा. उदाहरणार्थ, जब अफसर किसी बाबू को अपने कमरे में बुलाएगा तो बाबू जाएगा तो अवश्य, किंतु अंदर बुत बन कर खड़ा रहेगा.

> ***भय***
>
> *भय अंधविश्वास का प्रमुख स्रोत है और निर्दयता के प्रमुख स्रोतों में से एक है.* *— बर्ट्रेंड रसेल*

इसी तरह चपरासी भी घंटी की उपेक्षा नहीं करेगा किंतु जबान न खोलेगा. यह भी निश्चय हुआ कि संघर्ष को व्यापक बनाने हेतु कर्मचारियों के तनख्वाह के बिल भी पास नहीं किए जाएंगे. रोज लंच के समय 'शर्मा हायहाय' के नारे लगाता जलूस रेल के दफ्तर के चक्कर काटेगा.

देवकी बाबू का शहर के एम.पी. से परिचय था. यह आवश्यक था कि समाजवादी एम.पी. को इस प्रतिक्रियावादी अफसर की हरकतों की सूचना दी जाए जिस से मसला रेल के महाप्रबंधक और रेल मंत्री तक पहुंच सके.

देवकी बाबू फिर नटवरलालजी से मिलने गए, "नटवरलालजी, इस लड़के ने आसमान सिर पर उठा रखा है. सीधे मुंह बात करना तो उसे आता ही नहीं. 'गधा' और 'उल्लू' कहे बगैर किसी से बोलता ही नहीं. खुद दिनभर इधरउधर घूमता है, दोस्तों से गप्पें लड़ाता है, पर बेचारा कोई

बाबू यदि चाय पीने भी जाए तो उस का जवाबतलब हो जाता है. आप ने चुनाव के दौरान गरीबी हटाने और समाजवाद लाने का वादा किया था. क्या इन्हीं तरीकों से समाजवाद आएगा? क्या हम गरीबों की रोजीरोटी छीन कर ही गरीबी हटेगी?"

नटवरलाल के चुनाव में देवकी बाबू ने काफी काम किया था और जब नटवरलाल एम.पी. न थे, सिर्फ नेता थे, उन को भी अफसरों के व्यवहार का कटु अनुभव हुआ था. पूरी बात जानने के लिए, सचाई तक पहुंचने के लिए न उन के पास समय था और न इच्छा. वह एक नेता थे, सत्य के अन्वेषक नहीं. दूसरे ही दिन एक रिश्तेदार की सिफारिश ले उन्हें प्रांत की राजधानी जाना था.

"देवकी, तुम चिंता न करो, यह अन्याय चलने न पाएगा. मैं अभी मंत्रीजी को पत्र लिखता हूं या तुम्हीं इस प्रकार का ड्राफ्ट बना दो कि इस अफसर के व्यवहार की जांच करा कर इसे दंडित किया जाए," नटवरलालजी ने देवकी बाबू को आश्वस्त किया.

देवकी भी कच्ची गोलियां नहीं खेले थे. उन्हें पता था कि जब तक मंत्री महोदय के यहां कार्यवाही शुरू होगी, तब तक शर्मा के विरुद्ध मौन आंदोलन, जिस की बुनियाद काफी कच्ची थी, ठंडा पड़ जाएगा और यूनियन के चुनाव भी हो चुके होंगे.

"नटवरलालजी, देर से मिला न्याय भी अन्याय के समान होता है. आप मंत्रीजी को पत्र अवश्य लिखें, पर साथ ही शाम को महाप्रबंधक से मिलने भी आप को जाना पड़ेगा. हम गरीब कर्मचारियों का आप के सिवा इस शहर में है ही कौन? यदि आप ने इस अफसर का तबादला करवा दिया तो कर्मचारियों के बीच आप की लोकप्रियता में चार चांद लग जाएंगे." इस के पश्चात देवकी बाबू शब्द तोलते से बोले, "आप से मिलने के बाद मैं 'लोकवाणी' में एक वक्तव्य देने जा रहा हूं जिस में रेल कर्मचारियों के संघर्ष में आप के सहयोग और सहानुभूति की चर्चा रहेगी. इस से आप की सोशलिस्ट 'इमेज' उभरेगी. जब तक नौकरशाही का पूर्ण रूप से दमन न होगा, समाजवाद का आगमन संदेहास्पद है. अफसर आज भी अपने को जनता का सेवक नहीं, स्वामी ही समझते हैं."

तीर निशाने पर बैठा था. 'लोकवाणी' स्थानीय दैनिक पत्र था और इस में प्रकाशित समाचारविचार जनता के बीच नेता की 'इमेज' बनाबिगाड़ सकते थे.

नटवरलाल ने मन ही मन फैसला कर लिया कि शर्मा को समाजवाद की वेदी पर बलि होना पड़ेगा. महाप्रबंधक को फोन मिला कर उन्होंने शाम की मुलाकात का समय तय किया और बोले, "तुम भी महाप्रबंधक से मिलने चलोगे?"

देवकी बाबू ने उत्तर दिया, "हमारे हित आप के हाथों में पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं. हां, मैं सवारी ले कर आप को महाप्रबंधक के घर तक पहुंचा दूंगा, किंतु चर्चा आप ही करेंगे. मैं ठीक पांच बजे हाजिर हो जाऊंगा."

सब बातें सुनियोजित ढंग से हुईं. नटवरलाल नियत समय पर महाप्रबंधक से मिले. शर्मा के अन्यायों की विस्तार से चर्चा हुई, समाजवादी व्यवस्था में नौकरशाही के

जीवन की बलि

किशोर वय के लड़केलड़कियों को समझाया गया, "तुम लोग वादा करो कि अपना कैरियर बनाने और अपने को देश का सच्चा नागरिक साबित करने के लिए सिनेमा, वीडियो में लिप्त नहीं रहोगे तथा जुआ, शराब, नशीले पदार्थों से सर्वथा अपने को अलग रख कर पढ़ाई पर पूरा ध्यान दोगे और समय आने पर देश के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाने में पीछे नहीं हटोगे?"

"जी हां, हम तैयार हैं. ऐसे जीवन को हम जरूर बलि चढ़ा देंगे," समवेत स्वर में जवाब आया.

नए रोल का बखान हुआ, "अफसरों को व्यवहारकुशल होना चाहिए. शर्मा नया आदमी है. धीरेधीरे सीखेगा, पर उस का तबादला आवश्यक है, अन्यथा वातावरण तनावपूर्ण हो सकता है और हड़ताल की नौबत आ सकती है. बड़ा अफसर छोटों से काम और परिणाम चाहता है, पर समस्याओं को नहीं समझता. यदि बड़ा अफसर अवकाश ग्रहण करने वाला है तो उस की स्वाभाविक इच्छा होगी कि या तो उस का कार्यकाल बढ़ जाए या उसे दूसरा काम मिल जाए. यदि उस की नौकरी के कुछ वर्ष बाकी रहते हैं तो वह पदोन्नति का इच्छुक रहता है."

नटवरलाल ने मनोविज्ञान पढ़ा तो कभी नहीं था, पर गुना खूब था. यही उन की सफलता का राज था. महाप्रबंधक ने उन से सहमति जताते हुए कहा, "आप ठीक कहते हैं, नटवरलालजी, मैं शर्मा से बात करूंगा. उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था. उस का तबादला आप निश्चित जानिए. भविष्य में शायद वह ऐसी हरकतें नहीं करेगा."

शर्मा का स्थानांतरण हो गया. देवकी बाबू अपनी यूनियन के अध्यक्ष निर्वाचित हो गए. 'लोकवाणी' ने प्रगतिशील महाप्रबंधक, समाजवादी एम.पी. तथा कर्मठ नेता देवकी बाबू की एक विशेष लेख में भूरिभूरि प्रशंसा की.

देवकी बाबू आते अब भी पौने 11 बजे ही थे किंतु अब उन्हें दफ्तर आने की आवश्यकता न थी, हाजिरी ऐसे ही लग जाती थी. उन का मनोवांछित समाजवाद आ गया था. चाय की दुकान छोड़ कर वह अब यूनियन के दफ्तर में बैठने लगे थे. वहीं उन के भक्त पान आदि अर्पित करते थे. रिजर्वेशन अब फोन से ही करवा देते थे. साहित्यिक ठेकेदार अब भी थे, पर रेट बढ़ गया था. मुझे कभीकभी रिकशा पर जाते नजर आ जाते तो नमस्कार करने पर व्यस्तता के भाव से हाथ उठा देते. नेता के लिए याददाश्त का होना भी बड़ा आवश्यक है. ●

कटूक्तियां

पत्नियां युवकों के लिए प्रेमिकाएं, प्रौढ़ों के लिए मित्र और वृद्धों के लिए परिचारिकाएं होती हैं.

—बेकन

*

विज्ञापनबाजी एक ऐसा विज्ञान है, जिस के द्वारा इनसान की बुद्धि उस समय तक जकड़ जाती है, जब तक उस की जेब से पैसे न निकाल लिए जाएं.

*

विद्वान को जाहिल नहीं जानता, क्योंकि वह कभी विद्वान नहीं रहा, पर जाहिल को विद्वान जानता है, क्योंकि वह स्वयं जाहिल रह चुका है. —अरस्तू

*

युवा संख्या वह है जो किसी स्त्री से उस की उम्र पूछने पर मिले.

*

कोई व्यक्ति तब सलाह देता है, जब वह एक बुरा उदाहरण बनने की उम्र पार कर चुका होता है.

*

दुनिया में मेरी पत्नी जैसी कोई स्त्री नहीं है, मेरी ही नहीं, उस की भी यही राय है.

*

राजनीति ही शायद एक ऐसा व्यवसाय है, जिस के लिए किसी नौकरी की जरूरत नहीं पड़ती है.

—राबर्ट लाउस स्टीवनसन

*

आधुनिक संगीत का यह हाल है कि किसी क्लब में वेटर के हाथ से बरतन गिर जाते हैं तो तत्काल कई जोड़े नाचने के लिए खड़े हो जाते हैं.

नेहदीप

(पृष्ठ 45 का शेषांश)

"सच मां? चलो, ठीक ही हुआ."

"परंतु अब और भी उस का जीना हराम कर देंगे उस घर के निर्दयी."

"पता नहीं क्यों पीछे पड़े हैं वे लोग उस के. दिनभर तो मुफ्त की नौकरानी सी काम करती है, बदले में पाती है दो जून की रोटी और घरभर के उतारे कपड़े. कुल 18-19 साल की ही तो है लड़की. ये नहीं कि उसे पढ़ने दें. बी.ए. तक पढ़ कर वह कहीं भी नौकरी पा जाएगी. जहां अपने पैरों पर खड़ी हुई, झगड़ा खत्म."

"मां, क्यों न तब तक हम अपने यहां रख लें विभा को. तुम्हें भी काम से छुट्टी मिल जाएगी. यहां शांति से रह कर पढ़ाई भी पूरी कर लेगी."

"तू बावला है विनय. क्या कोई कुंआरी सयानी लड़की को ऐसे रख सकता है? पराई कथरी में क्यों टांग घुसेड़ें?"

"तुम्हें तो विभा से बहुत प्यार है मां, अच्छी भी लगती है तुम्हें, इसी लिए कहा. कोई और सूरत नहीं है कि वह यहां रह सके?"

"क्या मतलब है तेरा?" वह घूर कर बोलीं तो वह सकपका गया. तभी विजय अपने कमरे से निकल आया. वह देर से सब सुन रहा था.

"मां, मैं बतलाऊं मतलब... क्यों न तुम विभा को अपनी बहू बना लो. तुम भैया के पीछे पड़ी रहती हो कि जल्दी बहू ले आ."

"क्या तू विनय की ओर से कह रहा है?" वह चिल्लाईं.

"नहींनहीं, अपनी ओर से."

"तू पागल है क्या? विभा क्या अपनी जाति की है?"

"जाति से क्या होता है मां, विभा अच्छी लड़की है. घरभर की जानीपहचानी, सेवा की मूर्ति, रूप, गुण व शिक्षा सभी में उत्तम, फिर हर्ज क्या है?"

"यह तेरे विचार हैं या विनय के?"

"मेरे नहीं मां, विनय के," विजय हड़बड़ा कर बोला.

"तो तुम दोनों पर उस के रूप का जादू चल गया है. परंतु कान खोल कर सुन लो, ऐसा सपने में भी मत सोचना. एक तो जाति की नहीं ऊपर से जन्म की अनाथ. जहां उस के चरण पड़ेंगे चौपट हो जाएगा. खबरदार जो अब ऐसी बात फिर मुंह से निकाली. क्या अपने समाज में लड़कियों के टोटे पड़े हैं जो दूसरी जाति में मुंह मारें? कहां अपना इतना ऊंचा घर; कहां वह फक्कड़ की भांजी? हद कर दी तुम लोगों ने."

दोनों भाई मुंह भींचे मां का प्रलाप सुनते रहे थे.

तभी घूमफिर कर विनय के पिता दाखिल हुए. पत्नी को यों अकेले बड़बड़ाते सुन कर चौंक पड़े. वह पास चले गए, फिर बोले, "तुम पगला गई हो क्या? क्यों बड़बड़ा रही हो अकेले?"

"अरे, पागल न हो जाऊं, सुनो तो अपने सपूतों की बात. कहते हैं कि विभा को इस घर की बहू बना लो. आज करमजली की सगाई टूट गई है न?"

"हां, मैं ने भी अभी घूमने जाते समय

कर्तव्यनिष्ठा एवं विवेक के दीर्घायु

अमरीका में हुए एक अध्ययन के अनुसार 1920 के दशक में जिन बच्चों को ज्यादा कर्तव्यनिष्ठ तथा विवेकपूर्ण होने का दर्जा दिया गया था वे वयस्कों के रूप में अधिक लंबा जीवन जी रहे हैं. यह तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि मनोविज्ञान एवं शारीरिक स्वास्थ्य के बीच अवश्य कोई संबंध है.

सुना था. बहुत दुख हुआ और खुशी भी कि आगे आने वाली मुसीबतों से बच गई. अरे 40-45 साल का अधबूढ़ा विभा के संभलतेसंभलते कब्र में पांव लटका लेता और सौतेले बेटे उसे मारपीट कर निकाल बाहर करते. जो हुआ अच्छा ही हुआ और विनय, विजय ने जो कहा, बुरा नहीं कहा. विभा जैसी लड़की चिराग ले कर ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेगी."

"तुम सठिया गए हो. विभा... विभा... क्या वह अपनी जाति की है? बिरादरी से बाहर होना है क्या?"

"अब वे दिन लद गए जब बिरादरी से डरते थे लोग. अब तो नित्य सैकड़ों, हजारों अंतर्जातीय विवाह होते हैं और यही बिरादरी वाले आ कर दावत में भी शरीक होते हैं. वरवधू को आशीर्वाद दे कर सराहना करते हैं."

"परंतु मैं इस विवाह के पक्ष में सोच भी नहीं सकती."

"क्यों? उस के हाथ का बनाया खाना चटखारे ले कर खाती हो तब बिरादरी का डर कहां चला जाता हूं? कितनी सेवा करती है तुम्हारी, मेरी, घरभर की."

"तो इस का यह अर्थ नहीं कि बहू बना लाऊं? न जाने क्याक्या मुसीबतें झेलने के लिए पैदा हुई है वह कमबख्त."

"वह मुसीबतें तो झेल ही रही है, पर देख लेना, उसे इतना अच्छा घरवर मिलेगा कि राजरानी बन कर रहेगी."

"रहेगी तो रहे. हमें क्या? मेरा सिर मत खाओ. मैं ने कह दिया है कि इस विषय में मुझ से कोई बात न करे नहीं तो मैं सिर फोड़ कर मर जाऊंगी. मैं ने क्याक्या सपने नहीं संजोए बेटों के ब्याह के लिए. फोकट में ब्याह नहीं करूंगी, लंबाचौड़ा दहेज लूंगी, हां."

"तुम्हारे घर में किस चीज की कमी है? क्या नहीं है घर में? क्या दहेज छाती पर रख कर ले जाओगी."

"हांहां, ले जाऊंगी. बस मुझ से बात मत करो." वह उठ कर आंगन में चली गई. उधर दोनों भाई हंस रहे थे और फुसफुसा कर चुपकेचुपके बातें कर रहे थे.

रात को विनय घूमने निकल रहा था कि विभा के मामा मिल गए.

"विनय बेटा."

"क्या है चाचाजी?"

"तू ने सुना, विभा की सगाई टूट गई. वे लोग अपना सामान ले गए हैं व हमारा लौटा गए हैं."

"ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ, परंतु क्यों टूट गई सगाई? कुछ पता चला?"

"कह रहे थे कि वह पढ़ीलिखी, सुंदर लड़की है. आयु भी कम है. शहर की लड़की खप नहीं सकेगी देहात में. कहां उन का निपट देहाती रहनसहन, कहां बी.ए. तक पढ़ीलिखी लड़की, बड़ा परिवार है उन का."

"यह उन्हें पहले सोचना था," विनय बोला.

"यही तो मैं ने कहा. परंतु विभा की मामी ने जबरन तय कराया था रिश्ता, मैं तो तैयार ही नहीं था. कहां अप्सरा सी विभा, कहां खूसट सा वर, परंतु अब क्या होगा? अब उस का जीना हराम कर देंगे घर के लोग. मैं क्या करूं मेरी समझ में नहीं आता."

"आप रोकें उन लोगों को."

"कैसे रोकूं? किसकिस का मुंह पकड़ूं? फिर मैं दिनभर तो बैठा नहीं रहता कि उसे बचाता रहूं. ढेरों काम रहते हैं गृहस्थी में. बेटा, तुम भी तलाश में रहना लड़कों के."

"एक लड़का तो है मेरी नजर में चाचाजी."

"कहां है, बताओ तो," वह उस का हाथ पकड़ कर बोले.

"यहीं इसी शहर में नौकरी करता है."

"कहां, कौन है? परंतु मांग तगड़ी होगी."

"नहीं, बिना दहेज की शादी का संकल्प है उस का."

"सच? कौन है? कहां रहता है वह? बताओ न?"

"यह मैं बाद में बताऊंगा, पहले आप यह बताएं कि अंतर्जातीय विवाह के संबंध में आप के क्या खयाल हैं?"

"अरे, मैं तो विभा की खुशी के लिए जातिबंधन भी तोड़ दूंगा. तुम बताओ तो सही कि वह लड़का कौन है, कहां रहता है?"

"वह... वह मैं हूं चाचाजी, मैं खुद विभा से शादी करना चाहता हूं."

"तुम? तुम... करोगे उस अनाथ से शादी?" कहतेकहते उन की आवाज लड़खड़ा गई. यदि विनय उन्हें संभाल न लेता तो वह गिर पड़ते.

"हां चाचाजी, आप विश्वास कीजिए. मैं ने पक्का निर्णय ले लिया है."

"परंतु विभा? क्या विभा राजी होगी? तुम्हारे मातापिता इस के लिए सहमत होंगे?"

"विभा का मत मैं ले चुका हूं, रही मातापिता की बात, पहले तो तूफान आता ही है बाद में सब शांत हो जाता है. आप उस की चिंता न करें. यदि आप मुझे इस योग्य समझते हैं तो..." शेष वह नहीं कह पाया.

उन्होंने विनय को खींच कर कलेजे से लगा लिया और फूटफूट कर रो पड़े, "मैं... मैं नहीं जानता था कि विभा का भविष्य इतना खुशहाल होगा. सच में... मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा है."

"विश्वास करें चाचाजी, मैं अपनी जबान से नहीं हट सकता. मैं ने शुरू से यह संकल्प लिया था कि अंतर्जातीय विवाह करूंगा, वह भी बिना दहेज के. सच कहता हूं चाचाजी, यह निर्णय मैं ने विभा के हाथ जलाए जाने के बाद लिया है. इस में कोई दया की भावना नहीं है. मैं ने विभा के गुण देखे हैं जो सर्वथा मेरे अनुकूल हैं."

"मैं तुम सा वर, तुम सा जमाई पा कर धन्य हो जाऊंगा. तुम्हारी लंबी उम्र हो, तुम दोनों सदा सुखी रहो, मेरा रोमरोम आज अति प्रसन्न हो रहा है."

"एक बात और है चाचाजी, आज से कोई विभा को अनाथ नहीं कहेगा, यह शब्द मुझे गाली सा लगता है." विनय ने कहा

"नहीं कहेगा बेटा, अब वह अनाथ है कहां? एक बात और बता दूं मैं. जब तीन वर्ष की विभा को मैं यहां लाया था तब उस के मांबाप के खेत, घर आदि बेच कर वहां एक साहूकार के यहां जमा कर आया था. वह साहूकार तो मर गया. सारा कारोबार उस के बेटे देख रहे हैं. उस के बेटों की नीयत खराब हो गई है. वे अब रुपए देने से इनकार कर रहे हैं. सूद समेत लगभग 40,000 रुपए हो रहे हैं. यदि वह मिल जाते तो मैं उस ऋण को सौंप कर विभा से उऋण हो जाता."

"परंतु मैं तो दहेज का एक पैसा न लूंगा चाचाजी."

"तुम मत लेना. मैं बेटी के नाम से जमा करा दूंगा. यह उस का और तुम्हारा हक है. उस के मांबाप की धरोहर है. इसे मना मत करना. मैं अब तक हजारों चक्कर लगा चुका. वे लोग पुराने बहीखाते नहीं दिखाते."

> ### *साहित्य का उद्देश्य*
>
> साहित्य का मुख्य उद्देश्य सहज भाषा में ऊंचे विचारों और श्रेष्ठ जीवन में मूल्यों को अनायास ग्राह्य बनाना है. प्रेषण धर्मिता उस का मुख्य गुण है. – हजारीप्रसाद द्विवेदी

"अब की मैं चलूंगा आप के साथ. आप से यह अनुरोध है तब तक शादी की बात गुप्त रहने दें."

"ठीक है, गुप्त ही रहेगी."

दूसरे दिन विनय विभा के मामा के साथ सुबह ही चला गया था, विजय से भी नहीं कह गया था. बस यही कह गया था कि दो दिन के काम से जा रहा है.

पड़ोस में रहती थीं सेठजी की पत्नी. विनय की मां की पक्की सहेली. बातोंबातों में उन्होंने विभा की और [illegible] बेटों की पूरी कहानी बता डाली. [illegible] वह विभा की मामी से मिर्चमसाला लगा कर

दो हाथ लंबी बात बता आई कि विभा और विनय का प्रेम व्यापार चल रहा है. दोनों शादी करने की सोच रहे हैं. विनय की मां का बेटे से झगड़ा हो गया है.

यह सुन कर घरभर बौखला उठा. उन के जाते ही विभा की मामी के क्रोध का दावानल भड़क उठा. विभा को खूब जलीकटी सुनाना शुरू किया. भाभियों के ताने, डांटफटकार से विभा स्तब्ध रह गई. चूल्हे पर चढ़ा दूध कब उबलउबल कर फैल गया वह देख न सकी. घुटनों में मुख छिपा कर जो बैठी तो लाज से सिर न उठा सकी.

मामी व भाभियों का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया. उन्होंने झोंटा पकड़ कर उसे रसोई से बाहर खींच लिया. फिर जो मिला उसी से धुनाई शुरू कर दी.

"मामी... भाभी... मुझे मत मारो. मेरा कोई दोष नहीं है." उस ने बिलबिला कर पैर पकड़ लिए.

"कोई दोष नहीं है? वैसे ही विनय की मां सेठानी से रोना रो रही थी. अरी बेशर्म, इन्हीं लक्षणों से तेरी सगाई टूटी है. अब समझ में आया."

"अरे अम्मां... तभी विनय आए दिन दौड़ता था. खिड़की से आंखें लड़ाते रहे हैं दोनों. पता नहीं कब से चल रहा है यह प्रेमाचार." दोनों भाभियों ने धकिया कर खड़ा किया.

"अम्मां... हमारी बेटियां भी बड़ी हो रही हैं. बूआ के लच्छन देख कर वह नहीं बिगड़ेंगी क्या? अब या तो यह रहेगी या हम?"

"मैं इसे इसी दम घर से निकाल बाहर करूंगी. ऐसी लड़की को कुल की नाक कटाने को रखूंगी क्या?"

तभी दोनों बेटे घर में घुसे, पत्नियों और मां की शिकायत सुन कर दोनों ने मारमार कर उसे अधमरा कर दिया. विभा की चीखें और उस की फरियाद किसी ने नहीं सुनी.

"निकाल दो कुलबोरनी को घर से. जाए जहां जाना हो. अब यह गुल खिला रही है. चल निकल दूर हो आंखों से..." वह उसे घसीटते हुए बाहर पटक गए.

"भैया, मामा को आ जाने दो, मैं कल चली जाऊंगी. इस सांझ की बेला में कहां जाऊंगी? मामी... भाभी... दया करो." वह चिल्लाती रही. परंतु किसी ने उस की बात नहीं सुनी. किवाड़ बंद कर के बैठ गए. उस की चूड़ियां टूट कर बांह में घुस गई थीं, जिन से खून रिस रहा था. बदन पर जगहजगह नीले निशान पड़ गए थे. उस के शरीर का पोरपोर दर्द कर रहा था. वह बड़ी देर तक घुटनों पर सिर रखे रोती रही. फिर किसी तरह हिम्मत कर के अपनी मां जैसी चाची की देहरी पर जा खड़ी हुई. उसे विनय पूरी बात न बता पाया था. इस से वह अनजान थी कि इस बीच क्याक्या घट गया.

वह भागती हुई भीतर गई जहां चाची दालान में बैठी कुछ कर रही थीं. वह उन की गोद में सिर रख कर फूटफूट कर रो पड़ी और कांपते स्वर में बोली, "चाची... चाची... मुझे... मुझे मारपीट कर सब ने घर से बाहर कर दिया है... मैं... मैं कहां जाऊं चाची?"

सहसा वह अचकचा गईं. फिर भीतर का आक्रोश वह रोक नहीं पाईं. उन्होंने क्रोध और घृणा से उस का सिर अपनी गोद से दूर फेंक दिया, फिर आग्नेय नेत्रों से उसे घूरती हुई बोलीं, "चूल्हे में जा... तेरी जैसी लड़की कौन घर में रखेगा? जिस पत्तल में खाती है उसी में छेद कर रही है कमबख्त. अरी करमजली... डायन भी एक घर छोड़ देती है. तू ने तो मेरे ही घर में जादू कर दिया. तुझे तो मैं ने मां सा प्यार दिया और तू ने मुझ से ही छल किया. तेरा तो मुंह देखने में भी दोष है. निकल जा इसी क्षण घर से."

सहसा धरती से टकरा कर विभा के माथे पर नीला निशान उभर आया. विभा ने महान आश्चर्य में भर कर भरी आंखों से उन की ओर निहारा, "चाची, तुम... तुम कह रही हो ये?" आंसू थम गए थे जैसे.

"हांहां... मैं... और जो सपने तू मेरा

घर फोड़ कर देख रही है, वह कभी पूरे नहीं होंगे. कान खोल कर सुन ले, तेरी जैसी अनाथ कभी इस घर की बहू नहीं बन सकती, चाहे तू कितने ही जाल फेंक."

"नहीं चाची... नहीं, मैं तुम्हारे पांव छू कर कहती हूं, मैं ने कभी ऐसा पाप नहीं किया, सपने में भी नहीं. मैं... मैं निर्दोष हूं चाची."

उन्होंने उस के हाथों से अपने पैर छुड़ा लिए. फिर चीख कर बोलीं, "बंद कर यह नाटक. मैं तुझ जैसी लड़कियों के गुण भलीभांति जानती हूं. आज के बाद इस घर में कदम मत रखना. तू ऐसी दूध की धोई है तो विनय व विजय तेरी वकालत क्यों कर रहे थे. मेरे ही बेटे मिले तुझे आंख लड़ाने को? उठ, निकल जा यहां से और इस से पहले कि उन में से कोई आए और भावनाओं में बहें तेरी सूरत यहां न दिखे."

"चाची, रात मैं कहां काटूंगी? मुझे रातभर किसी कोने में पड़ी रहने दो. सुबह तुम मेरा मुंह नहीं देख पाओगी. तुम ने जो कहा वह सत्य नहीं है तो भी मैं चली जाऊंगी. मामा घर पर नहीं हैं, बस यह रात..."

"नहींनहीं, एक क्षण नहीं. रात तो दूर की बात है. ऐसी ही होती तो तेरे घरवाले क्यों निकालते सांझ को घर से. और तू मेरा मरा मुंह देखे जो विनयविजय से संपर्क करे. चल निकल जल्दी."

वह उसे घसीटते हुए दरवाजे तक ले आईं. अपने कमरे में पढ़ते विजय ने पहले तो खास ध्यान नहीं दिया. फिर जो कुछ उस ने सुना उस से उस का माथा ठनका. वह दौड़ता हुआ आया और विभा का हाथ छुड़ा कर चिल्ला कर बोला, "मां, तुम मां हो या पत्थर? यदि कोई निरीह प्राणी आश्रय मांग रहा है, वह भी रातभर के लिए, फिर वह जिस ने जीवनभर तुम्हारी बेगार की है, उसे यों ढकेलते तुम्हारा कलेजा नहीं कांप रहा? और कुछ नहीं तो उस की इज्जतआबरू का भी तुम्हें ध्यान नहीं है. कहां जाएगी रात में बेचारी? भूखे भेड़ियों के हवाले कर रही हो? विभा रातभर मेरे कमरे में रहेगी. छोड़ो उसे."

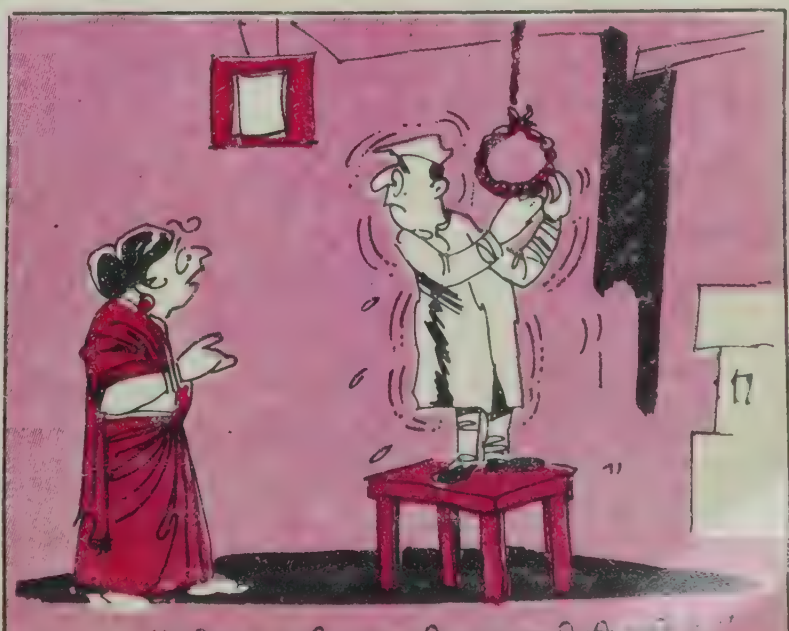
"अरे वाह, मैं नहीं जानती थी कि द्रौपदी ने कितनों को अपना शिकार बनाया है? एक नहीं दोनों भाई दीवाने हैं."

"नहींनहीं... चाची नहीं. इतना बड़ा कलंक मत लगाओ." वह विजय से जबरन बांह छुड़ा कर सड़क तक दौड़ती चली गई.

"विभा... विभा... रुको... ठहरो... मां, विभा को बहन मानता हूं, छोटी बहन. तुम... तुम बहुत छोटी पड़ गई हो मां."

वह दौड़ कर कमरे में से पैंट पहनता निकला. दोनों नेत्रों से उस के आंसू बहबह कर फर्श पर गिरते जा रहे थे. जब तक वह सड़क पर पहुंचा विभा कहीं जा चुकी थी. शायद कोई गाड़ी मिल गई थी जिस से वह चली गई.

रात्रि का अंधकार घिर आया था. विजय वापस लौटा और अपना स्कूटर निकाल कर स्टेशन, बस स्टैंड सब जगह के कई चक्कर लगा आया परंतु विभा का कहीं पता नहीं था.



"रुकिए, अभी आप की सरकार गिरी [illegible]"

मां का लगातार बड़बड़ाना सुन कर भी वह कुछ नहीं सुन पाया. आधी रात को वह लौटा. मातापिता दोनों सो चुके थे या मुंह फुलाए बैठे थे. वह बिना खाएपिए बिस्तर पर जा पड़ा. उसे रहरह कर विनय और विभा के मामा पर क्रोध आ रहा था जो दो दिन से न जाने कहां गायब थे. न जाने विभा पर क्या बीते?

जब विजय से हाथ छुड़ा कर रोतीकलपती विभा सड़क तक पहुंची थी, उसी समय एक तिपहिया आ गया था. विभा ने उसे रुकने का इशारा किया तो वह रुक गया. अंधेरा होने से वह यह नहीं देख पाया कि लड़की रो रही है, वह चल दिया ले कर.

"कहां जाना है?"

"कहां बताऊं भैया? जहां मुझ जैसी बेसहारा लड़कियों को पनाह मिल सके, वहां ले चलो."

"स्टेशन?"

"हां, क्या कोई गाड़ी जाती है इस समय?"

"नहीं, इस समय तो नहीं. बस स्टैंड ले चलूं?"

"हां, वहीं चलो." वह अवरुद्ध कंठ से बोली.

"पैसे हैं आप के पास?" तिपहिया चालक अनायास पूछ बैठा.

"नहीं, पैसे तो नहीं हैं."

"मेरे किराए के?"

"नहीं हैं, फिर कभी चुका दूंगी."

"वाह, यह भी खूब रही. उतरिए."

"भैया, मुझे किसी नारी निकेतन में पहुंचा दो. भला होगा तुम्हारा."

"नारी निकेतन यहां कहां? अनाथालय ले चलूं?"

"हां भैया, वहीं ले चलो."

थोड़ी देर चलने के बाद वह बोला, "आ गया अनाथालय." उस ने झांक कर देखा. बोर्ड टंगा था. वह उतर गई.

"भैया, मेरे पास यह चांदी की अंगूठी है. इसे रख लो. पैसे नहीं हैं."

"रहने दो बहन, मुसीबत की मारी दिखती हो. इनसानइनसान के ही तो काम आता है. आप सुरक्षित जगह पहुंच गईं, यही मेरा इनाम है. किसी और के हाथ पड़ जातीं तो जाने कहां होतीं."

तिपहिया चला गया तो वह भय से कांप उठी. उस ने तो ऐसी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया था. वह दौड़ती हुई अनाथालय के भीतर चली गई. वहां उसे आश्रय, सुरक्षा और प्यार सब कुछ मिला. न वहां हाड़तोड़ मेहनत थी, न प्रताड़ना और न जलीकटी व्यंग्य वाणी.

तीसरे दिन विनय और विभा के मामा लौटे तो घरवालों का यह कांड सुन कर स्तब्ध रह गए. मामा ने पूरे घर में कोहराम मचा दिया. रोते हुए वह ढूंढ़ने निकले. इधर विनय ने मां को आड़े हाथों लिया और लड़झगड़ कर साफ कह आया कि वह हर हालत में विभा से ही शादी करेगा नहीं तो सारा जीवन ऐसे ही बिता देगा. अगर विभा को कुछ हो गया तो वह मुंह नहीं दिखाएगा. विजय पर भी वह बरस पड़ा जो दो दिन तक उसे न ढूंढ़ पाया न रोक पाया. थाना, कचहरी और अस्पताल हर जगह पूछताछ की. फिर एकएक वाहन वालों से पूछने लगा तो उसी तिपहिया चालक से मुलाकात हो गई. उस ने उस अनाथालय का पता बता दिया, जहां उस ने विभा को छोड़ा था.

विभा अपने कमरे में उदास बैठी थी. अभी उसे कोई काम नहीं सौंपा गया था. पहले वह अपनी मनःस्थिति ठीक कर ले तब उसे कुछ काम बताया जाएगा. यही उस अनाथालय के व्यवस्थापक का आदेश था.

तभी विभा के मामा विनय के साथ जा पहुंचे. मामा को देखते ही वह उन के कंधे पर सिर रख कर बिलखबिलख कर रो पड़ी. विनय के नेत्रों में भी आंसू आ गए. मामा का तो बुरा हाल था.

"विभा, चल. घर चल. मेरे रहते कोई तुझे हाथ तो लगा ले. हाय क्या हालत हो गई तीन दिन में तेरी. मैं... मैं तेरे रुपए लेने गया

था बेटी, विनय के साथ. पूरे 41 हजार रुपए मिले हैं, बहुत मुश्किल से. अब तेरी धूमधाम से शादी करूंगा."

"मामा, अब मेरा कोई नहीं है. मुझ जैसी लड़कियों के लिए ही तो ये अनाथालय खुले हैं. मेरे कारण आप घरभर के लिए कांटा हो गए हैं. बस, यहीं आ कर मुझे आशीर्वाद दे जाया कीजिए. यहां मुझे पढ़ने और पढ़ाने की सारी सुविधा देने का वचन दिया है प्रबंधकों ने. यह रुपया आप अपने बुढ़ापे के लिए रखिए."

"छिःछिः, यह क्या कह रही है. जब तक तेरा मामा जीवित है, वह घर तेरा रहेगा. और यह रुपया तो तेरे मांबाप की अमानत थी. यह दे कर मैं क्या तुझ पर एहसान कर रहा हूं. इसी लिए तो मैं कई बरस से चक्कर काट रहा था. भला हो विनय बेटे का, जिस के प्रयत्न से यह रकम मिल सकी. और... और विनय ने केवल तुझ से ही शादी करने की कसम खा ली है. तू ने इस से बात भी नहीं की."

"नहीं मामा, मैं इस विषय में सोच भी नहीं सकती. मुझ सी अनाथ किसी भले घर की कुलवधू नहीं बन सकती." उसे चाची के कहे एकएक व्यंग्य बाण याद आ गए और वह फिर हथेलियों से मुंह छिपा कर रो पड़ी.

"विभा, मैं विजय से एकएक बात सुन चुका हूं. मैं साफ कह आया हूं मां और पिताजी से भी कि मैं शादी करूंगा तो तुम से नहीं तो..."

"नहींनहीं विनय दा. चाची ने मुझे बहुत जलीकटी सुनाते हुए यह कहा था कि मैं उस घर की बहू नहीं हो सकती. अगर यह शादी हुई तो वह अपनी जान दे देंगी. अतः यह विवाह नहीं हो सकता."

"तो मैं भी तुम्हें बता देता हूं कि यदि तुम शादी से इनकार करोगी तो मैं जिंदा नहीं रहूंगा."

"विनय दा..." उस ने आंसूभरी आंखों से उस की ओर देखा. विभा के कांपते लाल अधर कुछ कहतेकहते थम गए.

"पगली, वह तो तुझ से शादी की बात कर रहा है और तू कह रही है 'विनयदा.' बस, अब मैं तेरी एक नहीं सुनूंगा. तू घर मत चल. मैं यहां से ही ब्याह का प्रबंध करूंगा."

"नहीं मामा, घर नहीं, द्वार नहीं, कुछ ठौरठिकाना नहीं, मैं चाची का दिल दुखाना नहीं चाहती."

"वह सब ठीक हो जाएगा. मकान तो विजय ने तलाश लिया है. सब हो जाएगा. यह अवसर मैं जाने नहीं दूंगा. विनय सा सुंदर, शालीन वर तुझे नहीं मिलेगा. फिर विनय के पिता और भाई जब तैयार हैं तब चाची भी तुझे कलेजे से लगा लेंगी. वह तो बहुत ममतामयी हैं. अवश्य वह तेरी मामी के उलटेसीधे बहकावे में आ गई होंगी.

भूल और अन्याय

अपनी भूल को स्वीकार करने में जो गौरव है, वह अन्याय को चिरायु रखने में नहीं. — प्रेमचंद

"अच्छा, विनय, अब तुम पूछ लो इस से. मैं बाहर खड़ा हूं." वह बाहर चले गए तो विनय बोला, "विभा, क्या तुम मुझे स्वीकार नहीं करोगी? क्या यह तुम्हारा अंतिम निर्णय है? मुझ से प्यार नहीं है तुम्हें?"

विभा ने भीगी पलकें उठा कर विनय को देखा. फिर दौड़ कर उस की छाती में मुंह छिपा कर फूट पड़ी. विनय की बलिष्ठ बांहों का घेरा और कसता चला गया.

"बस विभा, मुझे अपना उत्तर मिल गया. तुम्हारे बुरे दिन और काली रातें तेरेमेरे नेह की ज्योति से जगमगा उठेंगे. जब अमावस की काली रात दीपों के प्रकाश से भर उठती है, वही दीपावली कही जाती है न. तो अब रोज होगी तुम्हारी दीपावली. अब विनय से और विनय तो नहीं कराओगी न?"

"नहीं, विनय." दोनों एकदूसरे के नयनों में झांक कर खिलखिला कर हंस पड़े. ●

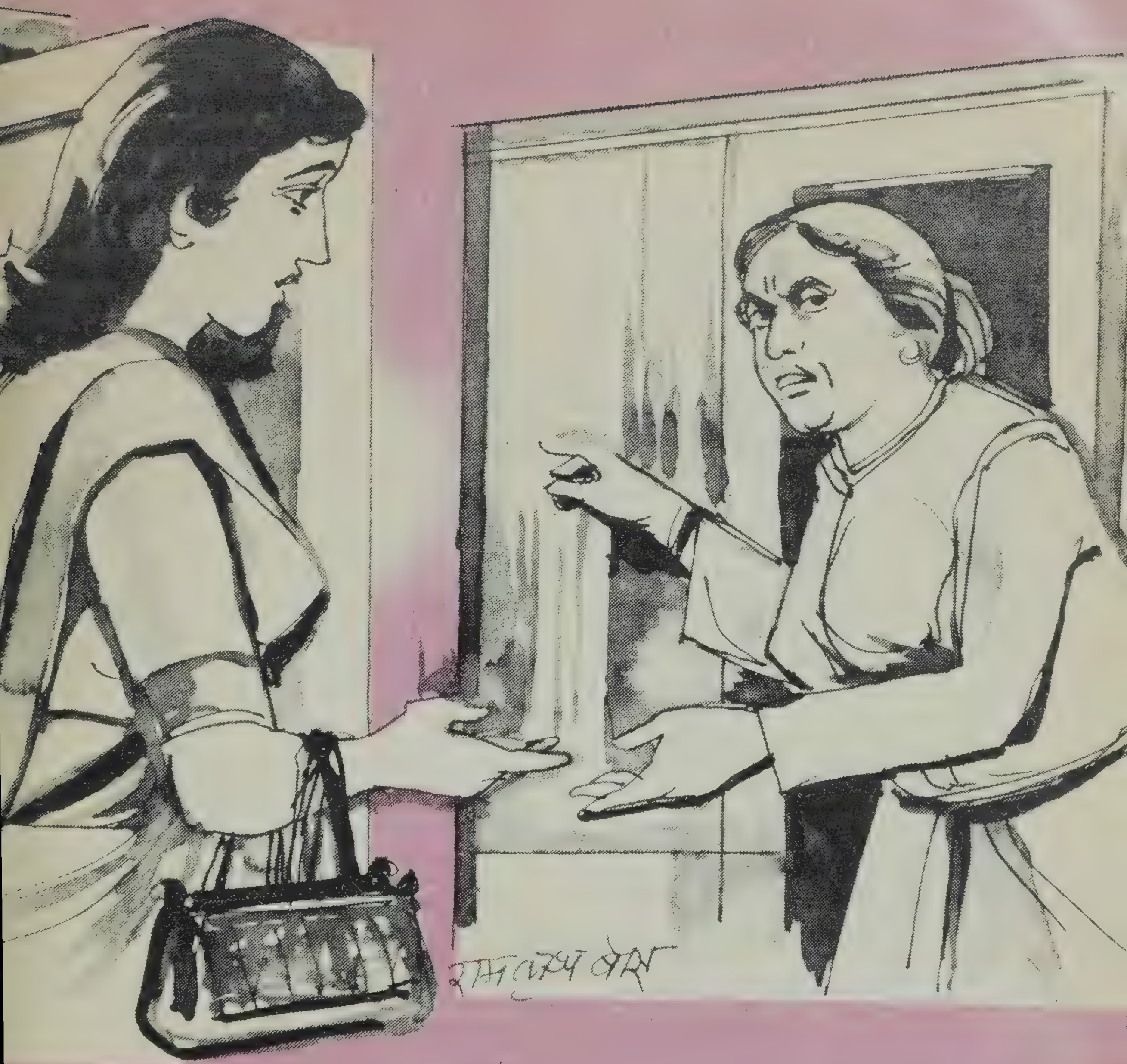
मौसी

कहानी • पूर्णिमा गुप्ता

वह पंडितजी की पत्नी हैं और जगत के लिए 'मौसी'. कोलंबस शहर के भारतीय उन से बिना पूछे अपनी नाक पर से मक्खी भी उड़ा लें तो वह नाराज हो जाती हैं. यह मंदिर भी तो उन्हीं का बनवाया हुआ है या कहना चाहिए कि वह ऐसा ही समझती हैं. सच पूछिए तो जनता के योगदान से बना है यह मंदिर. मगर मजाल है जो पंडितजी को भी उस का श्रेय मिल जाए, किसी और की तो बात ही क्या.



यों तो मंदिर जनता के हित एवं भारत की परंपरा को अमरीका में स्थापित करने के लिए बना है. मगर 'भगवान' के साथसाथ मौसी के भी पैर छू लो तो 'पुण्य' ज्यादा मिलता है. हर मौके पर मंदिर में एकसाथ बैठ कर प्रसाद के रूप में खाना वही मिलता है, जो मौसी के बिहार के गांव में किसी खास मौके पर मिलता था, यानी पूरी और आलू. खाओ तो पूरीआलू, न खाओ तो



"मौसी उस दिन मैं अपनी हीरे की अंगूठी भी छोड़ कर गई थी..." नमिता ने मौसी से कहा.

पूरीआलू. फिर यह तो भगवान का प्रसाद है. सब को माफिक आएगा ही. प्रोटीन, कोलेस्टराल, कार्बोहाइड्रेट्स और विटामिनों से न मौसी को कोई वास्ता है, न उन के भगवान को.

जब नमिता का सपरिवार इस शहर में आना हुआ तो उसे भी सब की तरह जल्दी ही मालूम हो गया कि भगवान के यहां जाने का रास्ता मौसी के घर से हो कर गुजरता है. मगर वह गुस्ताखी कर बैठी. एक गुस्ताखी होती तो माफी भी मिल जाती, मगर एक के बाद दूसरी, जिस का दंड उसे मिलना ही था.

पहली गुस्ताखी यह कि उस का पति से झगड़ा हुआ और दोनों ने अलग होना उचित समझा. यह बात पंडितजी और मौसी को मान्य नहीं थी. मौसी ने सुझाव दिया कि पहली शादी पंडित ने ठीक नहीं कराई. नमिता ने अपने को आधुनिक मान कर कन्यादान भी नहीं कराया था. उन के पति सही मंत्रों के साथ दोबारा दानपुण्य के साथ शादी कराएं तो सब ठीक हो जाएगा.

जब भगवान के दरवाजे पर दो संतरी खड़े हो जाएं तो दरवाजा बिना घूस के खुलना मुश्किल होता है. नमिता की मौसी से बहस शुरू हो गई.

मौसी ने आरोप लगाया, "नमिताजी, आप तेज मिजाज हैं, इसी से आप का पति से झगड़ा हो गया."

नमिता भी दबने वाली नहीं थी, ''मौसीजी, तेज तो आप भी हैं. पंडितजी क्या निकाल दें आप को घर से?''

मौसी सकपका कर खामोश हो गई.

अमरीका आ कर मौसी ने यहां की सभ्यता से एक बात अवश्य सीख ली, यानी सालगिरह मनाना. मंदिर उन का है ही, सो आधे वक्त भजनकीर्तन होता है और बाकी आधे वक्त सालगिरह मनाई जाती है. कभी जन्मदिन की तो कभी शादियों की. भरापूरा परिवार है मौसी का, 8-10 बच्चे और फिर उन के बच्चे.

ऐसे ही किसी मौके पर मौसी ने बड़ा दिल कर के पति से विलग नमिता को न्योता दे दिया. दरवाजे पर ही सेवक का हाथ फैला था, ''नमिताजी, तोहफे के लिए 21 डालर दे दीजिए.''

नमिता को ट्यूमर हो गया. उस के आपरेशन की तारीख तय हुई. मौसी ने फिर एक मौका दिया नमिता को, मंदिर में भगवान के दर्शन का.

नमिता ने वहां जा कर खाना खाया, मौसी की 'शुभकामनाएं' लीं और चलने को तैयार हुई.

मौसी ने प्यार से गले लगाया और एक साड़ी दी, ''अरे नमिता, गुस्से में तेरे से गलती भी हो गई हो तो भगवान माफ करेंगे. तू तो मेरी बेटी के समान है. सब देवताओं के पैर छू ले.''

नमिता फिर चलने को उद्यत हुई तो वह बोली, ''तू सब जेवर पहने हुए है? अस्पताल में तो कुछ ले जा नहीं सकते. ऐसा कर, इन्हें यहीं उतार कर रख जा. तू अस्पताल में पड़ी होगी...कौन जाने जेवर घर में सुरक्षित रहें या नहीं...''

मौसी के व्यक्तित्व का दबदबा कोलंबस शहर के भारतीयों पर इस कदर छाया था कि कोई उन के विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत नहीं करता था. इसी स्थिति का लाभ उठा मौसी ने नमिता के गहने हड़प लिए थे. पर नमिता ने ऐसा क्या दांव खेला कि मौसी कुनमुना कर रह गईं?

नमिता बोली, ''इस वक्त तो मेरी आर्थिक स्थिति डांवांडोल है. वैसे भी मैं अकेली ही खाना खाऊंगी. आप परिवारों से 21 ले रहे हैं तो मुझ से 11 ले लीजिए.''

''ऐसा कैसे हो सकता है? सब को बराबर देने चाहिए.''

''सेवकजी, मुझ में तो इतनी क्षमता नहीं है,'' यह कह कर नमिता आगे बढ़ गई.

10 मिनट बाद सेवक नमिता को ढूंढ़ते हुए आ पहुंचा, ''अच्छा 11 ही दे दीजिए.''

शायद मौसी से सलाहमशवरा कर के आया होगा. हो सकता है, मौसी ने उस वक्त बात आगे न बढ़ाना ही ठीक समझा हो. मगर भगवान से अवश्य अपील हो चुकी थी.

नमिता को यह बात ठीक लगी. उस ने कुंडल और हीरे की अंगूठी उतार कर दे दी. घड़ी उतारी, फिर चूड़ियां निकालने की कोशिश की तो दिक्कत हुई. उस ने कहा, ''मौसी रहने दो, तकलीफ होगी उतारने में. शायद अस्पताल में भी इन्हें उतारने को न कहें...क्योंकि इन्हें तो कोई चोर भी आसानी से नहीं उतार सकेगा.''

मौसी क्रीम की शीशी ले आईं. आखिर चूड़ियां उतरवा ही लीं. नमिता सब दे कर चलने को उठ खड़ी हुई. फिर न जाने क्या उस के मन में आया, ''मौसी, घड़ी मुझे दे दो. यह मुझे जान से भी प्यारी है. पति की दी आखिरी निशानी,'' वह 8 हजार डालर की रोलैक्स वापस ले लाई.



एक दिन मौसी मिलीं तो बोलीं कि उन की एक चेन भी खोई है.

अगले दिन आपरेशन हुआ. मौसी अस्पताल में मिलने आईं. उस से अगले दो दिनों में दो बार घर पर भी आईं, खूब सारा खाना ले कर. मगर नमिता के जेवर न लाईं और न ही कोई जिक्र किया इस बात का.

दोचार दिन में नमिता चलनेफिरने लायक हुई तो एक दोस्त ने अपने घर खाने पर बुलाया. वहां कुछ अन्य मित्र भी आए थे. बात चली चोरी पर तो किसी ने कहा, "दो दिन हुए मौसी के घर भी तो चोरी हुई थी...कुछ जेवर गया बताते हैं."

नमिता के कान खटके. वह फोन करने के लिए उठ खड़ी हुई.

"हां मौसी, मैं नमिता बोल रही हूं. सुना है, आप के घर चोरी हो गई...मेरा जेवर?"

"तुझे किस ने कहा? तेरे नुकसान के पैसे तो मैं दे दूंगी."

"और आप ने मुझे सूचना भी नहीं दी? यह तो बताइए कि क्या-क्या गया है?"

"तेरे तो बस कुंडल गए हैं, मोतियों के..."

"अंगूठी और चूड़ी छोड़ गया? मैं अभी आ जाऊं लेने? मौसी, मेरे जेवर तो दोबारा बन नहीं पाएंगे, खैर..."

"अंगूठी तो मुझे तेरी याद नहीं. हां, चारों चूड़ियां मिल गई हैं. हमारे एक दोस्त ने कहा है कि वे नकली हैं, इसलिए चोर भी छोड़ गया."

"मैं अभी आ रही हूं." वे 4 चूड़ियां नमिता की नानी ने दी थी.

प्रभा को साथ ले कर वह मौसी के घर पहुंची तो मौसी ने कुंडल के दाम पूछे. जापान से लाए असली मोती थे. दाम सुन कर मौसी की हवा गुल हो गई. उन के गांव में तो किसी ने ऐसे मोती का नाम भी नहीं सुना था.

"मौसी, उस दिन मैं अपनी हीरे की अंगूठी भी छोड़ कर गई थी...हजार डालर की होगी वह..."

"इतने की भी कोई अंगूठी होती है? खैर, तू बीमा कंपनी से जो चाहे ले लेना. हमारा बीमा तो बस ढाई सौ डालर तक के जेवर हरजाना देता है. उतने की तो

पंडितजी की घड़ी ही गई है."

नमिता लौटते हुए प्रभा से बोली, "यह मौसी कैसे पलट गईं अपनी बात से? फोन पर तो मेरा नुकसान स्वयं देने को कह रही थीं."

अगले दिन एक सज्जन का फोन आया, "नमिताजी, सुना है, आप को अपने जेवर लोगों के घर छोड़ने का शौक है. अगली बार हमारे घर छोड़ दीजिएगा, गायब तो हम भी करवा देंगे."

नमिता सोचने लगी, 'क्या सचमुच में गलत था मौसी पर भरोसा करना?'

अगली सुबह उस ने अपने बीमा एजेंट से बात की तो पता लगा कि उस की अपनी पालिसी से हजार डालर तक हरजाना मिलेगा, बाकी मौसी को पालिसी से वसूल होगा. उस ने बताया कि यह तो सारे प्रांत का कानून है कि हर पालिसी पर हजार डालर तक के जेवर का हरजाना देना पड़ता है. 'सो मौसी यहां भी झूठ बोल गईं,' सोचते हुए नमिता ने मौसी से पुलिस रिपोर्ट की प्रति और पालिसी का नंबर लेना चाहा तो वह टाल गईं.

एजेंट ने कहा कि मौसी उस को नहीं टाल सकतीं, वह एक करारी सी चिट्ठी लिख कर मांग करेगा. फोन करने पर तो मौसी कुछ भी बोल सकती हैं और उस का कोई सुबूत होगा नहीं.

जब एजेंट ने काररवाई शुरू की तो मौसी ने नंबर दे दिए. मगर एक दिन मिलने पर नमिता से बोलीं कि उन की एक सोने की कीमती चेन भी चोरी हुई है. उन के बात करने के ढंग से साफ जाहिर था कि यह जो नई चेन पैदा हुई है, उस का आकार बढ़ कर साढ़े 7 सौ डालर का होने वाला है. यानी जितनी बीमे में गुंजाइश थी, उतने का ही उन का जेवर खोया था.

फिर भी नमिता बोली, "मौसी, मुझे अपने बीमे से ज्यादा से ज्यादा अंगूठी के हजार डालर मिलेंगे, कुंडलों का आप दावा कर लीजिए."

नमिता को उन की चुप्पी से तसल्ली नहीं हुई तो उस ने उन के एजेंट को फोन कर दिया. पता लगा कि मौसी ने पहले से दावा कर रखा था, मगर अपने नाम से. नमिता ने कंपनी को एक चिट्ठी लिख दी.

उसे आश्चर्य हुआ, जब कंपनी के अफसर का फोन आया कि उस का दावा मान लिया जाएगा, अगर उस के पास सुबूत हो. कोई रसीद या तसवीरें, जिस में उस ने ये जेवर पहन रखे हों.

नमिता ने अपनी सारी एलबमें उलटपलट डालीं और तसवीरें ले कर पहुंच गई बीमा कंपनी के दफ्तर. अफसर ने कहा कि मौसी के दावे में 250 डालर की गुंजाइश थी, मगर नमिता को मिलेगा कुछ नहीं क्योंकि पहले 250 कटौती योग्य हैं.

नमिता ने बीमा के सरकारी दफ्तर में कमिश्नर को चिट्ठी लिख दी कि दोनों कंपनियां कटौती कैसे लगा सकती हैं? जबकि उस की अपनी कंपनी कटौती लगा चुकी है.

मौसी ने एक दिन मंदिर में हम को सुनाते हुए कहा, "इस अकेली औरत ने पति से झगड़ा किया, फिर मुझ से, अब सरकारी दफ्तर पहुंची है, जैसे यही एक होशियार है."

किसी ने कहा, "इस ने बड़े यारदोस्त पाल रखे हैं, किसी की पहुंच होगी, वरना इस की क्या मजाल थी."

नमिता हर्ष से फूली न समाई, जब सरकारी दफ्तर से चिट्ठी आई कि बीमा कंपनी ने 250 डालर देना मंजूर कर लिया है और साथ में दिक्कत के लिए माफी मांगी है.

इन सब चक्करों में नमिता को जेवरों का नुकसान अवश्य रहा, मगर उस का अपने पर भरोसा बढ़ गया.

अगली बार मंदिर में मौसी दिखाई पड़ीं तो नमिता ने तपाक से जा कर नमस्ते की. लेकिन मौसी कन्नी काट कर वहां की भीड़ में गायब हो गईं. ●

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सोनकर, ग्रेजुएट, प्रतिष्ठित, 25/160, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 7103, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनियर वैश्य, 24, 5′-1″, एम.एससी. (एग्रीकल्चर), बैंक अधिकारी, साफ गेहुआं रंग, पिता सरकारी प्रतिष्ठान में उच्च पद, हेतु सुयोग्य, हिंदू वर. बैंक अधिकारी को वरीयता. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7104, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (गौर), 24,153, एम.एससी. (बाटनी), गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, कन्या हेतु प्रथम श्रेणी शासकीय सेवारत, उच्च व्यवसायी वर चाहिए. उत्तम व शीघ्र विवाह. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 7105, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्रह्मभट्ट, 22/155, इंटरमीडिएट, गोरी, गृहकार्यदक्ष, कुलीन परिवार कन्यार्थ सरकारी सेवारत, व्यवसायरत, व्यवस्थापित वर चाहिए. वि.नं. 7106, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 21, 150, बी.काम., कंप्यूटर प्रोग्रामर, गौरवर्ण, स्लिम, सुंदर कन्या हेतु उच्च शिक्षित, स्मार्ट, सजातीय वर चाहिए. उत्तम विवाह. वि.नं. 7107, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 24, 159, एम.बी.बी.एस., सुंदर, गौरवर्ण कन्यार्थ एम.डी., एम.एस., सुस्थापित वर. वि.नं. 7108, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन (सरावगी), 31/152, एम.ए., बी.एड., सुंदर, सुशील, मान्यता प्राप्त विद्यालय में कार्यरत, अविवाहित कन्या हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित, निर्व्यसनी, शाकाहारी, सरकारी सेवारत या उत्तम व्यवसायरत वर. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7109, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, ब्राह्मण, एम.ए., एम.एड., (पति का स्वर्गवास) एक बिटिया, हेतु हमउम्र, सुव्यवस्थित जीवनसाथी. कोर्ट मैरिज. वि.नं. 7110, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 24½, 160, एम.एससी., बायोटेक्नालाजी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, संभ्रांत, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु पूर्ण विवरण सहित अपेक्षित लिखें : वि.नं. 7111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, राय (जैसवाल), 28/157, एम.एससी., एम फिल., शासकीय सेवारत, व्याख्याता हेतु सजातीय, सुयोग्य, डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, बैंक सेवारत वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि.नं. 7223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, बी.ए., 24 वर्षीया, 5′-3″, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, संपन्न परिवारीय कन्या हेतु मित्र जीवनसाथी चाहिए. स्वयं कार्यरत, दहेजपसंद क्षमा करें. वि.नं. 7224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24, 152, मैट्रिक, गेहुआं, इकहरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, भाई इंजीनियर, हेतु सेवारत वर. उत्तम विवाह. वि.नं. 7225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 23½ वर्षीया, 156 सें.मी., सीनियर सेकेंडरी, पिता राजपत्रित अधिकारी रिटायर्ड, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, शिक्षित, वर चाहिए. वि.नं. 7226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 152, अग्रवाल, एम.एससी., बी.एड., कानवेंट शिक्षित एवं अध्यापन कार्यरत, गोरा रंग, गृहकार्यदक्ष, स्लिम, विग प्रयोग, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 156, बैस राजपूत, एम.ए. अध्ययनरत, अर्धशासकीय सेवारत, सुंदर, स्मार्ट, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, उच्चाधिकारी, व्यावसायिक, दहेजविरोधी वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 7228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, खटीक, बी.ए., 22½, 156, आकर्षक, गोरी, घरेलू, संपन्न परिवारीय कन्या हेतु सजातीय, सरकारी नौकरीशुदा वर. उत्तम विवाह. वि.नं. 7229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आद्य गौड़, 24, 155, सुंदर, गृहकार्य, कढ़ाई, सिलाई दक्ष, इंटरमीडिएट, परित्यक्ता हेतु आद्य गौड़, सनाढ्य, गौड़ ब्राह्मण, अविवाहित, विधुर, शासकीय सेवारत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित भेजें. वि.नं. 7230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 21 वर्षीया, 168 सें.मी., बी.ए. गेहुआं रंग, उत्तरप्रदेशीय कन्या हेतु सेवारत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 5′-4″, विश्वकर्मा, परदेशी, बढ़ई, एम.काम., एम.ए. (मराठी वाङ्मय), बी.पी.एड., टीचर नागपुर, रहवासी लड़की के लिए योग्य वर चाहिए. जाति, उपजाति, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7232, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मी क्षत्रिय, 24, 163, गौरवर्ण, अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष, बी.एससी. गृहविज्ञान, एम.ए. अध्ययनरत कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 7233, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती, 24, 158 सें.मी., एम.एससी., गौरवर्ण, स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7234, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन दिगंबर, पद्मावती पुरवाल, मांगलिक, 22/155, ग्रेजुएट, साफ रंग, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु मांगलिक, सुयोग्य, सुव्यवस्थित वर. उत्तम विवाह. वि.नं. 7235, सरिता, नई

दिल्ली-110055.

नान मांगलिक, दिगंबर जैन, 19 वर्षीया, 5′-3″, स्नातकरत, बी.काम. पास दिल्ली विश्वविद्यालय से, घरेलू, खूबसूरत, उच्च प्रतिष्ठित व्यावसायिक परिवार (दिल्ली) की कन्या हेतु धार्मिक, शाकाहारी, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7236, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 23, 160, पोस्ट ग्रेजुएट, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 7237, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वार्ष्णेय, 24, 155, एम.ए. इकनोमिक्स, बी.एड., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, बायां पैर हलका पोलियोग्रस्त, राजस्थान निवासी कन्यार्थ व्यवसायी, सेवारत, सजातीय या अग्रवाल वर. वि.नं. 7238, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 27, 162, मास्टर डिगरी (लाइब्रेरी) अध्ययनरत, सुशील, गृहकार्यदक्ष, मध्यमवर्गीय कन्यार्थ सुयोग्य, शासकीय सेवा/शिक्षित, व्यवसायी, वर. सभी वैश्य मान्य. वि.नं. 7239, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 21, 152, बी.ए., अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, इंजीनियर, डाक्टर, आफिसर वर चाहिए. पिता इंजीनियर. वि.नं. 7240, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लड़की 29 वर्ष, एम.डी. (पैथो.), गोरी, इकहरी, सुंदर, पिता/भाई इंजीनियर, बहनें डाक्टर्स, के हेतु आई.आर.एस./आई.ई.एस., पी.जी. मेडिको, पी.जी. इंजीनियर वर चाहिए. वि.नं. 7241, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 140, स्लिम, गेहुआं रंग, डाक्टर कन्या हेतु स्मार्ट, सुयोग्य, शाकाहारी, निर्व्यसनी वर चाहिए. वि.नं. 7242, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ईसाई, 22, 155, इंटर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, बिहारवासी कन्यार्थ संतान अयोग्य, पारिवारिक, कार्यरत वर. जाति, दहेज नहीं. सविवरण हिंदी में. वि.नं. 7243, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, गौरवर्ण, 24, 5′-4″, एम.ए. अध्ययनरत पर्यायवरण प्रबंधन, हेतु शासन या संस्थान में कार्यरत वर चाहिए. जाति व वर्गबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7244, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 29, 152.5 सें.मी., सुदर्शनी, एम.ए., बी.एड., 2,650/-, केंद्रीय विद्यालय अध्यापिका हेतु सुयोग्य, निर्व्यसनी, शाकाहारी वर चाहिए. वि.नं. 7245, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आकर्षक, कर्नाटकवासी, तलाकशुदा, 33, 5′, पोस्ट ग्रेजुएट, केंद्रीय स्कूल अध्यापिका, बंबई, हेतु पोस्ट ग्रेजुएट, प्रोफेशनल, शाकाहारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7246, सरिता, नई दिल्ली-110055.

त्यागी, ब्राह्मण, 24/156, एम.ए., बी.एड., सुंदर, सुशील, शाकाहारी, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सेवारत एवं स्वरोजगार, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 7247, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, स्मार्ट, प्रतिभावान, 21/157, एम.बी.बी.एस., पी.जी. इच्छुक, संपन्न, प्रोफेशनल परिवार की कन्या हेतु मेडिको/आई.ए.एस., एक्जीक्यूटिव वर चाहिए. प्रथम बार विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7248, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 158 सें.मी., एम.एससी. (प्रीवियस) अध्ययनरत, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, म.प्र., जबलपुर निवासी, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्या हेतु सुंदर, शिक्षित, स्वावलंबी, सजातीय (उपजातिबंधन नहीं) वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7249, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निषाद (मल्लाह), 22, 162, एम.ए. (अध्ययनरत), बी.एड. (अध्ययनरत), पूर्ण शिक्षा अंगरेजी माध्यम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षिका हेतु इंजीनियर, डाक्टर व प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत अधिकारी वर चाहिए. पिता केंद्रीय उद्यम में उच्च अधिकारी, कश्यप, व अन्य उपजातियां स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 7250, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल (कलार) 26, 155, बी.एससी., डी.एच.-एम.एस. (होमियोपैथिक डाक्टर), गौरवर्ण, सुंदर होमियोपैथिक मेडिकल कालेज में व्याख्याता कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 7251, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन श्वेतांबर, तेरापंथी, 20 वर्षीया, एम.एससी. पास, अति सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. या अच्छे व्यवसायी को प्राथमिकता. पिता जनरल मैनेजर इन लिमिटेड कंपनी. वि.नं. 7252, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 172, एम.ए., एम.एड., सुंदर, गौरवर्ण, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, सरकारी सेवारत, अध्यापिका, पिता रिटायर्ड डाक्टर, शिक्षित परिवार, कन्या हेतु सरकारी सेवारत, राजपत्रित अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, आर्मी आफीसर अथवा बिजनेसरत वर चाहिए. वि.नं. 7253, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 21, 170 सें.मी., एम.बी.बी.एस. तृतीय वर्ष, कानवेंट शिक्षित, स्लिम, गोरी, स्वरूपवान व्यक्तित्व, दक्षिण स्थापित, अपर मिडिल क्लास परिवार, हेतु एम.डी./एम.एस. जीवनसाथी. वि.नं. 7254, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 21, 155, कानवेंट एजुकेटेड, बिजनेस मैनेजमेंट, सुंदर कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. उत्तम विवाह. वि.नं. 7255, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 160, द्वितीय श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, गृहकार्यदक्ष, सुस्थापित, मातापिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, प्रतिष्ठित परिवारीय इकलौती कन्यार्थ मध्य प्रदेश शासकीय सेवारत, उपयुक्त वर चाहिए. वि.नं. 7256, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर वैश्य, 24, 153, सुंदर, गौराकर्षक, गृहकार्यदक्ष, एम.बी.बी.एस. कन्यार्थ गौराकर्षक, पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टर, आई.आई.टी., इंजीनियर,

प्रशासनिक अधिकारी, जज, उच्च जातीय वर चाहिए. वि.नं. 7257, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, 150 सें.मी., 48 कि.ग्रा., गेहुआं रंग, आकर्षक नयननक्श, अंडर मैट्रिक, म.प्र. निवासी, बंगाली, निहायत गरीब कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. दहेज के इच्छुक क्षमा करें. कृपया पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7258, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, स्वर्णकार, 30 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा एवं इंगलिश टाइपिंग परीक्षा पास, शार्टहैंड परिणाम प्रतीक्षारत, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्यदक्ष (निर्दोष तलाकशुदा) कन्या हेतु सोनी समाज का वर चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 7259, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार), 24/152/2,000/-, 12वीं पास, साफ रंग, प्राइवेट नौकरी, कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7260, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भट्ट ब्राह्मण, 21 वर्षीया, 5′-2″, कानवेंट शिक्षित, बी.काम. फर्स्ट क्लास, एम.बी.ए. में अध्ययनरत, अति प्रतिभावान, प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 7261, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बलाई (मालवीय), 22, 160, बी.ए., एल.आई.सी. में सेवारत, छरहरी, सुयोग्य, सुशील, मध्य प्रदेशीय कन्या हेतु वर चाहिए. वि.नं. 7262, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 162 सें.मी., गौरवर्ण, एम.एससी., बी.एड., सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, मांगलिक कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7263, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, चौरसिया, एम.ए., बी.एड., गायिका, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, उच्च सेवारत या मेरे साथ व्यापार करने का इच्छुक युवक चाहिए. वि.नं. 7264, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर (तेली), गुजरात निवासी, 23, 160, बी.काम., गेहुआं रंग, संस्कारी कन्यार्थ सुस्थापित, योग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 7265, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 22/150, बी.ए. (आनर्स), गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुस्थापित, सजातीय वर. वि.नं. 7266, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ़ क्षत्रिय (स्वर्णकार), 21 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.ए., बी.एड. (अध्ययनरत), गोरी, सुंदर, इकहरी, मंगली, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, शिक्षित, सेवारत/व्यवसायरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7267, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, एम.ए. (अंत), बी.एड., 24, 11/155, कन्या हेतु कोरी (कोली) जातीय, डाक्टर, अभियंता, अधिकारी पद का सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 7268, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 155, एम.ए., बी.एड., गोरी, इकहरी, सुंदर कन्यार्थ निर्व्यसनी, शाकाहारी, राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. पिता उत्तर प्रदेश में प्रथम श्रेणी अधिकारी. लिखें : वि.नं. 7269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैसवाल, कलवार, 25, 164, 2,900/-, केंद्रीय, कन्यार्थ सेवारत, सजातीय वर. वि.नं. 7270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 20 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.ए., गोरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सेवारत, इंजीनियर, बैंक पदाधिकारी, राजपत्रित अधिकारी, डाक्टर अथवा लेक्चरर वर चाहिए. शीघ्र विवाह एवं जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7271, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 24, 165, आकर्षक, अति मेधावी, डाक्टर कन्यार्थ माहेश्वरी/अग्रवाल, डाक्टर वर चाहिए. वि.नं. 7272, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैसवार, राजपूत, 30, 160, इंटरमीडिएट, नर्सरी प्राइमरी, क्रैश टीचर्स कोर्स, डिप्लोमा प्राप्त, गेहुआं वर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ वर. वि.नं. 7273, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पी.सी. डिप्लोमा प्राप्त, ग्रेजुएट, 169 सें.मी., सुंदर, आकर्षक, 30 वर्षीया, श्रीवास्तव कन्या हेतु शिक्षित, संभ्रांत, कार्यरत, सुयोग्य, कायस्थ वर चाहिए. वि.नं. 7274, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

पासी, 31, 160, 4,000/-, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. सेवारत, बैंक, टीचर को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. वि.नं. 7153, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 28, 5′-6″, बी.काम., कंप्यूटर व्यवसायी, स्मार्ट, जातिबंधन नहीं. लड़कीपक्ष के साथ रहने में कोई आपत्ति नहीं है. वि.नं. 7163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, 29, 167, 3,500/-, एम.ए., एलएल.बी., सेवारत, पी.सी.एस. चयनित, हेतु सुंदर, गौरवर्ण वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7164, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गहलोत, माली, गौरवर्ण युवकों, 27, 6′, वेटनरी डाक्टर, एम.वी.एससी. व 29, 6′, बी.काम., एम.ए., निजी व्यवसाय, हेतु कन्याएं चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 7165, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति (पश्चिमी उत्तर प्रदेश), 27, 161, 3,500/-, सांवले, स्मार्ट, सिविल इंजीनियर (डिप्लोमा), प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में कार्यरत व इंजीनियरिंग ग्रेजुएशन कर रहे युवक हेतु वास्तविक सुंदर, गोरी, ग्रेजुएट, 23 से कम, 152 से ज्यादा वधू

चाहिए. बी.एड./साइंस को प्राथमिकता. दहेज नहीं. वि.नं. 7166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी, कुशवाहा (कोइरी), 26, 165, 3,200/-, एम.काम., शाकाहारी, दिल्ली व्यवस्थित, बीमा कर्मचारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सुसंस्कारित, प्रतिभासंपन्न, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी, बंधन नहीं. सविवरण लिखें : वि.नं. 7167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27, 180, 5,500/-, केंद्रीय प्रतिष्ठान सेवारत, प्रतिष्ठित परिवारीय, आकर्षक, इंजीनियरार्थ सुंदर, विदुषी वधू. वि.नं. 7168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, मंगल गोत्र, बी.काम., 26, 178, गेहुआं रंग, उत्तम व्यवसाय (कलकत्ता), प्रतिष्ठित परिवार, जन्म से पैरों के पंजे मुड़े हुए किंतु चलनेफिरने में कोई कष्ट नहीं. आकर्षक युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 7169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, मंगल गोत्र, 24, 178, मैट्रिक, आकर्षक, गेहुआं रंग, उत्तम व्यवसाय (कलकत्ता), प्रतिष्ठित परिवार, युवक हेतु गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 7170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य (कान्यकुब्ज), पूर्वी उत्तरप्रदेशीय, 27, 165, 2,400/-, डिस्टीलरी कैमिस्ट, एम.एससी., गौरवर्णीय हेतु उच्च शिक्षित, सुयोग्य कन्या चाहिए. अन्य उच्च शिक्षित वैश्य स्वीकार. लिखें : वि.नं. 7175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, हिंदू अग्रवाल (बंसल), विधुर, 41, 170, 10,000/-, शाकाहारी, बंगलौर स्थापित, हिंदीअंगरेजी बोलचाल, केंद्रीय सरकार सेवारत एवं व्यापाररत, दो बच्चे (कन्या 6 वर्षीया एवं पुत्र एक वर्ष), हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7185, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

23 वर्षीय, 160 सें.मी., कोरी (बुनकर), इंजीनियर, बी.ई. (इलेक्ट्रोनिक्स), भारतीय यांत्रिकी सेवा में चयनित, आई.आई.एम., अहमदाबाद में शिक्षारत, आकर्षक, गोरा रंग, स्मार्ट, पिता कार्यपालन यंत्री (म.प्र. शासन) पद पर कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार, बुंदेलखंड क्षेत्र, म.प्र. निवासी हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, ग्रेजुएट वधू (सजातीय को प्राथमिकता) की आवश्यकता है. जातिबंधन एवं दहेज नहीं. वि.नं. 7186, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, तलाकशुदा, निस्संतान, 5,000/-, हेतु तलाकशुदा बांझ अथवा विधवा, निस्संतान, 42 वर्षीया या अधिक, इकहरी जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 7187, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 33/5'-7", पांच अंकीय मासिक आय, सुंदर, स्वस्थ, गोरा, दहेज नहीं. जातिबंधन नहीं, हेतु गोरी, सुंदर वधू चाहिए. स्वयं पत्राचार को महत्त्व. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 7189, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, प्रोफेसर, विधुर, निस्संतान हेतु एकाकी, विश्वसनीय, बेसहारा, गृहकार्यदक्ष, टाइप जानकार जीवनसाथी चाहिए. निस्संतान विधवा को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7190, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम, 28, अविवाहित, राजस्थानवासी, सेवारत, लिपिक, स्वस्थ, (सेक्सुअल कमजोरी) हेतु कामेच्छा अनिच्छुक, विधवा, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति असमर्थ, लावारिस, सुशील कन्या लिखें . धर्म, जाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 7193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 5'-2", पिता पंजाबी खत्री, माता अंतर्जातीय, बी.काम., एलएल.बी., ठेकेदार, आकर्षक युवकार्थ सुंदर, शिक्षित, गोरी, गृहकार्यदक्ष, दहेजरहित, पंजाबी कन्या चाहिए. वि.नं. 7194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 26, 168 सें.मी., स्नातक, एलएल.बी. द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत, स्वयं का निजी व्यवसाय, मासिक आय चार अंकों में, संपन्न परिवार के युवक हेतु सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, यादव (अहीर) कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह हेतु लिखें : वि.नं. 7195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, 170, प्रजापति, अकेला (6 वर्षीय पुत्र), तलाकशुदा, मैकेनिक हेतु जीवनसाथी. विधवा को प्राथमिकता, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 27, 170.2, एम.ए., दिल्लीवासी, सेल्स एक्जीक्यूटिव, गौरवर्ण, सुंदर हेतु वधू. वि.नं. 7197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न परिवार के स्मार्ट, बैंक आफिसर, 32/170, हेतु सुंदर, सुशील, अलीगढ़ मुसलिम यूनिवर्सिटी/आई.टी.सी., लखनऊ से शिक्षित, एअर होस्टेस वधू चाहिए. धर्म, जातिबंधन नहीं. दहेजरहित शीघ्र विवाह. वि.नं. 7198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 26, 165 सें.मी., बी.ए. द्वितीय, गौरवर्ण, रेडीमेड गारमेंट शोरूम, मासिक आय 6,000/- रु., प्रतिष्ठित परिवार, हेतु जायसवाल या समकक्ष कन्या. विज्ञापन अति सुंदर हेतु, कोई दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 7275, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, उत्तरप्रदेशीय, 27, 182, गौरवर्ण, एम.ई., भारत सरकार के प्रतिष्ठान में इंजीनियर हेतु माहेश्वरी/अग्रवाल, उच्च प्रोफेशनल शिक्षा प्राप्त, सुंदर वधू. वि.नं. 7276, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ब्राह्मण, 30 वर्षीय, 5'-6", बी.ए., विधुर, निस्संतान, अपना व्यवसाय, हेतु घरेलू वधू. वि.नं. 7277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (धीवर), 26, 182, स्मार्ट, प्रथम श्रेणी अधिकारी, केंद्र सरकार उपक्रम, दिल्ली,

हेतु लंबी, गोरी, सुंदर, सुशिक्षिता वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7278, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, परिवारीय, 27 वर्षीय, 5'-9", मांगलिक, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, एम.काम., सरकारी सेवा में कार्यरत, मासिक आय रु. 2,700/-, युवक हेतु अति सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. प्रथम बार ही कुंडली एवं पूर्ण पारिवारिक विवरण के साथ संपर्क करें. बियाणी व काबरा छोड़ कर, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, शीघ्र विवाह. वि.नं. 7279, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 29, 167, एडवोकेट, बिहार निवासी हेतु सुंदर, स्लिम, सुशिक्षित, गौड़ ब्राह्मण वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण जन्मकुंडली के साथ लिखें : वि.नं. 7280, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राह्मण, सेना क्लर्क स्टोर, पिता सूबेदार, 24, 5'-6", हेतु शिक्षित, सेवारत वधू. वि.नं. 7281, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, राजपूत, 37 वर्षीय, 168 सें.मी., 68 कि. वजन, 5,200/-, बैंक कर्मचारी, कोठी, विधुर, दो बच्चे. वि.नं. 7282, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी अग्रवाल, 39 वर्षीय, कलकत्ता निवासी, सीनियर एडवोकेट, करोड़ों की अचल संपत्ति के मालिक, निजी मकान, एम.काम., एलएल.बी., वार्षिक आय 4 लाख से अधिक, सुशील, नामी घराने के युवक हेतु सुंदर, कुंआरी, अच्छे घराने की लड़की की जरूरत है. लड़का अविवाहित. अतिशीघ्र लिखें : वि.नं. 7283, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ़ राजपूत, स्वर्णकार, ए.एम.आई.ई. इंजीनियर, इंस्पेक्टर डेसू, 26, 165 सें.मी., 4,000/-, लड़के हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 7284, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी सांकला, 24, 170, सिविल इंजीनियर, सहायक निदेशक (ओ.एन.जी.सी.) हेतु सुंदर, स्लिम, स्नातक, कार्यरत, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 7285, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 26, 164, 3,500/-, इंजीनियर हेतु स्नातक, सुंदर, उच्चकुलीय वधू. वि.नं. 7286, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी नवयुवक, 27, डिप्लोमा इलेक्ट्रिक, रेलवे ट्रेनी चार्जमैन 'बी' हेतु सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 7287, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, धीवर, 29 वर्षीय, 165 सें.मी., बी.एससी., एम.बी.बी.एस., उ.प्र. निवासी, म.प्र. शासकीय सेवारत, शाकाहारी, डाक्टर हेतु सुयोग्य वधू. उच्च शिक्षित/मेडिको को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7288, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 27½, 171, 2,400/-, सैन्य शिक्षा अनुदेशक सेवारत हेतु ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. पूर्वी उ.प्र. निवासी को वरीयता. वि.नं. 7289, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली/कोरी, 31, 180, सुंदर, स्वस्थ, एम.बी.बी.एस., डाक्टर, सरकारी सेवारत (दिल्ली) हेतु शिक्षित, सेवारत/घरेलू, सुशील, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 7290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, सी.ए., गवर्नमेंट सर्विस, सुंदर, स्मार्ट, 26, 172, 7,000/-, लड़के हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, प्रोफेशनल क्वालीफाइड, मांगलिक, माहेश्वरी कन्या चाहिए. जन्मपत्रीसहित पूर्ण विवरण. वि.नं. 7291, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न व्यवसायी, सिंधी, विधुर, 42, 177, दो पुत्र (14-10), हेतु समझदार, सिंधी जीवनसाथी चाहिए. संतानोत्पत्ति के अयोग्य/अनिच्छुक को वरीयता. वि.नं. 7292, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25, 164, 5,000/-, स्मार्ट युवक, अपना व्यवसाय, हेतु सुशील, सुंदर, स्मार्ट लड़की चाहिए. वि.नं. 7293, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग गोत्र, 26 वर्षीय, 174 सें.मी., एम.बी.बी.एस., एम.डी. अध्ययनरत, संपन्न युवक हेतु सुंदर, मेडिको वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. पूर्ण बायोडाटा, पारिवारिक विवरण लिखें : वि.नं. 7294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26, 163, संभ्रांत पारिवारीय, एम.बी.बी.एस., पी.जी. अध्ययनरत युवकार्थ सुंदर, गोरी मेडिको/नान मेडिको, सुयोग्य वधू चाहिए. वि.नं. 7295, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, हिंदू, 30, 175, गोरा रंग, डिप्लोमा, रेलवे में टेलीकम्युनीकेशन इंस्पेक्टर हेतु सुंदर, गोरी, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. पिता रेलवे में डी.एन..वि.नं. 7296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल जैन मित्तल, 21 वर्षीय, 170 सें.मी., बी.ए., कानवेंट से हाई स्कूल पास, फाइव फिगर, हाई इनकमटैक्स पेई युवक के लिए शिक्षित, ग्रेजुएट, सुशील, गोरी, घरेलू कार्य में रुचि रखने वाली, अति सुंदर कन्या चाहिए. रांची (बिहार), जबलपुर (म.प्र.), सोलापुर (महाराष्ट्र), बंगलौर (कर्नाटक), फिरोजाबाद (उ.प्र.) में बहुत बड़ा थोक व्यापार में व्यस्त है. लिखें : वि.नं. 7297, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 24, 175, मैट्रिक, निजी व्यवसाय, महत्त्वाकांक्षी युवक हेतु आकर्षक, सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7298, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (फूलमाली), म.प्र. निवासी, 40/163, लेखापाल, सरकारी नौकरी, मासिक 5,000/-, निजी मकान, स्वस्थ, सुंदर कन्या, तलाकशुदा वधू. शीघ्र लिखें : वि.नं. 7299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 28 वर्षीय, 157 सें.मी., स्नातकोत्तर, कृषि बैंक अधिकारी हेतु सुंदर, शिक्षित, गोरी, स्लिम, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. प्राथमिकता उत्तर प्रदेश. वि.नं. 7300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आगरा निवासी, 25, 5'-6", आय चार अंकीय, सुशील हेतु सुशील, शिक्षित, गरीब वधू चाहिए. वि.नं. 7301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, अविवाहित, मैट्रिक, आकर्षक व्यापारी, 5,000/- रु. मासिक, नवयुवक को आवश्यकता है, अति प्यार और शीघ्र शादी की इच्छुक, पतली, गोरी, सुंदर जीवनसंगिनी. जाति, दहेज नहीं. अकेली और स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत परिवारीय, 24 वर्षीय, हैहय क्षत्रिय, 5'-8", बी.ई. (इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग), सुंदर, आकर्षक, निजी कंप्यूटर/प्रिंटिंग व्यवसायरत हेतु सुंदर, ऊंची, गौरवर्णीय, आकर्षक, सुशील, शिक्षित कन्या अपेक्षित. कंप्यूटर शिक्षिता को प्राथमिकता. वि.नं. 7303, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 46 वर्षीय, 182 सें.मी., बी.ए., निजी व्यवसाय, अविवाहित युवक हेतु गौरवर्ण, लंबी, पतली वधू चाहिए. वि.नं. 7304, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार), 27, 160, 4,700/-, गोरा, स्नातक, निजी व्यवसाय, हेतु सुंदर, पढ़ीलिखी वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7305, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, नेत्रहीन, पीएच.डी., एम.एड., (पी.जी.टी.), 4,500/-, 160 सें.मी., 35 वर्षीय हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7306, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27, 177, 4,000/-, स्नातकोत्तर, केंद्रीय सरकार सेवारत, उत्तरप्रदेशीय, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय, युवक हेतु अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशिक्षित वधू. पिता इंजीनियर. संपूर्ण विवरण भेजें. विज्ञापन सर्वोत्तम चयनार्थ. वि.नं. 7307, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लौहकार), 26, 165, मंगला लड़का, एम.ए., रंग गोरा, रेलवे में कार्यरत, वेतन 3,000/- रु. प्रतिमाह, युवक हेतु मंगली, सुंदर व सुशील वधू चाहिए. वि.नं. 7308, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, श्रीवास्तव कायस्थ, बिहारवासी, रेलवे कार्यरत हेतु सुंदर, गोरी, स्मार्ट, स्लिम, 5¼', ग्रेजुएट, स्वजातीय कन्या चाहिए. वि.नं. 7309, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर वैश्य (गुप्ता), युवक, 27, 165, स्मार्ट, भारत सरकार के संस्थान में जूनियर इंजीनियर हेतु प्रोफेशनली क्वालीफाइड या कार्यरत वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 7310, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत नागवंशी, कश्यप गोत्र, 26, 65, 168, गौरवर्ण, बी.ई. इलेक्ट्रानिक, एरोनाटिक इंजीनियर, वायुसेना, भूतल, 6,000/-, स्मार्ट, संपन्न परिवार, हेतु सजातीय कन्या चाहिए. बी.ई., मेडिको, सी.ए. को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7311, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 32 वर्षीय, 5'-10", अमरीका से इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग शिक्षित, उच्च श्रेणी आय, प्रतिष्ठित, धार्मिक एवं प्रेमी, संयुक्त परिवार के युवक हेतु आकर्षक, मिलनसार, मृदुभाषी एवं समझदार, शाकाहारी, धार्मिक, भारतीय परंपराओं का पालन करने वाली पारिवारिक कन्या चाहिए. युवक को अमरीका में सिर में चोट लगी थी परंतु अब पूर्णतः स्वस्थ, बायां हाथ व बायां पैर में हलकी कमजोरी. अपना रोजमर्रा कार्य व खुद के कंप्यूटर पर अपने से कार्य करता है. जातिबंधन नहीं. दहेजरहित शीघ्र विवाह. बेसहारा व गरीब भी स्वीकार्य. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7312, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 28, 165, 3,800/-, ए.एस.आई. (एम), लखनऊ, रंग गेहुआं, सुंदर युवक हेतु अत्यंत खूबसूरत योग्य, लंबी कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7313, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली स्थित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक के 5,000/- मासिक आय वाले, 25 वर्षीय, सुंदर, स्मार्ट, सवर्ण हिंदू पत्रकार हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षिता वधू चाहिए. बिना दहेज शीघ्र विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7314, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि (क्षत्रिय), 33 वर्ष, आय चार अंकों में, अच्छी प्रैक्टिस, डाक्टर हेतु केवल मेडिको वधू चाहिए. वि.नं. 7315, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 5'-2", बी.एससी., एलएल.बी., एम.बी.ए., सुस्थापित, शाकाहारी, हिंदू जुलाहा परिवार के युवक हेतु उपयुक्त वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7316, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 26½, 165, 9,000/-, बी.ई (इलेक्ट्रानिक्स), मल्टीनेशनल कंपनी में कार्यरत हेतु सुशिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 7317, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 53, 166, अग्रवाल, स्वस्थ, संपन्न, देहली, अपना कारोबार, मकान, जिम्मेदारी मुक्त हेतु सुशील, धार्मिक, 40 वर्षीय, थोड़ी पढ़ीलिखी, दहेजरहित, घरेलू, निस्संतान, विधवा, तलाकशुदा, बांझ, जरूरतमंद, बेसहारा जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 7318, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंघल अग्रवाल, एम.बी.बी.एस. डाक्टर, 30, 5'-6", रंग साफ (पिता बैंक अधिकारी), हेतु सजातीय, अच्छी, एम.बी.बी.एस. वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7319, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 41, विकलांग, हिप जाइंट्स, रीढ़ कड़ी अल्प झुकाव, स्नातकोत्तर, लिपिक, राज्यसेवा 2,600/-, निजी मकान, किरायार्थ दुकानें, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु पारिवारिक, बेसहारा, तलाकशुदा निस्संतान विधवा, कार्यक्षम, अंगदोषा जीवनसंगिनी

चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 7320, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 25, 170, 4,300/-, जूनियर इंजीनियर, पी.सी.एस. हेतु प्रयासरत, साधारण परिवारीय युवक हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन एवं उत्तम विवाह हेतु. लिखें : वि.नं. 7321, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, अंबष्ट, 46, 167, विधुर, निजी मकान, स्वरोजगार, दायित्वमुक्त, शाकाहारी, गौरवर्ण हेतु अविवाहित, विधवा, तलाकशुदा, निस्संतान, आत्मनिर्भर, सेवारत, सजातीय जीवनसाथी चाहिए. सभी कायस्थ घराना मान्य. दहेजबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7322, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43, 172, 4,000/-, सरकारी नौकरी, मैट्रिक, अविवाहित हेतु सिर्फ अमरीका, कनाडा स्थायी वधू चाहिए. वि.नं. 7323, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 151, गुप्ता, एम.डी. रेडियोलोजिस्ट, उच्च सरकारी प्रतिष्ठान में स्पेशलिस्ट, हेतु उच्च शिक्षा प्राप्त, सुंदर वधू चाहिए. डाक्टर वधू को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7324, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा ओसवाल, स्थानकवासी जैन, संभ्रांत परिवारीय, 36 वर्षीय, 178 सें.मी., सुंदर, गौरवर्ण, दिखने में 30/32 उम्र, स्थापित व्यवसायी, आय 6 अंकीय, विधुर हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित वधू. उम्र 25 से ऊपर, जो तीन पुत्री उम्र 14, 12, 10 को भी मातृत्व दे सके. पूर्ण विवरण गोत्र के सहित लिखें : वि.नं. 7325, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन, हिंदू (नाई), बंबईवासी, पब्लिक सेक्टर में सेवारत, बी.काम., 34, 160, 3,500/-, भाईभाभी डाकटर, बहन विवाहित, बैंक में सेवारत, हेतु हिंदू, सेवारत, ग्रेजुएट उत्तम परिवारीय कन्या से वैवाहिक प्रस्ताव आमंत्रित. जन्मपत्री, बायोडाटा, पारिवारिक विवरण सहित लिखें. भाषा, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7326, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुरु सिख (अरोड़ा), मध्य प्रदेश शासन में द्वितीय श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, 30, 5'-2", हेतु स्लिम, खूबसूरत, 22-25 वर्षीया कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7327, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, 55, 6,000/-, 170, विधुर, सपंत्तिधारक हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें : वि.नं. 7328, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दुबई में स्टोर कीपर के पद पर कार्यरत, बी.ए., 37 वर्षीय, 157, मध्य प्रदेश निवासी, तलाकशुदा, रंग काला, बालों का रंग सफेद, हिंदीअंगरेजी का अच्छा ज्ञान, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. अक्तूबर माह में भारत आने पर शीघ्र साधारण विवाह. तलाकशुदा, विधवा, निस्संतान को प्राथमिकता. कोई बंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण फुल साइज फोटो सहित पत्रव्यवहार करें. MUQADDAR HUSSAIN SONAPUR CAMP. POST BOX NO: 16638, DUBAI (U.A.E.)

खटीक, 27, 168, 5,000/-, सरकारी इंजीनियर, हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. वि.नं. 7329, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, एम.बी.बी.एस., एम.डी. (मेडिसिन), 26,185, लड़के हेतु सुंदर, मेडिको लड़की चाहिए. वि.नं. 7330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल सिंहल, 22/175, गौरवर्ण, सुदर्शन, कंपनी निदेशक, प्रतिष्ठित, समृद्ध परिवारीय (अचल संपत्ति आठ अंकीय), ग्रेजुएट युवक हेतु सुसंस्कारित, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, समृद्ध परिवारीय, अति सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. विज्ञापन सर्वोत्तम चयनार्थ. प्रस्ताव संपूर्ण विवरण मय जन्मपत्रिका (वापसी योग्य) वांछनीय है. वि.नं. 7331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज, 30/170, 4,200/-, स्टेट बैंक, कानपुर, सेवारत हेतु समकक्ष सेवारत वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कनाडा में पीएच.डी. इंजीनियरिंग कर रहे, बढ़ई कोकास युवक हेतु गौरवर्ण, सजातीय, इंजीनियर, पीएच.डी. साइंस, एम.एससी., वधू चाहिए. कुंडली बायोडाटा सहित भेजें. वि.नं. 7333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, विधुर, 53, 175, 7,000/-, उम्र 45 वर्ष लगती है. केंद्रीय कर्मचारी/व्यवसाय, हेतु विधवा, बेसहारा, तलाकशुदा जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, मध्य प्रदेश निवासी, समृद्ध, निजी प्रैक्टिस, पोस्टग्रेजुएट, डाक्टर, 31 वर्षीय, 5'-6", हेतु गोरी, सुंदर, डाक्टर, इंजीनियर, अन्य प्रोफेशनल, शिक्षा प्राप्त या गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उपजाति एवं प्रांतीयता का बंधन नहीं. वि.नं. 7335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, कान्यकुब्ज, रसायनशास्त्र में पीएच.डी., बांबे में कार्यरत के लिए सुयोग्य, शिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. वि.नं. 7336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, गौरवर्ण, 26, 5'-8", बी.ई. इंजीनियर, केंद्रीय शासन, हेतु समकक्ष सेवारत वधू चाहिए. जाति व वर्गबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7337, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 28, 164, 4,500/-, स्नातक, राष्ट्रीयकृत बैंक कार्यरत, आकर्षक युवक हेतु वास्तविक सुंदर, प्रकृतिप्रेमी, इकहरी, गोरी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. सविवरण लिखें : वि.नं. 7338, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 162 सें.मी., 60 के.जी., 2,500/-, कंप्यूटर साइंस अध्यापक (म.प्र.), (किराया रहित सुसज्जित निवास), हेतु शिक्षित, अध्यापनकार्य इच्छुक वधू. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 7339, सरिता, नई

दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित सिंधी, गुरसिख, 28, 164, ग्रेजुएट, निजी व्यवसायरत, बड़ौदा निवासी हेतु स्मार्ट शिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजरहित विवाह. वि.नं. 7340, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 36, 165, 5,000/-, विधुर, 7, 5, वर्षीय दो बच्चे, बैंक कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुशिक्षित, व्यवहारकुशल, सुसंस्कृत परिवारीय, उपयुक्त जीवनसाथी चाहिए. दहेजरहित शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7341, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, इंजीनियर, स्मार्ट, 28, 4,200/-, 172, पिता, भाई इंजीनियर, युवक हेतु सुंदर कन्या चाहिए. वि.नं. 7342, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल बंसल, 25 वर्षीय, 172 सें.मी., बी.काम., आकर्षक, व्यक्तित्व गेहुआं रंग, थोक/फुटकर प्रोविजन स्टोर, व्यवसायी हेतु सुंदर, गौरांग, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू चाहिए. जन्मपत्री भेजें. वि.नं. 7343, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, मद्रास स्थित, सुसंपन्न प्रतिष्ठित परिवारीय, 31, 6′, उच्च शिक्षा प्राप्त, आकर्षक व्ययक्तित्व, निज व्यवसायरत, विधुर युवक हेतु सुयोग्य, सुंदर, सजातीय, सुशील कन्या चाहिए. शीघ्र व सादगीपूर्ण विवाह. पूर्ण विवरण लिखे : वि.नं. 7344, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौर ब्राह्मण, बी.एससी., बी.एड, 29, 175, 2,600/-+ पर्कस, अविवाहित, सुंदर, बिड़ला संस्था में टेक्नीकल सुपरवाइजर हेतु सुंदर, बी.एससी/बी.एड. या बी.ए./बी.एड., एम.एससी, वधू. दहेज बंधन नहीं. वि.नं. 7351, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

राजस्थानी अग्रवाल, गोयल, 26, 5′-6″, 3,000/- मासिक, एम.एससी., बी.एड., नवोदय विद्यालय में कार्यरत हेतु सुंदर, बी.एड. वधू एवं 22, 5′-5″, एम.बी.बी.एस. कन्या हेतु डाक्टर वर चाहिए. वि.नं. 7345, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई नवयुवक, केंद्रीय सहायक अधिकारी, दिल्ली, हेतु आकर्षक नववधू एवं शिक्षित बहन, अविवाहिता हेतु वर. वि.नं. 7346, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (बाथम), 24, 152, गेहुआं रंग, बी.काम., बी.एड. (अध्यापिका) कन्या, 26, 163, आर्मी कप्तान पुत्र, हेतु शिक्षित, कार्यरत, सुंदर वरवधू चाहिए. वि.नं. 7347, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

सनातनधर्मी, संपन्न, बुजुर्ग महिला को 14-15 वर्षीया, सेवाभावी, गृहकार्य रुचिवाली, निर्धन/बेसहारा, हिंदीभाषी कन्या गोद चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 7348, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

एकाकी, संपन्न, अग्रवाल बिजनेसमैन को गृहप्रबंध हेतु आवश्यकता है विश्वसनीय, आकर्षक, अकेली, मधुर स्वभाव, 25-35 वर्षीया, युवती/महिला की जो गृहमालकिन की तरह जीवन ससम्मान रह सके. बेसहारा, यतीम को प्राथमिकता, पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7349, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अकेले, ब्राह्मण, निरीक्षक को गृहप्रबंध हेतु सुंदर युवा सहयोगिनी चाहिए. आजीवन कार्य सहारा. वि.नं. 7350, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजधानियों में संपादकीय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है

सरिता समूह की पत्रिकाओं के लिए देश की विभिन्न राजधानियों में अंशकालिक संवाददाताओं व प्रतिनिधियों की आवश्यकता है. पूर्व अनुभव व पूर्ण विवरण सहित लिखें :

सरिता

झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

शिक्षा

कढ़ाई प्रेमियो, कसूती कढ़ाई शैली की जानकारी हासिल कीजिए. बिलकुल मुफ्त. इस मौके का फायदा उठाइए. कसूती कढ़ाई संबंधी अधिक जानकारी के लिए अपना नाम, पता और अपनी पसंद की भाषा (अंगरेजी, हिंदी) का विवरण देते हुए इस पते पर लिखिए : एस.आर.टी.आई., ऐंकर जीड्लक्राफ्ट क्लब, पो.ओ. बाक्स नं. 5145, बैंगलोर—560001. आप के जवाब हमें 25-3-1993 तक मिल जाने चाहिए. अपनी कढ़ाईबुनाई प्रतिभा को कुशलता में कैसे बदलें, इस की जानकारी भी हम आप को देंगे.

पुस्तकें

'मंदिर मसजिद और भारतीय मानस' किताब तथा लेखकोपयोगी साहित्य मंगाएं : सैन्नी अशोष, पांवटा साहिब (हि.प्र.) 173025.

व्यवसाय

सगेसंबंधियों की शराब की आदत से परेशान संपर्क करें. डा. वीरेंद्र सिंह, 3 एकांत होटल, पंचकुइयां रोड, निकट बनवारीलाल अस्पताल, नई दिल्ली.

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रू. 60/- वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल अमृतसर—143017.